प्रतिक्रमण सूत्र

सह विवेचन

भाग - १ [हिन्दी - अंग्रेजी]

निर्वाण सागर

Pratikramaṇa Sūtra

With Explanation

Part - 1 [Hindī - English]

Nirvāṇa Sāgara

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

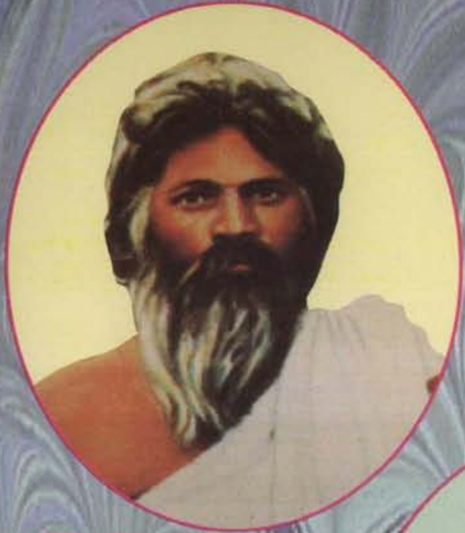

योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद्
बुद्धिसागरसूरीश्वरजी म. सा.

महेसाणा तीर्थ माणिक्य
श्री सीमंधर स्वामी भगवान

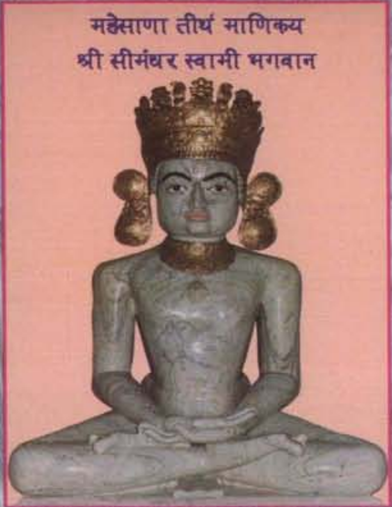

चारित्र चूड़ामणी आचार्यदेव श्रीमत्
कैलाससागरसूरीश्वरजी म. सा.

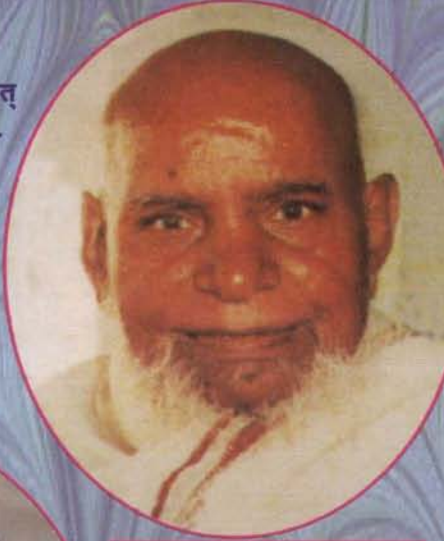

परमात्म भक्ति रसिक आचार्य श्री
कल्याणसागरसूरीश्वरजी म. सा.

शासन प्रभावक आचार्य श्रीमत्
पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

सम्यग्दृष्टि तीर्थरक्षक देव
श्री घंटाकर्ण महावीर

श्री सीमंधर जिन सेविका
श्री पद्मावती देवी

तपागच्छ अधिष्टायक देव
श्री माणिभद्रवीर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिक्रमण सूत्र
सह विवेचन
भाग - १ [हिन्दी - अंग्रेजी]

श्री सीमंधराय नमः

निर्वाण सागर

Pratikramaṇa Sūtra
With Explanation
Part - 1 [Hindī - English]

śrī sīmandharāya namaḥ

Nirvāṇa Sāgara

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र, अर्थ आदि को
गुरु मुख से ग्रहण कर
शास्त्र आज्ञानुसार ही
अभ्यास करें.

Learn
the sūtra, meaning etc.
only after grasping
from the guru
as prescribed in scriptures.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः

श्री प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन, भाग १ एवं २

के प्रस्तुत प्रकाशन में

प्रमुख आर्थिक सहयोगी

सच्चारित्र चूडामणि, श्रमणश्रेष्ठ परम पूज्य **मुनिराज श्री रविसागरजी म. सा.** ने अपने सुयोग्य महाप्रभावक प्रशिष्यरत्न योगनिष्ठ **आचार्यदेव श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी महाराज** को **सम्यग्दृष्टि देव श्री घण्टाकर्ण महावीर** को प्रत्यक्ष करने की आम्नाय सहित मंत्र-दीक्षा प्रदान की थी.

अध्यात्म-ज्ञान-दिवाकर, गायकवाड नरेश प्रतिबोधक **आचार्यदेव श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी महाराज** ने उस मंत्र की साधना कर **समकिती देव श्री घण्टाकर्ण महावीर** को जिस पावन धरा पर प्रत्यक्ष किया था उस पुण्यभूमि **'श्री महुडी तीर्थ'** की पेढी **श्री महुडी(मधुपुरी) जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक ट्रस्ट - महुडी** की ओर से महासंयमी, तपस्वी **मुनिराज श्री रविसागरजी म. सा.** के **शताब्दी वर्ष की पूर्व वेला में प्रकाशित हो रहे इस गौरवशाली प्रकाशन** में प्रमुख आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है. तदर्थ **'श्री अरुणोदय फाउण्डेशन' - कोबा** के ट्रस्टीगण

श्री महुडी(मधुपुरी) जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक ट्रस्ट - महुडी

का अत्यंत आभारी हैं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शासन प्रभावक, सम्मेतशिखर तीर्थोद्धारक, अजीमगंज-भूमिपुत्र

परम पूज्य आचार्य प्रवर श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

की शुभ निश्रा में कलकत्ता महानगरी में

महा शुद्धि २ रविवार दि. ९-२-९७ के शुभ दिन

विश्व में सर्व प्रथम बार प्रकाशित होने वाले

श्री प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन, भाग १ एवं २

का विमोचन

अपने पूजनीय पिताश्री एवं मातुश्री

स्व. श्रीमान् गंभीरचंदजी बोथरा एवं श्रीमति सुंदरदेवी बोथरा की पुण्य स्मृति में

अजीमगंज-बंगाल निवासी (वर्तमान में विशाखापट्टणम्, आन्ध्रप्रदेश)

श्रीमान् रविचंदजी बोथरा, श्रीमति कुमुदकुमारी बोथरा एवं

सुपुत्र श्री वीरचंदजी एवं अजीतचंदजी बोथरा

के वरद हस्तों से हुआ है, तदर्थ

श्री अरुणोदय फाउण्डेशन, कोबा के ट्रस्टीगण

आपके हार्दिक आभारी हैं.

Jain Education International

For Private & Personal Use Only

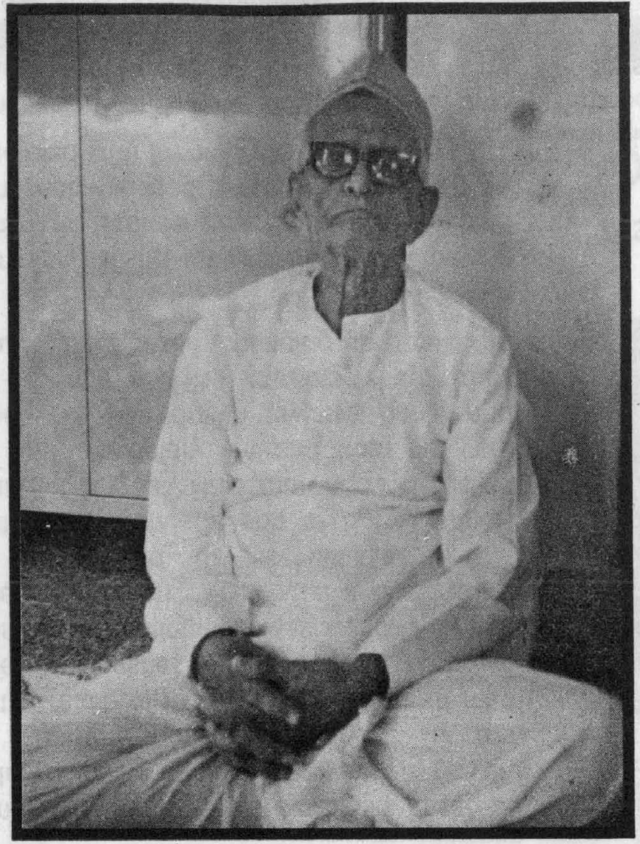

स्व. चेतनदासजी नाहटा

प्रस्तुत प्रकाशन के विशेष सहयोगी

शासन प्रभावक, ज्योतिर्विद्र् गणिवर्य श्री अरुणोदयससागरजी म.के

संयमी जीवन के २५ वर्ष की पूर्णता के उपलक्ष में

मुलतान (देरागाजीखान-पाकीस्तान) निवासी

वर्तमान में बंबईस्थित

स्व. चेतनदासजी नाहटा की

पुण्यस्मृति में

श्री तिलोकचंदजी, अनील एवं कमल नाहटा परिवार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

OM ARHAM NAMAH

INTRODUCTION OF SHRI PRAKASHCHAND SAMDARIYA

Human life is the most valuable asset of fortumte beings. Infinite knowledge, power, riches, supreme godliness and humility are within the reach of man and man alone. If man practises selflessness, altrusim and progress towards selfrealization, besides working for the upliftment of humanity, 'his fame and glory are bound to spread in all directions. Shri Prakashchand samdaria son of Shri Kanmalji Samdaria of Nagaur, Rajasthan had led such a simple and exemplary life and from his very childhood he was drawn towards noble and pious activities. His parents had duly contributed their share inbringing up a cultured Child.

He never missed any oppurtunity of paying reverence to Sadhus and Sadhvis and would be immensely pleased and his hearts would be overwhelmed with joy and bliss.

Compassion and love for Godliness and goodliness are indeed of much greater value than riches and degrees Shri Prakashchand Samdaria was a philanthropist in the true sense of the term. Besides inspiring pepole to establish themselves in pious deeds, during his

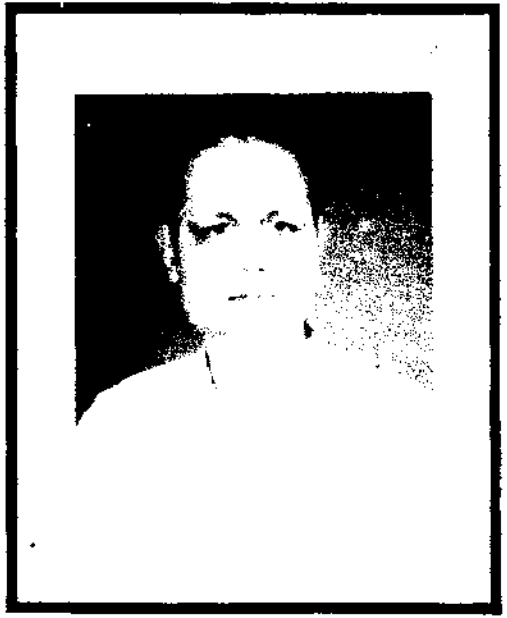

श्री प्रकाशचंदजी समदडिया

SHRI PRAKASHCHAND SAMDARIYA

life time he himself carried out innumerable religious and social activities and had great respect for all those who served the Jinashasana and worked for the welfare of all groups of people.

Though a prestigious personality in the society, he was never groud of his wealth, richess and status. With immense devotion and unparalleled dedication he whole heartedly donated for the reconstruction of Jain temples, constructed and established by great, devoted Shrimants and Acharyas of olden times. To materialize splendid projects of the construction of Jain temples and others, he gave valuable services in many places of India in cash and kind and in true terms led a glorious life.

Similarly his valuable contribution in the publication of almanacs (Panchanga) by Shri Arunodaya foundation deserve a special mention and he shall be remembered for his constructive and generous contribution, as long as such noble deeds are undertaken by pious people.

His wife Smt. Kamalkanwar devi has succeeded him in all respects and has kept the lamp of goodness and charity burning. She has given financial assistante for publication of this book. Thus he served the Jinashasana elegantly and it is our turn now to pray for his soul to rest in peace and hope that his family follows his foot steps with courage and conviction and serve the mighty Jinashasana.

श्री विजयचंदजी समदडिया परिवार, मद्रास

SHRI VIJAYCHAND SAMDARIYA FAMILY, MADRAS

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिक्रमण सूत्र
सह विवेचन
भाग - १ [हिन्दी - अंग्रेजी]

श्री सीमंधराय नमः

निर्वाण सागर

Pratikramaṇa Sūtra
With Explanation
Part - 1 [Hindī - English]

śrī sīmandharāya namaḥ

Nirvāṇa Sāgara

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

■ शीर्षक	- प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन - भाग - १ [हिन्दी-अंग्रेजी]	■ Title	– Pratikramaṇa Sūtra With Explanation – Part –1 [Hindī–English]
■ लिप्यंतरक, अनुवादक विवेचक और संग्राहक	- मुनि निर्वाण सागर	■ Transliterator, Translator Explainer and Compiler	– Muni Nirvāṇa Sāgara
■ प्रथम आवृत्ति	- वी. सं. २५२४, वि. सं. २०५४, इ. स. १९९७	■ First Edition	– Vīra Saṃ. 2524, Vikram Saṃ. 2054, 1997 A.D.
■ प्रति	- ३,०००	■ Copies	– 3,000
■ कम्पोजर्स	- आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा	■ Composers	– ācārya śrī kailāsasāgara sūri jñāna mandira, śrī mahāvīra jaina ārādhanā kendra, kobā
■ फोटोग्राफर	- अनंत बि. भावसार, मंगलम् स्टुडियो सेक्टर - १६, गांधीनगर	■ Photographer	– Anant B. Bhavsar, mangalam studio, sector 16, Gandhinagar
■ मुद्रक	- एलाइड ऑफसेट प्रीन्टर्स, अहमदाबाद	■ Printers	– Allied Offset Printers, Ahmedabad
■ प्रकाशक, वितरक	- श्री अरुणोदय फाउण्डेशन, कोबा जि. गांधीनगर - ३८२००९ [गुजरात, भारत] - C/o चंद्रकांतभाई जे. शाह [फो. ६५६५३२९] ५/ए/३, अर्जुन कोम्प्लेक्स, जय शेफाली रो हाऊस के सामने, सेटेलाइट रोड अहमदाबाद - ३८००१५ [गुजरात, भारत]	■ Publishers and distributors	– Shree Arunoday Foundation, Koba, Dist. – Gandhinagar 382009 [Gujarat, INDIA] – C/o Chandrakantbhai J. Shah [Ph. 6565329] 5/A/3, Arjun Complex Opp. Jay Shefali Row House, Satellite Road Ahmedabad – 380015 [Gujarat, INDIA]
■ मूल्य	- १२५ रू. भाग - १, २	■ Cost	– Rs. 125 Part - 1, 2

© सर्वाधिकार लिप्यंतरक के अधीन.

© All rights reserved by the transliterator.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दो शब्द

❖ अर्हम् नमः ❖

श्री पंच प्रतिक्रमण सूत्र जो कि **श्रमण** प्रधान जैन संस्कृति में आत्म शुद्धि का परम साधनं है. उसका विशेष रूप से परिचय साधक आत्माओं को मिले, **सूत्र** के अर्थ-भावार्थ से वे परिचित बनें जिससे उनमें क्रिया रुचि एवं सद्भाव उत्पन्न हो, इसी भावना से प्रेरित होकर विद्वान् **मुनि श्री निर्वाणसागरजी म.** ने इस पुस्तक के विवेचन को लिखकर अपने श्रम को सफल बनाया है.

उनकी यह **सम्यक् श्रुत** की आराधना अन्य आत्माओं के लिये उपयोगी बनेगी ऐसा मेरा विश्वास है.

प्रतिक्रमण सूत्र की आराधना के द्वारा अपनी आत्मा को निष्पाप बनाने की प्रक्रिया में व्यक्ति सफल बनें – यही मंगल कामना करता हूं.

भवदीय

पद्मसागरसूरि

A few words

❖ Arham namaḥ ❖

śrī pañca pratikramaṇa sūtra is an absolute mean for self-purification in jain calture guided by **śramaṇa [sādhu]**. Endeavouring souls may have special acquaintance with these **sūtras**, they may become familiar with literal meaning and specific meaning of the **sūtras** by which liking and goodwill is created in them, inspired with this feeling, learned **muni śrī nirvāṇasāgarajī ma.** has succeed his labour by writing explanation of this book.

It is my confidence that his adoration of this **samyak śruta [śruta jñāna]** will be useful to other souls.

Person shall be successful in the process of making his soul sinless [pure] by adoration of **pratikramaṇa sūtra**. I wish this auspicious desire.

Ever yours

Padmasagar Suri

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तावना

जिन शासन का एक बहु प्रचलित एवं गंभीर अर्थ वाला शब्द है : **प्रतिक्रमण**. इसका अर्थ है वापस लौटना. इसे समझने से पूर्व **आक्रमण** शब्द को समझ लेना ज्यादा उचित होगा. **आक्रमण** का अर्थ है हमला. जीवन के व्यवहार में हम सदा आक्रमणशील बने रहते हैं. यह आक्रमण दो तरह से होता है– १. मन का बाह्य भावों के प्रति आक्रमण और २. बाह्य भावों का आत्मा के प्रति आक्रमण.

मानव ने भौतिक पदार्थों में ही पूर्ण सुख की कल्पना कर रखी है, परिणामतः वह अपनी आत्मा के वास्तविक सुख से कहीं दूर हट गया है और वह भटक गया है काल्पनिक सुखों के जंगल में. बाह्य सुखों के प्रति मानव के इस आक्रमणशील स्वभाव के कारण उसकी आत्मा के उपर **कर्मों** का भारी बोझ दिन प्रति दिन बढ़ता रहता है और आत्मा जब इन **कर्मों** के भार के नीचे दब जाती है तो उसे बाहर निकालने वाला कोई नहीं मिलता.

इस बाहरी आक्रमण से मानव को अपनी आत्मा में पुनः लौटाने वाली क्रिया है **प्रतिक्रमण**. आप देखते होंगे, शाम ढलते ढलते ही पंछी अपने घोंसले में पुनः लौट आते हैं. दिन भर वे भटकते हैं, किन्तु शाम को

Preface

A most common and profound meant word in Jainism is **pratikramaṇa**. Its meaning is returning back. It will be much better to understand the word **ākramaṇa** before understanding it. The meaning of **ākramaṇa** is to attack. In our daily life we are always aggressive. This attack is made in two ways -- 1. attack of mind towards exterior objects and 2. attack of exterior emotions towards the soul.

Man has imagined complete happiness in physical materials only, as a result he has gone far away form real happiness of his soul and he has gone astray in the forest of imaginary happiness. Due to this aggressive human nature towards exterior happiness, a huge burden of **karmas** is increasing over the soul day by day and when the soul is suppressed under the force of these **karmas**, then no one is found to remove him out.

pratikramaṇa is the rite taking back the man into his soul from these outer attacks. You will be noticing the birds returning back to their nests as the evening declines. Whole day they wander, but they will surely return back in the evening.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वे लौटेंगे ही. दिन भर खेलने वाले बच्चे शाम ढलते ढलते अपने घर को वापस लौटकर माँ की शीतल गोद में आराम से सो जाते हैं. इसी प्रकार मानव को आत्मा में लौटना होगा. इसी को कहा जाएगा **प्रतिक्रमण**. **आक्रमण** से ठीक विपरीत होगा **प्रतिक्रमण**. **आक्रमण** का मतलब होगा व्यक्ति का आत्मा में से संसार में **गमन** और **प्रतिक्रमण** का मतलब होगा व्यक्ति का संसार में से आत्मा में **पुनरागमन**.

प्रतिक्रमण की क्रिया शास्त्रीय परिभाषा में **आवश्यक क्रिया** के अंतर्गत आती है. **आवश्यक क्रिया** यानी अवश्यमेव करने योग्य क्रिया. श्वाँस लेना शरीर के लिए जितना आवश्यक है उससे ज्यादा आवश्यक है आत्मा के लिए **प्रतिक्रमण**. इस आवश्यक क्रिया को छः विभागों में विभक्त किया गया है – **१. सामायिक [सामाइय], २. चतुर्विंशति-स्तव [चउवीस-थय / चउवीस-त्थो], ३. वंदन [वंदणय], ४. प्रतिक्रमण [पडिक्कमण], ५. कायोत्सर्ग [काउस्सग्ग]** एवं **६. प्रत्याख्यान [पच्चक्खाण]**. इस छोटी सी प्रस्तावना में छः आवश्यकों का स्वरूप ठीक से समझाना संभव नहीं है, फिर भी संक्षेप में इसे समझेंगे.

सामायिक - सर्व प्रथम आवश्यक है **सामायिक**. **सामायिक** यानि समत्व भाव की साधना. जब तक समत्व भाव की उपलब्धि नहीं होगी वहाँ तक सभी धर्म क्रियाएँ अपूर्ण बनी रहेंगी. इसी लिए जैन धर्म में समत्व भाव की साधना पर सबसे ज्यादा बल दिया गया है क्योंकि आत्मा

A child playing whole day sleeps soundly in the smooth lap of his mother after returning back to the house as the evening declines. Similarly a man has to return back into the soul. It is called **pratikramaṇa**. **pratikramaṇa** is quite opposite to **ākramaṇa**. Meaning of **ākramaṇa** is **gamana** [going out] of a man from the soul into the world and meaning of **pratikramaṇa** is **punarāgamana** [returning back] of a man from the world into the soul.

The rite of **pratikramaṇa** comes within **āvaśyaka kriyā** [necessary rite] in scriptural definition. **āvaśyaka kriyā** means the rite that should be done certainly. As much as breathing is necessary for the body, more than that **pratikramaṇa** is necessary for the soul. This necessary rite is divided into six parts : **1. sāmāyika [sāmāiya], 2. caturvinśati-stava [caūvīsa-thaya / caūvīsa-ttho], 3. vandana [vandaṇaya], 4. pratikramaṇa [paḍikkamaṇa], 5. kāyotsarga [kāussagga]** and **6. pratyākhyāna [paccakkhāṇa]**. Though explanation of these six necessary rites is impossible in this small preface, even then it will be understood in short.

sāmāyika – The foremost necessity is **sāmāyika**. **sāmāyika** means efforts for emotional equanimity. As long as equanimity is not obtained, all religious rites will be incomplete. Hence importance is given more for attainment of equanimity in Jainism because real **dharma** of soul itself is starting from equanimity. The soul

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के वास्तविक **धर्म** का प्रारंभ ही समत्व भाव से होता है. समत्व भाव के अभाव में आत्मा क्रोधादि कषायों के पल्ले पड़ जाने के कारण अवनति के पथ पर गतिमान बन जाती है. परिणाम स्वरूप उसे जन्म जन्मांतर तक पुनः उन्नति का कोई रास्ता नहीं मिलता. इसीलिए आत्मोन्नति का श्रेष्ठ उपाय **सामायिक** माना गया है.

चतुर्विंशति स्तव - दूसरा आवश्यक है चौबीस **जिनेश्वरों** के गुणों का कीर्तन. प्रायः मानव का यह स्वभाव होता है कि वह निन्दा किसी भी व्यक्ति की सरलता से कर सकता है, उस में उसे कोई संकोच नहीं होता. किन्तु यदि किसी के वास्तविक गुणों का दूसरों को परिचय देना होगा तो उसके लिए वह जरूर हिचकिचायेगा. स्व प्रशंसा व्यक्ति जरूर करेगा, किन्तु पर प्रशंसा वह कभी नहीं कर सकेगा. वह दूसरों के गुणों की निन्दा तो कर सकता है, किन्तु अपने अवगुणों की भी निन्दा वह नहीं कर सकता. परिणामतः वह अपने आत्म विकास में आगे नहीं बढ़ सकता. जब व्यक्ति गुणवान के गुणों की प्रशंसा करना आरंभ करता है तब वह अपने आत्म विकास की नींव रखता है.

संसार के सर्वोच्च गुणवान व्यक्ति हैं **तीर्थंकर परमात्मा**; जिन्होंने राग और द्वेष पर विजय प्राप्त करके वीतरागता प्राप्त की है. उनके गुणों का कीर्तन करने से आत्मगुण शीघ्र ही विकसित होते हैं. इसी लिए **चतुर्विंशति स्तव** को **आवश्यक क्रिया** में समाविष्ट किया गया है.

moves in the directions of down fall due to lack of equanimity because of being in possession of ill-wills like anger. As a result any path of progress would not be found again till births and rebirths. Therefore **sāmāyika** is believed to be a best path for spiritual progress.

caturvinśati stava – The second necessity is the eulogy of virtues of twenty for **jineśvaras**. More or less it is the nature of man that he can censure any person easily. There will be no hesitation to him in it. But if introduction of real virtues of any one is to be given to others, then he will surely hesitate. He will surely do self praising, but he can never praise others. He can censure the virtues of others, but can't censure his own demerits. As a result he can't proceed further in his own self-uplift. When man starts praising the merits of meritorious persons, then he lays foundation of his spiritual progress.

The supreme meritorious persons of the world are **tīrthankara paramātmā**s who have attained passionlessness by getting victory over passion and malice. Virtues of the soul develop soon by praising their virtues. Hence **caturvinśati stava** [eulogization of twenty four **tīrthankara**s] has been included in **āvaśyaka kriyā**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वन्दन - नम्रता का प्रतीक है **वन्दन. वन्दन** यानी नम जाना. जीवन में अगर नम्रता नहीं होगी तो ज्ञान भी नहीं होगा. आत्मा को ज्ञान के प्रकाश की उपलब्धि में अगर कोई बाधा है तो वह है अहंकार की दिवाल. अहंकार की इस दिवाल को हटाये बिना आत्मा में ज्ञान सूर्य की किरणें नहीं आ सकतीं. व्यक्ति जब तक अहंकार के रोग से ग्रस्त होता है, वहाँ तक उसे आत्मा के आरोग्य की प्राप्ति नहीं होती. व्यक्ति चाहे कितना भी विद्वान और चारित्रवान साधक हो, किन्तु अगर वह अभिमानी हो तो उसकी सारी साधना विफल हो जाएगी. अहंकार को बिना दूर किये वह कभी अपना उद्धार नहीं कर सकेगा. अहंकार की विद्यमानता में व्यक्ति के शेष सद्गुण भी निरर्थक हो जाते हैं. इस अहं को विसर्जन करने की क्रिया है **वन्दन**. बिना अहंकार को दूर किये वंदन नहीं हो सकता और बिना वंदन के व्यक्ति आत्म विकास में आगे बढ़ नहीं सकता.

प्रतिक्रमण - यह अपनी आत्मा द्वारा किये गये अपराधों एवं पापों के स्वीकार करने एवं पुनः अपनी मर्यादाओं में लौट आने की क्रिया है. व्यक्ति **श्रावक धर्म** संबंधी आचारों का स्वयं के आत्म विकास के लिये पालन करता है. किन्तु कई बार अपूर्ण व्यक्ति जाने अनजाने में मन, वचन और काया से स्वयं करने, दूसरों से कराने और कई बार अनुमोदन द्वारा आचार / मर्यादाओं का भंग कर देता है. इन मर्यादाओं का उल्लंघन चार प्रकार से होता है – **१. अतिक्रम, २. व्यतिक्रम, ३. अतिचार** एवं

vandana - vandana [obeisance] is a symbol of modesty. **vandana** means to bow. If there is no modesty in life then there will be no knowledge also. If there is any obstacle in achieving the light of knowledge in the soul, then it is the wall of self-conceit. Without removing this wall, sun rays of knowledge can not enter the soul. As long as the man is diseased with self conceit, so long he can not gain health of the soul. However much a man may be learned and characteristic devotee of spiritual achievement, all his efforts will fail if he is self conceited. He can never uplift himself without removing self conceit. Even other virtues of person becomes worthless in presence of self conceit. The rite of disposing off this self conceit is **vandana**. Without disposing self conceit, obeisance can not be done and without obeisancing, man can not proceed further in self elevation.

pratikramaṇa - It is the rite of confessing offenses and sins committed by his soul and returning back into self-restrictions. A person observes ethical conduct concerning **śrāvaka dharma** for his own spiritual uplift. But many times an incomplete man breaks above self-restrictions knowingly or unknowingly by mind, speech and body by doing himself, by causing others to do and by seconding. Breaching of these restrictions is caused in four ways -- **1. atikrama, 2. vyatikrama, 3. aticāra** and **4. anācāra**. Origin of any type of ill-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. अनाचार. मन में किसी प्रकार का दुर्विचार उत्पन्न होना **अतिक्रम** है; उसकी पूर्ति के लिये प्रवृत्त होना **व्यतिक्रम** है; आंशिक रूप में वह कार्य कर लेना **अतिचार** है और उस कार्य को संपूर्ण रूप में करना **अनाचार** है. उपरोक्त चार परिस्थितियों में से प्रथम तीन परिस्थितियों में से तो दुष्कृत्यों के प्रति आलोचना, निंदा, गर्हा और दुर्गंछा द्वारा मन, वचन और काया से पुनः अपनी मर्यादाओं में लौटा जा सकता है. लौटने की यह क्रिया ही **प्रतिक्रमण** है.

जहाँ तक व्यक्ति अपूर्ण है, वहाँ तक उससे जानते या अजानते पाप होंगे ही. अपूर्ण व्यक्ति अगर कहता है कि मेरे से कभी भूल नहीं होती तो यह उसकी सबसे बड़ी भूल है. अपराधों का स्वीकार, पश्चात्ताप और पुनः अपराध न करने का संकल्प– ये तीन गुण जब तक व्यक्ति में नहीं आते, तब तक वह **प्रतिक्रमण** की पावन क्रिया में प्रविष्ट नहीं हो सकता. जब इन तीनों गुणों का व्यक्ति में विकास होगा, तभी व्यक्ति सही अर्थ में **प्रतिक्रमण** कर सकेगा. **प्रतिक्रमण** के विषय में यहाँ तक कहा गया है कि व्यक्ति के जीवन में चाहे कितने ही पापों का ढेर एकत्रित हुआ हो, किन्तु अगर वह हार्दिक भाव से **प्रतिक्रमण** कर लेता है तो वह शीघ्र ही अपने उन पापों से मुक्त हो जाता है.

प्रतिक्रमण द्वारा अपने हर अपराध की अंतःकरण पूर्वक क्षमा मांगी जाती है और जीव मात्र से मैत्री पूर्ण संबंध स्थापित किये जाते हैं एवं

will in the mind is **atikrama**. To become ready for carrying out that work is **vyatikrama**. To do that work partially is **aticāra**. To do that work completely is **anācāra**. One can return back by thought, speech and physically by criticizing, censuring, condemning and strongly disliking towards the evil deed from first three states out of aforesaid four states. This act of returning is **pratikramaṇa**.

As long as a man is incomplete [non-omniscience], so long he would commit sins knowingly or unknowingly. It itself will be his great fault if an incomplete man says that faults are never committed by him. As long as three virtues -- confession of faults, repentance and determination for not repeating faults again, do not come in man, so long he can not enter the sacred rite of **pratikramaṇa**. When these three virtues develop in man, then only man can perform **pratikramaṇa** in real terms. It is told so far regarding **pratikramaṇa** that however much the heap of sin might have been accumulated in the life of a man, but if he performs **pratikramaṇa** heartily, he soon frees himself from those sins.

Pardon is begged heartily for every fault by means of **pratikramaṇa** and friendly relations are established and are made firm with each and every living

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दृढ किये जाते हैं.

कायोत्सर्ग - कायोत्सर्ग यानी शरीर के ममत्व को छोड़ देना. जहाँ तक व्यक्ति शरीर की चिन्ता में होता है वहाँ तक वह आत्म चिन्तन नहीं कर सकता. व्यक्ति के जीवन का अधिकतर समय खास करके शरीर की साज-सज्जा और खान-पान आदि द्वारा शरीर पोषण में ही व्यतीत हो जाता है. ऐसे में वह अपनी आत्मा को याद करने का समय ही नहीं निकाल पाता. उसे यह ख्याल ही नहीं रहता कि इस शरीर की कितनी भी चिन्ता की जाए और कितना भी पोषण किया जाए, किन्तु एक दिन तो वह अवश्य नष्ट होकर ही रहेगा. आत्म चिन्तन अगर करना है तो शरीर को भूल जाना नितान्त आवश्यक है और उसी पावन क्रिया का नाम है **कायोत्सर्ग. कायोत्सर्ग** का मतलब है शरीरी को अशरीरी बनाने की क्रिया; **कषायात्मा** को परमात्मा बनाने की क्रिया.

प्रत्याख्यान - प्रत्याख्यान का मतलब है आत्मा का अहित करने वाली चीजों का त्याग और हित करने वाली चीजों का स्वीकार. भौतिक पदार्थों का भोग और उपभोग एवं उन पदार्थों के प्रति आसक्ति आत्मा के लिए अनर्थकारी एवं अहितकारी हैं. उन चीजों का जितना त्याग किया जाता है उतना ही वह आत्मा के लिए उपकारी बन जाता है. आत्मा में जब किसी पदार्थ के प्रति आसक्ति बनी रहती है तब वह आत्मा के लिए बंधन बन जाती है और आसक्ति जब तक दूर नहीं की जाती तब

being.

kāyotsarga - kāyotsarga means to abandon attachment of the body. As long as a man is busy in worry of the body, so long he can not do self-contemplation. Most of the time in life passes away mostly in the maintenance of body and nourishment of body with eating and drinking it self. In such he can not find time for thinking of his won soul. He would not mind it however much he may worry and however much he may nourish his body, it will perish one day definitely. If self-contemplation is to be done, he must forget his body and the name of that sacred rite is **kāyotsarga**. The meaning of **kāyotsarga** is act of making corporeal to incorporeal; act of making **kaṣāyātmā** [soul with ill-wills like anger etc.] into a supreme soul.

pratyākhyāna - pratyākhyāna means abandonment of things harmful to the soul and acceptance of things beneficial to the soul. Use and reuse of physical materials and attachment towards those materials is calamitous and harmful to the soul. As much as those things are abandoned, so much it becomes beneficial to the soul. When attachment for any substance exists in the soul then it becomes bondage for the soul. And as long as this attachment is not removed, man can't acquire his spiritual freedom. The rite freeing soul from this attachment is

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तक व्यक्ति अपनी आत्मिक स्वतंत्रता को उपलब्ध नहीं हो सकता. उस आसक्ति से आत्मा को छुड़ाने वाली क्रिया है : **प्रत्याख्यान**. **प्रत्याख्यान** की पावन क्रिया उस औषध का काम करती है जो आत्मा के परतंत्रता रूपी रोग को मिटाकर उसकी स्वतंत्रता को उपलब्ध कराता है.

ये छहों **आवश्यक** जब एकत्रित होते हैं तभी व्यक्ति पूर्ण आत्मदशा को शीघ्रता से उपलब्ध होता है. अतीत में व्यक्ति के लिए **प्रतिक्रमण** जितना जरूरी था उससे कहीं ज्यादा जरूरी आज बन गया है क्यों कि आज व्यक्ति की आध्यात्मिक चेतना बाहरी आक्रमणों के कारण मूर्छित हो चली है. बाहरी कल्पनाओं में भटकी हुई चेतना को आत्मा में पुनः स्थापित करना जरूरी हो गया है. चेतना के इस पुनः स्थापन और पुनर्जागरण के लिए **प्रतिक्रमण** एक सक्षम माध्यम है. **प्रतिक्रमण** की क्रिया यह अमृत है जो आत्मा को अजरत्व और अमरत्व प्रदान करने का दायित्व निभाती है. यह क्रिया व्यक्ति को अपूर्णता में से पूर्णता की ओर आगे बढ़ने का संदेश देती है, इतना ही नहीं, इस पावन क्रिया के माध्यम से व्यक्ति पर-दर्शन से दूर हटकर स्व-दर्शन को उपलब्ध होकर क्रमशः आत्म विकास में तेज गति से सफलता प्राप्त करता है. यह पावन क्रिया अगर ठीक से की जाती है तो आत्मा अपने शाश्वत सुख को कुछ समय में ही उपार्जन कर लेती है.

पूर्वाचार्यों ने इस पावन क्रिया को **सूत्रबद्ध** किया है. अतः इसका

pratyākhyāna. The sacred rite of **pratyākhyāna** does the work of that medicine which causes the soul to achieve its freedom erasing from the disease present in form of slavery.

A man can achieve complete self-elevation only then when all these six **āvaśyakas** gather together. As much as **pratikramaṇa** was necessary to the man in past, more than that it is necessary today because spiritual awareness of man has gone out of consciousness due to external attacks. It is necessary to re-establish the conscious wandering in outer imaginations back into the soul. **pratikramaṇa** is a capable medium for re-establishment and realertness of conscious. The rite of **pratikramaṇa** is that nectar which performs responsibility of donating ever non old age [youngness] and immortality to the soul. This rite gives message to the man for moving forward to completeness from incompleteness and the man attains prompt success in self-uplift by moving away from viewing towards others and attains self-viewing by means of this sacred rite. If this sacred rite is performed properly then the soul would acquire eternal happiness in short period.

Past preceptors have composed this sacred rite in the form of **sūtras**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्येक **सूत्र** पवित्र एवं अत्यंत गूढ रहस्यों से भरा हुआ है. इन **सूत्रों** का स्मरण मात्र भी पावनकारी है. **प्रतिक्रमण** की क्रिया के साथ ही अन्य सभी **आवश्यकों** को भी कर लिया जाता है.

प्रतिक्रमण की पावन क्रिया में सहायक बनने वाली पुस्तकें यद्यपि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है; फिर भी वे पुस्तकें केवल **गुजराती** एवं **हिन्दी** भाषी जनता को ही उपयोगी बन सकती हैं. भारत एवं विदेशों में रहने वाले बहु संख्यक जैन जो अंग्रेजी लिपि का ही ज्ञान रखते हैं, उनका ध्यान रखते हुए यह पुस्तक तैयार की गयी है.

◆ ◆ ◆

लिप्यंतरण के विषय में यह बताना उचित होगा कि **अंग्रेजी** वर्ण में **नागरी** लिपि की अपेक्षा अक्षरों की कमी के कारण और एक समान उच्चारण न होने से, जब **प्राकृत, संस्कृत** आदि भाषा के किसी शब्द को **अंग्रेजी** में लिखा जाएगा तब पाठक उसका अलग-अलग रूप से उच्चारण करेगा. उदाहरण के रूप में, अगर **पांडव** शब्द को **अंग्रेजी** लिपि में लिखा जाए तो यह **pandava** के रूप में लिखा जाएगा. किन्तु पाठक सही जानकारी के अभाव में इस शब्द का उच्चारण विभिन्न रूप से करेगा, जैसे कि **पांदव, पंदाव, पंदवा, पंदावा, पांदवा, पांदावा, पांदाव, पंदव, पांडव , पंडाव, पंडवा, पंडावा, पांडवा, पांडावा, पांडाव, पंडव, पाङ्डव, पाञ्डव, पाण्डव, पान्डव, पाम्डव, पाङ्दव, पाञ्दव,**

[aphorisms]. Hence each of its **sūtra** is sacred and full of very deep secret meaning. Even the remembrance of these **sūtras** is also auspicious. Along with **pratikramaṇa** itself all other **āvaśyakas** are also performed.

Though books useful in this sacred rite of **pratikramaṇa** are available in plenty, they are useful only to **gujarātī** and **hindī** speaking people. This book is prepared keeping in mind the majority of Jains residing in India and foreign countries who have the knowledge of only English script.

◆ ◆ ◆

It will be proper to say about transliteration that when a word of language like **prākṛta, saṉskṛta** etc. is written in **English** script, then the reader would pronounce it in various forms due to the shortage of letters in **English** alphabet and ununiform pronunciation in comparison to **nāgarī** script. For example if a word **पांडव** is written in **English** script, it will be written as **pandava**. But due to lack of correct knowledge, the reader may pronounce it in different forms like **पांदव, पंदाव, पंदवा, पंदावा, पांदवा, पांदावा, पांदाव, पंदव, पांडव , पंडाव, पंडवा, पंडावा, पांडवा, पांडावा, पांडाव, पंडव, पाङ्डव, पाञ्डव, पाण्डव, पान्डव, पाम्डव, पाङ्दव, पाञ्दव, पाण्दव, पान्दव, पाम्दव** etc.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाण्दव, पान्दव, पाम्दव इत्यादि.

संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं में उच्चार शुद्धि पर सबसे ज्यादा जोर दिया गया है. उच्चारण अगर गलत है तो अर्थ बदल जाने की पूरी संभावना रहती है. उदाहरण के रूप में **संस्कृत** भाषा में एक शब्द है **सूरि**. इसका अर्थ है **आचार्य**. अगर सही उच्चारण न करते हुए इसको **सुरी** के रूप में उच्चारण किया जाए तो इसका अर्थ हो जाएगा **देवी**. कितना भारी अर्थ परिवर्तन! इस से समज में आएगा कि उच्चारण शुद्धि का कितना महत्त्व है. अब **pandava** शब्द का सही उच्चारण करना है तो क्या किया जाए? इसके लिए कुछ संकेत बनाने पडेंगे. ये संकेत आपको यहाँ देखने को मिलेंगे. जैसे कि **ड्** के लिए **ḍ**, **अ** और **आ** के लिए **a** और **ā** एवं **ट** वर्गीय **अनुस्वार** [ं] के लिए **ṉ** लिखा गया है. इन संकेतों की सहायता से **पांडव** शब्द **pāṉḍava** के रूप में लिखा जाएगा.

नागरी लिपि में कुछ वर्ण ऐसे हैं जिनके लिए **अंग्रेजी** वर्णमाला में स्वतंत्र रूप से कोई वर्ण नहीं है. ऐसा भी होता है कि **नागरी** लिपि के दो भिन्न वर्णों के लिए **अंग्रेजी** में एक ही वर्ण का प्रयोग होता है जैसे कि **त** और **ट** के लिए **अंग्रेजी** में **t** ही लिखा जाएगा; **अइ** और **ऐ** के लिए अंग्रेजी में **ai** ही लिखा जाता है. इस स्थिति में पाठक शुद्ध उच्चारण के लिए कुछ निर्णय नहीं कर सकता. इन सभी संभवित आपत्तियों को

More emphasis is given to correctness of pronunciation in languages like **saṉskṛta, prākṛta**. If pronunciation is wrong, then there will be complete possibility of change in meaning. For example **सूरि [sūri]** is a word in **saṉskṛta** language. Its meaning is **ācārya** [preceptor]. If it is wrongly pronunced as **सुरी [surī]**, then its meaning becomes **devī** [goddess]. How much change in meaning! By this it is understood how much importance is for correctness of pronunciation. What should be done if the word **pandava** is to be pronunced correctly. For this, some symbols should be used. These symbols [diacritic marks] are seen here. As like **ḍ** for **ड्**; **a** and **ā** for **अ** and **आ** and **ṉ** for ं **[nasal sound of ट [ṭa]** group are used here. With the help of these symbols, the word **पांडव** would be written as **pāṉḍava**.

There are some letters in **nāgarī** script for which there are no independent letters in **English** alphabet. It so happens that only one letter is used in **English** for two different letters of **nāgarī** script; such as for **त्** and **ट्** only **t** is written in **English**, for **अइ** and **ए** only **ai** is written in **English**. In this state, reader cannot decide anything for correct pronunciation. To avoid all these possible unevenness, all attempts are made here. By using the symbols [diacritic marks] given below,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टालने के लिए यहाँ पूर्ण प्रयास किया गया है. यहाँ नीचे दिये गये संकेतों का उपयोग करने पर सभी कठिनाइयाँ दूर हो जाएंगी.

यहाँ दिये गये लिप्यंतरण में क्रमशः **अ - आ, इ - ई, उ - ऊ** के लिए **a - ā, i - ī, u - ū; अइ - ऐ, अउ - औ** के लिए **ai - <u>ai</u>, au - <u>au</u>; र् - ऋ - ॠ, ल् [व्यंजन] - ऌ - ॡ [स्वर]** के लिए **r - ṛ - ṝ, l [व्यंजन] - ḷ - ḹ [स्वर]; म् - ं - ँ [अनुस्वार]** एवं **ह् - ः [विसर्ग]** के लिए **m - <u>m</u> - <u>m̐</u>,** एवं **h - ḥ** और **त् - ट्, द् - ड्** के लिए **t - ṭ, d - ḍ; न् - ङ् - ञ् - ण्** के लिए **<u>n</u> - <u>ṅ</u> - <u>ñ</u> - <u>ṇ</u>** एवं **स् - श् - ष्** के लिए **s - ś - ṣ** का उपोयग किया गया है.

शब्दों के बीच में आनेवाले **अनुस्वारों** [ं] को उनके बाद में आनेवाले **व्यंजनों** के वर्ग के अनुसार विभाजित किया गया है, जैसे कि **क, च, ट, त, प** वर्ग के व्यंजनों के पूर्व आनेवाले **अनुस्वारों** [ं] के लिए क्रमशः **<u>ṅ</u> - <u>ñ</u> - <u>ṇ</u> - <u>n</u> - <u>m</u>; य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्** और **ह्** के पूर्व **अनुस्वार** [ं] होने पर उसका उच्चारण प्रायः **न्** के रूप में होता है और कुछ शब्दों में उसका उच्चारण पृथक पृथक रूप में भी होता है. **नागरी** लिपि के शब्दों में कही कहीं **अनुस्वारों** [ं] का उच्चारण काफी अस्पष्ट होता है. ऐसे **अनुस्वारों** [ं] के लिए अलग संकेत [ॢ] का उपयोग किया गया है उदाहरणार्थ, **वंदुं** शब्द में **दु** के उपर का ं **[अनुस्वार]** अस्पष्ट होने

all objections are averted.

a - ā, i - ī, u - ū for **अ - आ, इ - ई, उ - ऊ; ai - <u>ai</u>, au - <u>au</u>** for **अइ - ऐ, अउ - औ; r - ṛ - ṝ, l [consonant] - ḷ - ḹ [vowel]** for **र् - ऋ - ॠ, ल् [consonant] - ऌ - ॡ [vowel]; m - <u>m</u> - <u>m̐</u>** and **h - ḥ** for **म् - ं - ँ [nasal sound]** and **ह् - ः [soft aspirant sound]; t - ṭ, d - ḍ** for **त् - ट्, द् - ड्; <u>n</u> - <u>ṅ</u> - <u>ñ</u> - <u>ṇ</u>** for **न् - ङ् - ञ् - ण्** and **s - ś - ṣ** for **स् - श् - ष्** respectively are used in transliteration here.

The **nasal sign** [ं] coming in between the words are classified according to the groups of **consonants** coming after them; such as **<u>ṅ-ñ-ṇ-n-m</u>** for the **nasal sign** [ं] coming before the **consonants** of the groups **ka, ca, ṭa, ta, pa** respectively; if the **nasal sign** [ं] is present before **y, r, l, v, s, ś, ṣ** and **h** then its pronunciation will be mostly like **n** and in some words its pronunciation will be in different form also. Some times pronunciation of **nasal sign** [ं] in the words of **nāgarī** script will be unclear. For such nasal sign [ं] a separate symbol [ॢ] is used. For example the word **वंदुं** will be written as **va<u>n</u>du**ॢ in **English** as the ं **[nasel sign]** over **दु** is unclear.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से अंग्रेजी में va<u>n</u>du: के रूप में लिखा जाएगा.

फ़ारसी [पर्श्यन] वर्ण क़, ख़, ग़, ज़, फ़, ड़ और ढ़ के लीप्यंतरण के लीये क्रमशः k̂, k̂h, ĝ, ĵ, ḍ̂, ḍ̂h and p̂h का प्रयोग किया गया है.

उपर्युक्त चिह्नों को प्रयोग कर इस पुस्तक में लिप्यंतरण को सर्वांग संपूर्ण शुद्ध बनाने का पूरा प्रयास किया गया है.

♦ ♦ ♦

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा एवं **अष्ट मंगल फाउण्डेशन, अहमदाबाद** द्वारा प्रकाशित एवं मेरे द्वारा संपादित **हिन्दी-अंग्रेजी में प्रतिक्रमण सूत्रों** की पुस्तकों की पिछली दो आवृत्तियों में [**प्रतिक्रमण सूत्र [हिन्दी-अंग्रेजी]** - प्रथम आवृत्ति, **पंच प्रतिक्रण सूत्र [हिन्दी-अंग्रजी]** - द्वितीय आवृत्ति एवं **देवसिअ-राइअ प्रतिक्रमण सूत्र [हिन्दी-अंग्रेजी]** - प्रथम व द्वितीय आवृत्तियों में] अस्पष्ट उच्चार वाले **अनुस्वार** [ं] के लिये ~ चिह्न का उपयोग किया गया था. लेकिन कम्प्यूटर द्वारा इस चिह्न को इच्छित रूप में प्रयोग न हो सकने के कारण, इस पुस्तक में [ं]चिह्न का उपयोग किया गया है, जिसका पाठक गण विशेष ध्यान रखें. इस एक परिवर्तन के सिवाय, लिप्यंतरण में शेष सभी चिह्न पूर्ववत् रखे गये हैं.

♦ ♦ ♦

For the transliteration of **Persian** characters **क़, ख़, ग़, ज़, ड़** और **ढ़** **k̂, k̂h, ĝ, ĵ, ḍ̂, ḍ̂h** and **p̂h** are used respectively.

All efforts are being made to make the transliteration completely correct in all ways by using the above mentioned symbols [diacratic marks] in this book.

♦ ♦ ♦

Symbol of ~ was used for unclear [silent] pronunciation of **nasal sound** [ं] in two previous editions of **Pratikramaṇa Sūtra** books in **Hindī - English** -- [**Pratikramaṇa Sūtra [Hindī-English]** First edition. **Pa<u>n</u>ca Pratikramaṇa Sūtra [Hindī-English]** Second edition and **Devasia-rāia Pratikramaṇa Sūtra [Hindī-English]** First and Second editions published by **Shree Mahavir Jain Aradhana Kendra, Koba** and **Ashtmangal Foundation, Ahmedabad** and edited by me. But the symbol of [ं] is used in this book as the symbol of [~] could not be used as desired through computer of which the readers shall take a special note. Excluding this one change all other symbols [diacritic marks] are kept as before in transliteration.

♦ ♦ ♦

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिप्यंतरण में अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में कंपोजिंग असुविधाजनक होने से इस पुस्तक में संपूर्ण लिप्यंतरण अंग्रेजी के छोटे अक्षरों में किया गया है. लिप्यंतरण में व्यक्ति वाचक संज्ञा के लिये भी अंग्रेजी के छोटे अक्षरों का ही उपयोग किया गया है.

इन संकेतों की संपूर्ण जानकारी के लिए अलग से वर्णमाला के कोष्ठक दिये गये हैं. साथ ही अंग्रेजी और भारतीय उच्चारण के अनुसार **नागरी** लिपि के अक्षरों का उच्चारण बताने के लिए कुछ अंग्रेजी शब्दों के कोष्ठक भी दिये गये हैं. उसे आप अच्छी तरह पढ़कर और ठीक से समझकर अगर **सूत्र** पढ़ेंगे तो आप परिपूर्ण रूप से सर्वांग शुद्ध उच्चारण कर सकेंगे. यहाँ एक बात ध्यान में रखें कि जो कोई भी **सूत्र** आपको पढ़ना है, उसे उसके पूर्ण जानकार व्यक्ति के मुँह से अच्छी तरह ग्रहण कर लेना चाहिए और बाद में ही **सूत्र** पढ़ने और याद करने का प्रयास करना चाहिए, ताकि **सूत्र** में किसी भी प्रकार की अशुद्धि न रह जाए.

♦ ♦ ♦

सभी **सूत्रादि** का अंग्रेजी में लिप्यंतरण हिन्दी भाषा के साथ दिया गया है. सभी **सूत्रों** के **शब्दार्थ, गाथार्थ, विशेषार्थ** व **सूत्र परिचय हिन्दी** के साथ साथ **अंग्रेजी** भाषा में दिये गये हैं. अंग्रेजी भाषा में जैन शब्दावली अत्यंत सीमित होने के कारण योग्य शब्द का चयन समस्या पूर्ण रहा

As composing of transliteration in English capital letters was unconvenient, complete transliteration is being done in small letters of english in this book. English small letters are being used even for proper nouns in transliteration.

For the complete knowledge of these symbols, separate charts of complete alphabet are given. In addition to this, charts are also given with English words showing the pronunciation of letters of **nāgarī** script according to British and Indian type of pronunciation. You will be able to pronunce completely correct in all ways, if you begin to read **sūtra**s after reading carefully and understand it carefully. Here keep in mind that if any **sūtra** which is to be learnt, should be learnt and memorized only after grasping it well from person having complete knowledge of it so that no error of any type would remain in the **sūtra.**

♦ ♦ ♦

Transliteration in English of all **sūtras** etc. is given along with Hindi language. **Literal meaning [meaning of the words], stanzaic meaning, specific meaning** and **introduction of the sūtra** for all the **sūtra**s are given in **English** along with Hindi language. Due to very limited Jain terminology in English language,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है और बहुत से जैन पारिभाषिक शब्दों को पूरा न्याय नहीं मिल पाया है. कई जगह जैन पारिभाषिक शब्दों का अंग्रेजी में मूल रूप में ही उपयोग किया गया है. ऐसे शब्दों का अर्थ विशेषार्थ में अलग से दिया गया है. **सूत्र** संबंधी अन्य उपयोगी जानकारी को भी विशेषार्थ में समाविष्ट किया गया है.

एक ही **सूत्र** में एक ही शब्द दूसरी बार समान अर्थ में आया हो तो वह शब्द फिर से नहीं दिया है. अर्थ फेर या शब्द में कुछ फेर हो तो वह शब्द दूसरी बार दिया है.

एक ही **सूत्र** में कहीं कहीं हिन्दी में दो अलग अलग शब्दों का अर्थ अंग्रेजी में एक ही शब्द के रूप में अथवा अंग्रेजी में दो अलग अलग शब्दों का अर्थ हिन्दी में एक ही शब्द के रूप में दिया है; कारण ऐसे स्थानों में एक भाषा के अर्थ में शब्द विभाजित नहीं हो सकता है, जब कि दूसरी भाषा के अर्थ में वही शब्द विभाजित हो सकता है.

कहीं कहीं एक ही **सूत्र** में एक ही शब्द का अर्थ दूसरी बार एक भाषा में समान होता है लेकिन दूसरी भाषा में कुछ बदलता है, तो ऐसी जगह में जिस भाषा में अर्थ बदलता है, उसी भाषा में उस शब्द का अर्थ दूसरी बार दिया है और जिस भाषा में अर्थ समान रहता है वहां वह शब्द फिर से नहीं दिया है.

शब्दार्थ में शब्द के साथ दी हुई संख्या **सूत्र** के गाथा की संख्या

selection of proper words was a problem and many Jain terminological words could not get proper justice. In many places, typical Jain words are used as it is in English. Meaning of such words are given in specific meaning separately. Other useful knowledge about the **sūtra** is also included in specific meaning.

If a word has come for second time in the same **sūtra** in similar meaning, that word is not given again. If there is some difference in meaning or word, then that word is given for second time.

In the same **sūtra** in some places, meaning of two separate words in Hindi is given as a single word in English or meaning of two seperate words in English is given as a single word in Hindi; because in such cases, the word can't be divided for meaning in one language where as the same word can be divided for meaning in other language.

In some cases for second time, the meaning of one word in same **sūtra** remains same in one language but changes in other language, then in such cases, the meaning of that word in given for second time only in that language in which the meaning changes; and that word is not given again in the language in which the meaning remains same.

Number given along with the word in **Literal meaning** indicates the stanza

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को दर्शाती है. जैसे **सूत्र नं. २** के **शब्दार्थ** में **१. पंचिंदिय संवरणो** शब्द में **१.** संख्या गाथा की संख्या को दर्शाती है. इसी तरह **विशेषार्थ** में भी मुख्य शब्द के साथ दी हुई संख्या सूत्र के गाथा की संख्या को दर्शाती है. जैसे **सूत्र नं. ३५** के **विशेषार्थ** में '**३. दो प्रकार के परिग्रह :-**' और '**४. अप्रशस्त =**' शब्दों में **३.** और **४.** संख्या गाथा की संख्याओं को दर्शाती है.

◆ ◆ ◆

प्रतिक्रमणादि धर्म क्रिया की विधियों का विस्तृत सरल अंग्रेजी भाषांतर हिंदी भाषा के साथ साथ दिया गया है. हिन्दी-अंग्रेजी भाषा में विस्तृत-सरल परिचय के साथ **प्रतिक्रमणादि** में उपयोगी विविध मुद्राओं के चित्र भी दिये गये हैं. इस तरह यह संपूर्ण पुस्तक द्विभाषा – हिन्दी एवं अंग्रेजी में होने से दोनों में से किसी भी भाषी के लिए उपयोगी होगी.

प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन नामक इस पुस्तक को पाठकों की सुविधा के लिये दो भागों में छपायी गई है. प्रथम भाग में **सामायिक, गुरु वंदन, चैत्य वंदन** व **देव वंदन** संबंधी **नवकार महामंत्र** से **वेयावच्च-गराणं** तक के **१ से २५ सूत्रों** का समावेश किया गया है. दूसरे भाग में **देवसिअ-राइअ प्रतिक्रमण** संबंधी शेष **भगवान्हं आदि वंदन** से **सकलतीर्थ** तक के **२५ से ५१ सूत्रों** का समावेश किया गया है.

number of the **sūtra**. As in the word **1. pañcidiya saṃvaraṇo** in **Literal meaning** of the **sūtra no. 2**, the number **1.** indicates the stanza number. Simillarly number given along with main word in **Specific meaning** indicates stanza number of the **sūtra**. As in the words '**3. Two types of possessiveness :–**' and '**4. apraśasta =**' of **Specific meaning** in **sūtra no. 35**, the numbers **3.** and **4.** indicates stanza number.

◆ ◆ ◆

A detailed and easy English translation of the procedures of religious rites like **pratikramaṇa** is given together with Hindi language. Pictures of various poses useful in **pratikramaṇa** etc. are given along with detailed and easy introduction in Hindi and English language. In this way this book is very useful for people knowing any of both the languages as the complete book is prepared in two languages Hindi and English.

For the convenience of the readers, this book, namely **pratikramaṇa sūtra** with explanation, is printed in two parts. In first part, **namaskāra mahā mantra** to **veyāvacca-garāṇaṃ**, 1 to 25 **sūtras** relating to **sāmāyika, guru vandana, caitya vandana** and **deva vandana** are being included. In second part, **bhagavānhaṃ ādi vandana** to **sakalatīrtha**, 25 to 51, the rest of **sūtras** relating to **devasia** and **rāia pratikramaṇa** are being included.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्येक भाग में संबंधित विधियाँ, आवश्यक **दोहे, चैत्य वंदन** आदि विविध **काव्यों** को सम्मिलित किया गया है. प्रथम / द्वितीय भाग की यह पुस्तक जिज्ञासु पाठक और आराधकों को खूब उपयोगी बने और वे इस पुस्तक के माध्यम से **प्रतिक्रमण** आदि की पावन क्रिया का लाभ लें. यह मेरी शुभ कामना है.

In every part, relating procedures, various necessary **kāvyas** like couplets, **caitya vandana** are being included. It is my only good wish that this book of part -1 / part - 2 be very useful to all curious learners and adorers and they shall take full advantage of the sacred rite of **pratikramaṇa** etc. through this book.

♦ ♦ ♦

प्रतिक्रमण सूत्र के अर्थ आदि को अंग्रेजी में तैयार करने का यह मेरा प्रथम प्रयास है. पुस्तक के संपादन-भाषांतर आदि में पूर्ण रूप से ध्यान रखने पर भी प्रमादवश, कम्प्यूटर दोष या दृष्टि दोष से यदि कोई त्रुटि/अशुद्धि रह गई हो एवं जिनाज्ञा के विरुद्ध कुछ भी लिखने में आया हो उसके लिए अंतःकरण से **मिच्छा मि दुक्कडं**. साथ ही पाठकों से निवेदन है कि वे अशुद्धि को सुधारकर पढ़ें एवं हमें अशुद्धि से अवगत कराएँ.

This is my first effort to prepare the meanings etc. of **pratikramaṇa sūtras**. Though full attention is kept on editing-translation etc.; if any short coming/error has remained by computer mistake or by over-sight due to negligence; and if any thing is written against **jināj̃ñā**, for that heartily **micchā mi dukkaḍam**. Besides readers are requested to read correction the errors if any and also to inform us of those errors.

♦ ♦ ♦

परम उपकारी स्वर्गीय **गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री कैलाससागर सूरीश्वरजी महाराज साहेब** ने इस कार्य में सफलता के लिए आशीर्वाद प्रदान कर प्रोत्साहित किया था. उसके लिए मैं उनका सदा ऋणी रहूँगा.

परम उपकारी **आचार्यदेव श्री कल्याणसागर सूरीश्वरजी महाराज साहेब** ने भी इस कार्य में आशीर्वाद प्रदान किया है.

Most benevolent late **gacchādhipati ācāryadeva śrī kailāsasāgara sūrīśvarajī mahārāja sāheba** had encouraged me by bestowing the blessings for success of this book. For that I will be always indebted to him.

Most benevolent **ācāryadeva śrī kalyāṇasāgara sūrīśvarajī mahārāja sāheba** has also bestowed the blessings.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परम पूज्य सम्मेत शिखर तीर्थोद्धारक, प्रवचन प्रभावक आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब की कृपा दृष्टि से यह पुस्तक तैयार हो सकी है. इनका भी मैं सदा ऋणी रहूँगा.

मैं अपने विद्वान **गुरुदेव परम पूज्य उपाध्याय श्री धरणेंद्रसागरजी महाराज साहेब** को भी नहीं भूल सकता हूँ.

प. पू. स्वर्गस्थ **पंन्यास प्रवर श्री सूर्यसागरजी गणि महाराज साहेब** के विद्वान शिष्यरत्न **मुनिराज श्री मित्रानंद सागरजी महाराज साहेब** का भी आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के हिंदी भाग का प्रूफ-रिडिंग कर इस कार्य में पूर्ण सहयोग दिया है.

इस पुस्तक के अंग्रेजी विभाग की भाषा और व्याकरण शुद्धि हेतु **स्व. प्रो. श्री रमणभाई जे. मझमुदार** के सहयोग के लिये मैं उनका आभारी हूं.

प्रस्तुत पुस्तक संबंधी भिन्न-भिन्न समुदायवर्ति **पूज्य आचार्य भगवंत** आदि के अभिप्राय व आशीर्वाद प्राप्त हुए हैं. तदर्थ उन सबका मैं ऋणि हूं.

प्रस्तुत पुस्तक में **प्रतिक्रमण** के **सूत्र**, उनके **शब्दार्थ**, **गाथार्थ**, **विशेषार्थ** एवं **सूत्र परिचय** को तैयार करने में मुख्यतः **पू. पंन्यास श्री भद्रंकर विजयजी गणि** एवं **मुनि श्री कल्याणप्रभ विजयजी** द्वारा संपादित **जैन साहित्य विकास मंडल, मुंबई** द्वारा प्रकाशित **श्री**

This book could be finished only with the grace of most reverent **Sammeta Sikhara tīrtha** saviour, impressive discourser **ācāryadeva śrī padmasāgara sūrīśvarajī mahārāja sāheba** I will be indebted to him also.

I can not forget my learned **Gurudeva upādhyāya śrī dharṇendra sāgarajī mahārāja sāheba**

I am also grateful to most reverent learned **munirāja śrī mitrānanda sāgarajī mahārāja sāheba**, a desciple of late **pannyāsa pravara śrī sūry sāgarajī gaṇi mahārāja sāheba** who has given me full co-operation in proof-reading of Hindi print of this book.

I am grateful to **late Prof. Sri Ramanbhai J. Majmudar** for his co-operation in making linguistic and grammatical corrections of English part of this book.

Opinions and blessings regarding the present book are received from **venerable ācārya bhagavantas** etc. of various groups. For that, I am greatful to all of them.

sūtras of the **pratikramaṇa**, their **literal meanings**, **stanzaic meanings**, **specific meanings** and **introduction of the sūtras** are prepared mainly on the basis of **śrī pratikramaṇa sūtra prabodha ṭīkā, Part - 1, 2** edited by venerable **pannyāsa śrī bhadraṅkara vijayajī gaṇi** and **muni śrī kalyāṇaprabha vijayajī**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिक्रमण सूत्र प्रबोध टीका, भाग- १,२ का आधार लिया गया है.

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा स्थित **आचार्यश्री कैलास सागरसूरि ज्ञान मंदिर के कम्प्यूटर विभाग में प. पू. विद्वान मुनिराज श्रीअजय सागरजी महाराज साहेब** एवं **प. पू. विद्वान मुनिराज श्रीअरविंद सागरजी महाराज साहेब** के मार्गदर्शन व प्रयासों से एवं कर्मचारी गण- प्रोग्रामर **श्री प्रीतेनकुमार शाह**, कंपोजर - **श्री अमीतकुमार शाह**, **जिज्ञेशकुमार शाह** एवं **केतनकुमार शाह** के विशेष प्रयासों से इस पुस्तक का संपूर्ण कंपोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा संभव हो सका है.

अंत में इस पुस्तक को तैयार करने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग देनेवालों का भी मैं आभारी हूँ.

पंडित श्री वीरविजयजी जैन उपाश्रय, निर्वाणसागर.
भट्ठी की बारी, गांधी रोड पुल के नीचे, सं. २०५३ का. शु. ५
अहमदाबाद दि. १५-११-१९९६

published by **Jain Sahitya Vikas Mandal, Mumbai.**

Under the guidance and with the efforts of learned **munirāja śrī ajaya sāgarajī mahārāja sāheba** and learned **munirāja śrī aravinda sāgarajī mahārāja sāheba** and with the special efforts of programmer **śrī prītenakumāra śāha**, Composers **śrī amītakumāra śāha**, **jijñeśakumāra śāha** and **ketanakumāra śāha**, the staff members of computer section of **ācārya śrī kailāsa sāgara sūri jñāna mandira** situated at **śrī mahāvīra jaina ārādhanā kendra, kobā,** composing of this complete book was possible through computer.

Finally I am grateful to all those who have directly or indirectly assisted me in publishing this book.

Pandit Sri Virvijayji Jain Upashrya, nirvāṇa sāgara.
Bhatti ki bari, Below Gandhi road bridge, Sam. 2053, Kartik Shukla 5
Ahmedabad. Dt. 15-11-1996

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुद्राओं का परिचय
Introduction of postures

१. स्थापनाचार्यजी को स्थापन करने की मुद्रा [चि. १].

1. Pose of consecrating the sthāpanācāryajī [Pic.1].

चि. १

Pic.1

२. स्थापनाचार्यजी को उत्थापन करने की मुद्रा [चि. २].

2. Pose of deconsecrating the sthāpanācāryajī [Pic. 2].

चि. २

Pic. 2

३. प्रतिक्रमण में बैठने की मुद्रा [चि. ३].

3. Posture of sitting in pratikramaṇa [Pic. 3].

चि. ३

Pic. 3

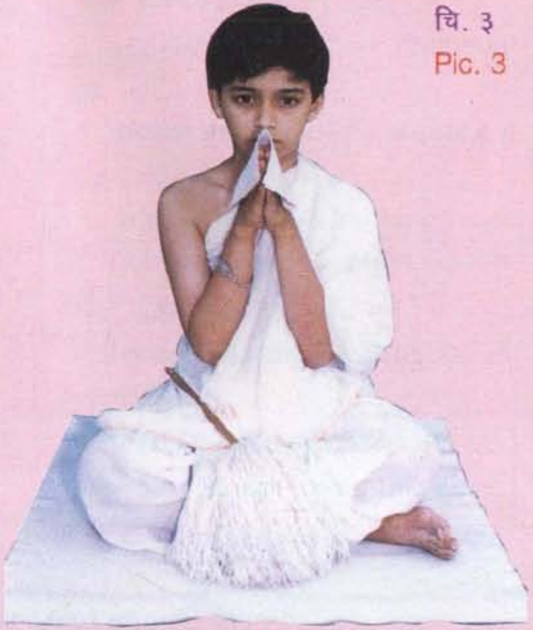

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

चि. ४
Pic. 4

४. प्रतिक्रमण में खड़े रहने की मुद्रा [चि. ४].

4. Posture of standing in pratikramaṇa [Pic. 4].

५. खमासमण [पंचांग प्रणिपात] मुद्रा

5. Posture of khamāsamaṇa [pañcāṅga praṇipāta]

चि. ५
Pic. 5

[पांच अंग = दो हाथ, दो घुटने एवं मस्तक.]
[Five limbs = 2 hands, 2 knees and head.]

१. **इच्छामि खमासमणो** ! से **निसीहियाए** तक खड़े होकर बोलें [चि. ४].

1. Recite **icchāmi khamāsamaṇo**! to **nisīhiyāe** in standing pose [Pic. 4].

२. **मत्थएण वंदामि** कहते हुए **खमासमण** दें [चि ५].

2. Reciting **matthaeṇa vandāmi**, give **khamāsamaṇa** [Pic. 5].

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. अब्भुट्ठिओमि खमाने की मुद्रा

6. Posture of bowing abbhutthiomi

चि. ६
Pic. 6

१. इच्छाकारेण से खामेमि देवसिअं तक खड़े होकर कहें [चि. ४].

1. Recite icchākāreṇa to khāmemi devasiam in standing pose [Pic. 4].

२. जं किंचि से मिच्छा मि दुक्कडं तक खमाते हुए कहें [चि. ६].

2. Bowing, recite jam kiñci to micchā mi dukkaḍam [Pic. 6].

७. काउस्सग्ग / कायोत्सर्ग / जिन मुद्रा

7. kāussagga / kāyotsarga / jina mudrā

अप्पाणं वोसिरामि कहने के बाद, नासिका के अग्र भाग पर दृष्टि स्थिर करते हुए, पैर के दोनों अंगूठों के बीच चार अंगुल का एवं एड़ियों के बीच कुछ कम [तीन अंगुल से कुछ ज्यादा] अंतर रखकर, शरीर को स्थिर रखें [चि. ७].

After saying appāṇam vosirāmi, making the sight unwavering on the tip of the nose, keeping the space of four fingers in between the toes and little less [little more than three fingers] in between the heels of the legs, keep the body firm [Pic. 7].

चि. ७
Pic. 7

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. योग मुद्रा

8. yoga mudrā

चैत्य वंदन, जं किंचि, नमुत्थु णं, नमोर्हत्, उवसग्ग-हरं एवं स्तवन बोलने की मुद्रा [चि. ८,९,१०].

Posture of reciting caitya vandana, jam kiñci, namutthu ṇam, namorhat, uvassagga-haram and stavana [Pic. 8,9,10].

चि. ८

Pic. 8

चि. ९

Pic. 9

चि. १०

Pic. 10

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. मुक्ता-शुक्ति मुद्रा

9. muktā-śukti mudrā

१. **जावंति चेइयाइं, जावंत के वि एवं जय वीयराय** [आभवमखंडा तक] बोलने की मुद्रा [चि. ११,१२,१३].

1. Posture of reciting **jāvanti ceiyāim, jāvanta ke vi and jaya vīyarāya** [upto **ābhavamakhaṇḍā**] [Pic. 11,12,13].

२. **वारिज्जइ जइ वि से जैनं जयति शासनम्** तक **योग मुद्रा** में बोलें [चि. ८,९,१०].

2. Utter **vārijjai jai vi** to **jainam jayati śāsanam** in **yoga mudrā** [Pic. 8,9,10].

चि. ११
Pic. 11

चि. १२
Pic. 12

चि. १३
Pic. 13

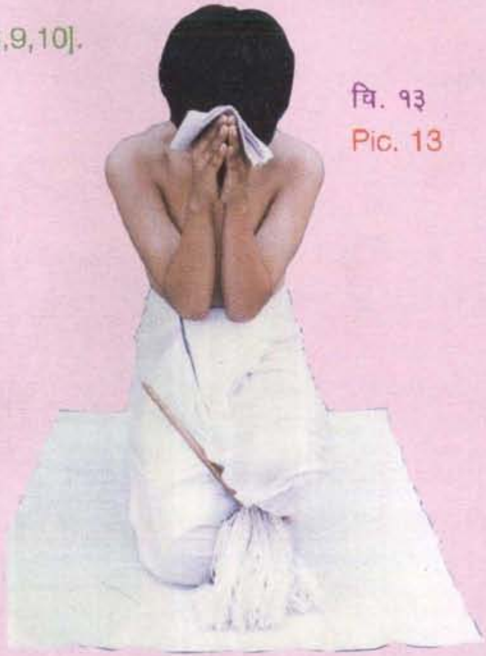

आराधना केन्द्र, गांधीनगर, पिन—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चि. १४

Pic. 14

चि. १५

Pic. 15

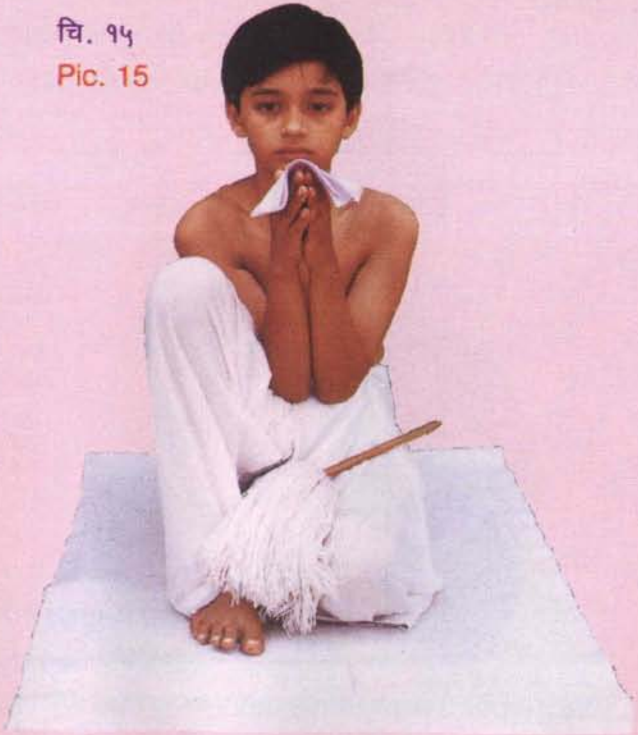

१०. वीरासन

10. vīrāsana

१. **वंदित्तु सूत्र** [गाथा ४३ तक] बोलने की मुद्रा [चि. १४,१५].

1. Posture of uttering **vandittu sūtra** [upto stanza 43] [Pic. 14,15].

२. शेष **सूत्र** खड़े होकर बोलें [चि. ३].

2. Recite rest of the **sūtra** in standing pose [Pic. 3].

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चि. १८
Pic. 18

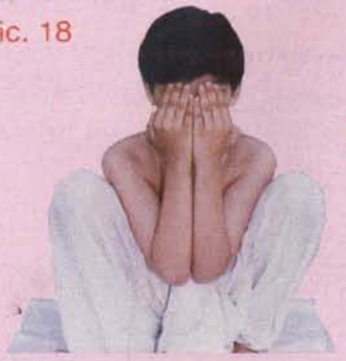

११. वंदना [द्वादशावर्त वंदन] की मुद्राएँ
11. Posture of vandanā [dvādaśāvarta vandana]

हो यं य भे णि भे

<·······························

ho yam ya bhe ṇi bhe

↑ ↑ ↑ ↑ ↑ ↑
| | | | | |
↑ ↑ ↑ ↑ ↑ ↑
↑ ↑ ↑ त्ता व च
| | | ·······························>
↑ ↑ ↑ ttā va ca
| | | | | |
↑ ↑ ↑ ↑ ↑ ↑
| | | | | |
↑ ↑ ↑ ↑ ↑ ↑

अ का का ज ज ज्जं

<·······························

a kā kā ja ja jjaṁ

चि. १६
Pic. 16

चि. १७
Pic. 17

१. इच्छामि खमासमणो से मे मिउग्गहं तक खड़े होकर बोलें [चि. ३].

1. Recite **icchāmi khamāsamaṇo** to **me miuggaham** in standing pose [Pic. 3].

२. **निसीहि** कहते हुए **प्रमार्जन** कर, कुछ आगे बढ़कर एवं पाँवों पर बैठकर

↑ हो यं य भे णि भे ↑
| त्ता व च |
↑ अ का का ज ज ज्जं ↑

इन शब्दों का उच्चारण करते समय हाथ की विविध मुद्राएँ [चि. १६,१७,१८].

2. Various poses of hands while uttering the words--

↑ ho yam ya bhe ṇi bhe ↑
| ttā va ca |
↑ a kā kā ja ja jjaṁ ↑

after saying **nisihi**, moving a little farward, doing the **pramārjana** and sitting on the legs [Pic. 16,17,18].

३. **संफासं** शब्द कहते हुए **चरवले** पर हाथ रखकर, **खमणिज्जो** और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खामेमि शब्द बोलते हुए शरीर को झुकाकर, **यथाजात मुद्रा** में नमन करें [चि. १९].

3. Keeping the hands over **caravalā** while uttering the word **samphāsam**, bow in **yathājāta mudrā** bending the body while saying the words **khamaṇijjo** and **khāmemi** [Pic. 19].

चि. १९

Pic. 19

१२. मुहपत्ति का पडिलेहण
12. paḍilehaṇa of the muhapatti

चि. २०

Pic. 20

पडिलेहण के बोलों को बोलते हुए चित्रों में दर्शाये अनुसार **मुहपत्ति** एवं शरीर का **पडिलेहण [प्रतिलेखन]** करें [चि. २० से ४०].

Perform the **paḍilehaṇa [pratilekhana]** of the **muhapatti** and the body uttering the words of **paḍilehaṇa** as shown in the pictures [Pic. 20 to 40].

१. **मुहपत्ति** खोलकर, दोनों हाथ में पकड़ते हुए, दृष्टि **पडिलेहण** कर, **सूत्र** शब्द बोलें [चि. २०].

1. Opening the **muhapatti**, holding in both the hands, performing the **paḍilehaṇa** by sight, say the word **sūtra** [Pic. 20].

फिर **मुहपत्ति** को दूसरी ओर पलटकर, दृष्टि **पडिलेहण** कर, **अर्थ** शब्द बोलें [चि. २०].

Then turning over the **muhapatti** to other side, performing the **paḍilehaṇa** by sight, say the word **artha** [Pic. 20].

फिर तीसरी बार **मुहपत्ति** को पलटकर, दृष्टि **पडिलेहण** कर,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्त्व करी सद्दहुं पद कहें [चि. २०].

Turning over the **muhapatti** to the other side third time again, performing the **paḍilehaṇa** by sight, say the phrase **tattva karī saddhuṃ** [Pic. 20].

२. फिर **सम्यक्त्व-मोहनीय, मिश्र-मोहनीय, मिथ्यात्व-मोहनीय परिहरुं** कहते हुए **मुहपत्ति** के एक किनारे को हिलायें [चि. २०].

2. Then shake one corner of the **muhapatti** saying **samyaktva-mohanīya, miśra-mohanīya, mithyātva-mohanīya pariharuṃ** [Pic. 20].

इसी तरह **मुहपत्ति** के दूसरे किनारे को हिलाते हुए **काम-राग, स्नेह-राग, दृष्टि-राग, परिहरुं** कहें [चि. २०].

Similarly say **kāma-rāga, sneha-rāga, dṛṣṭi-rāga, pariharuṃ** shaking the other corner of the **muhapatti** [Pic. 20].

३. फिर **मुहपत्ति** को बायें हाथ पर रखकर [चि. २१] –,

3. Then keeping the **muhapatti** on left hand [Pic. 21] --,

४. **मुहपत्ति** को दाहिने हाथ की अंगुलियों के बीच पकड़कर, **मुहपत्ति** को बायें हाथ की हथेली पर से कोहनी की ओर ले जाते हुए [**मुहपत्ति** को हाथ पर स्पर्श कराये बिना] **सुदेव, सुगुरु, सुधर्म आदरुं** कहें [चि. २२].

4. Holding **muhapatti** in between the fingers of right hand, moving the **muhapatti** over from the palm towards elbow of left hand [without touching **muhapatti** over the hand], say **sudeva, suguru, sudharma ādaruṃ** [Pic. 22].

चि. २१
Pic. 21

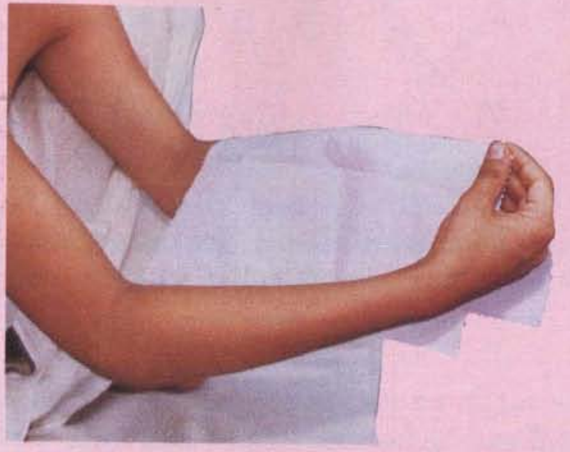

चि. २२
Pic. 22

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

५. फिर **मुहपत्ति** को कोहनी से हथेली की ओर लाते हुए [मुहपत्ति को हाथ का स्पर्श कराते हुए] **कुदेव, कुगुरु, कुधर्म परिहरुं** कहें [चि. २३].

5. Then moving the **muhapatti** from the elbow towards the palm [touching muhapatti to the hand], say **kudeva, kuguru, kudharma pariharuṁ** [Pic. 23].

इसी तरह **ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदरुं; ज्ञान-विराधना, दर्शन-विराधना, चारित्र-विराधना परिहरुं** एवं **मन-गुप्ति, वचन-गुप्ति, काय-गुप्ति आदरुं; मन-दंड, वचन-दंड, काय-दंड परिहरुं** कहें [चि. २२,२३].

Similarly say **jñāna, darśana, cāritra ādaruṁ; jñāna-virādhanā, darśana-virādhanā, cāritra-virādhanā pariharuṁ**; and **mana-gupti, vacana-gupti, kāya-gupti ādaruṁ; mana-daṇḍa, vacana-daṇḍa, kāya-daṇḍa pariharuṁ** [Pic. 22,23].

६. फिर बायीं हथेली के पिछले भाग पर **मुहपत्ति** फिराते हुए **हास्य, रति, अरति परिहरुं** कहें [चि. २४,२५].

6. Then moving the **muhapatti** on back side of left palm, say **hāsya, rati, arati pariharuṁ** [Pic. 24,25].

चि. २३
Pic. 23

चि. २४
Pic. 24

चि. २५
Pic. 25

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चि. २६
Pic. 26

७. इसी तरह **मुहपत्ति** को बायें हाथ की अंगुलियों में पकड़कर, दाहिनी हथेली के पिछले भाग पर **मुहपत्ति** फिराते हुए **भय, शोक, जुगुप्सा परिहरुं** कहें [चि. २६,२७].

7. Similarly holding the **muhapatti** in between the fingers of left hand, moving the **muhapatti** on back side of right palm, say **bhaya, śoka, jugupsā pariharuṃ** [Pic. 26,27].

चि. २७
Pic. 27

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. फिर **मुहपत्ति** के दोनों किनारों को दोनों हाथ में पकड़कर, ललाट का **पडिलेहण कृष्ण-लेश्या** कहते हुए बीचमें, **नील-लेश्या** कहते हुए दाहिनी तरफ एवं **कापोत-लेश्या परिहरुं** कहते हुए बायीं तरफ करें [चि. २८,२९,३०].

8. Holding two comers of **muhapatti** in both the hands, perform **paḍilehaṇa** of fore-head in the centre saying **kṛṣṇa-leśyā**, in right side saying **nīla-leśyā**, and in left side saying **kapota-leśyā pariharuṃ** [Pic. 28,29,30].

चि. २८
Pic. 28

चि. २९
Pic. 29

चि. ३०
Pic. 30

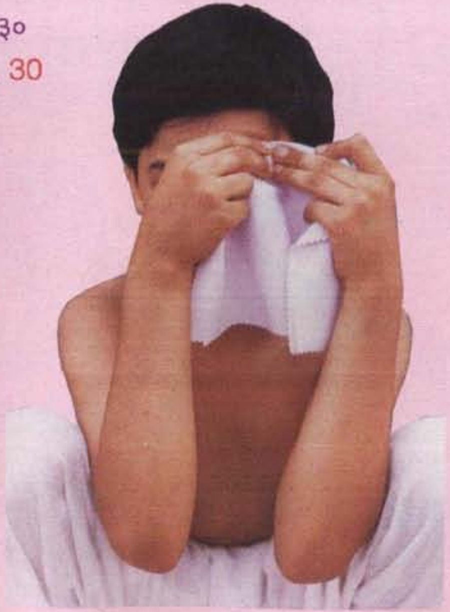

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. फिर **मुहपत्ति** के दोनों किनारों को दोनों हाथ में पकड़कर, ओठ का **पडिलेहण रस-गारव** कहते हुए बीचमें, **रिद्धि-गारव** कहते हुए दाहिनी तरफ एवं **शाता-गारव परिहरुं** कहते हुए बायीं तरफ करें [चि. ३१,३२,३३].

9. Holding two corners of the **muhapatti** in both hands, perform the **paḍilehaṇa** of lips in the centre saying **rasa-gārava**, in right side saying **riddhi-gārava**, and in left side saying **śātā-gārava pariharuṃ** [Pic. 31,32,33].

चि. ३१

Pic. 31

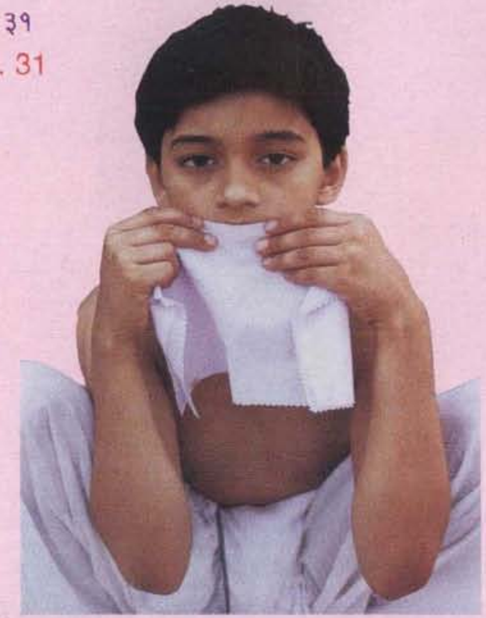

चि. ३२

Pic. 32

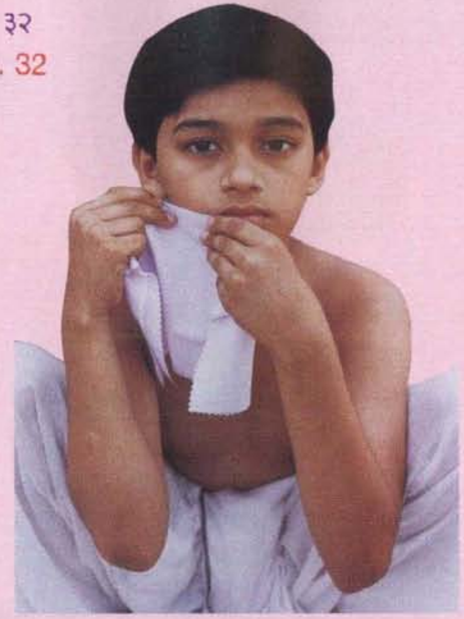

चि. ३३

Pic. 33

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. फिर **मुहपत्ति** के दोनों किनारों को दोनों हाथ में पकड़कर, छाती का **पडिलेहण माया-शल्य** कहते हुए बीचमें, **नियाण-शल्य** कहते हुए दाहिनी तरफ एवं **मिथ्यात्व-शल्य परिहरुं** कहते हुए बायीं तरफ करें [चि. ३४,३५,३६].

10. Holding two corners of the **muhapatti** in both hands, perform the **paḍilehaṇa** of chest in the centre saying **māyā śalya**, in right side saying **niyāṇa śalya**, and in left side saying **mithyātva śalya pariharuṃ** [Pic. 34,35,36].

चि. ३४
Pic. 34

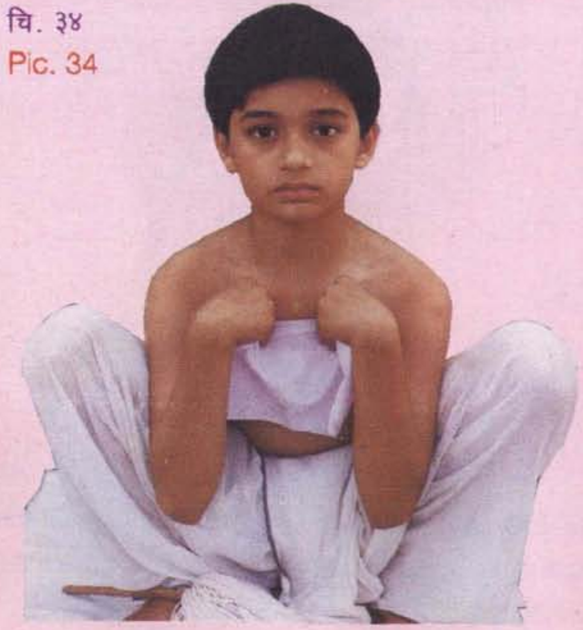

चि. ३५
Pic. 35

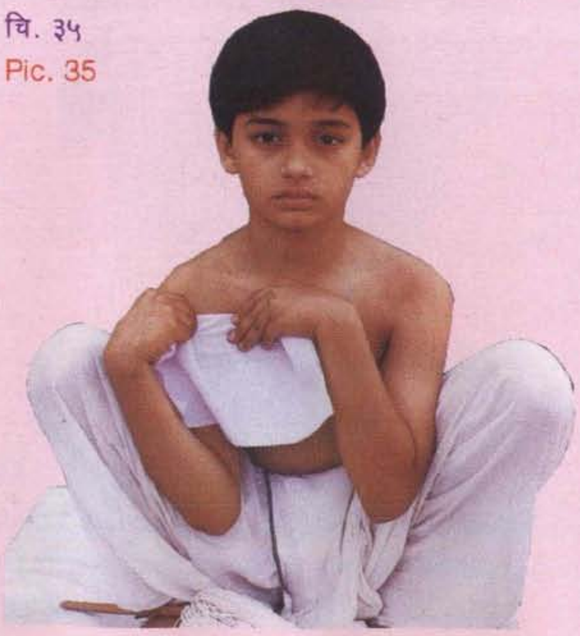

चि. ३६
Pic. 36

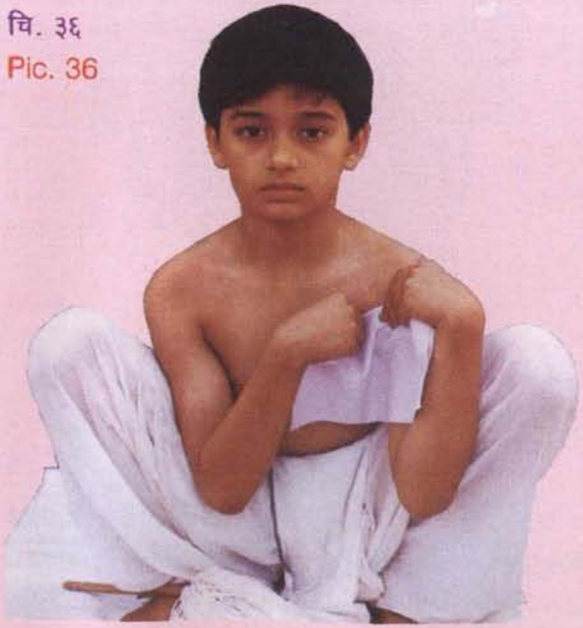

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

चि. ३७
Pic. 37

११. फिर **क्रोध, मान परिहरुं** कहते हुए दाहिने कंधे का **पडिलेहण** करें [चि. ३७].

11. Then perform the **paḍilehaṇa** of right shoulder saying **krodha, māna pariharuṃ** [Pic. 37].

१२. फिर **माया, लोभ परिहरुं** कहते हुए बायें कंधे का **पडिलेहण** करें [चि. ३८].

12. Then perform the **paḍilehaṇa** of left shoulder saying **māyā, lobha pariharuṃ** [Pic. 38].

चि. ३८
Pic. 38

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चि. ३९
Pic. 39

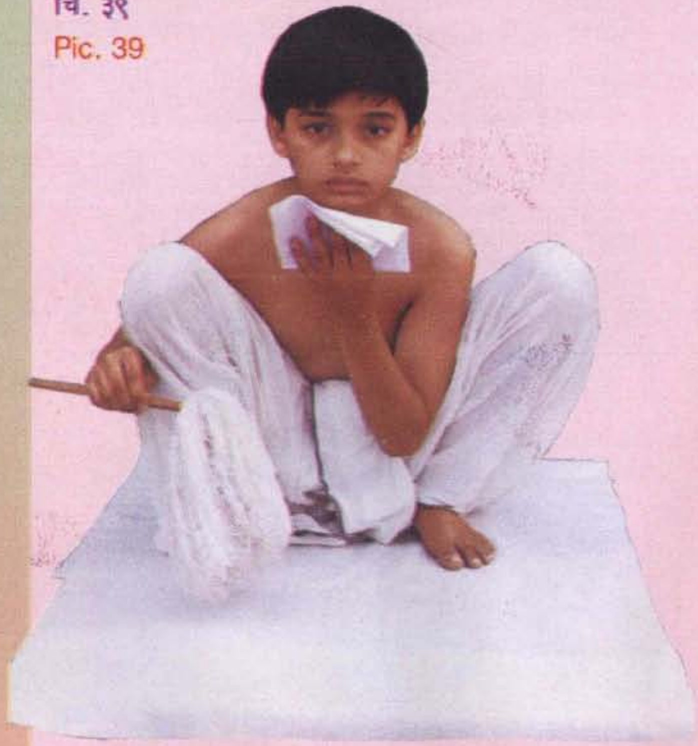

१३. **पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय की रक्षा करुं** कहते हुए दायें पांव का **पडिलेहण** चरवले से करें [चि. ३९].

13. Then perform the **paḍilehaṇa** of right leg saying **pṛthvīkāya, apkāya, teukāya kī rakṣā karuṃ** with **caravalā** [Pic. 39].

१४. फिर **वाउकाय, वनस्पति-काय, त्रसकाय की जयणा करुं** कहते हुए बायें पांव का **पडिलेहण** चरवले से करें [चि. ४०].

14. Then perform the **paḍilehaṇa** of left leg saying **vāukāya, vanaspati-kāya, trasakāya kī rakṣā karuṃ** with **caravalā** [Pic. 40].

[सूचना :- **पडिलेहण** एवं चित्रों की विशेष जानकारी गुरु द्वारा प्राप्त करें.]

[NOTE :-- Have specific knowledge of **paḍilehaṇa** and pictures from the preceptor.]

चि. ४०
Pic. 40

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्णमाला का लिप्यंतरण / Transliteration of alphabet

[स्वर व उनके चिह्न / Vowels and their signs]

	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	ॄ
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
a	ā	i	ī	u	ū	ṛ	ṝ

[संध्याक्षर / Joint vowels]

े	ै	ो	ौ
ए	ऐ	ओ	औ
e	ai	o	au

[अनुस्वार / Nasal sounds] [ं]

ं	ं	ं	ं	ं	ं	ं
अं	ं	ं	ं	ं	ं	ं
am	ṅ	ñ	ṇ	n	m	ं

[व्यंजन / Consonants]

क	ख	ग	घ	ङ		च	छ	ज	झ	ञ		ट	ठ	ड	ढ	ण		ँ	ॐ
ka	kha	ga	gha	ṅa		ca	cha	ja	jha	ña		ṭa	ṭha	ḍa	ḍha	ṇa		m̐	om̐
त	थ	द	ध	न		प	फ	ब	भ	म		य	र	ल	व				
ta	tha	da	dha	na		pa	pha	ba	bha	ma		ya	ra	la	va				
श	ष	स	ह																
śa	ṣa	sa	ha																

[जोड़ाक्षर / Joint letters]

क्ष	त्र	ज्ञ
kṣa	tra	jña

[फ़ारसी वर्ण / Persian letters]

क़	ख़	ग़	ज़	फ़	ड़	ढ़
k̂a	k̂ha	ĝa	ĵa	p̂ha	ḍ̂a	ḍ̂ha

[स्वर / Vowels]

ॢ	ॣ
लृ	ॡ
ḷ	ḹ

[Soft aspirant sound / विसर्ग]

ः
अः
aḥ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2A

वर्णमाला का लिप्यंतरण — Transliteration of alphabet

स्वर → Vowels	अ a	आ ā	इ i	ई ī	उ u	ऊ ū	ऋ ṛ	ए e	ऐ ai	ओ o	औ au	अं am	अः aḥ
स्वर के चिह्न → Signs of vowels		◌ा	ि◌	◌ी	◌ु	◌ू	◌ृ	◌े	◌ै	◌ो	◌ौ	◌ं	◌ः
व्यंजन ↓ Consonants													
क्(क्) k	क ka	का kā	कि ki	की kī	कु ku	कू kū	कृ kṛ	के ke	कै kai	को ko	कौ kau	कं kam	कः kaḥ
ख्(ख) kh	ख kha	खा khā	खि khi	खी khī	खु khu	खू khū	खृ khṛ	खे khe	खै khai	खो kho	खौ khau	खं kham	खः khaḥ
ग्(ग) g	ग ga	गा gā	गि gi	गी gī	गु gu	गू gū	गृ gṛ	गे ge	गै gai	गो go	गौ gau	गं gam	गः gaḥ
घ्(घ) gh	घ gha	घा ghā	घि ghi	घी ghī	घु ghu	घू ghū	घृ ghṛ	घे ghe	घै ghai	घो gho	घौ ghau	घं gham	घः ghaḥ
ङ् ṅ	ङ ṅa	ङा ṅā	ङि ṅi	ङी ṅī	ङु ṅu	ङू ṅū	ङृ ṅṛ	ङे ṅe	ङै ṅai	ङो ṅo	ङौ ṅau	ङं ṅam	ङः ṅaḥ
च्(च) c	च ca	चा cā	चि ci	ची cī	चु cu	चू cū	चृ cṛ	चे ce	चै cai	चो co	चौ cau	चं cam	चः caḥ
छ् ch	छ cha	छा chā	छि chi	छी chī	छु chu	छू chū	छृ chṛ	छे che	छै chai	छो cho	छौ chau	छं cham	छः chaḥ
ज्(ज) j	ज ja	जा jā	जि ji	जी jī	जु ju	जू jū	जृ jṛ	जे je	जै jai	जो jo	जौ jau	जं jam	जः jaḥ
झ्(झ) jh	झ jha	झा jhā	झि jhi	झी jhī	झु jhu	झू jhū	झृ jhṛ	झे jhe	झै jhai	झो jho	झौ jhau	झं jham	झः jhaḥ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ञ्(ञ) ñ	ञ ña	ञा ñā	ञि ñi	ञी ñī	ञु ñu	ञू ñū	ञृ ñṛ	ञे ñe	ञै ñai	ञो ño	ञौ ñau	ञं ñam	ञः ñaḥ
ट् ṭ	ट ṭa	टा ṭā	टि ṭi	टी ṭī	टु ṭu	टू ṭū	टृ ṭṛ	टे ṭe	टै ṭai	टो ṭo	टौ ṭau	टं ṭam	टः ṭaḥ
ठ् ṭh	ठ ṭha	ठा ṭhā	ठि ṭhi	ठी ṭhī	ठु ṭhu	ठू ṭhū	ठृ ṭhṛ	ठे ṭhe	ठै ṭhai	ठो ṭho	ठौ ṭhau	ठं ṭham	ठः ṭhaḥ
ड् ḍ	ड ḍa	डा ḍā	डि ḍi	डी ḍī	डु ḍu	डू ḍū	डृ ḍṛ	डे ḍe	डै ḍai	डो ḍo	डौ ḍau	डं ḍam	डः ḍaḥ
ढ् ḍh	ढ ḍha	ढा ḍhā	ढि ḍhi	ढी ḍhī	ढु ḍhu	ढू ḍhū	ढृ ḍhṛ	ढे ḍhe	ढै ḍhai	ढो ḍho	ढौ ḍhau	ढं ḍham	ढः ḍhaḥ
ण्(ण) ṇ	ण ṇa	णा ṇā	णि ṇi	णी ṇī	णु ṇu	णू ṇū	णृ ṇṛ	णे ṇe	णै ṇai	णो ṇo	णौ ṇau	णं ṇam	णः ṇaḥ
त्(त) t	त ta	ता tā	ति ti	ती tī	तु tu	तू tū	तृ tṛ	ते te	तै tai	तो to	तौ tau	तं tam	तः taḥ
थ्(थ) th	थ tha	था thā	थि thi	थी thī	थु thu	थू thū	थृ thṛ	थे the	थै thai	थो tho	थौ thau	थं tham	थः thaḥ
द् d	द da	दा dā	दि di	दी dī	दु du	दू dū	दृ dṛ	दे de	दै dai	दो do	दौ dau	दं dam	दः daḥ
ध्(ध) dh	ध dha	धा dhā	धि dhi	धी dhī	धु dhu	धू dhū	धृ dhṛ	धे dhe	धै dhai	धो dho	धौ dhau	धं dham	धः dhaḥ
न्(न) n	न na	ना nā	नि ni	नी nī	नु nu	नू nū	नृ nṛ	ने ne	नै nai	नो no	नौ nau	नं nam	नः naḥ
प्(प) p	प pa	पा pā	पि pi	पी pī	पु pu	पू pū	पृ pṛ	पे pe	पै pai	पो po	पौ pau	पं pam	पः paḥ
फ्(फ)ph	फ pha	फा phā	फि phi	फी phī	फु phu	फू phū	फृ phṛ	फे phe	फै phai	फो pho	फौ phau	फं pham	फः phaḥ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्(ब) b	ब ba	बा bā	बि bi	बी bī	बु bu	बू bū	बृ bṛ	बे be	बै bai	बो bo	बौ bau	बं bam	बः baḥ
भ्(भ) bh	भ bha	भा bhā	भि bhi	भी bhī	भु bhu	भू bhū	भृ bhṛ	भे bhe	भै bhai	भो bho	भौ bhau	भं bham	भः bhaḥ
म्(म) m	म ma	मा mā	मि mi	मी mī	मु mu	मू mū	मृ mṛ	मे me	मै mai	मो mo	मौ mau	मं mam	मः maḥ
य्(य) y	य ya	या yā	यि yi	यी yī	यु yu	यू yū	यृ yṛ	ये ye	यै yai	यो yo	यौ yau	यं yam	यः yaḥ
र् r	र ra	रा rā	रि ri	री rī	रु ru	रू rū	रृ rṛ	रे re	रै rai	रो ro	रौ rau	रं ram	रः raḥ
ल्(ल) l	ल la	ला lā	लि li	ली lī	लु lu	लू lū	लृ lṛ	ले le	लै lai	लो lo	लौ lau	लं lam	लः laḥ
व्(व) v	व va	वा vā	वि vi	वी vī	वु vu	वू vū	वृ vṛ	वे ve	वै vai	वो vo	वौ vau	वं vam	वः vaḥ
श्(श)ś	श śa	शा śā	शि śi	शी śī	शु śu	शू śū	शृ śṛ	शे śe	शै śai	शो śo	शौ śau	शं śam	शः śaḥ
ष्(ष) ṣ	ष ṣa	षा ṣā	षि ṣi	षी ṣī	षु ṣu	षू ṣū	षृ ṣṛ	षे ṣe	षै ṣai	षो ṣo	षौ ṣau	षं ṣam	षः ṣaḥ
स्(स)s	स sa	सा sā	सि si	सी sī	सु su	सू sū	सृ sṛ	से se	सै sai	सो so	सौ sau	सं sam	सः saḥ
ह् h	ह ha	हा hā	हि hi	ही hī	हु hu	हू hū	हृ hṛ	हे he	है hai	हो ho	हौ hau	हं ham	हः haḥ

क्ष = kṣa ; त्र = tra ; ज्ञ = jña ; ॐ = om̐ ; ं/ँ = ṅ/ñ/ṇ/n/m/ं/m̐ ; लृ = ḷ, लॄ = ḹ ; ं = अस्पष्ट उच्चारण वाले अनुस्वार (ं/ँ) का चिन्ह.

फारसी [पर्श्यन्] वर्ण क़ ख़ ग़ ज़ फ़ ड़ ढ़ = Persian letters k̂ k̂h ĝ ĵ p̂h ḍ̂ ḍ̂h ; ं = Mark for unclear pronounciation of the nasal sound.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*अंग्रेजी उच्चारण के अनुसार **नागरी लिपि** के अक्षरों का उच्चारण बताने वाले अंग्रेजी शब्द :

*English words showing the pronounciation of **nāgarī script** according to British pronounciation :

nāgarī Letter	English alphabet	English Word	nāgarī Letter	English alphabet	English Word	nāgarī Letter	English alphabet	English Word	nāgarī Letter	English alphabet	English Word
अ	a	mica	आ	ā	father (fāther)	ण्	ṇ	none (ṇoṇe)			
इ	i	fill	ई	ī	police (polīce)	त्	t	water (as in Ireland)	थ्	th	nuthook (more dental)
उ	u	full	ऊ	ū	rude (rūde)						
ऋ	ṛ	merrily (merṛly)				द्	d	this (dis)	ध्	dh	adhere (more dental)
ए	e	there	ऐ	ai	aisle (aisle)	न्	n	not			
ओ	o	go	औ	au	haus (haus as in German)	प्	p	put	फ्	ph	uphill
क्	k	kill	ख्	kh	inkhorn	ब्	b	rub	भ्	bh	abhor
ग्	g	dog	घ्	gh	loghut	म्	m	map			
ङ्	ṅ	king (kiṅg)				य्	y	yet	र्	r	red
च्	c	dolce (in music)	छ्	ch	Churchhill (churchhill)	ल्	l	lead	व्	v	ivy (but like w after consonants)
ज्	j	jet	झ्	jh	hedgehog (hejhhog)	श्	ś	sure (śure)	ष्	ṣ	bush (buṣ)
ञ्	ñ	singe (siñj)				स्	s	sin	ह्	h	hit
ट्	ṭ	true (ṭrue)	ठ्	ṭh	anthill (anṭhill)						
ड्	ḍ	drum (ḍrum)	ढ्	ḍh	redhaired (reḍhaired)						

* संस्कृत-इंग्लीश डिक्सनरी, आक्सफर्ड में से साभार उद्धृत. * Excepted from a sanskrit-English dictionary of Oxford with gratitude.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2B

भारतीय उच्चारण के अनुसार **नागरी लिपि** के अक्षरों का उच्चारण बताने वाले अंग्रेजी शब्द :
English words showing the pronounciation of **nāgarī script** according to Indian pronounciation :

nāgarī Letter	English alphabet	English Word	nāgarī Letter	English alphabet	English Word	nāgarī Letter	English alphabet	English Word	nāgarī Letter	English alphabet	English Word
अ	a	ago	आ	ā	far (fār)	ड्	ḍ	wood (wooḍ)	ढ्	ḍh	adhesive
इ	i	ring	ई	ī	police (polīce)	ण्	ṇ	hunt (huṇt)			(aḍhesive)
उ	u	bull	ऊ	ū	rule (rūle)	त्	t	tirupati	थ्	th	path
ऋ	ṛ	rid (ṛd)				द्	d	father (fader)	ध्	dh	Gandhiji
ए	e	pen	ऐ	ai	Jain (jain)	न्	n	run			
ओ	o	rote	औ	au	mouse (mause)	प्	p	pump	फ्	ph	graph
क्	k	pink	ख्	kh	khan	ब्	b	tub	भ्	bh	bhopal
ग्	g	king	घ्	gh	ghat	म्	m	pump			
ङ्	ṅ	ring (riṅg)				य्	y	yes	र्	r	war
च्	c	touch (touc)	छ्	ch	chest	ल्	l	halt	व्	v	vacancy
ज्	j	jump	झ्	jh	immajehouse	श्	ś	sure (śure)	ष्	ṣ	shut (ṣut)
ञ्	ñ	lunch (luñch)			(immajhouse)	स्	s	risk	ह्	h	harm
ट्	ṭ	put (puṭ)	ठ्	ṭh	authill (auṭhill)						

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीयम्... Publisher's note आनंदकीयम्...

ज्ञान-क्रियाभ्यां मोक्षः

दस पूर्वधर श्रुतकेवलि **श्री उमास्वाति महाराजा** का यह वचन - **'ज्ञान एवं क्रिया से मोक्ष कि प्राप्ति होती है'** भव्य जीवों को ज्ञानयोग एवं क्रियायोग में विशेष प्रकार से उद्यम करने के लिए प्रेरित करता है!

अकेले ज्ञान से या अकेली क्रिया से संसार का संक्षय नहीं होता; किन्तु ज्ञान एवं क्रिया के संयोजन से ही परम पद मिलता है. पंचाचार के सम्यक् परिपालन के लिए सम्यग् ज्ञान एवं सम्यक् क्रिया की यथार्थ जानकारी आवश्यक है.

शासन प्रभावक परमोपकारी पूज्यपाद **आचार्य प्रवर श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.** के शिष्यरत्न स्वाध्यायमग्न **उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी म. सा.** के शिष्यरत्न श्रुतोपासक **मुनिराज श्री निर्वाणसागरजी म. सा.** ने **'प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन'** ग्रंथ **हिन्दी एवं अंग्रेजी** में अथक परिश्रम पूर्वक तैयार किया है!

'प्रतिक्रमण सूत्र' की अनेक पुस्तकें भिन्न-भिन्न प्रकाशकों ने प्रकाशित की हैं, मगर यह प्रकाशन अपने आप में इसलिए विशिष्ट है कि **अंग्रेजी में शब्दार्थ, गाथार्थ, विशेषार्थ** एवं **भावार्थ** के साथ प्रकाशित होने वाला यह सर्व प्रथम प्रकाशन है!!!

वर्तमान युग में बहोत से जैन बालकों का शैक्षणिक अभ्यास अंग्रेजी माध्यम से हो रहा है. इस माहौल को देखते हुए धार्मिक संस्कार की सुरक्षा एवं संवर्धन के लिए अंग्रेजी भाषा को अनिवार्य रूप में स्वीकार करना ही रहा! विद्वान **मुनिराज श्री निर्वाणसागरजी म. सा.** ने अत्यंत परिश्रम पूर्वक तैयार की हुई इस सामग्री को प्रकाशित करने का हमें अवसर दिया, अतः हम मुनिश्री के हार्दिक आभारी हैं! **श्री अरुणोदय फाउण्डेशन** से **'श्री प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन' भाग - १** एवं **भाग - २** के रूप में प्रकाशित हो रहा है यह हमारे लिए गौरव की बात है.

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र - कोबा के भी हम आभारी हैं जिन्होंने इस संपूर्ण ग्रंथ का कष्टसाध्य कंपोज़ **आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञान मंदिर** के **कंप्यूटर विभाग** में करवा कर हार्दिक सहयोग दिया है.

प्रस्तुत प्रकाशन में आर्थिक सहयोगी सभी दाताओं के भी हम हार्दिक आभारी हैं.

श्री प्रवीणभाई (धीरज स्टेशनर्स - अहमदाबाद), श्री नगीनभाई (मेहता ब्रदर्स - मुंबई) एवं श्री जयेशभाई (दुंदुभी प्रीन्टर्स) के भी हम आभारी हैं जिन्होंने इस प्रकाशन में सुंदर सहयोग दिया है.

अंत में, इस पुस्तक के माध्यम से मुमुक्षु आत्माएँ सम्यग् ज्ञान एवं सम्यक् क्रिया में सविशेष विकास करें यही मंगल भावना.

श्री अरुणोदय फाउण्डेशन, कोबा
ट्रस्टी गण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिप्राय Opinions

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः આસો વદ ૪
સાબરમતી

સિદ્ધાન્ત દિવાકર ગચ્છાધિપતિ પૂજ્યપાદ આ. ભગવંત
શ્રીમદ્ વિજય જયઘોષસૂરિ મ. સા. તરફથી,

બહુગુણ સમ્પન્ન મુનિરાજ શ્રી નિર્વાણસાગરજી,
સાદર અનુવંદના, સુખશાતા પૃચ્છા.

તમારો પત્ર મળ્યો તથા 'દો પ્રતિક્રમણ સૂત્ર સહ વિવેચન' ગ્રન્થનું થોડું મેટર મળ્યું. જે જોઇને આનંદ થયો છે. તમારો પ્રયાસ પ્રશંસનીય છે. જિજ્ઞાસુઓને અને નવા જીવોને સારો લાભ થાય એવી શક્યતા છે... આ બધુ મેટર કોઇ ગીતાર્થ મહાત્મા પાસે સંશોધન તો કરાવ્યું જ હશે.

અનેકને બોધપ્રદ બની શકે એ રીતે આ પ્રકાશન શીઘ્ર નિર્વિઘ્નતયા થાય એવી પરમકૃપાળુ પરમાત્માને પ્રાર્થના પૂર્વક શુભાશિષ છે.

આરાધનામાં ઉદ્યમશીલ રહેવું...

દ. : મુનિ અભયશેખરવિજય ગણિની વંદના...

❖ ❖ ❖

અર્હં તા. ૧-૧૧-૯૬

આચાર્ય અરિહંતસિદ્ધસૂરિ મ. સા. અહમદાબાદ

જ્ઞાન-ધ્યાન-અભ્યાસક મુનિ નિર્વાણસાગરજી આદિ
અનુવંદના-સુખશાતા

તમોએ મોકલેલ બે પ્રતિક્રમણ સૂત્ર (હિન્દી-અંગ્રેજી) પ્રતાકારે નમુનો મોકલેલ છે, તે વાંચ્યો. અને ગુજરાતી ભાષા ન જાણે તેવા આત્માઓને આ ગ્રંથ ઉપકારી નીવડશે. આ રીતે જ્ઞાન ભક્તિ કરી શાસનની પ્રભાવના કરો છો તે અનુમોદનીય છે.

અરિહંતસિદ્ધસૂરિ

❖ ❖ ❖

આસો વદ ૫

આચાર્ય શ્રી હિમાંશુસૂરિ મ. સા. નવકાર ફ્લેટ

પૂજ્ય મુનિરાજ નિર્વાણસાગરજી

દેવગુરુ કૃપાયે અત્ર સુખશાતા, અત્રસ્થ બિરાજમાન પૂ. આચાર્ય ભગવંતાદિના પુનિતદેહે નિરામયતા પ્રવર્ત્તે છે. તત્ર પણ તેમજ ચાહું છું.

જત આપના દ્વારા બે પ્રતિક્રમણ સહ વિવેચન ગ્રંથ તૈયાર થઇ રહ્યો છે તે જાણ્યું તથા પૂજ્યશ્રીની આજ્ઞાથી નમૂનો પણ વાંચ્યો ખરેખર આપનો પુરુષાર્થ ખૂબજ અનુમોદનીય છે. આ ગ્રંથ ઘણો ઉપયોગી નિવડે તેવો છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

કામકાજ જણાવશો. પૂ. અરુણોદયસાગરજી આદિ મહાત્માઓને વંદના, સુખશાતા જણાવશો.

એજ. લી.
મુનિ હેમવલ્લભવિજયની વંદના.

❖ ❖ ❖

વિ. સં. ૨૦૫૨ આસો વદિ ૬ શુક્રવાર

કલ્યાણસાગરની અનુવન્દના,

મુ. શ્રી નિર્વાણસાગરજી મ.

મૂલ અર્ધમાગધી પ્રતિક્રમણના સૂત્રોનું આંગ્લભાષામાં કરાયેલ રૂપાન્તરથી આંગ્લભાષા ભાષીઓ શ્રી ગણધર ભગવંત વિરચિત પ્રતિક્રમણના સૂત્રો કંઠસ્થ કરીને શ્રી જિનઆજ્ઞા અનુસાર ઉભયટંક પ્રતિક્રમણ કરવારૂપ પ્રાયશ્ચિત કરીને આત્મશુદ્ધિ પરમ અધિકારી બનો.

શ્રી જિનઆજ્ઞાથી વિપરીત કંઇ પણ વિચારાયું કે લખાયું હોય, તો ત્રિવિધ ત્રિવિધ મિચ્છા મિ દુક્કડમ્

દ. પોતે

❖ ❖ ❖

વર્તમાનમાં પાશ્ચાત્ય સંસ્કૃતિનું શિક્ષણ મેળવતાં બાળકોનિ ધર્મ ભાવના જાળવવાં તમોએ કરેલો પુરુષાર્થ દાદ માંગીલે એવો છે. આધુનિક ભાષામાં રૂપાંતરણની સાથે-સાથે ભાવાંતરણમાં પણ પૂર્ણ સાવધાનિ રાખી છે. શાસ્ત્રને સાપેક્ષ રાખીને જ ચાલ્યા છો, તમારા દ્વારા થયેલો આ પ્રયત્ન જિવોને ધર્મમાર્ગે આગળ વધારી સ્થીર કરી પરંપરાએ મોક્ષમાર્ગ ને આપનારો બને.

એજ શુભ અભિલાશા

આંબાવાડી જૈન ઉપાશ્રય અમદાવાદ **આ. નવરત્નસાગરસૂરિ**
સં. ૨૦૫૩ કા. સુ. ૧, ૧૨-૧૧-૯૬.

❖ ❖ ❖

Dr. JITENDRA B. SHAH 20, Sudarshan Society, Part 2
Director Naranpura, Ahmedabad - 380 013
L. D. Institute of Indology તારીખ : ૧૬ નવેમ્બર, ૧૯૯૬

વર્તમાનયુગમાં આપણી લિપિ અને ભાષા પ્રત્યે આપણામાં ઉદાસીનતા વધી રહી છે, તેથી બાળકોને સૂત્રો ભણવા / ભણાવવા તથા સમજવા / સમજાવવામાં પણ ખૂબ જ મુશ્કેલી પડે છે. આ સમસ્યાના ઉકેલ માટે પંચપ્રતિક્રમણનાં મૂળસૂત્રો અંગ્રેજી લિપિમાં તથા તેનો અંગ્રેજી ભાષામાં સરળ અનુવાદ પ્રકાશિત થઇ રહ્યો છે તે આનંદની વાત છે. પૂ. નિર્વાણસાગરજી મ. સા. દ્વારા સંપાદિત, અનુવાદિત આ ગ્રંથ દેશ-વિદેશમાં

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

વસતાં બાળકો અને જિજ્ઞાસુઓને ખૂબ જ ઉપયોગી થશે તે નિર્વિવાદ વાત છે.

J. B. Shah

From :-
SHARADABEN CHIMANBHAI EDUCATIONAL RESEARCH CENTRE,
"DARSHAN', Opp. Ranakpur Society, Shahibag, Ahmedabad - 380 004.
Phone : 868739, Fax - 091 - 79 - 423815.

❖ ❖ ❖

વિનયાદિ ગુણાલંકૃત અજોડ ગ્રંથ સર્જક મુનિ પ્રવર શ્રી નિર્વાણસાગરજી મ. આદિ ઠાણાની

તારક સેવામા

વારિષેણસૂરિ આદિ ઠાણાની સ્નેહપુર્ણ વંદનાનુંવંદના સુખશાતા સ્વીકારશોજી.

વિ. સાહિત્ય જગતમાં સર્વ ગ્રાહ્ય અજોડ પ્રકાશન માટેનો આપનો પ્રયત્ન સદાય ધન્યતા ને પ્રાપ્ત બનશે.

નમસ્કાર મંત્રથી પ્રારંભ થતાં પ્રતિક્રમણસૂત્રના અર્થ ભાવાર્થ વિશેષાર્થ અને હિન્દી અંગ્રેજીમાં પ્રકાશન બહુજ લાભકારી બનશે.

હિન્દી ભાષી જનતા માટે સોનેરી સૂરજ ઉગ્યા જેવો દિવસ હશે. જ્યારે ગ્રંથ પ્રકાશન થશે તે દિન શુદ્ધી માટે સુપ્રયત્ન પૂર્ણ પ્રકાશન સૌને ભાવપૂર્ણ આવશ્યક કરવા માટે બહુજ આવકારણીય બનશે. તમારી શ્રુત ભક્તિ વિશેષાર્થ સાથેના હિન્દી ભાષી પ્રકાશન માટે સ્થીર થઇ તે જ ધન્યવાદ ને પાત્ર છે. સૂત્રોના ભાવ ના જ્ઞાન સાથેની ક્રિયા માટે આવા સુંદર પ્રકાશનો માટે તમારી અદભૂત શક્તિ સદા વિકાસમાં પ્રગતિ કરતી રહે એજ શુભાભિલાષા.

સર્વે ને વંદનાનુંવંદના સુખશાતા સર્વ તરફથી જાણશો.

દ. વારિષેણસૂરિ

મોહન વિજય જૈન પાઠશાલા
જી. પી. ઓ. ચાંદી બજાર, જામનગર - ૩૬૧ ૦૦૧.

❖ ❖ ❖

પરમ પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી નિર્વાણસાગરજી મહારાજ સાહેબ

વંદન

આપ સુખશાતામાં હશો.

બે પ્રતિક્રમણ સૂત્ર વિવેચન હિન્દી અને અંગ્રેજી પુસ્તકનું મેટર મળ્યું. જોયું. વાંચ્યું. વીસમી સદીના અંતે અને એકવીસમી સદીના પ્રારંભે જૈન સંઘની નવી પેઢીને આપના તરફથી નઝરાણું પ્રાપ્ત થશે. આ બાબત જાણીને મને રોમ હર્ષ થયો છે.

હિન્દી અંગ્રેજી ભાષાના મહત્વના અને ઉપયોગી પ્રકાશન માટેનો આપનો કામ ખરેખર સ્તુત્ય છે. આપના દ્વારા તૈયાર થનાર આ પુસ્તક અમોને અમારા હિન્દી ભાષી

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ક્ષેત્રોની શિબિરો માટે પણ ઉપયોગી બનશે.

મારા યોગ્ય ફરમાવશો.

કુમારપાલ વિ. શાહ ના વંદન

વર્ધમાન સેવા કેન્દ્ર
તા. ૧૦-૧૧-૧૯૯૬

૩૯, કલિકુંડ સોસાયટી

ધોલકા જિ. અહમદાબાદ

❖ ❖ ❖

मांडल, ७-११-९६

सादर शातानुवंदना.

आपकी ओरसे दो प्रतिक्रमण सूत्र (हिन्दी एवं अंग्रेजी में) शब्दार्थ-गाथार्थ एवं भावार्थ के साथ प्रकाशित हो रहा है. यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई.

वर्तमान युगकी यह खास मांग है. अतः आपका प्रयास समयोचित एवं सराहनीय है.

अंग्रेजी माध्यममें पढनेवाले अनेक विद्यार्थीओंको धार्मिक सूत्र एवं उनके अर्थ समझने के लिए यह पुस्तक आशीर्वाद रूप होगा.

आपके प्रयासकी पुनः पुनः हार्दिक अनुमोदना.

- गणि महोदयसागर.

❖ ❖ ❖

ता. ०३-११-१९९६

विद्वद्वर्य मुनिराजश्री
जैन उपाश्रय

सादर अनुवंदना
मु. झींझुवाडा

सुखशाता होगी.

दो प्रतिक्रमण - सविवेचन - हिन्दी व अंग्रेजी प्रगट हो रहा है जानकर बडी खुशी हुई.

यह पुस्तक अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले बच्चों को बहुत उपकारक होगा. एवं विस्तृत-विवेचन छोटे बडे सभी को ज्ञानवर्धक बनेगा.

आपका प्रयास आवकार्य है.

बहुत-बहुत अभिनंदन.

कुशल होंगे.

मुनिचंद्रविजय की अनुवंदना

❖ ❖ ❖

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तुत प्रकाशन के उदारमना दाताएँ

श्री तिलोकचंदजी नाहटा मुंबई

श्री लालचंदजी हीराचंदजी गुज्जर	बल्लारी	श्री हस्तीमलजी देवीचंदजी मूठलिया	मुंबई
श्री सोहनलालजी लालचंदजी चौधरी	अहमदावाद	श्री खीमराजजी मूलचंदजी बर्लोटा	बेंगलोर
श्री केवलचंदजी मूलचंदजी बर्लोटा	बेंगलोर	श्री प्रकाशचंदजी, विनोदकुमार बर्लोटा	बेंगलोर
श्री सज्जनराजजी जुगराजजी गादिया	बेंगलोर	श्री चाणक्यभाई वाडीलाल शाह	मुंबई
श्री महेशकुमार प्रेमसिंह जैन	मुंबई	कु. रुपल तथा कु. मानसीना आत्मश्रेयार्थे थराद निवासी विजयाबेन मणिलाल प्रेमचंदभाई मोरखीया परिवार	मुंबई

आपके सहयोग के हम हार्दिक आभारी है.
आपके सुकृत की हम भूरिशः अनुमोदना करते हैं!

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमणिका	Index	P. No.
दो शब्द	A few words	3
प्रस्तावना	Preface	4
मुद्राओं का परिचय	Introduction of postures	21
वर्णमाला का लिप्यंतरण	Transliteration of alphabet	37
वर्णमाला का उच्चारण	Pronounciation of alphabet	41
प्रकाशकीय	Publisher's note	43
अभिप्राय	Opinion	44
दाताओं की नामावली	Doner's names	48
अनुक्रमणिका	Index	49
सूत्र विभाग	**sūtra part**	
नवकार महामंत्र	navakāra mahāmantra	1
पंचिंदिय सूत्र	pañcindiya sūtra	16
खमासमण सूत्र	khamāsamaṇa sūtra	24
इच्छकार सूत्र	icchakāra sūtra	28
अब्भुट्ठिओमि सूत्र	abbhuṭṭhiomi sūtra	31
इरियावहिया सूत्र	iriyāvahiyā sūtra	35
तस्स उत्तरी सूत्र	tassa uttarī sūtra	42
अन्नत्थ सूत्र	annattha sūtra	45
लोगस्स सूत्र	logassa sūtra	52
करेमि भंते सूत्र	karemi bhante sūtra	61
सामाइय-वय-जुत्तो सूत्र	sāmāiya-vaya-jutto sūtra	65
जग-चिन्तामणि चैत्य-वन्दन	jaga-cintāmaṇi caitya-vandana	73
जं किंचि सूत्र	jam kiñci sūtra	85
नमुत्थु णं सूत्र	namutthu ṇam sūtra	87
जावंति-चेइआइं सूत्र	jāvanti-ceiāim sūtra	97
जावंत के वि सूत्र	jāvanta ke vi sūtra	99
नमोर्हत् सूत्र	namorhat sūtra	101
उवसग्ग-हरं स्तोत्र	uvasagga-haram stotra	102
जय वीयराय! सूत्र	jaya vīyarāya! sūtra	109
अरिहंत-चेइयाणं सूत्र	arihanta-ceiyāṇam sūtra	116
कल्लाण-कंदं स्तुति	kallāṇa-kandam stuti	120
संसार-दावा-नल स्तुति	sansāra-dāvā-nala stuti	127
पुक्खर-वर-दीवड्ढे सूत्र	pukkhara-vara-dīvaḍḍhe sūtra	136

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र	siddhāṇam buddhāṇam sūtra	145
वेयावच्च-गराणं सूत्र	veyāvacca-garāṇam sūtra	152
काव्य विभाग	**kāvya part**	
वर्तमान काल के २४ तीर्थंकरों के नामादि	Names etc. of the 24 tīrthaṅkaras of present era	1
२० विहरमान जिनेश्वरों के नाम	Names of 20 viharamāna jineśvaras	2
नवपद के नाम तथा वर्ण	Names and colours of navapada	4
दोहा संग्रह	Collection of dohā [couplets]	5
प्रदिक्षणा के दोहे	Couplets of pradikṣaṇā [circumambulation]	5
प्रभु दर्शन के समय बोलने के दोहे	Couplets to be uttered while viewing the lord	6
अष्ट प्रकारी पूजा के दोहे	Couplets of eight types of worship	11
जल पूजा के दोहे	Couplets of worship with water	11
चंदन पूजा का दोहा	Couplets of worship with sandal	12
नवांग पूजा के दोहे	Couplets of worship of navāṅga [nine organs]	12
पुष्प पूजा का दोहा	Couplets of worship with flowers	14
धूप पूजा का दोहा	Couplets of worship with incense	14
दीपक पूजा का दोहा	Couplets of worship with lamp	15
चामर वींझने का दोहा	Couplets of swinging cāmara	15
दर्पण पूजा का दोहा	Couplet of worship with mirror	16
अक्षत पूजा का दोहा	Couplets of worship with akṣata [whole rice grain]	16
स्वस्तिक [साथिये] के दोहे	Couplets of swastik	16
नैवेद्य पूजा का दोहा	Couplets of worship with naivedya	17
फल पूजा का दोहा	Couplets of worship with fruits	17
चैत्यवंदन आदि संग्रह	Collection of caitya vandana etc.	18
सकल-कुशल-वल्ली	sakala-kuśala-vallī	18
परमात्मा का चैत्यवंदन	paramātmā caityavandana	18
पंच परमेष्ठि चैत्यवंदन	pañca parameṣṭhi caityavandana	19
सीमंधर जिन दोहे	Couplets of sīmandhara jina	19
सीमंधर जिन चैत्यवंदन	sīmandhara jina caityavandana	20
सीमंधर जिन चैत्यवंदन	sīmandhara jina caityavandana	21

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीमंधर जिन स्तवन	sīmandhara jina stavana	21
सीमंधर जिन स्तवन	sīmandhara jina stavana	22
सीमंधर जिन स्तुति	sīmandhara jina stuti	23
सीमंधर जिन स्तुति	sīmandhara jina stuti	24
सिद्धाचल तीर्थ के दोहे	Couplets of siddhācala tīrtha.	24
सिद्धाचल तीर्थ चैत्यवंदन	siddhācala tīrtha caityavandana	25
सिद्धाचल तीर्थ चैत्यवंदन	siddhācala tīrtha caityavandana	26
सिद्धाचल तीर्थ स्तवन	siddhācala tīrtha stavana	27
सिद्धाचल तीर्थ स्तवन	siddhācala tīrtha stavana	27
सिद्धाचल तीर्थ स्तुति	siddhācala tīrtha stuti	28
सिद्धाचल तीर्थ स्तुति	siddhācala tīrtha stuti	29
ऋषभ जिन चैत्यवंदन	ṛṣabha jina caityavandana	29
ऋषभ जिन चैत्यवंदन	ṛṣabha jina caityavandana	30
ऋषभ जिन स्तवन	ṛṣabha jina stavana	30
ऋषभ जिन स्तवन	ṛṣabha jina stavana	31
ऋषभ जिन स्तुति	ṛṣabha jina stuti	32
ऋषभ जिन स्तुति	ṛṣabha jina stuti	33
शांति जिन चैत्यवंदन	śānti jina caityavandana	34
शांति जिन चैत्यवंदन	śānti jina caityavandana	34
शांति जिन स्तवन	śānti jina stavana	35
शांति जिन स्तवन	śānti jina stavana	36
शांति जिन स्तुति	śānti jina stuti	36
शांति जिन स्तुति	śānti jina stuti	38
नेमि जिन चैत्यवंदन	nemi jina caityavandana	39
नेमि जिन चैत्यवंदन	nemi jina caityavandana	39
नेमि जिन स्तवन	nemi jina stavana	40
नेमि जिन स्तुति	nemi jina stuti	41
पार्श्व जिन चैत्यवंदन	pārśva jina caityavandana	42
पार्श्व जिन चैत्यवंदन	pārśva jina caityavandana	42
पार्श्व जिन स्तवन	pārśva jina stavana	43
पार्श्व जिन स्तवन	pārśva jina stavana	43
पार्श्व जिन स्तुति	pārśva jina stuti	44
पार्श्व जिन स्तुति	pārśva jina stuti	45
वीर जिन चैत्यवंदन	vīra jina caityavandana	45
वीर जिन चैत्यवंदन	vīra jina caityavandana	46
वीर जिन स्तवन	vīra jina stavana	46

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीरणशेठ भावना / वीर जिन स्तवन	jīraṇaśeṭha bhāvanā / vīra jina stavana	47
वीर जिन स्तुति	vīra jina stuti	48
वीर जिन स्तुति	vīra jina stuti	49
पर्युषण चैत्यवंदन	paryuṣaṇa caityavandana	50
पर्युषण पर्व चैत्यवंदन	paryuṣaṇa parva caityavandana	51
पर्युषण पर्व स्तवन	paryuṣaṇa parva stavana	51
पर्युषण पर्व स्तुति	paryuṣaṇa parva stuti	53
पर्युषण पर्व सज्झाय	paryuṣaṇa parva sajjhāya	54
नवपद चैत्यवंदन	navapada caityavandana	55
नवपद स्तवन	navapada stavana	56
नवपद स्तवन	navapada stavana	57
नवपद स्तुति	navapada stuti	58
नवपद स्तुति	navapada stuti	59
नवपद सज्झाय	navapada sajjhāya	59
अजित जिन स्तवन	ajita jina stavana	61
सुविधि जिन स्तवन	suvidhi jina stavana	61
नंदीश्वर द्वीप स्तुति	nandīśvara dvīpa stuti	62
मरुदेवी माता सज्झाय	marudevī mātā sajjhāya	63
मेघकुमार सज्झाय	meghakumāra sajjhāya	64
मन वश सज्झाय	mana vaśa sajjhāya	65
निंदा सज्झाय	nindā sajjhāya	66
अध्यात्म सज्झाय	adhyātma sajjhāya	67
अध्यात्म सज्झाय	adhyātma sajjhāya	68
वैराग्य सज्झाय	vairāgya sajjhāya	69
विधि विभाग	**vidhi part**	
पच्चक्खाण के सूत्र	sūtras of the paccakkhāṇa	1
प्रभात के पच्चक्खाण	Morning paccakkhāṇas	1
नमुक्कारसहिअं-मुट्ठिसहिअं	namukkārasahiam-muṭṭhisahiam	1
पोरिसी / साड्ढ-पोरिसी	porisī / sāḍḍha-porisī	2
पुरिमड्ढ / अवड्ढ	purimaḍḍha / avaḍḍha	2
एगासणा / बियासणा	egāsaṇā / biyāsaṇā	3
आयंबिल / नीवी	āyambila / nivī	4
तिविहार उपवास / पाणहार	tivihāra upavāsa / pāṇahāra	5
चउविहार उपवास	cauvihāra upavāsa	5

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शाम के पच्चक्खाण	Evening paccakkhāṇas	6
पाणहार	pāṇahāra	6
चउविहार उपवास	cauvihāra upavāsa	6
चउव्विहार	cauvvihāra	7
तिविहार	tivihāra	7
दुविहार	duvihāra	7
देसावगासिक	desāvagāsika	8
पच्चक्खाण पारने के सूत्र	sūtras for completing the paccakkhāṇa	8
एगासणादि	egāsaṇā etc.	8
तिविहार उपवास	tivihāra upavāsa	9
मुहपत्ति के पडिलेहण के ५० बोल	50 Words for the paḍilehaṇa of the muhapatti	10
विधियाँ	Procedures	12
सांकेतिक शब्द एवं सूचनाएँ	Notes and key words	12
गुरु-वन्दन की विधि	Procedure of guru-vandana	15
चैत्य-वंदन की विधि	Procedure of caitya-vandana	15
सामायिक लेने की विधि	Procedure of taking the sāmāyika	16
सामायिक पारने की विधि	Procedure of completing the sāmāyika	17
देव-वन्दन की विधि	Procedure of deva-vandana	18
नमस्कार-महा-मन्त्र का छन्द	namaskāra-mahā-mantra kā chanda	20

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री अरुणोदय फाउन्डेशन - कोबा के ट्रस्टीगण

श्री चंद्रकांतभाई शिवलाल शाह - अहमदाबाद

श्री सुमतिभाई हालाभाई हरडे - मुंबई
श्री चंद्रकांतभाई जेचंदभाई शाह - अहमदाबाद
श्री कमलचंदजी महेता - मद्रास
श्री चाणक्यभाई वाडीलाल शाह - मुंबई
श्री महेशकुमार पी. जैन - मुंबई
श्री बाबूलालजी बी. चौधरी - अहमदाबाद
श्री अशोकराज रामराजजी सिंघवी - जोधपुर
श्री महावीरचंदजी सुराणा - बेंगलोर

कार्यवाहक समिति के सदस्यगण

श्री विजयचंदजी समदडीया - मद्रास
श्री अनीलकुमार तिलोकचंदजी नाहटा - मुंबई
श्री ललितकुमार कांतिलालजी सांठिया - मुंबई
श्री भद्रबाहू शाह - सायन - मुंबई
श्री जयंतिलालजी खीमराजजी बर्लोटा - बेंगलोर
डॉ. श्री पारसमलजी अमरचंदजी बैद - मद्रास
श्री जिज्ञेश सुरेन्द्रभाई शाह - अहमदाबाद
श्री नितिन रतिलाल मालणवाला - मुंबई
श्री बिमल चंद्रकांतभाई शाह - अहमदाबाद
श्री चैतन्यभाई अंबालाल शाह - अहमदाबाद
श्री कुमारपाल अंबालाल महेता - हिंमतनगर
श्री मुकेश जैन - जयपुर
श्री भद्रेशभाई फतासापोल - अहमदाबाद
श्री सुरेशभाई पुंजीराम शाह - कुकरवाडा
श्री कांतिभाई पटेल - उबखल
श्री योगेश जैन - सुरत

Printed by ***DUNDUBHI PRINTERS*** - 54, Meghdoot Flats, Ashram Road, AHMEDABAD - 380 009 ***Phone : 079 - 40 41 86***

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिक्रमण सूत्र

सह विवेचन

भाग - १ [हिन्दी - अंग्रेजी]

सूत्र विभाग

निर्वाण सागर

Pratikramaṇa Sūtra

With Explanation

Part - 1 [Hindī - English]

sūtra part

Nirvāṇa Sāgara

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. नवकार महामंत्र

नमो अरिहंताणं.
नमो सिद्धाणं.
नमो आयरियाणं.
नमो उवज्झायाणं.
नमो लोए सव्व-साहूणं.
एसो पंच-नमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो;
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं.

शब्दार्थ :–

नमो = नमस्कार हो
अरिहंताणं = **अरिहंत भगवंतों** को
सिद्धाणं = **सिद्ध भगवंतों** को
आयरियाणं = **आचार्य भगवंतों** को
उवज्झायाणं = **उपाध्याय भगवंतों** को
लोए सव्व-साहूणं = लोक में रहे हुए सर्व **साधु भगवंतों** को

1. navakāra mahāmantra

namo arihantāṇam.
namo siddhāṇam.
namo āyariyāṇam.
namo uvajjhāyāṇam.
namo loe savva-sāhūṇam.
eso pañca-namukkāro, savva-pāva-ppaṇāsaṇo;
maṅgalāṇam ca savvesim, paḍhamam havai maṅgalam.

Literal meaning :–

namo = be obeisance
arihantāṇam = to the **arihanta bhagavantas**
siddhāṇam = to the **siddha bhagavantas**
āyariyāṇam = to the **ācārya bhagavantas**
uvajjhāyāṇam = to the **upādhyāya bhagavantas**
loe savva-sāhūṇam = to all the **sādhu bhagavantas** present in the universe

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोए = लोक में रहे हुए, **सव्व** = सर्व, **साहूणं** = साधु भगवंतों को

एसो पंच-नमुक्कारो = यह पंच नमस्कार / इन पाँचों को किया हुआ नमस्कार

एसो = यह, **पंच** = पंच, **नमुक्कारो** = नमस्कार

सव्व-पाव-प्पणासणो = सर्व पापों का नाश करने वाला है

पाव = पापों का, **प्पणासणो** = नाश करने वाला है

मंगलाणं च सव्वेसिं = और सर्व मंगलों में

मंगलाणं = मंगलों में, **च** = और, **सव्वेसिं** = सर्व

पढमं हवइ मंगलं = प्रथम मंगल है

पढमं = प्रथम, **हवइ** = है, **मंगलं** = मंगल

गाथार्थ :-

अरिहंत भगवंतों को नमस्कार हो.
सिद्ध भगवंतों को नमस्कार हो.
आचार्य भगवंतों को नमस्कार हो.
उपाध्याय भगवंतों को नमस्कार हो.
लोक में रहे हुए सर्व **साधु भगवंतों** को नमस्कार हो.

loe = present in the universe, **savva** = to all, **sāhūṇam** = the **sādhu bhagavantas**

eso pañca-namukkāro = these five obeisance / the obeisance performed to these five

eso = these, **pañca** = five, **namukkāro** = obeisance

savva-pāva-ppaṇāsaṇo = is an annihilator of all sins

pāva = of sins, **ppaṇāsaṇo** = is an annihilator

maṅgalāṇam ca savvesim = and among all auspices

maṅgalāṇam = among auspices, **ca** = and, **savvesim** = all

paḍhamam havai maṅgalam = is the most auspicious deed

paḍhamam = the most, **havai** = is, **maṅgalam** = auspicious deed

Stanzaic meaning :-

Be obeisance to the **arihanta bhagavantas**.
Be obeisance to the **siddha bhagavantas**.
Be obeisance to the **ācārya bhagavantas**.
Be obeisance to the **upādhyāya bhagavantas**.
Be Obeisance to all the **sādhu bhagavantas** present in the universe.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन पाँचों को किया हुआ नमस्कार सर्व पापों का नाश करने वाला है और सर्व मंगलों में [यह नमस्कार] प्रथम मंगल है. .... १.

विशेषार्थ :-

पंच परमेष्ठी :- अरिहंत और **सिद्ध**– दो प्रकार के देव एवं **आचार्य**, **उपाध्याय** और **साधु**– तीन प्रकार के **गुरु**– ये पाँच **परमेष्ठी** परम पूज्य हैं.

पंच परमेष्ठी के १०८ गुण :- अरिहंत के बारह, **सिद्ध** के आठ, **आचार्य** के छत्तीस, **उपाध्याय** के पच्चीस एवं **साधु** के सत्ताईस– सर्व मिलाकर पंच **परमेष्ठियों** के १०८ गुण होते हैं.

परमेष्ठी = परम पद पर स्थित / छट्ठे आदि **गुण-स्थानकों** द्वारा उच्च कक्षा को प्राप्त की हुई आत्माएं.

अरिहंत = कर्म रूपी आंतर शत्रुओं को नाश करके वंदन-पूजन-सत्कार तथा सिद्धि-गमन के योग्य बने व्यक्ति. सभी **तीर्थंकर भगवंत अरिहंत**, **जिनेश्वर** व **सर्वज्ञ** होते है. यहां पर **अरिहंत** शब्द का प्रयोग **तीर्थंकर भगवंत** के लिए किया है.

तीर्थंकर = साधु, **साध्वी**, **श्रावक** और **श्राविका** रूप चतुर्विध संघ [**तीर्थ**]

Obeisance performed to these five is an annihilator of all sins and [this obeisance] is the most auspicious deed among all the auspices. .... 1.

Specific meaning :-

pañca parameṣṭhī :- The **arihanta** and the **siddha**- two types of gods and the **ācārya**, the **upādhyāya** and the **sādhu**- three types of preceptors-- these five **parameṣṭhī**s are most highly venerable.

108 qualities of five parameṣṭhīs :- The **arihanta** have twelve, the **siddha** have eight, the **ācārya** have thirty six, the **upādhyāya** have twenty five and the **sādhu** have twenty seven-- in all the five **parameṣṭhī**s have one hundred and eight qualities.

parameṣṭhī = Present in the highest position / souls having attained the highest position through **guṇa-sthānakas** like sixth.

arihanta = Person having become worthy of obeisance, worship, honour and attainment of salvation by annihilating internal enemies prevailing in the form of **karma**. All **tīrthaṅkara bhagavanta**s are **arihanta**, **jineśvara** and **sarvajña**. Here the word **arihanta** is used for **tīrthaṅkara bhagavanta**.

tīrthaṅkara = **kevalī**, the establishers of four-fold congregation [**tīrtha**] of **sādhu**,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की स्थापना करने वाले **केवली.**

तीर्थ = भव समुद्र को पार करने के लिए परम आलंबन रूप नाव.

जिनेश्वर = इंद्रियों को जीतने वाले संपूर्ण दश **पूर्वधर**, चौदह **पूर्वधर**, **अवधि ज्ञानी**, **मनः-पर्यव ज्ञानी** और **केवल ज्ञानी साधुओं** में श्रेष्ठ.

सर्वज्ञ / केवली / केवल ज्ञानी = सर्व पदार्थों के तीनों काल [भूत, वर्तमान और भविष्यट के सर्व गुण एवं पर्याय को साक्षात् जानने और देखने वाले.

सिद्ध = सर्व **कर्मों** का संपूर्णतया नाश करके शुद्ध स्वरूप [मोक्ष] को प्राप्त आत्मा.

आचार्य = **साधु** समुदाय **[गच्छ]** के अधिपति.

उपाध्याय = सम्यग्ज्ञान और क्रियाओं का अभ्यास कराने वाले **साधु.**

साधु = मोक्ष मार्ग की साधना करने वाले पंच महाव्रतधारी व्यक्ति.

लोक / मनुष्य लोक / ढाई द्वीप = **जंबू द्वीप**, **धातकी खंड** एवं अर्ध **पुष्कर-वर द्वीप**.

गुणस्थानक = आत्मा के क्रमिक विकास का परिचायक मानदंड / आत्मा की मोक्ष की ओर उन्नति सूचक अवस्था.

कर्म = शुभाशुभ प्रवृत्ति के अनुसार आत्मा के साथ बंधने वाले **कर्म**

sādhvī, **śrāvaka** and **śrāvikā**.

tīrtha = A great support like a boat to cross over the ocean of life.

jineśvara = The best / highest amongst **sādhus** conquering sense organs, having the knowledge of complete ten **pūrvas**, fourteen **pūrvas**, **avadhi jñānī**, **manaḥ-paryava jñānī** and **kevala jñānī**.

sarvajña / kevalī / kevala jñānī [omniscient] = One acquainted with and viewing all the qualities and states [modifications] of all the three periods [past, present and future] of all matters perceptibly.

siddha = Soul having attained the perfect form [salvation] by annihilating all the **karmas** completely.

ācārya = Head of the group of **sādhus [gaccha]**.

upādhyāya = **sādhu** teaching right knowledge and rites [practices].

sādhu = Person observing five great vows endeavouring in the path of salvation.

loka / human world / two and a half islands = **jambū dvīpa**, **dhātakī khaṇḍa** and half **puṣkara-vara dvīpa** [island].

guṇasthānaka = A standard indicating gradual uplift of the soul / stage indicating the progress of the soul towards salvation.

karma = Group of atoms of **karma** attaching to the soul according to pious or

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुद्गलों की वर्गणा [समूह].

मंगल = अनिष्ट निवारक और इष्ट प्राप्त कराने वाला साधन.

छः प्रकार के आंतर शत्रु :-

१. **इंद्रिय** = अप्रशस्त भाव में प्रवृत्त पाँच इंद्रियाँ;

२. **विषय** = इंद्रियों के अनुकूल पदार्थों के प्रति रुचि;

३. **कषाय** = क्रोधादि मानसिक भाव;

४. **परीषह** = भूख-प्यासादि का अनुभव;

५. **वेदना** = शारीरिक और मानसिक सुख-दुःख का अनुभव;

६. **उपसर्ग** = मनुष्य, तिर्यंच या देवताओं द्वारा कृत मन को आकुल-व्याकुल करने वाले उपद्रव.

तीर्थंकर के चौतीस अतिशय [विशिष्ट गुण] :-

◆ चार अतिशय जन्म से-

१. **तीर्थंकर** का दिव्य शरीर अद्भुत रूप वाला सुगंध से युक्त, नीरोगी, पसीना रहित एवं मैल रहित होता है.

२. श्वासोच्छ्वास सुगंधी होता है.

३. रक्त और मांस श्वेत व दुर्गंध रहित होते हैं.

evil practices [good or bad activities].

maṅgala = Mean for avoiding calamities and helping to attain the desired results [objectives].

Six types of āntara śatru [internal enemies] :-

1. **indriya [sense organs]** = Five sense organs absorbed in evil mental activities;
2. **viṣaya [objects of pleasure]** = Liking for the objects to sense organs;
3. **kaṣāya [passions]** = Mental tendency like anger;
4. **parīṣaha [sufferings]** = Feelings like hunger, thirst;
5. **vedanā [feelings]** = Feelings of physical and mental happiness and sorrow;
6. **upasarga [troubles]** = Sufferings brought about by human beings, animals or divine beings disturbing and upsetting the mental peace.

Thirty four atiśayas [special qualities] of the tīrthaṅkara :-

◆ Four atiśayas from birth-

1. The divine body of the **tīrthaṅkara** will be of splendid appearance, with fragrance, healthy, without sweat and without dirt.
2. The respiration will be fragrant.
3. Blood and flesh will be white and free from odour.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. आहार-नीहार [मल-मूत्र का त्याग] अदृश्य रूप से होता है.

◆ **ग्यारह अतिशय केवल ज्ञान प्राप्त होने से-**

१. एक **योजन** प्रमाण क्षेत्र में एक कोटा-कोटि [१ क्रोड X १ क्रोड] देव, मनुष्य और तिर्यंच पंचेंद्रियों का समावेश संकडाश के बिना हो सकता है.

२. पैंतीस गुणों से युक्त **अर्धमागधी** वाणी एक **योजन** दूर तक देव, मनुष्य और तिर्यंचों की भाषा में सुनाई देती है.

३. मस्तक के पीछे **भामंडल** होता है.

४-११. एक सौ पच्चीस **योजन** प्रमाण क्षेत्र में प्रायः रोग, वैरभाव, ईति [सात प्रकार के महाभय], मारी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, राज भय नष्ट हो जाते हैं.

◆ **उन्नीस अतिशय देवताओं द्वारा कृत-**

१. **धर्म-चक्र** आकाश में साथ साथ चलता है.

२-५. **चामर, सिंहासन, छत्र-त्रय** एवं **ध्वजा** हमेशा साथ में रहते हैं.

६. चलते समय पांवों के नीचे नव सुवर्ण कमल होते हैं. [चरणों के नीचे दो, चार आगे और तीन पीछे].

७. सुवर्ण, रौप्य [चांदी] और रत्न के तीन गढ [किल्ले] होते हैं.

4. Diet and excretion will be invisible.

◆ **Eleven atiśayas appearing on acquiring kevala jñāna–**

1. One multi-crore [1 crore x 1 crore] of heavenly gods, human beings and animals with five organs can accommodate without shortage of space in an area of one **yojana**.

2. Speech having thirty five qualities is being heard to an extent of one **yojana** in the languages of **ardhamāgadhī**, gods, human beings and animals.

3. **bhāmandala** [aureola] is present behind the head.

4-11. Mostly diseases, enmity, calamity [seven types of great fears], plague, excessive rains, droughts, famine and political fears disappear within an area of one hundred and twenty five **yojanas**.

◆ **Nineteen atiśayas done by the heavenly gods–**

1. **dharmacakra** [wheel of **dharma**] move along in the sky.

2-5. **cāmara** [whisk], **siṁhāsana** [throne], **chatra-traya** [three umbrellas] and **dhvajā** [flag] always remain along with.

6. Nine golden lotus flowers are present below the feet while walking. [Two below, four before and three behind the feet].

7. Three forts of gold, silver and jewellery are present.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. चतुर्मुख **समवसरण** होता है.
९. **अशोक** वृक्ष होता है.
१०. चलते समय कांटे अधो-मुख हो जाते हैं.
११. वृक्ष पूर्णतया नम जाते हैं.
१२. देशना देते समय देव दुंदुभि बजाते हैं.
१३. पवन अनुकूल हो जाता है.
१४. पक्षी प्रदक्षिणा देते हैं.
१५. सुगंधी जल की वर्षा होती है.
१६. पुष्प वृष्टि होती है.
१७. दीक्षा लेने के बाद केश, दाढी, मूंछ और नख बढते नहीं है.
१८. चार प्रकार के देवों में से कम से कम एक क्रोड़ देवता हमेशा साथ रहते हैं.
१९. सभी ऋतु अनुकूल हो जाती हैं.

योजन = जैन शास्त्र के अनुसार दूरी मापने का एक प्रकार का प्राचीन कालीन मान.

अरिहंत के बारह गुण :-

१. **अशोक वृक्ष = तीर्थंकर भगवंत** के शरीर से बारह गुणा ऊंचा वृक्ष

8. Four faced **samavasaraṇa** will be present.
9. **aśoka** tree will be present.
10. Thorns faces downwards while walking.
11. Trees bow down completely.
12. Gods beats the divine drums while giving discourses [sermon].
13. Wind becomes favourable.
14. Birds circumambulates.
15. Fragrant water is showered.
16. Flowers are showered.
17. Hair, beard, moustache and nails do not grow after renunciation of worldly life.
18. At least one crore deities out of four types of gods always remain along with.
19. All seasons become favourable.

yojana = A standard of ancient period for measuring distance according to jain scriptures.

Twelve qualities of the arihanta :-

1. **aśoka vṛkṣa [Jonesia asoka tree]** = Gods create tree twelve times the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवता **समवसरण** में रचते है.

२. **सुर पुष्प वृष्टि** = देवता एक **योजन** प्रमाण **समवसरण** भूमि में जानु प्रमाण सुगंधी पुष्पों की वृष्टि करते हैं.

३. **दिव्य ध्वनि** = देवता **भगवंत** की वाणी में संगीतमय सूर पूरते है.

४. **चामर** = देवता **भगवान** को रत्न जडित स्वर्णमय चामर ढुलाते [वींझते] हैं.

५. **सिंहासन** = **भगवंत** को बैठने के लिये देवता रत्न जडित स्वर्णमय सिंहासन रचते हैं.

६. **भामंडल** = **भगवंत** के मस्तक के पीछे देवता आभा मंडल रचते हैं, जिसमें **भगवंत** के मुख के तेज का संवरण [संक्रमण] हो जाता है. [ऐसा करने से ही **भगवंत** का मुख-दर्शन हो सकता है.]

७. **देव दुंदुभि** = देवता दुंदुभि बजाते हैं.

८. **छत्र-त्रय** = देवता **भगवंत** के मस्तक पर तीन स्वर्णमय रत्न जड़ित छत्र रचते हैं.

[ऊपर के आठ गुण **तीर्थंकर** के अष्ट **प्रातिहार्य** हैं जो केवलज्ञान होने के बाद हमेशा साथमें रहते हैं.]

९. **अपायापगमातिशय** = **भगवान** के विचरण क्षेत्र के १२५ **योजन**

height of the body of **tīrthankara bhagavanta** in the **samavasaraṇa**.

2. **sura puṣpa vṛṣṭi** = Gods shower fragrant flowers upto the knees in one **yojana** area of the **samavasaraṇa.**

3. **divya dhvani** = Gods tunes the musical sound in the sermon of the **bhagavanta.**

4. **cāmara** = Gods whisks [swings] the golden whisk studded with jewellery to the **bhagavanta.**

5. **siṁhāsana** = Gods makes golden throne studded with jewellery for sitting of the **bhagavanta.**

6. **bhāmaṇḍala** = Gods create an aureola behind the head of the **bhagavanta,** in which the brightness of the face of the **bhagavanta** is transited. [The face of the **bhagavanta** can be seen only if done so].

7. **deva dundubhi** = Gods sounds the divine drums.

8. **chatra-traya** = Gods create three divine golden umbrellas studded with jewellery over the head of the **bhagavanta.**

[Above eight qualities are eight **prātihārya** of the **tīrthankara** which remain always along with after attaining absolute perfect knowledge (omniscience).]

9. **apāyāpagamātiśaya** = Generally excessive rains, droughts and all sorts of

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तक अतिवृष्टि, अनावृष्टि तथा सर्व रोग प्रायः मिट जाते हैं. [**अपाय** = उपद्रव, **अपगम** = नाश].

१०. **ज्ञानातिशय** = **तीर्थंकर** द्वारा समझाने पर किसी भी जीव को अपनी शंका का समाधान अवश्य हो जाता है.

११. **पूजातिशय** = **इंद्र**, देव, **चक्रवर्ती**, **बलदेव**, **वासुदेव**, महाराजा, मनुष्य, तिर्यंच पंचेंद्रिय आदि सभी **तीर्थंकर भगवंत** की पूजा करते हैं.

१२. **वचनातिशय** = पैंतीस गुणों से युक्त **भगवंत** की वाणी देव, मनुष्य और तिर्यंच पंचेंद्रिय अपनी अपनी भाषा में समझ लेते हैं.

अतिशय = आश्चर्य जनक गुण जो **तीर्थंकर** के सिवाय विश्व के अन्य किसी भी जीव में नहीं होता है.

तीर्थंकर भगवंत की वाणी के पैंतीस गुण :-

१. वाणी व्याकरण के नियम से युक्त होती है.
२. वाणी ऊंचे स्वर में होती है.
३. वाणी व्यवस्थित और शिष्ट होती है.
४. वाणी मेघ की तरह गंभीर होती है.
५. वाणी प्रतिध्वनि वाली होती है.

diseases disappears within an area of 125 **yojanas** of moving about of the **bhagavāna** [**apāya** = disturbances; **apagama** = destruction].

10. **jñānātiśaya** = One's own doubts are solved certainly on presentation to any of the living being by the **tīrthaṅkara.**

11. **pūjātiśaya** = All **indras**, gods, **cakravartī**s [emperors], **baladeva, vāsudeva,** kings, human beings and animals with five organs etc. adore the **tīrthaṅkara bhagavanta.**

12. **vacanātiśaya** = The sermon of the **bhagavanta** possessing thirty five qualities is understood by the gods, human beings and animals with five organs in their own languages.

atiśaya = A miraculous quality which is not found in any of the living beings in the universe except the **tīrthaṅkara.**

Thirty five qualities of the sermon of tīrthaṅkara bhagavanta :-

1. Sermon will be in accordance with the rules of grammar.
2. Sermon will be in high tone.
3. Sermon will be systematic and cultured.
4. Sermon will be grave like clouds.
5. Sermon will have an echo.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. वाणी सरल होती है.	6. Sermon will be easy.
७. वाणी **मालकोश** आदि रागों में होती है.	7. Sermon will be in musical tune like **mālakośa.**
[ये सात गुण वाणी के शब्दों की अपेक्षा से होते हैं.]	[These seven qualities are in relation to the words of the sermon.]
८. वाणी विशाल अर्थ वाली होती है.	8. Sermon will be deep in meaning.
९. वाणी पूर्व वाक्यों और उनके अर्थ के साथ परस्पर विरोध से रहित होती है.	9. The Sermon will be without contradiction with previous sentences and their meanings.
१०. वाणी इष्ट सिद्धांत के अर्थ को कहने वाली और वक्ता की शिष्टता को दर्शाने वाली होती है.	10. Sermon will be stating the meaning of desirable principles and will be showing the culture of the speaker.
११. वाणी शंका उत्पन्न न करने वाली होती है.	11. Sermon will not be raising doubts.
१२. वाणी किसी के भी दूषण प्रगट न करने वाली होती है.	12. Sermon will not be disclosing the short comings of any one [living beings].
१३. वाणी मन में प्रसन्नता उत्पन्न करने वाली होती है.	13. Sermon will be inducing bliss in the heart.
१४. पद और वाक्यों में परस्पर सापेक्षता वाली वाणी होती है.	14. Sermon will have mutual relativity in between the phrases and sentences.
१५. वाणी देश, काल के अनुसार उचित होती है.	15. Sermon will be appropriate according to the place and time.
१६. वाणी वस्तु स्वरूप के अनुसार होती है.	16. Sermon will be according to the nature of the subject.
१७. वाणी विषयांतर रहित और संक्षिप्त होती है.	17. Sermon will be without digression and in brief.
१८. वाणी स्व प्रशंसा और पर निंदा रहित होती है.	18. Sermon will be without self-glorification and censure of others.
१९. वाणी प्रतिपाद्य विषय की भूमिका के अनुसार होती है.	19. Sermon will be in accordance with subject matter.
२०. वाणी स्निग्ध और मधुर होती है.	20. Sermon will be fluent and sweet.

Jain Education International | For Private & Personal Use Only | www.jainelibrary.org

२१. वाणी प्रशंसा के योग्य होती है.	21. Sermon will be praise worthy.
२२. वाणी अन्य के मर्म को प्रगट न करने वाली होती है.	22. Sermon will not be disclosing the secrets of others.
२३. वाणी आचरण के योग्य होती है.	23. Sermon will be worth practising.
२४. वाणी धर्म [आचार] और [पदार्थों के] अर्थ से युक्त होती है.	24. Sermon will be with spiritual conduct and with the meaning of matters.
२५. वाणी कारक, वचन, लिंग आदि की विपरीतता से रहित होती है.	25. Sermon will be without contradiction between case, time, number, gender etc.
२६. वाणी विभ्रम, विक्षेप आदि मनोदोष रहित होती है.	26. Sermon will be without psychological defects like confusion, interruption.
२७. वाणी श्रोताओं के मन में आश्चर्य उत्पन्न करने वाली होती है.	27. Sermon will be creating wonder in the hearts of the listeners.
२८. वाणी अद्रुत होती है.	28. Sermon will not be speedy.
२९. वाणी अति विलंब रहित होती है.	29. Sermon will be without much delay.
३०. वाणी अनेक प्रकार की विचित्रताओं वाली और पदार्थों का अनेक प्रकार से वर्णन करने वाली होती है.	30. Sermon will be of many types with great varieties [various expressions] and describing the matters in many ways.
३१. वाणी अन्यों की अपेक्षा से विशेषता स्थापित करने वाली होती है.	31. Sermon will be outstanding in comparison with others.
३२. वाणी वर्ण, पद एवं वाक्य के भेद वाली होती है.	32. Sermon will be with distinct letters, phrases and sentences.
३३. वाणी सत्त्व प्रधान होती है.	33. Sermon will be substantial.
३४. वाणी अखंडित प्रवचन प्रवाह वाली और कहने के लिए इच्छित विषय को अच्छी तरह सिद्ध करने वाली होती है.	34. Sermon will be fluent and proving well the subject desired to tell.
३५. वाणी सहजता से उत्पन्न होने वाली होती है.	35. Sermon will be originating naturally.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्ध भगवंत के आठ गुण :-

१. अनंत ज्ञान,
२. अनंत दर्शन,
३. अनंत चारित्र,
४. अक्षय स्थिति,
५. अरूपित्व,
६. अगुरु लघुत्व,
७. अनंत अव्याबाध [बाधा रहीत] सुख और
८. अनंत वीर्य.

आचार्य के छत्तीस गुण :- देखें सूत्र-२.

उपाध्याय के पच्चीस गुण :-

१-२३. ग्यारह [११] **अंग** और बारह [१२] **उपांगों** को पढ़ना और पढ़ाना.
२४-२५. चरण सित्तरी और करण सित्तरी में कुशल होना और कुशल बनाना.

ग्यारह अंग के नाम :-

१. आयारंग [आचारांग] सूत्र.
२. सूयगडंग [सूत्र-कृतांग] सूत्र.

Eight qualities of siddha bhagavanta :-

1. Infinite perfect knowledge,
2. Infinite perfect vision [faith],
3. Infinite perfect conduct,
4. Imperishable status,
5. Formlessness,
6. Neither heavy nor light,
7. Infinite undisturbed bliss and
8. Omnipotence.

Thirty six qualities of ācārya :- See **sūtra**-2.

Twenty five qualities of upādhyāya :-

1-23. To study and to teach eleven **aṅgas** [principal sacred scriptures] and twelve **upāṅgas** [subordinate sacred scriptures] and
24-25. To become proficient and to guide others to become proficient in seventy types of spiritual conducts and seventy types of spiritual rites.

Names of eleven aṅgas :-

1. āyāraṅga [ācārāṅga] sūtra.
2. sūyagaḍaṅga [sūtra-kṛtāṅga] sūtra.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. ठाणंग [स्थानांग] सूत्र.
४. समवायंग [समवायांग] सूत्र.
५. वियाह-पण्णत्ति [व्याख्या-प्रज्ञप्ति / भगवती] सूत्र.
६. नाया-धम्म-कहंग [ज्ञाता-धर्म-कथांग] सूत्र.
७. उवासग-दसंग [उपासक-दशांग] सूत्र.
८. अंतगड-दसंग [अंतकृद्-दशांग] सूत्र.
९. अणुत्तरो-ववाइय-दसंग [अनुत्तरौप-पातिक-दशांग] सूत्र.
१०. पण्हा-वागरणंग [प्रश्न-व्याकरणांग] सूत्र.
११. विवाग-सुयंग [विपाक-श्रुतांग] सूत्र.

बारह उपांग के नाम :-

१. ओवाइय / उववाय [औपपातिक] सूत्र.
२. राय-पसेणइज्ज [राज-प्रश्नीय] सूत्र.
३. जीवाजीवाभिगम सूत्र.
४. पण्णवणा [प्रज्ञापना] सूत्र.
५. सूर-पण्णत्ति [सूर्य-प्रज्ञप्ति] सूत्र.
६. चंद-पण्णत्ति [चन्द्र-प्रज्ञप्ति] सूत्र.
७. जंबूदीव-पण्णत्ति [जंबूद्वीप-प्रज्ञप्ति] सूत्र.
८. निरयावलिया [निरयावलिका] सूत्र.

3. ṭhāṇaṅga [sthānāṅga] sūtra.
4. samavāyaṅga [samavāyāṅga] sūtra.
5. viyāha-paṇṇatti [vyākhyā-prajñapti / bhagavatī] sūtra.
6. nāyā-dhamma-kahaṅga [jñātā-dharma-kathāṅga] sūtra.
7. uvāsaga-dasaṅga [upāsaka-daśāṅga] sūtra.
8. antagaḍa-dasaṅga [antakṛd-daśāṅga] sūtra.
9. aṇuttaro-vavāiya-dasaṅga [anuttaraupa-pātika-daśāṅga] sūtra.
10. paṇhā-vāgaraṇaṅga [praśna-vyākaraṇāṅga] sūtra.
11. vivāga-suyaṅga [vipāka-śrutāṅga] sūtra.

Names of twelve upāṅgas :-

1. ovāiya / uvavāya [aupapātika] sūtra.
2. rāya-paseṇaijja [rāja-praśnīya] sūtra.
3. jīvājīvābhigama sūtra.
4. paṇṇavaṇā [prajñāpanā] sūtra.
5. sūra-paṇṇatti [sūrya-prajñapti] sūtra.
6. canda-paṇṇatti [candra-prajñapti] sūtra.
7. jambūdīva-paṇṇatti [jambūdvīpa-prajñapti] sūtra.
8. nirayāvaliyā [nirayāvalikā] sūtra.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. कप्पवडिंसिया [कल्पावतंसिका] सूत्र.
१०. पुप्फिया [पुष्पिका] सूत्र.
११. पुप्फ चूलिया [पुष्प चूलिका] सूत्र.
१२. वण्हिदसा [वृष्णिदशा] सूत्र.

साधु के सत्ताईस गुण :-

१-५. पाँच महाव्रतों का पालन करना.
६. रात्रि भोजन का त्याग करना. [सूर्यास्त के दो **घड़ी** (अड़तालीस मिनिट) पूर्व से सूर्योदय के दो **घड़ी** बाद तक आहार-पानी का त्याग करना.]
७-१२. छः काय के जीवों की रक्षा करना.
१३-१७. पाँच इंद्रियों पर नियंत्रण रखना.
१८-२०. तीन **गुप्तियों** का पालन करना.
२१. लोभ न करना.
२२. क्षमा को धारण करना.
२३. मन को निर्मल रखना.
२४. विशुद्ध **प्रतिलेखन** करना.
२५. पाँच **समितियों** का पालन करना.
२६,२७. परीषहों तथा उपसर्गों को सहन करना.

9. kappavaḍinsiyā [kalpāvatansikā] sūtra.
10. pupphiyā [puṣpikā] sūtra.
11. puppha cūliyā [puṣpa cūlikā] sūtra.
12. vaṇhidasā [vṛṣṇidaśā] sūtra.

Twenty seven qualities of the sādhu :-

1-5. To observe the five great vows.
6. To give up eating during the night. [To give up eating and drinking (water etc.) from two **ghaḍī** (forty eight minutes) before sun set to two **ghaḍī** after sun rise].
7-12. To protect the living beings of six forms.
13-17. To control five organs of senses.
18-20. To observe three **gupti**s.
21. Not to do greed.
22. To practise / bear forgiveness.
23. To keep the heart pure [free from evil thought].
24. To perform proper / faultless **pratilekhana.**
25. To observe five **samiti**s.
26,27. To suffer hardships and sufferings.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देव :- यहाँ पर देव शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है-

१. **देवलोक के देव** - जहाँ जीव पुण्यवश सीमित समय के लिए उत्पन्न होता है.

२. **कर्म** क्षय के कारण आत्म स्वरूप को प्राप्त **अरिहंत** और **सिद्ध भगवंत**, जो मोक्ष मार्ग में आराध्य देव हैं.

deva [god] :- Here the word **deva [god]** is used in two meanings--

1. **Heavenly gods** - where the souls takes birth for a limited period as a result of good deeds.
2. **arihantas** and **siddha bhagavantas** having attained the perfect form of soul due to annihilation of **karmas**, who are venerable gods in the path of salvation.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** से **अरिहंत**, **सिद्ध**, **आचार्य**, **उपाध्याय** और **साधु**- इन **पंच** [पांच] **परमेष्ठियों** को नमस्कार किया गया है. इस **मंत्र** से सभी पाप और विघ्न नष्ट हो जाते हैं. यह मन्त्र सभी मंगलों में प्रथम मंगल है.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra** [aphorism], obeisance is offered to the **arihanta,** the **siddha,** the **ācārya,** the **upādhyāya,** and the **sādhu**- the **pañca** [five] **parameṣṭhi**s. By means of this **mantra**, all sins and impediments get annihilated. This holy hymn is the most auspicious among all the auspices.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. पंचिंदिय सूत्र

पंचिंदिय-संवरणो, तह नव-विह-बंभचेर-गुत्तिधरो.
चउविह-कसाय-मुक्को, इअ अट्ठारस-गुणेहिं संजुत्तो..१.
पंच-महव्वय-जुत्तो, पंच-विहायार-पालण-समत्थो.
पंच-समिओ तिगुत्तो, छत्तीस-गुणो गुरू मज्झ.........२.

शब्दार्थ :-

१. **पंचिंदिय-संवरणो** = पाँच इंद्रियों को वश में रखने वाले
 पंच = पाँच, **इंदिय** = इंद्रियों को, **संवरणो** = वश में रखने वाले

तह नव-विह-बंभचेर-गुत्तिधरो = तथा नव प्रकार की ब्रह्मचर्य की गुप्तियों को धारण करने वाले
 तह = तथा, **नव** = नव, **विह** = प्रकार की, **बंभचेर** = ब्रह्मचर्य की, **गुत्ति** = गुप्तियों को, **धरो** = धारण करने वाले

चउविह-कसाय-मुक्को = चार प्रकार के **कषायों** से मुक्त
 चउ = चार, **कसाय** = **कषायों** से, **मुक्को** = मुक्त

इअ अट्ठारस-गुणेहिं संजुत्तो = इन अट्ठारह गुणों से युक्त

2. pañcindiya sūtra

pañcindiya-samvaraṇo, taha nava-viha-bambhacera-guttidharo.
cauviha-kasāya-mukko, ia aṭṭhārasa-guṇehim sañjutto. ....1.
pañca-mahavvaya-jutto, pañca-vihāyāra-pālaṇa-samattho.
pañca-samio tigutto, chattīsa-guṇo gurū majjha. ....2.

Literal meaning :-

1. **pañcindiya-samvaraṇo** = the controller of five organs of sense
 pañca = five, **indiya** = organs of sense, **samvaraṇo** = the controller of

taha nava-viha-bambhacera-guttidharo = and the observer of nine types of restrictions [for the proper observance] of celibacy
 taha = and, **nava** = nine, **viha** = types of, **bambhacera** = of celibacy, **gutti** = restrictions, **dharo** = the observer of

cauviha-kasāya-mukko = free from four types of **kaṣāyas**
 cau = four, **kasāya** = **kaṣāyas**, **mukko** = free from

ia aṭṭhārasa-guṇehim sañjutto = possessing these eighteen virtues

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इअ = इन, **अट्ठारस** = अट्ठारह, **गुणेहिं** = गुणों से, **संजुत्तो** = युक्त

२. **पंच-महव्वय-जुत्तो** = पाँच महाव्रतों से युक्त

महव्वय = महाव्रतों से, **जुत्तो** = युक्त

पंच-विहा-यार-पालण-समत्थो = पाँच प्रकार के आचारों का पालन करने में समर्थ

आयार = आचारों का, **पालण** = पालन करने में, **समत्थो** = समर्थ

पंच-समिओ ति-गुत्तो = पाँच **समितियों** से युक्त और तीन **गुप्तियों** से युक्त

समिओ = **समितियों** से युक्त, **ति** = तीन, **गुत्तो** = **गुप्तियों** से युक्त

छत्तीस-गुणो गुरू मज्झ = [इन] छत्तीस गुणों वाले मेरे **गुरु** हैं

छत्तीस = छत्तीस, **गुणो** = गुणों वाले, **गुरू** = **गुरु**, **मज्झ** = मेरे

गाथार्थ :-

पाँच इंद्रियों को वश में रखने वाले, नव प्रकार की ब्रह्मचर्य की गुप्तियों को धारण करने वाले, चार प्रकार के **कषायों** से मुक्त-- इन अट्ठारह गुणों से युक्त, तथा... .... १.

...पाँच महाव्रतों से युक्त, पाँच प्रकार के आचारों का पालन करने में समर्थ, पाँच **समितियों** से युक्त और तीन **गुप्तियों** से युक्त-- [इन] छत्तीस

ia = these, **aṭṭhārasa** = eighteen, **guṇehim** = virtues, **sañjutto** = possessing

2. **pañca-mahavvaya-jutto** = observing the five great vows

mahavvaya = great vows, **jutto** = observing

pañca-vihā-yāra-pālaṇa-samattho = capable in observing five types of right conduct

āyāra = right conduct, **pālaṇa** = in observing, **samattho** = capable

pañca-samio ti-gutto = observing five **samitis** and observing three **guptis**

samio = observing **samitis**, **ti** = three, **gutto** = observing **guptis**

chattīsa-guṇo gurū majjha = the possessor of [these] thirty six qualities is my **guru**

chattīsa = thirty six, **guṇo** = possessor of qualities, **gurū** = **guru**, **majjha** = my

Stanzaic meaning :-

The controller of five organs of sense, the observer of nine types of restrictions of celibacy, free from four types of **kaṣāyas**-- possessing these eighteen qualities and... .... 1.

...observing the five great vows, capable in observing five types of right conduct, observing five **samitis** and observing three **guptis**-- the possessor of [these] thirty

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणों वाले मेरे **गुरु** हैं .... .२.

विशेषार्थ :-

इन्द्रिय = संसारी जीव को पहचानने का चिह्न / संसारी जीव द्वारा पौद्गलिक भावों को आंशिक रूप से जानने का साधन.

पाँच इन्द्रियों के तेईस विषय :-

१. **स्पर्शेन्द्रिय [त्वचा] के आठ विषय-** स्पर्श द्वारा हलकापन, भारीपन, कोमलता, कठोरता, शीतलता, ऊष्णता, चिकनाहट और रूखेपन को जानना.

२. **रसनेन्द्रिय [जीभ] के पाँच विषय-** स्वाद द्वारा मधुरता, खटाई, खारापन, कड़वाहट और तीखेपन को जानना.

३. **घ्राणेन्द्रिय [नासिका] के दो विषय-** सुगंध और दुर्गंध को जानना.

४. **चक्षुरिन्द्रिय [आंख] के पाँच विषय-** सफेद, काला, लाल, पीला और हरे रंग को देखकर जानना.

५. **श्रोत्रेन्द्रिय [कान] के तीन विषय- सचित्त** [जीवंत प्राणी के] शब्द, **अचित्त** [निर्जीव वस्तु के] शब्द और **मिश्र** [जीवंत प्राणी और निर्जीव

six qualities is my **guru**. .... 2.

Specific meaning :-

indriya = Organ of sense / mark to identify the worldly living beings / a mean for worldly living beings to know the state of matters partially.

Twenty three sensual pleasures of five sense organs :-

1. **Eight objects of pleasure of sparśendriya [organs of sense for touching skin]-** To know lightness, heaviness, softness, hardness, coldness, hotness, oiliness and dryness by touching.
2. **Five objects of pleasure of rasanendriya [organ of sense for tasting-tongue]-** To know sweetness, sourness, alkalinity, bitterness and acridity by tasting.
3. **Two objects of pleasure of ghrāṇendriya [organ of sense for smelling-nose]-** To know fragrance and foul smell by smelling.
4. **Five objects of pleasures of cakṣurindriya [sense organ for seeing-eyes]-** To know the colours of white, black, red, yellow and green by seeing.
5. **Three objects of pleasures of śrotrendriya [organ of sense for hearing - ears]-** To hear **sacitta** sound [sound of living / sentient beings], **acitta**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वस्तु का मिला जुला] शब्द सुनना.

ब्रह्मचर्य = देव, मनुष्य और तिर्यंच संबंधी विषय भोग से रहित होकर, मैथुन सेवन का तीन **योग** और तीन **करण** से त्याग करना.

ब्रह्मचर्य की नव गुप्तियाँ :-

१. स्त्री, पशु और नपुंसक रहित स्थान में रहना.

२. स्त्री संबंधी वार्तालाप न करना.

३. स्त्री जिस स्थान में बैठी हो उस स्थान में पुरुष दो **घड़ी** तक न बैठे. [पुरुष जिस स्थान में बैठा हो वहां महिला तीन **प्रहर** तक न बैठे]

४. स्त्रियों के अंगोपांग न देखना.

५. दीवाल की आड़ में स्त्री-पुरुष का युगल रहता हो ऐसे स्थान में न रहना.

६. पूर्व काल में की हुई रति क्रीड़ा का स्मरण न करना.

७. प्रमाण से अधिक आहार न करना. [आहार प्रमाण– पुरुष के लिये बत्तीस कवल और स्त्री के लिये अट्ठाईस कवल.]

८. मादक आहार-पानी न लेना.

९. शरीर शृंगार न करना.

sound [sound of inanimate / insentient objects] and **miśra** [mixed] sound [sound of both living beings and inanimate objects].

brahmacarya = To give up sexual activities by three **yoga** and three **karaṇa**, being devoid of sexual enjoyment with gods, human beings and animal beings.

Nine restrictions [for proper observance / protection] of celibacy :–

1. To reside in a place devoid of women, animals and eunuchs.
2. Not to talk about women.
3. Man should not sit upto two **ghaḍī** in a place where a woman has sat. [Women should not sit upto three **prahara** in a place where a man has sat.]
4. Not to observe the body or parts of the body of women.
5. Not to reside in a place where a couple of a man and woman is staying on other side of the wall.
6. Not to remember sexual pleasures enjoyed in the past.
7. Not to take excessive food beyond limit. [Limit of food for man thirty two morsels and for woman twenty eight morsels].
8. Not to take intoxicating food or drinks.
9. Not to decorate the body.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[स्त्रियों के लिए स्त्री की जगह पुरुष शब्द समझना.]

कषाय = जीव के शुद्ध स्वरूप को दूषित कर, संसार प्राप्त कराने वाले परिणाम.

चार प्रकार के कषाय :-

१. **क्रोध-** गुस्सा, द्वेष, वैर, अक्षमा.

२. **मान-** अभिमान, अहंकार, मद, अनम्रता.

३. **माया-** कपट, ठगाई, असरलता.

४. **लोभ-** तृष्णा, लालसा, असंतोष.

महाव्रत :-

१. कठिनता से पालन की जाने वाली संयम संबंधी प्रतिज्ञा.

२. सूक्ष्म [पूर्ण] रूप से पाले जाने वाले व्रत / **साधु** द्वारा निरपराधी या अपराधी, **त्रस** [स्वेच्छा से चल-फिर सकने वाले] या **स्थावर** [स्वेच्छा से चल-फिर न सकने वाले] जीव की संकल्प या आरंभ पूर्वक [अपेक्षा रहित], निरपेक्ष [अकारण] या सापेक्ष [सकारण] हिंसादि का तीन **योग** [मन-वचन-काय योग] और तीन **करण** [करना, कराना, करते हुए का अनुमोदन करना] से त्याग करने का नियम.

[The word man should be considered in place of woman for women.]

kaṣāya = Passions leading in increase of life cycle, polluting the pure nature of the soul.

Four types of kaṣāya :-

1. **krodha [anger]-** Rage, malice, enmity, non-forgiveness.
2. **māna [pride]-** Vanity, egotism, arrogance, lack of courtesy.
3. **māyā [fraud]-** Deceit, cheating, innocence.
4. **lobha [greed]-** Desire, covetousness, discontentment.

mahāvrata [great vow] :-

1. Vow relating to self-restraint being observed with great difficulty.
2. Vow being observed minutely [completely] / vow of giving up violence of innocent or guilty, **trasa** [capable of moving voluntarily] or **sthāvara** [uncapable to move voluntarily] living beings with determination or unintentionally [without any expectation], without reason or with reason with three **yoga** [activities of mind, speech and body] and three **karaṇa** [doing, getting done and appreciating of being done by others] by the **sādhu**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाँच महाव्रत :-

१. **प्राणातिपात विरमण व्रत-** तीन **योग** और तीन **करण** से हिंसा का त्याग.
२. **मृषावाद विरमण व्रत-** तीन **योग** और तीन **करण** से असत्य का त्याग.
३. **अदत्तादान विरमण व्रत-** तीन **योग** और तीन **करण** से अदत्त का त्याग.
४. **मैथुन विरमण व्रत-** तीन **योग** और तीन **करण** से मैथुन सेवन का त्याग.
५. **परिग्रह विरमण व्रत-** तीन **योग** और तीन **करण** से परिग्रह का त्याग.

आचार = सम्यग् आचरण

पाँच प्रकार के आचार :-

१. **ज्ञानाचार- ज्ञान** [आध्यात्म ज्ञान] में विधि पूर्वक वृद्धि कराने वाला आचार.
२. **दर्शनाचार- दर्शन** [श्रद्धा] गुण में वृद्धि और स्थिरता कराने वाला आचार.
३. **चारित्राचार- चारित्र** में वृद्धि और स्थिरता कराने वाला आचार.

Five great vows :-

1. **prāṇātipāta viramaṇa vrata–** Giving up of violence with three **yoga** and three **karaṇa.**
2. **mṛṣāvāda viramaṇa vrata–** Giving up of untruth with three **yoga** and three **karaṇa.**
3. **adattādāna viramaṇa vrata–** Giving up of things not given with three **yoga** and three **karaṇa.**
4. **maithuna viramaṇa vrata–** Giving up of sexual pleasures / activities with three **yoga** and three **karaṇa.**
5. **parigraha viramaṇa vrata–** Giving up of possessions by three **yoga** and three **karaṇa.**

ācāra = Right conduct / behaviour.

Five types of conduct :-

1. **jñānācāra–** Activities leading to improvement in **jñāna** [spiritual knowledge] according to the procedure.
2. **darśanācāra–** Activities leading to improvement and stability in the virtue of **darśana** [right conduct].
3. **cāritrācāra–** Activities leading to improvement and stability in **cāritra**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. **तपाचार-** बाह्य और अभ्यंतर **तप** में वृद्धि कराने वाला आचार.

५. **वीर्याचार- संयम** आदि में **वीर्य** [बल / पराक्रम / उल्लास] की वृद्धि कराने वाला आचार.

समिति = एकाग्र चित्त से सम्यक् क्रियाओं में प्रवृत्ति.

गुप्ति = अनिष्ट प्रवृत्तियों से निवृत्ति.

पाँच समिति और तीन गुप्ति :-

१. **इर्या समिति- जयणा** पूर्वक हितकारी गति से चलना.

२. **भाषा समिति- जयणा** पूर्वक निरवद्य वचन बोलना.

३. **एषणा समिति- जयणा** पूर्वक निर्दोष भिक्षा ग्रहण करना.

४. **आदानभंडमत्त निक्षेपणा समिति-** अवलोकन और **प्रतिलेखन** कर वस्तु को **जयणा** पूर्वक लेना या रखना.

५. **पारिष्ठापनिका समिति- जयणा** पूर्वक अनुपयोगी वस्तु और मल-मूत्रादि का विसर्जन करना.

६. **मन गुप्ति-** मन की अशुभ और अनावश्यक प्रवृत्तियों का निग्रह करना [रोकना].

७. **वचन गुप्ति-** सावद्य और अनावश्यक वाणी का निग्रह करना.

[spiritual rites / right conduct].

4. **tapācāra–** Activities leading to increment in external and internal **tapa** [penance].

5. **vīryācāra**–Activities leading to increment of **vīrya** [virility / strength / valour / joy] in **sañyama** etc.

samiti = Propensity in right activities with full concentration.

gupti = Renunciation from harmful activities.

Five samitis and three guptis :–

1. **iryā samiti–** To walk with **jayaṇā** [great care] with beneficial movement.

2. **bhāṣā samiti–** To speak harmless words with **jayaṇā** [great care].

3. **eṣaṇā samiti–** To take faultless alms with **jayaṇā.**

4. **ādānabhaṇḍamatta nikṣepaṇā samiti–** To take or keep the things with **jayaṇā** after proper observation and doing **pratilekhana.**

5. **pāriṣṭhāpanikā samiti–** To give up unuseful things and release of excrement etc. with **jayaṇā.**

6. **mana gupti–** To control evil and unnecessary propensities of the mind.

7. **vacana gupti–** To restrain harmful and unnecessary speech.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. **काय गुप्ति-** सावद्य और अनावश्यक शारीरिक क्रियाओं का निग्रह करना.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** में **श्री आचार्य महाराज [गुरु]** के छत्तीस गुणों का वर्णन है. कोइ भी धार्मिक क्रिया करते समय **स्थापनाचार्यजी** की स्थापना करने के लिये यह **सूत्र** बोला जाता है.

8. **kāya gupti–** To restrain / control harmful and unnecessary activities of the body.

Introduction of the sūtra :-

In this **sūtra,** there is a description of thirty six qualities of **śrī ācārya mahārāja [guru].** This **sūtra** is uttered to consecrate the **sthāpanācāryajī** at the time of the performance of any sacred rite.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. खमासमण सूत्र

इच्छामि खमा-समणो! वंदिउं, जावणिज्जाए
निसीहिआए?, मत्थएण वंदामि......................१.

शब्दार्थ :-

इच्छामि = मैं चाहता हूँ
खमा-समणो! = हे **क्षमा-श्रमण**! / हे क्षमावान **साधु महाराज**!
वंदिउं = वंदन करने के लिये
जावणिज्जाए = शक्ति के अनुसार
निसीहिआए = पापमय प्रवृत्तिओं [व्यापार] को त्याग कर
मत्थएण वंदामि = मस्तक [आदि पाँच अंगों] से मैं वंदन करता हूँ
मत्थएण = मस्तक से, **वंदामि** = वंदन करता हूँ

गाथार्थ :-

हे क्षमावान **साधु महाराज!** आपको मैं शक्ति के अनुसार पापमय प्रवृत्तियों को त्याग कर वंदन करना चाहता हूँ. मैं मस्तक [आदि पाँच अंगों] से वंदन करता हूँ. .... .१.

3. khamāsamaṇa sūtra

icchāmi khamā-samaṇo! vandium, jāvaṇijjāe
nisīhiāe?, matthaeṇa vandāmi. ....1.

Literal meaning :-

icchāmi = i wish
khamā-samaṇo! = oh **kṣamā-śramaṇa**! / oh **sādhu mahārāja** of forgiving nature!
vandium = to obeisance
jāvaṇijjāe = according to the best of my ability
nisīhiāe = renouncing evil activities
matthaeṇa vandāmi = i obeisance with [five organs of the body such as] head
matthaeṇa = with head, **vandāmi** = i obeisance

Stanzaic meaning :-

Oh **sādhu mahārāja** of forgiving nature! I wish to obeisance you according to the best of my ability, renouncing evil activities. I obeisance with [five organs of the body such as] head. .... 1.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेषार्थ :-

क्षमा-श्रमण = दस प्रकार के **यति धर्म** का पालन करते हुए सर्व जीवों [शत्रु हों या मित्र हों] के प्रति समभाव रखने वाले तथा इंद्रियों को वश में रखकर आत्म शुद्धि के लिये श्रम करने वाले **साधु**.

गुरु = अज्ञान को दूर करने वाले.

सद्गुरु = स्वयं संसार समुद्र को तरने वाले और दूसरों को तारने वाले **गुरु**.

दस प्रकार के यति धर्म :-

१-४. क्षमा, मृदुता, सरलता और पवित्रता रखना.
५. सत्य बोलना.
६. संयम का पालन करना.
७. तप करना.
८. त्याग वृत्ति रखना.
९. परिग्रह न रखना.
१०. ब्रह्मचर्य का पालन करना.

गुरु वंदन :- बहुमान व्यक्त करने के लिए **गुरु** को किया जाने वाला वंदन.

Specific meaning :-

kṣamā śramaṇa = **sādhu** keeping equanimity with all living beings [may be either friend or foe] observing ten types of **yati dharma** [code of conduct prescribed for a **sādhu**] and making efforts for purifying the soul keeping the sense organs under control.

guru = The remover of ignorance.

sadguru [Right preceptor] = **guru** who crosses the ocean of life and guides others to cross it.

Ten types of yati dharma :-

1-4. To have the nature of forgiveness, simplicity, tenderness and sacredness.
5. To speak truth.
6. To observe self control.
7. To do penance.
8. To keep the nature of giving up [of material things to other].
9. Not to keep possessions.
10. To observe celibacy.

guru vandana :- Obeisance performed to the **guru** to express honour.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीन प्रकार के गुरु वंदन :-

१. **फिट्टा वंदन :-** मार्ग में चलते समय **मत्थएण वंदामि** कहते हुए, मस्तक नमाकर हाथ जोड़कर प्रणाम करना.

२. **थोभ वंदन :- खमासमण सूत्र** बोलते हुए दो बार **पंचांग प्रणिपात** करना.

३. **द्वादशावर्त्त वंदन :- वांदना सूत्र** बोलते हुए दो बार वंदन करना.

पंचांग प्रणिपात :- दो हाथ, दो घुटने, और मस्तक को पूर्णतया झुकाकर प्रणाम करना.

फिट्टा वंदन :- साधु सर्व **साधुओं** को, **साध्वी** सर्व **साधु** और **साध्वियों** को परस्पर, **श्रावक** और **श्राविका** सर्व **साधु-साध्वियों** को करते हैं.

थोभ वंदन :- साधु सर्व बड़े **साधुओं** को, **साध्वी** सर्व **साधु** और बड़ी **साध्वियों** को, **श्रावक** सर्व **साधुओं** को, **श्राविका** सर्व **साधु** और **साध्वियों** को करते हैं.

द्वादशावर्त्त वंदन :- साधु, साध्वी, श्रावक व **श्राविकाएँ आचार्य** आदि **पदस्थ साधुओं** को; समान पद वाले **साधु** अपने से अधिक दीक्षा पर्याय वाले **साधुओं** को, छोटे पद वाले **साधु** बड़े पद वाले **साधुओं** को **द्वादशावर्त्त वंदन** करते हैं.

गुरु वंदन के चार अवसर :- गुरु शांत बैठे रहने पर, आसन पर बैठे

Three types of guru vandana :-

1. **phiṭṭā vandana :-** To make an obeisance on the way saying **matthaeṇa vandāmi** bowing the head with folded hands.

2. **thobha vandana :-** To perform **pañcaṅga praṇipāta** twice saying **khamāsamaṇa sūtra.**

3. **dvādaśāvartta vandana :-** To make obeisance twice saying **vāndanā sūtra.**

pañcaṅga praṇipāta :- To perform obeisance bowing with two hands, two knees and head completely [touching the floor].

phiṭṭā vandana :- sādhu does to all **sādhus**, **sādhvīs** does to all **sādhus** and **sādhvīs** mutually, **śrāvaka** and **śrāvikā** does to all **sādhus** and **sādhvīs**.

thobha vandana :- sādhu does to all elder **sādhus**, **sādhvī** does to all **sādhus** and elder **sādhvīs**, **śrāvaka** does to all **sādhus**, **śrāvikā** does to all **sādhus** and **sādhvīs**.

dvādaśāvartta vandana :- sādhu, sādhvī, śrāvaka and **śrāvikās** performs **dvādaśāvartta vandana** to **sādhus** designated like **ācārya, sādhus** with similar designations to **sādhus** having more period of **dīkṣā** than himself, **sādhus** with lower designation to **sādhus** having higher designations.

Four occasions for making obeisance to the guru :- The obeisance is done

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहने पर, अप्रमत्त रहने पर और **गुरु वंदन** कराने के लिए तैयार होने पर वंदन किया जाता है.

गुरु वंदन के चार अनवसर :- गुरु धर्म चिंतन में होने पर, आसन पर बैठे न रहने पर, प्रमाद में होने पर और आहार- नीहार करते हों या करने की तैयारी में होने पर वंदन नहीं किया जाता है.

सूत्र परिचय :-

यह **सूत्र जिनेश्वर** प्रभु और **क्षमा-श्रमण [साधु]** को वंदन करते समय बोला जाता है.

when the **guru** is sitting peacefully, is sitting on his seat, is alert [not resting] and is ready to receive the **guru vandana.**

Four unoccasions for making obeisance to the guru :- Obeisance should not be done when the **guru** is busy in religious contemplation, is not sitting on the seat, is not alert [is resting] and is taking food or excreting or is about to take food or excrete.

Introduction of the sūtra :-

This **sūtra** is uttered while offering obeisance to the lord **jineśvara** and **kṣamā-śramaṇa [sādhu].**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. इच्छकार सूत्र

इच्छकार सुह-राइ? सुह-देवसि? सुख-तप?
शरीर-निराबाध? सुख-संजम-यात्रा-निर्वहते हो जी?
स्वामि! शाता है जी? आहार-पानी का लाभ देना जी. .१.

शब्दार्थ :-

इच्छकार = मैं [पूछना] चाहता हूँ.
सुह-राइ? = आप रात्रि में सुख पूर्वक रहे हो?
 सुह = सुख पूर्वक, **राइ** = रात्री में
सुह-देवसि? = आप दिन में सुख पूर्वक रहे हो?
 देवसि = दिन में
सुख-तप? = आपको तप सुख पूर्वक होता है?
 सुख = सुख पूर्वक, **तप** = तप
शरीर-निराबाध? = आपका शरीर पीड़ा रहित है?
 शरीर = शरीर, **निराबाध** = पीड़ा रहित
सुख-संजम-यात्रा-निर्वहते हो जी? = आप अपनी संयम यात्रा का सुख पूर्वक निर्वाह करते हो जी?

4. icchakāra sūtra

icchakāra suha-rāi? suha-devasi? sukha-tapa?
śarīra-nirābādha? sukha-sañjama-yātrā-nirvahate ho jī?
svāmi! śātā hai jī? āhāra-pānī kā lābha denā jī. ....1.

Literal meaning :-

icchakāra = i wish [to enquire]
suha-rāi? = were you comfortable [free from troubles] during the night?
 suha = comfortable, **rāi** = during the night
suha-devasi? = were you comfortable [free from troubles] during the day?
 devasi = during the day
sukha-tapa? = are you able to perform penance comfortably?
 sukha = comfortably, **tapa** = penance
śarīra-nirābādha? = is your body free from afflictions?
 śarīra = body, **nirābādha** = free from afflictions
sukha-sañjama-yātrā-nirvahate ho jī? = are you pursuing comfortably in your ascetic life?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संजम = संयम, **यात्रा** = यात्रा, **निर्वहते** = निर्वाह करते, **हो जी** = हो जी

स्वामि! शाता है जी? = हे **स्वामी**! आप सुख शान्ति में हो?

स्वामि = हे **स्वामी**!, **शाता** = सुख शांति, **है जी** = में हो

आहार-पानी का लाभ देना जी = आहार, पानी आदि को ग्रहण कर लाभ देनाजी.

आहार = आहार, **पानी** = पानी, **का** = का, **लाभ** = लाभ, **देना जी** = देना जी

गाथार्थ :-

[हे **गुरुजी**!] मैं [पूछना] चाहता हूँ. रात्रि में आप सुख पूर्वक रहे हो? [दिन में आप सुख पूर्वक रहे हो?] आपको तप सुख पूर्वक होता है? आपका शरीर पीड़ा रहित है? आप अपनी संयम यात्रा का सुख पूर्वक निर्वाह करते हो जी? हे **स्वामी**, आप सुख-शांति में हो? आहार, पानी आदि को ग्रहण कर लाभ देनाजी. .... .१.

विशेषार्थ :-

सुह राइ एवं सुह देवसि :- रात्रि के बारह बजे से दिन के बारह बजे तक **सुह राइ** एवं दिन के बारह बजे से रात्रि के बारह बजे तक

sañjama = ascetic, **yātrā** = life, **nirvahate** = pursuing, **ho jī** = are you

svāmi! śātā hai jī? = oh **svāmī**! are you in happy and peace?

svāmi = oh **svāmī**!, **śātā** = happy and peace, **hai jī** = are you

āhāra-pānī kā lābha denā jī = kindly give me benefit by accepting food, water etc.

āhāra = food, **pānī** = water, **kā** = of, **lābha** = benefit, **denā jī** = give me

Stanzaic meaning :-

[Oh **guruji**!] I wish [to enquire]. Were you comfortable during the night? [were you comfortable during the day?]. Are you able to perform penance comfortably? Is your body free from pain? Are you pursuing comfortably in your ascetic life? Oh **svāmī**! are you in happy and peace. Kindly give me benefit by accepting food, water etc. .... 1.

Specific meaning :-

suha rāi and suha devasi :- suha rāi is spoken from 12 o'clock in the night to 12 o'clock in the day and **suha devasi** from 12 o'clock in the day to 12 o'clock

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुह देवसि बोला जाता है.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** से **गुरु महाराज** को सर्व प्रकार से भक्ति पूर्वक सुख-शाता पूछी जाती है और आहार, पानी आदि ग्रहण करने के लिये विनती की जाती है.

in the night.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, welfare is being asked in all ways to the **guru mahārāja** with devotion and an entreaty is also made to accept food, water etc.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४ अ. अब्भुट्ठिओमि सूत्र

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि,
अब्भिंतर-देवसिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि देवसिअं.
जं किंचि अपत्तिअं, पर-पत्तिअं; भत्ते, पाणे;
विणए, वेयावच्चे; आलावे, संलावे; उच्चासणे, समासणे;
अंतर-भासाए, उवरि-भासाए; जं किंचि मज्झ
विणय-परिहीणं, सुहुमं वा, बायरं वा; तुब्भे जाणह,
अहं न जाणामि; तस्स मिच्छा मि दुक्कडं. ....१.

शब्दार्थ :-

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! = हे भगवन्! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो

इच्छा-कारेण = स्वेच्छा से, **संदिसह** = आज्ञा प्रदान करो,
भगवन्! = हे भगवन्!

अब्भुट्ठिओमि = मैं उपस्थित हूँ

अब्भिंतर-देवसिअं खामेउं? = दिन में किये हुए [अपराधों की] क्षमा

4 A. abbhuṭṭhiomi sūtra

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! abbhuṭṭhiomi,
abbhintara-devasiam khāmeuṃ? iccham, khāmemi devasiam.
jam kiñci apattiam, para-pattiam; bhatte, pāṇe;
viṇae, veyāvacce; ālāve, sanlāve; uccāsaṇe, samāsaṇe;
antara-bhāsāe, uvari-bhāsāe; jam kiñci majjha
viṇaya-parihīṇam, suhumam vā, bāyaram vā; tubbhe jāṇaha,
aham na jāṇāmi; tassa micchā mi dukkaḍam. ....1.

Literal Meaning :-

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! = oh **bhagavan!** kindly give me the permission voluntarily

icchā-kāreṇa = voluntarily, **sandisaha** = kindly give me the permission,
bhagavan! = oh **bhagavan!**

abbhuṭṭhiomi = i am present

abbhintara-devasiam khāmeuṃ? = to seek forgiveness [for the faults]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मांगने के लिये

अब्भिंतर = किये हुए, **देवसिअं** = दिन में, **खामेउं** = क्षमा मांगने के लिये

इच्छं = आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ

खामेमि देवसिअं = दिवस में हुए [अपराधों की] मैं क्षमा मांगता हूँ

खामेमि = मैं क्षमा मांगता हूँ, **देवसिअं** = दिवस में हुए

जं किंचि अपत्तिअं पर-पत्तिअं = जो कोई अप्रीतिकारक, विशेष अप्रीतिकारक हुआ हो

जं = जो, **किंचि** = कोई, **अपत्तिअं** = अप्रीतिकारक, **पर-पत्तिअं** = विशेष अप्रीतिकारक हुआ हो

भत्ते पाणे = आहार-पानी में

भत्ते = आहार, **पाणे** = पानी में

विणए वेयावच्चे = विनय, वैयावृत्त्य में

विणए = विनय, **वेयावच्चे** = वैयावृत्त्य में

आलावे संलावे = बोलने में, बातचीत करने में

आलावे = बोलने में, **संलावे** = बातचीत करने में

उच्चासणे समासणे = [गुरु से] ऊंचे आसन पर बैठने से, [गुरु के] समान आसन पर बैठने से

committed during the day

abbhintara = committed, **devasiam** = during the day, **khāmeum** = to seek forgiveness

iccham = i accept your order

khāmemi devasiam = i beg pardon [for the misdeeds] committed during the day

khāmemi = i beg pardon, **devasiam** = committed during the day

jam kiñci apattiam para-pattiam = whatever unpleasantness, bitterness is done

jam kiñci = whatever, **apattiam** = unpleasantness, **para-pattiam** = bitterness is done

bhatte pāṇe = in the matter of food, water

bhatte = in the matter of food, **pāṇe** = water

viṇae veyāvacce = regarding politeness, dedicated service

viṇae = regarding politeness, **veyāvacce** = dedicated service

ālāve sanlāve = while talking, during conversation

ālāve = while talking, **sanlāve** = during conversation

uccāsaṇe samāsaṇe = by sitting on a place [seat] higher [than the **guru**], by sitting on a place equivalent [to that of **guru**]

Jain Education International | For Private & Personal Use Only | www.jainelibrary.org

उच्चासणे = ऊंचे आसन पर बैठने से, **समासणे** = समान आसन पर बैठने से	**uccāsaṇe** = by sitting on a place higher, **samāsaṇe** = by sitting on a place equivalent
अंतर-भासाए उवरि-भासाए = [गुरु के] बीच में बोलने से, [गुरु की बात पर] टीका-टिप्पणी करने से	**antara-bhāsāe uvari-bhāsāe** = by interrupting [while the **guru** is talking], by commenting [on the talks of the **guru**]
अंतर = बीच में, **भासाए** = बोलने से, **उवरि-भासाए** = टीका-टिप्पणी करने से	**antara-bhāsāe** = by interrupting, **uvari-bhāsāe** = by commenting
जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं = मुझसे जो कोई विनय रहित [वर्तन] हुआ हो	**jam kiñci majjha viṇaya-parihīṇam** = if any discourteseous [act] is shown by me
मज्झ = मुझसे, **विणय** = विनय, **परिहीणं** = रहित वर्तन हुआ हो	**jam** = if, **kiñci** = any, **majjha** = by me, **viṇaya** = discourteseous [act], **parihīṇam** = is shown
सुहुमं वा बायरं वा = सूक्ष्म [छोटा] या बादर [बड़ा]	**suhumam vā bāyaram vā** = minor [minute] or major [big]
सुहुमं = सूक्ष्म, **वा** = या, **बायरं** = बादर	**suhumam** = minor, **vā** = or, **bāyaram** = major
तुब्भे जाणह अहं न जाणामि = आप जानते हो, मैं नहीं जानता हूँ	**tubbhe jāṇaha aham na jāṇāmi** = you know, i do not know
तुब्भे = आप, **जाणह** = जानते हो, **अहं** = मैं, **न** = नहीं, **जाणामि** = जानता हूँ	**tubbhe** = you, **jāṇaha** = know, **aham** = i, **na** = do not, **jāṇāmi** = know
तस्स मिच्छा मि दुक्कडं = मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों	**tassa micchā mi dukkaḍam** = those misdeeds of mine may become fruitless
तस्स = वे, **मिच्छा** = मिथ्या हों, **मि** = मेरे, **दुक्कडं** = दुष्कृत्य	**tassa** = those, **micchā** = may become fruitless, **mi** = of mine, **dukkaḍam** = misdeeds

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाथार्थ :-

हे **भगवन्**! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो। दिन में किये हुए [अपराधों की] क्षमा मांगने के लिये मैं उपस्थित हुआ हूँ. आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ. दिन में हुए [अपराधों की] मैं क्षमा मांगता हूँ. आहार-पानी में, विनय में, वैयावृत्य में, बोलने में, बातचीत करने में, ऊँचे आसन पर बैठने से, समान आसन पर बैठने से, बीच में बोलने से, टीका करने से जो कोई अप्रीतिकारक, विशेष अप्रीतिकारक हुआ हो, छोटा या बड़ा विनय रहित [वर्तन] मुझसे हुआ हो, [जो] आप जानते हो, मैं नहीं जानता हूँ, मेरे वे अपराध मिथ्या हों. .... १.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** से **गुरु महाराज** के प्रति हुए अविनय के लिये क्षमा मांगी जाती है.

Stanzaic Meaning :-

Oh **bhagavan!** kindly give me the permission voluntarily. I am present to seek forgiveness [for the faults] committed during the day. I accept your orders. I beg pardon [for the misdeeds] committed during the day. If any unpleasantness, bitterness is done in the matter of food-water, regarding politeness, dedicated service, while talking, during conversation, by sitting on a higher place, by sitting on an equivalent place, by interrupting, by commenting any major or minor discourteseous [act] in shown by me [which] you know, I do not know, those misdeeds of mine may become fruitless. .... 1.

introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, forgiveness is asked for the impoliteness shown towards **guru mahārāja**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. इरियावहिया सूत्र

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं
पडिक्कमामि? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं...........१.
इरियावहियाए, विराहणाए...........................२.
गमणागमणे...३.
पाण-क्कमणे, बीय-क्कमणे, हरिय-क्कमणे, ओसा-उत्तिंग-
पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे.............४.
जे मे जीवा विराहिया...............................५.
एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया..६.
अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया,
परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया,
जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं..........७.

शब्दार्थ :-

१. इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! = हे भगवन्! स्वेच्छा से आज्ञा

5. iriyāvahiyā sūtra

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! iriyāvahiyam
paḍikkamāmi? iccham, icchāmi paḍikkamiu.......................1.
iriyāvahiyāe, virāhaṇāe...2.
gamaṇāgamaṇe...3.
pāṇa-kkamaṇe, bīya-kkamaṇe, hariya-kkamaṇe, osā-uttinga-
paṇaga-daga-maṭṭī-makkaḍā-santāṇā-saṅkamaṇe..............4.
je me jīvā virāhiyā...5.
egindiyā, beindiyā, teindiyā, caurindiyā, pañcindiyā............6.
abhihayā, vattiyā, lesiyā, saṅghāiyā, saṅghaṭṭiyā,
pariyāviyā, kilāmiyā, uddaviyā, ṭhāṇāo ṭhāṇam saṅkāmiyā,
jīviyāo vavaroviyā, tassa micchā mi dukkaḍam..................7.

Literal meaning :-

1. icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! = oh bhagavan! give me the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीजिये

इच्छाकारेण = स्वेच्छा से, **संदिसह** = आज्ञा दीजिये, **भगवन्!** = हे भगवन्!

इरियावहियं पडिक्कमामि? = आने जाने की क्रिया से लगे पाप का **प्रतिक्रमण** करूं?

इरियावहियं = आने जाने की क्रिया से लगे पाप का, **पडिक्कमामि?** = **प्रतिक्रमण** करूं?

इच्छं = आपकी आज्ञा मैं स्वीकार करता हूँ

इच्छामि पडिक्कमिउं = मैं **प्रतिक्रमण** करना चाहता हूँ

इच्छामि = मैं चाहता हूँ, **पडिक्कमिउं** = **प्रतिक्रमण** करना

२. **इरियावहियाए विराहणाए** = मार्ग में चलते समय हुई विराधना का

इरियावहियाए = मार्ग में चलते समय हुई, **विराहणाए** = विराधना का

३. **गमणागमणे** = आते जाते

४. **पाण-क्कमणे** = प्राणियों को दबाने से

पाण = प्राणियों को, **क्कमणे** = दबाने से

बीय-क्कमणे = बीज को दबाने से

permission voluntarily

icchā-kāreṇa = voluntarily, **saṉdisaha** = give me the permission, **bhagavan!** = oh **bhagavan!**

iriyāvahiyaṉ paḍikkamāmi? = shall i perform **pratikramaṇa** for the sins committed while coming and going?

iriyāvahiyaṉ = for the sins committed while coming and going, **paḍikkamāmi** = shall i perform **pratikramaṇa?**

icchaṉ = i accept your order

icchāmi paḍikkamiuṉ = i wish to perform **pratikramaṇa**

icchāmi = i wish, **paḍikkamiuṉ** = to perform **pratikramaṇa**

2. **iriyāvahiyāe virāhaṇāe** = for the faults committed while walking on the way

iriyāvahiyāe = committed while walking on the way, **virāhaṇāe** = for the faults

3. **gamaṇāgamaṇe** = while coming & going

4. **pāṇa-kkamaṇe** = by suppressing the living creatures

pāṇa = the living creatures, **kkamaṇe** = by suppressing

bīya-kkamaṇe = by suppressing the seeds

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीय = बीज को	**bīya** = the seeds
हरिय-क्कमणे = हरी वनस्पति को दबाने से	**hariya-kkamaṇe** = by suppressing the green vegetation
हरिय = हरी वनस्पति को	**hariya** = the green vegetation
ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे = ओस की बूंद, चींटियों के बिल, पंच वर्णी काई, भीगी मिट्टी, मकड़ी के जाल को दबाने से	**osā-uttiṅga-paṇaga-daga-maṭṭī-makkaḍā-santāṇā-saṅkamaṇe** = by suppressing the dew, burrow of ants, moss in five colours, wet soil, spider's web
ओसा = ओस की बूंद, **उत्तिंग** = चींटियों के बिल, **पणग** = पंच वर्णी काई, **दग** = भीगी, **मट्टी** = मिट्टी, **मक्कडा** = मकड़ी के, **संताणा** = जाल को, **संकमणे** = दबाने से	**osā** = the dew, **uttiṅga** = burrow of ants, **paṇaga** = moss in five colours, **daga** = wet, **maṭṭī** = soil, **makkaḍā** = spider's, **santāṇā** = web, **saṅkamaṇe** = by suppressing
५. **जे मे जीवा विराहिया** = मेरे द्वारा जो जीव दुःखित हुए हों	5. **je me jīvā virāhiyā** = living beings which are pained by me
जे = जो, **मे** = मेरे द्वारा, **जीवा** = जीव, **विराहिया** = दुःखित हुए हों	**je** = which, **me** = by me, **jīvā** = living beings, **virāhiyā** = are pained
६. **एगिंदिया** = एक इंद्रिय [**स्पर्शेंद्रिय**] वाले	6. **egindiyā** = with one sense organ [**sparśendriya**]
एग = एक, **इंदिया** = इंद्रिय वाले	**ega** = one, **indiyā** = sense organ
बेइंदिया = दो इंद्रिय [**स्पर्शेंद्रिय** और **रसनेंद्रिय**] वाले	**beindiyā** = with two sense organs [**sparśendriya, rasanendriya**]
बे = दो	**be** = two
तेइंदिया = तीन इंद्रिय [**स्पर्शेंद्रिय, रसनेंद्रिय** और **घ्राणेंद्रिय**] वाले	**teindiyā** = with three sense organs [**sparśendriya, rasanendriya** and **ghrāṇendriya**]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते = तीन

चउरिंदिया = चार इंद्रिय [**स्पर्शेंद्रिय**, **रसनेंद्रिय**, **घ्राणेंद्रिय** और **चक्षुरिंद्रिय**] वाले

चउर = चार

पंचिंदिया = पाँच इंद्रिय [**स्पर्शेंद्रिय**, **रसनेंद्रिय**, **घ्राणेंद्रिय**, **चक्षुरिंद्रिय** और **श्रोत्रेंद्रिय**] वाले

पंच = पाँच

७. **अभिहया** = पाँव से मारे गये हों

वत्तिया = धूल से ढके गये हों

लेसिया = भूमि के साथ कुचले गये हों

संघाइया = परस्पर शरीर से टकराये गये हों

संघट्टिया = थोड़ा स्पर्श कराया गया हो

परियाविया = कष्ट पहुंचाया गया हो

किलामिया = खेद पहुंचाया गया हो

उद्दविया = डराये गये हों

ठाणाओ ठाणं संकामिया = एक स्थान से दूसरे स्थान पर फिराये गये हों

ठाणाओ = एक स्थान से, **ठाणं** = दूसरे स्थान पर, **संकामिया** = फिराये गये हों

te = three

caurindiyā = with four sense organs [**sparśendriya**, **rasanendriya**, **ghrāṇendriya** and **cakṣurindriya**]

caura = four

pañcindiyā = with five sense organs [**sparśendriya**, **rasanendriya**, **ghrāṇendriya**, **cakṣurindriya** and **śrotrendriya**]

pañca = five

7. abhihayā = are being kicked by feet

vattiyā = are being covered by dust

lesiyā = are being trampled with ground

saṅghāiyā = are being collided with each other with their bodies

saṅghaṭṭiyā = are being touched a little

pariyāviyā = are being troubled

kilāmiyā = are being distressed

uddaviyā = are being frightened

ṭhāṇāo ṭhāṇam saṅkāmiyā = are being shifted from one place to other place

ṭhāṇāo = from one place, **ṭhāṇam** = to other place, **saṅkāmiyā** = are shifted

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवियाओ ववरोविया = प्राण रहित किये गये हों
जीवियाओ = प्राण, **ववरोविया** = रहित किये गये हों
तस्स मिच्छा मि दुक्कडं = मेरे ये सर्व दुष्कृत्य मिथ्या हों
तस्स = ये सर्व, **मिच्छा** = मिथ्या हों, **मि** = मेरे, **दुक्कडं** = दुष्कृत्य

गाथार्थ :-

हे **भगवन्!** स्वेच्छा से आज्ञा दीजिये. आने-जाने की क्रिया से लगे पाप का **प्रतिक्रमण** करूं? आपकी आज्ञा मैं स्वीकार करता हूँ. मैं **प्रतिक्रमण** करना चाहता हूँ. .... .१.
...मार्ग में चलते समय हुई जीव विराधना का. .... .२.
...आते जाते समय. .... .३.
...प्राणियों को दबाने से, बीज को दबाने से, हरी वनस्पति को दबाने से, ओस की बूंद, चींटियों के बिल, पंच वर्णी काई, भीगी मिट्टी, मकड़ी के जाल को दबाने से. .... .४.
...मेरे द्वारा जो जीव मुझसे दुःखित हुए हों. .... .५.
...एक इंद्रिय वाले, दो इंद्रिय वाले, तीन इंद्रिय वाले, चार इंद्रियवाले, पाँच इंद्रिय वाले [जीव]. .... .६.

jīviyāo vavaroviyā = are being deprived of life
jīviyāo = life, **vavaroviyā** = are being deprived of
tassa micchā mi dukkaḍam = all these misdeeds of mine may become fruitless
tassa = all these, **micchā** = may become fruitless, **mi** = of mine, **dukkaḍam** = misdeeds

Stanzaic meaning :-

Oh **bhagavān**! voluntarily give me the permission. Shall I perform the **pratikramaṇa** for the sins committed while coming and going? I accept your order. I wish to perform **pratikramaṇa**. .... .1.
...for the faults committed while walking on the way. .... .2.
...while coming and going. .... .3.
...by suppressing [walking over] the living creatures, by suppressing the seeds, by suppressing the green vegetation, by suppressing dew, burrow of ants, five coloured moss, wet soil spider's web. .... .4.
...living beings which are pained by me. .... .5.
...[living beings] with one sense organ, with two sense organs, with three sense organs, with four sense organs, with five sense organs. .... .6.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

...पाँव से मारे हों, धूल से ढके हों, भूमि के साथ कुचले गये हों, परस्पर शरीर से टकराये गये हों, थोड़ा स्पर्श कराया गया हो, कष्ट पहुंचाया गया हो, खेद पहुंचाया गया हो, डराये गये हों, एक स्थान से दूसरे स्थान पर फिराये गये हों, प्राण रहित किये गये हों, मेरे ये सब दुष्कृत्य मिथ्या हों. .... ७.

...are being kicked by feet, are being covered by dust, are being trampled with ground, are being collided with each other with their bodies, are being touched a little, are being troubled, are being distressed, are being frightened, are being shifted from one place to another, are being deprived of life; all these misdeeds of mine may become fruitless. ....7.

विशेषार्थ :-

प्रतिक्रमण :- आत्म निरीक्षण द्वारा जीवन का पर्यवलोकन कर अपने से हुई विराधनाओं का पश्चात्ताप पूर्वक भविष्य में पुनः न करने का निर्णय कर, दूषित बनी आत्मा को शुद्ध कर, पुनः आत्म स्वभाव में लाने की क्रिया.

विराधना :- सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूपी मोक्षमार्ग का पालन न करना अथवा विकृत रूप से पालन करना.

चार प्रकार की विराधना :-

१. **अतिक्रम-** विराधना के लिये प्रेरित होना.
२. **व्यतिक्रम-** विराधना करने के लिये तैयार होना.
३. **अतिचार-** कुछ अंश में विराधना करना.
४. **अनाचार-** पूर्णतया विराधना का सेवन करना.

Specific meaning :-

pratikramaṇa :- The rite of bringing back the soul into self, purifying the polluted soul inspecting the daily routine of life minutely through introspection and determining not to repeat the guilt committed again in future with repentance.

virādhanā :- Not to observe or to pervert the path of salvation of right faith, right knowledge and right conduct.

Four types of virādhanā :-

1. **atikrama-** To get inspired to commit the guilt.
2. **vyatikrama-** To get ready to commit the guilt.
3. **aticāra-** To commit the guilt / misdeed partially.
4. **anācāra-** To commit the guilt completely.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राणी :- पाँच इंद्रिय, तीन बल [मन, वचन, काय बल], आयुष्य, और श्वासोच्छ्वास– इन दश प्राणों में से कम से कम चार और अधिक से अधिक दश प्राणों से युक्त आत्मा.

इरियावहियं प्रतिक्रमण के १८,२४,१२० [अठारह लाख चौबीस हजार एक सौ बीस] भेद :-

५६३ जीव के भेद x १० प्रकार की हिंसा [**अभिहया** आदि] x २ कारण [राग-द्वेष] x ३ **करण** x ३ **योग** x ३ काल [भूत, वर्तमान और भविष्य] x ६ साक्षी [**अरिहंत, सिद्ध, साधु, गुरु,** आत्मा और देव] = १८,२४,१२०.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** से चलते-फिरते, आते-जाते अपने द्वारा जीव-हिंसा आदि होने के कारण लगे हुए पापों को नष्ट करने के लिये पूर्व क्रिया रूप **मिच्छा मि दुक्कडं** दिया जाता है.

prāṇī [living being] :- A soul having at least four vitals and ten at the most out of ten vitals-- five sense organs, three capabilities / powers [power of thought, speech and action / mind, speech and body], duration of life [age] and breathing.

18,24,120 [eighteen lac twenty four thousand one hundred and twenty] distinctions of iriyāvahiyam pratikramaṇa :-

563 distinctions of living beings x 10 types of violations [such as **abhihayā**] x 2 reasons [attachment and enmity] x 3 **karaṇa** x 3 **yoga** x 3 times [past, present and future] x 6 witnesses [**arihanta, siddha, sādhu, guru,** soul and heavenly god] = 18,24,120.

Introduction of the sūtra :-

As a pre-rite, **micchā mi dukkaḍam** is being said for the sins attached due to the violence etc. of living beings caused by us while walking-moving, going-coming are being destroyed by this **sūtra**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. तस्स उत्तरी सूत्र

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं,
विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेणं, पावाणं कम्माणं
निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं. ....१.

शब्दार्थ :-

तस्स = उनकी [उन पापों की / **इरियावहिया सूत्र** में बताये पापों की]
उत्तरी-करणेणं = फिर से विशेष शुद्धि करने के द्वारा
　उत्तरी = फिर से विशेष शुद्धि, **करणेणं** = करने के द्वारा
पायच्छित्त-करणेणं = प्रायश्चित्त करने के द्वारा [विशेष आलोचना एवं निंदा करने के द्वारा]
　पायच्छित्त = प्रायश्चित्त
विसोही-करणेणं = विशुद्धि करने के द्वारा
　विसोही = विशुद्धि
विसल्ली-करणेणं = शल्य रहित करने के द्वारा
　विसल्ली = शल्य रहित

6. tassa uttarī sūtra

tassa uttarī-karaṇeṇam, pāyacchitta-karaṇeṇam,
visohī-karaṇeṇam, visallī-karaṇeṇam, pāvāṇam kammāṇam
nigghāyaṇaṭṭhāe, ṭhāmi kāussaggam. ....1.

Literal meaning :-

tassa = of them [of those sins / of the sins shown in **iriyāvahiyā sūtra**]
uttarī-karaṇeṇam = by rectifying again [by rectifying distinctively]

pāyacchitta-karaṇeṇam = by performing repentance [by special criticising and censuring]
　pāyacchitta = repentance, **karaṇeṇam** = by performing
visohī-karaṇeṇam = by purifying further

visallī-karaṇeṇam = by making free of thorns
　visallī = free of thorns, **karaṇeṇam** = by making

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

पावाणं कम्माणं = पाप कर्मों का

पावाणं = पाप, **कम्माणं** = कर्मों का

निग्घायणट्ठाए = संपूर्ण नाश करने के लिये

ठामि काउस्सग्गं = मैं **कायोत्सर्ग** करता हूँ

ठामि = करता हूँ, **काउस्सग्गं** = **कायोत्सर्ग**

गाथार्थ :-

उन [पापों] की फिर से शुद्धि करने के द्वारा, प्रायश्चित्त करने के द्वारा, विशुद्धि करने के द्वारा, शल्य रहित करने के द्वारा, पाप कर्मों का संपूर्ण नाश करने के लिये मैं **कायोत्सर्ग** करता हूँ. .... १.

विशेषार्थ :-

कायोत्सर्ग :-

१. संकल्प विकल्प रहित होकर मन को धर्म ध्यान में स्थिर रखने के लिये आवश्यक मानसिक प्रवृत्ति एवं सहज कायिक प्रवृत्ति के सिवाय सर्व प्रकार की प्रवृत्ति और शारीरिक ममत्व को मन- वचन- काया से त्याग करना.

२. **इरियावहियं प्रतिक्रमण** से सामान्य शुद्धि होती है, **कायोत्सर्ग** से विशेष शुद्धि होती है.

pāvāṇam kammāṇam = of the evil deeds

pāvāṇam = of the evil, **kammāṇam** = deeds

nigghāyaṇaṭṭhāe = to annihilate completely

ṭhāmi kāussaggam = i perform the **kāyotsarga**

ṭhāmi = i perform, **kāussaggam** = the **kāyotsarga**

Stanzaic meaning :–

I perform **kāyotsarga** of those [sins] by rectifying again, by performing repentance, by purifying further, by making free of thorns to annihilate the evil deeds completely. .... 1.

Specific meaning :–

kāyotsarga :–

1. For keeping mind steady in spiritual meditation, becoming free from alternative decisions, to give up all types of activities except essential mental activities and natural physical activities and attachment towards the body by thought, words and deeds.
2. Ordinary purification is done by performing **iriyāvahiyam pratikramaṇa**, further distinct purification is done by performing the **kāyotsarga**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रायश्चित्त [पायच्छित्त] = पश्चात्ताप / पाप को छेद कर मन शुद्ध करने की क्रिया.

शल्य = आत्मा में पीड़ा उत्पन्न करने वाले भाव.

तीन प्रकार के शल्य :-

१. **मिथ्यात्व शल्य-** सत्य तत्त्व को असत्य और असत्य तत्त्व को सत्य मानना.

२. **माया शल्य-** कपट करना.

३. **निदान शल्य-** भौतिक इच्छाओं की पूर्ति के रूप में धर्म के फल की इच्छा करना.

सूत्र परिचय :-

इरियावहिया सूत्र से पापों की सामान्य शुद्धि रूप **प्रतिक्रमण** करने के बाद भी बचे हुए पापों को नाश करने के लिए [विशेष शुद्धि के लिए] उत्तर क्रिया रूप **काउस्सग्ग** के पांच हेतु इस **सूत्र** में बताये हैं.

prāyaścitta [pāyacchitta] = repentance / the rite of purifying the mind by destroying the sins.

śalya [thorns] = Emotions [thoughts] distressing the soul.

Three types of śalya :-

1. **mithyātva śalya-** To believe the right principles as false and wrong principles as right.
2. **māyā śalya-** To commit fraud / to practise deceit.
3. **nidāna śalya-** To seek fulfilment of worldly desires as a result of performance of religious rites.

Introduction of the sūtra :-

As a subsequent rite, in this **sūtra**, five purposes of the **kāussagga** for destroying the sins [for rectifying distinctively] that remain even after performing normal rectification of **pratikramaṇa** of the sins by **iriyāvahiyā sūtra** are shown.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. अन्नत्थ सूत्र

अन्नत्थ-ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए,
पित्त-मुच्छाए..१.
सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं,
सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं. ....२.
एवमाइएहिं आगारेहिं, अ-भग्गो अ-विराहिओ,
हुज्ज मे काउस्सग्गो. ....३.
जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं
न पारेमि. ....४.
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि. .५.

शब्दार्थ :-

१.अन्नत्थ = के सिवाय
ऊससिएणं = श्वास लेने से

7. annattha sūtra

annattha-ūsasieṇam, nīsasieṇam, khāsieṇam, chīeṇam,
jambhāieṇam, uḍḍueṇam, vāya-nisaggeṇam, bhamalīe,
pitta-mucchāe. ....1.
suhumehim aṅga-sañcālehim, suhumehim khela-sañcālehim,
suhumehim diṭṭhi-sañcālehim. ....2.
evamāiehim āgārehim, a-bhaggo a-virāhio,
hujja me kāussaggo. ....3.
jāva arihantāṇam bhagavantāṇam, namukkāreṇam
na pāremi. ....4.
tāva kāyam ṭhāṇeṇam moṇeṇam jhāṇeṇam, appāṇam vosirāmi. .....5.

Literal meaning :–

1.annattha = except with
ūsasieṇam = by breathing in

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नीससिएणं = श्वास छोडने से **खासिएणं** = खांसी आने से **छीएणं** = छींक आने से **जंभाइएणं** = जम्हाई आने से **उड्डुएणं** = डकार आने से **वाय-निसग्गेणं** = अधोवायु निकलने से **वाय** = अधोवायु, **निसग्गेणं** = निकलने से **भमलीए** = चक्कर आने से **पित्त-मुच्छाए** = पित्त विकार के कारण मूर्च्छा आने से **पित्त** = पित्त विकार के कारण, **मुच्छाए** = मूर्च्छा आने से २.**सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं** = सूक्ष्म रूप से अंग हिलने से **सुहुमेहिं** = सूक्ष्मरूप से, **अंग** = अंग, **संचालेहिं** = हिलने से **सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं** = सूक्ष्म रूप से कफ और वायु के संचालन से **खेल** = कफ **सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं** = सूक्ष्म रूप से दृष्टि हिलने से	**nīsasieṇam** = by breathing out **khāsieṇam** = by the occurrence of cough **chīeṇam** = by the occurrence of sneeze **jambhāieṇam** = by the occurrence of yawn **udḍueṇam** = by the occurrence of belch **vāya-nisaggeṇam** = by emitting wind through the posterior opening **vāya** = wind through the posterior opening, **nisaggeṇam** = by emitting **bhamalīe** = by the occurrence of giddiness **pitta-mucchāe** = by the occurrence of fainting due to the disorder of bile **pitta** = due to the disorder of bile, **mucchāe** = by the occurrence of fainting 2.**suhumehim aṅga-sañcālehim** = by the subtle / little movement of body **suhumehim** = by the subtle / little, **aṅga** = of body, **sañcālehim** = movement **suhumehim khela-sañcālehim** = by the subtle movement of phlegm and air **khela** = of phlegm **suhumehim diṭṭhi-sañcālehim** = by the subtle movement of eyes

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिट्ठि = दृष्टि	**diṭṭhi** = eyes
३.**एवमाइएहिं आगारेहिं** = इत्यादि आगारों [अपवादों] से	**3.evamāiehim āgārehim** = with exceptions like
एवम् = इति, **आइएहिं** = आदि, **आगारेहिं** = आगारों से	**evamāiehim** = like, **āgārehim** = with exceptions
अभग्गो = अभंग	**abhaggo** = unbroken
अविराहिओ = अविराधित / अखंडित	**avirāhio** = not violated / complete
हुज्ज मे काउस्सग्गो = मेरा **कायोत्सर्ग** हो	**hujja me kāussaggo** = my **kāyotsarga** be
हुज्ज = हो, **मे** = मेरा, **काउस्सग्गो** = **कायोत्सर्ग**	**hujja** = be, **me** = my, **kāussaggo** = **kāyotsarga**
४.**जाव** = जब तक	**4.jāva** = as long as
अरिहंताणं भगवंताणं = **अरिहंत भगवंतों** को	**arihantāṇam bhagavantāṇam** = to the **arihanta bhagavantas**
अरिहंताणं = **अरिहंत**, **भगवंताणं** = **भगवंतों** को	**arihantāṇam** = to the **arihanta**, **bhagavantāṇam** = **bhagavantas**
नमुक्कारेणं न पारेमि = मैं नमस्कार करने के द्वारा [**नमो अरिहंताणं** कहकर] पूर्ण न करुं	**namukkāreṇam na pāremi** = i would not complete by performing obeisance [saying **namo arihantāṇam**]
नमुक्कारेणं = नमस्कार करने के द्वारा, **न पारेमि** = पूर्ण न करुं	**namukkāreṇam** = by performing obeisance, **na** = not, **pāremi** = complete
५.**ताव** = तब तक	**5.tāva** = till then
कायं = शरीर [काया] को	**kāyam** = to the body
ठाणेणं = स्थान पूर्वक [एक स्थान में स्थिरता पूर्वक]	**ṭhāṇeṇam** = at one place [with steadiness in one place]
मोणेणं = मौन पूर्वक	**moṇeṇam** = with silence

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झाणेणं = ध्यान पूर्वक
अप्पाणं = अपनी
वोसिरामि = त्याग करता हूँ

गाथार्थ :-

जब तक **अरिहंत भगवंतों** को नमस्कार करने के द्वारा [**कायोत्सर्ग**] पूर्ण न करूं [गा. ४], तब तक [गा. ५]...

श्वास लेने से, श्वास छोड़ने से, खांसी आने से, छींक आने से, जम्हाई आने से, डकार आने से, अधो वायु निकलने से, चक्कर आने से, पित्त विकार के कारण मूर्च्छा आने से... .... .१.,

...सूक्ष्म रूप से अंग संचालन से, सूक्ष्म रूप से कफ और वायु के संचालन से, सूक्ष्म रूप से दृष्टि के संचालन. २.,
...इत्यादि आगारों से मेरा **कायोत्सर्ग** अभंग और अविराधित हो .३.
[इसलिये] अपनी काया को स्थिरता पूर्वक, मौन पूर्वक [और] ध्यान पूर्वक त्याग करता हूँ. .... ५.

jhāṇeṇam = with meditation
appāṇam = my
vosirāmi = i am relinquishing

Stanzaic meaning :–

As long as I would not complete [the **kāyotsarga**] by performing obeisance to the **arihanta bhagavantas** [stanza 4.], till then [stanza 5.]
my **kāyotsarga** be unbroken and complete except with the exceptions like [stanza 3.]...
...breathing in, breathing out, occurrence of cough, occurrence of sneeze, occurrence of yown, occurrence of belch, emitting wind through posterior opening, occurrence of giddiness, occurrence of fainting due to bile disorder... .... 1.,
...subtle movement of the body, subtle movement of phlegm and air, subtle movement of eyes. .... 2.

[Therefore] I am relinquishing my body [by being] with steadiness in one place, with silence and with meditation. .... 5.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेषार्थ :-

आगार = स्वभाविकता से होनेवाली शारीरिक प्रवृत्तियों का अपवाद जिससे **कायोत्सर्ग** भंग न हो.

एवमाइएहिं आगारेहिं / इत्यादि आगार = १. अग्नि फैलने से, २. हिंसक प्राणी आने से या पंचेंद्रिय प्राणी की हत्या होते रहेने से, ३. चोर या राजा का उपद्रव होने से एवं, ४. सर्पदंश होने या होने की संभावना से **कायोत्सर्ग** का स्थान बदलना. इन चार आगारों का समावेश इत्यादि शब्द से होता हैं.

अप्पाणं वोसिरामि = **कायोत्सर्ग** में रहने तक मैं [आत्मा], अपने पर स्वरूप शरीर की मालिकी को त्याग कर, उसके रक्षण-पोषण से निवृत्त होता हूँ.

कायोत्सर्ग के उन्नीस दोष :-

१. घोड़े की तरह पाँव ऊंचा या टेढ़ा रखना.
२. लता की तरह शरीर को हिलाना.
३. स्तंभ आदि के सहारे खड़े रहना.
४. मस्तक को दिवाल आदि के साथ टेकना.
५. दोनों पांव परस्पर जोड़ कर खड़ा रहना.
६. पांव फैलाकर खड़े रहना.

Specific meaning :–

āgāra = Exceptions of natural movements of the body [which can not be controlled] by which **kāyotsarga** would not be treated as broken.

evamāiehim āgārehim / exceptions like = To change the place of **kāyotsarga** due to 1. outbreak of fire. 2. arrival of wild animals or murder of a living being with five sense organs, 3. molestation by a thief or a ruler. 4. snake-bite or its probability. These four exemptions are included by the word etc.

appāṇam vosirāmi = I [the soul] renounce the ownership of my other form [physical existence] of the body and give up its maintenance and nourishment till I am engaged in **kāyotsarga**.

Nineteen defects / short comings of kāyotsarga :–

1. To keep leg up or bent like a horse.
2. To swing the body like a creeper.
3. To stand taking support of a pillar etc.
4. To lean the head upon a wall.
5. To stand keeping both legs joined together.
6. To stand spreading the legs.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. गुह्य स्थान पर हाथ रखना.
८. घोड़े की लगाम की तरह **चरवला / रजोहरण** पकड़ना.
९. वधू की तरह मस्तक झुकाकर रखना.
१०. लंबा वस्त्र [नाभि से उपर और घुटनों से नीचे तक] पहनना.
११. शरम से स्त्रियों की तरह छाती को ढक कर रखना.
१२. मच्छर के डर से या शरदी के कारण पूरे शरीर को **साध्वी** की तरह ओढ़कर बैठना.
१३. उंगलियों पर संख्या गिनना.
१४. काग की तरह नजरें फिराते रहना.
१५. वस्त्र खराब होने के डर से संकोचित कर रखना.
१६. मस्तक को डोलाना.
१७. गूंगे की तरह आवाज करना.
१८. मदिरा पान किये हुए की तरह बड़बड़ाहट करना.
१९. बंदर की तरह आस पास देखते रहना और होठ हिलाते रहना.

इन उन्नीस दोषों में से **साध्वियों** को १०. लंबे वस्त्र पहनने का दोष, ११. छाती ढकने का दोष और १२. पूरे शरीर को ओढ़कर बैठने का दोष और **श्राविकाओं** को ९. मस्तक झुकाकर बैठने का दोष, १० लंबे वस्त्र पहनने का दोष, ११. छाती ढकने का दोष और,

7. To keep the hand on private organs of the body.
8. To hold the **caravalā / rajoharaṇa** like the bridle of a horse.
9. To keep the face down like a bride.
10. To wear a long cloth [above the navel place and below the knees].
11. To keep the chest covered like woman due to bashfulness.
12. To sit covering the entire body like **sādhvī**, due to fear of mosquitoes or coldness.
13. To count the numbers on finger tips.
14. To move the eye-balls like a crow.
15. To contract the clothes due to the fear of getting spoiled.
16. To oscillate the head.
17. To make sound like a dumb person.
18. To murmur like a drunkard.
19. To see about and move lips like a monkey.

Out of these nineteen defects, 10. the defect of wearing long clothes, 11. defect of covering the chest and 12. defect of sitting covering the entire body are not related to **sādhvī**s and 9. defect of sitting bending down the head, 10. defect of wearing long clothes, 11. defect of covering the chest and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. पूरे शरीर को ओढ़कर बैठने का दोष नहीं लगता है.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** में **काउस्सग्ग** करते समय स्वाभाविकतया होनेवाली शारीरिक क्रियाओं से **काउस्सग्ग** को भंग न होने देने के लिए सोलह **आगारों** का वर्णन तथा **काउस्सग्ग** को दृढ़ता पूर्वक पूर्ण करने की मर्यादा बतलायी गयी है.

12. defect of sitting covering the entire body are not related to the **śrāvikās**.

Introduction of the sūtra :-

This **sūtra** contains a description of sixteen **āgāras** [exemptions] for not allowing the **kāussagga** to be broken or upset owing to the body's movement occurring naturally while performing the **kāussagga** and the decorum has been shown to complete the **kāussagga** with firmness.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. लोगस्स सूत्र

लोगस्स उज्जोअ-गरे, धम्म-तित्थ-यरे जिणे.
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली. ....१.
उसभ-मजिअं च वंदे,
संभव-मभिणंदणं च सुमइं च.
पउम-प्पहं सुपासं, जिणं च चंद-प्पहं वंदे. ....२.
सुविहिं च पुप्फ-दंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च.
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि. ....३.
कुंथुं अरं च मल्लिं,
वंदे मुणि-सुव्वयं नमि-जिणं च.
वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च. ....४.
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा.
चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थ-यरा मे पसीयंतु.........५.
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा.

8. logassa sūtra

logassa ujjoa-gare, dhamma-tittha-yare jiṇe.
arihante kittaissam, cauvīsam pi kevalī. ....1.
usabha-majiam ca vande,
sambhava-mabhiṇandaṇam ca sumaim ca.
pauma-ppaham supāsam, jiṇam ca canda-ppaham vande. ....2.
suvihim ca puppha-dantam, sīala-sijjansa-vāsu-pujjam ca.
vimala-maṇantam ca jiṇam, dhammam santim ca vandāmi. . .3.
kunthum aram ca mallim,
vande muṇi-suvvayam nami-jiṇam ca.
vandāmi ritthha-nemim, pāsam taha vaddhamāṇam ca. ....4.
evam mae abhithuā, vihuya-raya-malā pahīṇa-jara-maraṇā.
cau-vīsam pi jiṇavarā, tittha-yarā me pasīyantu. ....5.
kittiya-vandiya-mahiyā, je e logassa uttamā siddhā.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरुग्ग-बोहि-लाभं, समाहि-वर-मुत्तमं-दिंतु. ....६.
चंदेसु निम्मल-यरा, आइच्चेसु अहियं पयास-यरा.
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु. ....७.

शब्दार्थ :-

१.लोगस्स उज्जोअ-गरे = लोक में उद्द्योत [प्रकाश] करने वाले / लोक में स्थित सर्व द्रव्यों के यथार्थ स्वरूप को प्रगट करने वाले

लोगस्स = लोक में, **उज्जोअ** = उद्द्योत, **गरे** = करने वाले

धम्म-तित्थ-यरे = धर्म रूपी तीर्थ का प्रवर्तन करने वाले

धम्म = धर्म रूपी, **तित्थ** = तीर्थ का, **यरे** = प्रवर्तन करने वाले

जिणे = [राग द्वेषादि के] विजेता की

अरिहंते = त्रैलोक्य पूज्यों की

कित्तइस्सं = स्तुति करूंगा

चउवीसं पि केवली = चौबीसों **केवलियों** की

चउवीसं पि = चौबीसों, **केवली** = **केवलियों** की

२.उसभ-मजिअं च वंदे = **श्री ऋषभदेव** और **श्री अजितनाथ** को मैं वंदन करता हूँ

ārugga-bohi-lābhaṃ, samāhi-vara-muttamaṃ-dintu...............6.
candesu nimmala-yarā, āiccesu ahiyaṃ payāsa-yarā.
sāgara-vara-gambhīrā, siddhā siddhiṃ mama disantu. ....7.

Literal meaning :-

1.logassa ujjoa-gare = the enlighteners of the universe / the revealers of true nature of all the objects existing in the universe

logassa = of the universe, **ujjoagare** = the enlighteners

dhamma-tittha-yare = the establishers of religious order [path of salvation in the from of religion]

dhamma-tittha = of religious order, **yare** = the establishers

jiṇe = of the conquerors [of attachment, hatred etc.]

arihante = worth worshipable in three worlds

kittaissaṃ = i will eulogize

cauvīsaṃ pi kevalī = all of twenty four **kevalī**s

cauvīsaṃ = twenty four, **pi** = all of, **kevalī** = **kevalī**s

2.usabha-majiaṃ ca vande = i am obeisancing to **śrī ṛṣabhadeva** and **śrī ajitanātha**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसभं = **श्री ऋषभदेव, अजिअं** = **श्री अजितनाथ** को, **च** = और, **वंदे** = मैं वंदन करता हूँ

संभव-मभिणंदणं च = **श्री संभवनाथ** और **श्री अभिनंदन स्वामी** को

संभवं = **श्री संभवनाथ, अभिणंदणं** = **श्री अभिनंदन स्वामी** को

सुमइं च = और **श्री सुमतिनाथ** को

सुमइं = **श्री सुमतिनाथ** को

पउमप्पहं सुपासं = **श्री पद्मप्रभ स्वामी** को, **श्री सुपार्श्वनाथ** को

पउमप्पहं = **श्री पद्मप्रभ स्वामी** को, **सुपासं** = **श्री सुपार्श्वनाथ** को

जिणं च चंद-प्पहं वंदे = और **श्री चंद्रप्रभ जिनेश्वर** को मैं वंदन करता हूँ

जिणं = **जिनेश्वर** को, **चंदप्पहं** = **श्री चंद्रप्रभ**

३.सुविहिं च पुप्फ-दंतं = **श्री सुविधिनाथ** यानि **श्री पुष्पदंत** [**श्री सुविधिनाथ** का दूसरा नाम] को

सुविहिं = **श्री सुविधिनाथ, च** = यानि, **पुप्फदंतं** = **श्री पुष्पदंत**

usabham = to **śrī ṛsabhadeva, ajiam** = **śrī ajitanātha, ca** = and, **vande** = i am obeisancing

sambhava-mabhiṇandaṇam ca = to **śrī sambhavanātha** and **śrī abhinandana svāmī**

sambhavam = to **śrī sambhavanātha, abhiṇandaṇam** = **śrī abhinandana svāmī**

sumaim ca = and to **śrī sumatinātha**

sumaim = to **śrī sumatinātha**

pauma-ppaham supāsam = to **śrī padmaprabha svāmī**, to **śrī supārśvanātha**

paumappaham = to **śrī padmaprabha svāmī, supāsam** = to **śrī supārśvanātha**

jiṇam ca canda-ppaham vande = and i am obeisancing to **śrī candraprabha jineśvara**

jiṇam = **jineśvara, candappaham** = to **śrī candraprabha**

3.suvihim ca puppha-dantam = to **śrī suvidhiṇātha** or **śrī puṣpadanta** [the other name of **śrī suvidhinātha**]

suvihim = to **śrī suvidhinātha, ca** = or, **pupphadantam** = **śrī puṣpadanta**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को

सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च = **श्री शीतलनाथ, श्री श्रेयांसनाथ** और **श्री वासुपूज्य स्वामी** को

सीअल = **श्री शीतलनाथ, सिज्जंस** = **श्री श्रेयांसनाथ, वासुपुज्जं** = **श्री वासुपूज्य स्वामी** को

विमल-मणंतं च जिणं = **श्री विमलनाथ** और **श्री अनंतनाथ जिनेश्वर** को

विमलं = **श्री विमलनाथ, अणंतं** = **श्री अनंतनाथ**

धम्मं संतिं च वंदामि = **श्री धर्मनाथ** और **श्री शांतिनाथ** को मैं वंदन करता हूँ

धम्मं = **श्री धर्मनाथ, संतिं** = **श्री शांतिनाथ** को, **वंदामि** = मैं वंदन करता हूँ

४.**कुंथुं अरं च मल्लिं** = **श्री कुंथुनाथ, श्री अरनाथ** और **श्री मल्लिनाथ** को

कुंथुं = **श्री कुंथुनाथ, अरं** = **श्री अरनाथ, मल्लिं** = **श्री मल्लिनाथ** को

वंदे मुणि-सुव्वयं नमि-जिणं च = **श्री मुनिसुव्रत स्वामी** और **श्री नमिनाथ जिनेश्वर** को मैं वंदन करता हूँ

sīala-sijjansa-vāsu-pujjam ca = to **śrī śītalanātha, śrī śreyānsanātha** and **śrī vāsupūjya svāmī**

sīala = to **śrī śītalanātha, sijjansa** = **śrī śreyānsanātha, vāsu-pujjam** = **śrī vāsupūjya svāmī**

vimala-manantam ca jiṇam = to **śrī vimalanātha** and **śrī anantanātha jineśvara**

vimalam = to **śrī vimalanātha, aṇantam** = **śrī anantanātha**

dhammam santim ca vandāmi = i am obeisancing to **śrī dharmanātha** and to **śrī śāntinātha**

dhammam = to **śrī dharmanātha, santim** = to **śrī śāntinātha, vandāmi** = i am obeisancing

4.kunthum aram ca mallim = to **śrī kunthunātha, śrī aranātha** and **śrī mallinātha**

kunthum = to **śrī kunthunātha, aram** = **śrī aranātha, mallim** = **śrī mallinātha**

vande muṇi-suvvayam nami-jiṇam ca = i am obeisancing to **śrī munisuvrata svāmī** and **śrī naminātha jineśvara**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुणि-सुव्वयं = श्री मुनिसुव्रत स्वामी, **नमि** = श्री नमिनाथ	**muṇi-suvvayam** = to **śrī munisuvrata svāmī**, **nami** = **śrī naminātha**
वंदामि = मैं वंदन करता हूँ	**vandāmi** = i am obeisancing
रिट्ठ-नेमिं = श्री अरिष्ट नेमि [नेमिनाथ] को	**riṭṭha-nemim** = to **śrī ariṣṭa nemi [neminātha]**
पासं तह वद्धमाणं च = और **श्री पार्श्वनाथ** तथा **श्री वर्धमान [महावीर] स्वामी** को	**pāsam taha vaddhamāṇam ca** = and to **śrī pārśvanātha** and **śrī vardhamāna [mahāvīra] svāmī**
पासं = श्री पार्श्वनाथ, **तह** = तथा, **वद्धमाणं** = श्री वर्धमान स्वामी को	**pāsam** = to **śrī pārśvanātha**, **taha** = and, **vaddhamāṇam** = **śrī vardhamāna svāmī**
५.**एवं मए अभिथुआ** = इस प्रकार मेरे द्वारा स्तुति किये गये	5.**evam mae abhithuā** = in this way eulogized by me
एवं = इस प्रकार, **मए** = मेरे द्वारा, **अभिथुआ** = स्तुति किये गये	**evam** = in this way, **mae** = by me, **abhithuā** = eulogized
विहुय-रय-मला = **कर्म** रूपी रज [नये बंधने वाले **कर्म**] और मल [पहले बंधे हुए **कर्म**] से रहित	**vihuya-raya-malā** = free from particles of dust [newly binding **karma**] and filth [**karma** bounded before] of **karma**
विहुय = से रहित, **रय** = रज, **मला** = मल	**vihuya** = free from, **raya** = dust, **malā** = filth
पहीण-जर-मरणा = वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्त	**pahīṇa-jara-maraṇā** = free from old age and death
पहीण = मुक्त, **जर** = वृद्धावस्था, **मरणा** = मृत्यु से	**pahīṇa** = free from, **jara** = old age, **maraṇā** = death
चउ-वीसं पि जिणवरा = चौबीसों **जिनेश्वर**	**cau-vīsam pi jiṇavarā** = all the twenty four **jineśvara**
जिणवरा = **जिनेश्वर**	**jiṇavarā** = **jineśvara**
तित्थ-यरा = तीर्थ के प्रवर्तक	**tittha-yarā** = the propagators of the religious order [path of salvation]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यरा = प्रवर्तक
मे पसीयंतु = मेरे उपर प्रसन्न हों
मे = मेरे उपर, **पसीयंतु** = प्रसन्न हों
६.**कित्तिय-वंदिय-महिया** = कीर्तन-वंदन-पूजन किये गए हैं
कित्तिय = कीर्तन, **वंदिय** = वंदन, **महिया** = पूजन किये गए हैं
जे ए = जो ये
जे = जो, **ए** = ये
लोगस्स उत्तमा सिद्धा = लोक में उत्तम हैं, सिद्ध हैं
उत्तमा = उत्तम हैं, **सिद्धा** = सिद्ध हैं
आरुग्ग-बोहि-लाभं = आरोग्य [मोक्ष] के लिये **बोधि लाभ** [सम्यक्त्व]
आरुग्ग = आरोग्य के लिये, **बोहिलाभं** = **बोधि लाभ**
समाहि-वर-मुत्तमं-दिंतु = उत्तम भाव समाधि प्रदान करें
समाहि-वरं = भाव समाधि, **उत्तमं** = उत्तम, **दिंतु** = प्रदान करें
७.**चंदेसु निम्मल-यरा** = चंद्रों से अधिक निर्मल
चंदेसु = चंद्रो से, **निम्मल** = निर्मल, **यरा** = अधिक
आइच्चेसु अहियं पयास-यरा = सूर्यों से अधिक प्रकाशमान

yarā = the propagators of
me pasīyantu = be pleased over me
me = over me, **pasīyantu** = be pleased
6.**kittiya-vandiya-mahiyā** = are praised, obeisanced and worshipped
kittiya = are praised, **vandiya** = obeisanced, **mahiyā** = worshipped
je e = those who
je = who, **e** = those
logassa uttamā siddhā = are great in the universe, are emancipated [liberated]
uttamā = are great, **siddhā** = emancipated
ārugga-bohi-lābham = **bodhi lābha** [seed of attaining complete perfect spiritual knowledge / right faith] for spiritual health [salvation]
ārugga = for health, **bohi lābham** = **bodhi lābha**
samāhi-vara-muttamam-dintu = may bestow the highest state of contemplation
samāhivaram = state of contemplation, **uttamam** = highest, **dintu** = may bestow
7.**candesu nimmala-yarā** = more clear than the moons
candesu = than the moons, **nimmala** = clear, **yarā** = more
āiccesu ahiyam payāsa-yarā = more luminous than the suns

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आइच्चेसु = सूर्यों से, **अहियं** = अधिक, **पयासयरा** = प्रकाशमान
सागर-वर-गंभीरा = श्रेष्ठ सागर [**स्वयंभू-रमण समुद्र**] से अधिक गंभीर
सागर = सागर से, **वर** = श्रेष्ठ, **गंभीरा** = गंभीर
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु = **सिद्ध भगवंत** मुझे सिद्धि [मुक्ति] प्रदान करें
सिद्धा = **सिद्ध भगवंत**, **सिद्धिं** = सिद्धि, **मम** = मुझे, **दिसंतु** = प्रदान करें

गाथार्थ :-

लोक में प्रकाश करने वाले, धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करने वाले, राग-द्वेषादि के विजेता एवं त्रैलोक्य पूज्य चौबीसों **केवलियों** की मैं स्तुति करूंगा. .... १.

श्री ऋषभदेव, श्री अजितनाथ, श्री संभवनाथ, श्री अभिनंदन स्वामी और **श्री सुमतिनाथ** को मैं वंदन करता हूँ. **श्री पद्मप्रभ स्वामी, श्री सुपार्श्वनाथ** और **श्री चंद्रप्रभ जिनेश्वर** को मैं वंदन करता हूँ. .... २.

श्री सुविधिनाथ यानि **श्री पुष्पदंत, श्री शीतलनाथ, श्री श्रेयांसनाथ, श्री वासुपूज्य स्वामी, श्री विमलनाथ, श्री अनंतनाथ, श्री धर्मनाथ** और **श्री**

āiccesu = than the suns, **ahiyam** = more, **payāsayarā** = luminous
sāgara-vara-gambhīrā = more serene / deeper than the best / great ocean [**svayambhū-ramaṇa samudra**]
sāgara = ocean, **vara** = best, **gambhīrā** = more serene
siddhā siddhim mama disantu = **siddha bhagavantas** shall bestow me the salvation
siddhā = **siddha bhagavantas**, **siddhim** = the salvation, **mama** = me, **disantu** = shall bestow

Stanzaic meaning :-

I will eulogize all of twenty four **kevalīs**, the enlighteners of the universe, the establishers of religious order, the conquerors and worth worshipable in three worlds. .... 1.

I am obeisancing to **śrī ṛṣabhadeva, śrī ajitanātha, śrī sambhavanātha, śrī abhinandana svāmī** and **śrī sumatinātha**. I am obeisancing to **śrī padmaprabha svāmī, śrī supārśvanātha** and **śrī candraprabha jineśvara**. .... 2.

I am obeisancing to **śrī suvidhinātha** or **śrī puṣpadanta, śrī śītalanātha, śrī śreyānsanātha, śrī vāsupūjya svāmī, śrī vimalanātha, śrī anantanātha, śrī**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शांतिनाथ जिनेश्वर को मैं वंदन करता हूँ. .... ३.
श्री कुंथुनाथ, श्री अरनाथ, श्री मल्लिनाथ, श्री मुनिसुव्रत स्वामी और **श्री नमिनाथ जिनेश्वर** को मैं वंदन करता हूँ. **श्री अरिष्ट नेमि, श्री पार्श्वनाथ** और **श्री वर्धमान स्वामी** को मैं वंदन करता हूँ. .... ४.
इस प्रकार मेरे द्वारा स्तुति किये गये, **कर्म** रूपी रज और मल से रहित, वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्त, तीर्थ के प्रवर्तक चौबीसों **जिनेश्वर** मेरे उपर प्रसन्न हों. .... ५.
जो ये कीर्तन-वंदन-पूजन किये गए हैं, लोकोत्तम हैं, सिद्ध हैं, वे आरोग्य के लिये **बोधि लाभ** और उत्तम भाव समाधि प्रदान करें. .... ६.

चंद्रों से अधिक निर्मल, सूर्यों से अधिक प्रकाशवान, श्रेष्ठ सागर से अधिक गंभीर **सिद्ध भगवंत** मुझे सिद्धि प्रदान करें. .... ७.

विशेषार्थ :-

केवली = महान व्यक्ति जो **केवल ज्ञान** द्वारा संपूर्ण **लोक** और **अलोक** को जानते और देखते है.
चउवीसं पि केवली- 'पि' पद से अन्य क्षेत्रों के [**जंबू द्वीप, धातकी खंड** और अर्ध **पुष्कर-वर द्वीप** में स्थित **भरत, ऐरावत** और **महाविदेह**

dharmanātha and **śrī śāntinātha jineśvara**. ....3.
I am obeisancing to **śrī kunthunātha, śrī aranātha, śrī mallinātha, śrī munisuvrata svāmī** and **śrī neminātha jineśvara**. I am obeisancing to **śrī arisṭa nemi, śrī pārśvanātha** and **śrī vardhamāna svāmī**. ....4.
In this way, all the twenty four **jineśvaras** free from particles of dust and filth of **karma**, free from old age and death, eulogized by me, be pleased over me. ....5.
Those who are praised, obeisanced and worshipped, are great in the universe, are liberated may bestow **bodhi lābha** [right faith] for spiritual health and highest state of contemplation. ....6.
siddha bhagavantas more clear than the moons, more luminous than the suns, more serene / deeper than the best ocean shall bestow me the salvation...7.

Specific meaning :-

kevalī = Great persons who knows and sees the entire **loka** [universe] and **aloka** [region beyond the universe] through **kevala jñāna**.
cauvīsam pi kevalī- By the phrase **pi**, obeisance is being offered to all the **tīrthankaras** of past, present and future epochs [era] and also of other

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के] एवं भूत, भविष्य और वर्तमान काल के सर्व **तीर्थंकरों** को वंदन किया जाता है.

धर्म = दुर्गति में पड़ते हुए जीवों को रोक कर मोक्ष अथवा शुभ गति में पहुंचाने वाला अनुष्ठान.

तीर्थ = संसार समुद्र से तारने वाला साधन.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** में नाम पूर्वक चौबीस **तीर्थंकरों** की तथा गर्भित रूप में तीनों काल के सर्व **तीर्थंकरों** की स्तुति की गयी है एवं सम्यग्-दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूप रत्न-त्रयी द्वारा मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना की गयी है.

regions [**bharata, airāvata** and **mahāvideha** present in **jambū dvīpa** (island), **dhātakī khaṇḍa** and half **puṣkaravara dvīpa**].

dharma– Performance of rites / deeds leading to salvation or good estate after death, preventing the living beings [souls] from falling into evil estate.

tīrtha = The mean helping to crossover the ocean of world / life.

Introduction of the sūtra :–

In this **sūtra**, the glorification of twenty four **tīrthaṅkaras** by name and all the **tīrthaṅkaras** of three phases of time by implication is being done and a prayer is being made for the attainment of salvation by means of three gems of right vision, right knowledge and right conduct.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. करेमि भंते सूत्र

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि,
जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, ति-विहेणं,
मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि,
तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि,
अप्पाणं वोसिरामि. ....१.

शब्दार्थ :-

करेमि भंते! सामाइयं = हे भगवन्! मैं **सामायिक** करता हूँ
  करेमि = मैं करता हूँ, **भंते** = हे **भगवन्**!, **सामाइयं** = **सामायिक**

सावज्जं जोगं पच्चक्खामि = सावद्य [पापवाली] योग [प्रवृत्ति] का मैं **पच्चक्खाण** [प्रतिज्ञा पूर्वक त्याग] करता हूँ
  सावज्जं = सावद्य, **जोगं** = योग का, **पच्चक्खामि** = मैं **पच्चक्खाण** करता हूँ

जाव नियमं पज्जुवासामि = जब तक मैं नियम का सेवन करता हूँ

9. karemi bhante sūtra

karemi bhante! sāmāiyam sāvajjam jogam paccakkhāmi,
jāva niyamam pajjuvāsāmi, duviham, ti-vihenam,
manenam, vāyāe, kāenam, na karemi, na kāravemi,
tassa bhante! padikkamāmi, nindāmi, garihāmi,
appānam vosirāmi. ....1.

Literal meaning :-

karemi bhante! sāmāiyam = oh **bhagavan**! i am performing the **sāmāyika**
  karemi = i am performing, **bhante** = oh **bhagavan**!, **sāmāiyam** = the **sāmāyika**

sāvajjam jogam paccakkhāmi = i am taking the **paccakkhāṇa** [giving up by vow] of sinful activities
  sāvajjam = sinful, **jogam** = activities, **paccakkhāmi** = i am taking the **paccakkhāṇa**

jāva niyamam pajjuvāsāmi = as long as i abide the vow

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

जाव = जब तक, **नियमं** = नियम का, **पज्जुवासामि** = सेवन करता हूँ
दुविहं तिविहेणं = दो प्रकार से और तीन प्रकार से
दु = दो, **विहं** = प्रकार से, **ति** = तीन, **विहेणं** = प्रकार से
मणेणं वायाए काएणं = मन से, वचन से और काया [शरीर] से
मणेणं = मन से, **वायाए** = वचन से, **काएणं** = काया से
न करेमि न कारवेमि = न करूँ और न कराऊँ
न = न, **करेमि** = करूँ, **कारवेमि** = कराऊँ
तस्स = उनका [उन पाप प्रवृत्तियों का]
भंते! = हे **भगवन्!**
पडिक्कमामि = मैं **प्रतिक्रमण** करता हूँ
निंदामि = मैं निंदा करता हूँ
गरिहामि = मैं गर्हा करता हूँ
अप्पाणं वोसिरामि = [पापवली] आत्मा का मैं त्याग करता हूँ
अप्पाणं = आत्मा का, **वोसिरामि** = मैं त्याग करता हूँ

गाथार्थ :-

हे **भगवन्!** मैं **सामायिक** करता हूँ, जब तक मैं नियम का पालन करता

jāva = as long as, **niyamam** = the vow, **pajjuvāsāmi** = i abide

duviham tivihenam = in two ways and three ways
du = two, **viham** = ways, **ti** = three, **vihenam** = ways
manenam vāyāe kāenam = by thought, by word and by action
manenam = by thought, **vāyāe** = by word, **kāenam** = by action
na karemi na kāravemi = i would not do and would not make [others] to do
na = would not, **karemi** = do, **kāravemi** = make to do
tassa = of them [of those sinful activities]
bhante! = oh **bhagavan!**
padikkamāmi = i am performing the **pratikramaṇa**
nindāmi = i am condemning
garihāmi = i am censuring
appāṇam vosirāmi = i am relinquishing the [sinful] soul
appāṇam = the soul, **vosirāmi** = i am relinquishing

Stanzaic meaning :-

Oh **bhagavan!** I am performing the **sāmāyika**. As long as I abide the vow, [so long]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हूँ [तब तक] सावद्य योग का दो प्रकार से– न करूँ और न कराऊँ और तीन प्रकार से– मन, वचन और काया से **पच्चक्खाण** करता हूँ, हे **भगवन्**! उनका मैं **प्रतिक्रमण** करता हूँ, निंदा करता हूँ, मैं गर्हा करता हूँ और मैं [पापवाली] आत्मा का त्याग करता हूँ.

I am taking the **paccakkhāṇa** of sinful activities in two ways-- would not do and would not make others to do and in three ways-- by thought, by word and by action. Oh **bhagavan**! I am performing the **pratikramaṇa**, I am condemning, I am censuring them and I am relinquishing the [sinful] soul.

विशेषार्थ :-

सामायिक = समभाव का लाभ / आत्मा की अनादि कालीन विषम स्थिति को दूर कर, सर्व जीवों के प्रति राग-द्वेष को नष्ट कर, स्व आत्म समान भाव रखते हुए सम्यग् दर्शन– ज्ञान और चारित्र का एकीकरण करना.

मन = आत्मा से भिन्न, शरीर व्यापी, पुद्गल द्रव्य से निर्मित, आत्मा द्वारा चिंतन-मनन करने का साधन / संकल्प विकल्प करने वाली नोइंद्रिय.

निंदा = मन, वचन या काया से गलत प्रवृत्ति को गलत मानकर पश्चात्ताप करना और उस गलती को पुनः न करने का संकल्प करना.

गर्हा = अपनी गलती को गुरु आदि के समक्ष स्वीकार कर, मन से पश्चात्ताप करते हुए भविष्य में उस गलती को पुनः न करने का

Specific meaning :-

sāmāyika = Benefit of equanimity / To integrate right faith, knowledge and conduct, warding off the disgraceful situation since times immemorial of the soul destroying attachment and malice against all living creatures keeping the feelings of to be like one's own self.

mana = Mind / The mean distinct from soul, pervading throughout the body, composed of physical matters and a mean for contemplation and reflection by the soul / A non-organ making alternative and final decision.

nindā = Condemn / To repent accepting the improper activities as wrong with heart, speech or body and determinate not to repeat that mistake again.

garhā = Censure / To accept guilt before the preceptor etc. and to submit not to repeat the guilt in future, with firm determination and heartily repentance.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकल्प पूर्वक निवेदन करना.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** में **सामायिक** ग्रहण करने का और सावद्य योग रूप पाप का त्याग करने का पच्चक्खाण है. अर्थात् मन-वचन-काया से कोई भी पाप न करने, न कराने एवं **सामायिक** के नियम तक समभाव में रहने का बतलाया है.

Introduction of the sūtra :-

In this **sūtra**, there is a vow to under take **sāmāyika** and to relinquish the sin of harmful deeds. In other words, not to do or promote any sin by thought, word or deed and to be in equanimity till the vow of **sāmāyika** is shown.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. सामाइय-वय-जुत्तो सूत्र

सामाइय-वय-जुत्तो, जाव मणे होइ नियम-संजुत्तो.
छिन्नइ असुहं कम्मं, समाइय जत्तिआ वारा. ....१.
सामाइयम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा.
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा. ....२.
सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया,
विधि में जो कोई अविधि हुई हो,
उन सबका मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं. ...३.
दस मन के, दस वचन के, बारह काया के-
इन बत्तीस दोषों में से जो कोई दोष लगा हो,
उन सबका मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं. ...४.

शब्दार्थ :-

१.सामाइय-वय-जुत्तो = सामायिक व्रत [पच्चक्खाण] से युक्त है
सामाइय = सामायिक, वय = व्रत से, जुत्तो = युक्त

10. sāmāiya-vaya-jutto sūtra

sāmāiya-vaya-jutto, jāva maṇe hoi niyama-sañjutto.
chinnai asuham kammam, samāiya jattiā vārā. ....1.
sāmāiyammi u kae, samaṇo iva sāvao havai jamhā.
eeṇa kāraṇeṇam, bahuso sāmāiyam kujjā. ....2.
sāmāyika vidhi se liyā, vidhi se pūrṇa kiyā,
vidhi me◌, jo koī avidhi huī ho,
una sabakā mana-vacana-kāyā se micchā mi dukkaḍam. ......3.
dasa mana ke, dasa vacana ke, bāraha kāyā ke–
ina battīsa doṣo◌ me◌ se jo koī doṣa lagā ho,
una sabakā mana-vacana-kāyā se micchā mi dukkaḍam. ......4.

Literal meaning :-

1.sāmāiya-vaya-jutto = is in sāmāyika vrata [vow]
sāmāiya = sāmāyika, vaya = vrata, jutto = is in

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव मणे होइ नियम-संजुत्तो = जहां तक [**सामायिक** व्रत धारी का] मन नियम [व्रत] से युक्त है

जाव = जहां तक, **मणे** = मन, **होइ** = है, **नियम** = नियम से, **संजुत्तो** = युक्त

छिन्नइ असुहं कम्मं = अशुभ **कर्मों** को नाश करता है

छिन्नइ = नाश करता है, **असुहं** = अशुभ, **कम्मं** = **कर्मों** को

सामाइय जत्तिआ वारा = जितनी बार **सामायिक** करता है

सामाइय = **सामायिक** करता है, **जत्तिआ** = जितनी, **वारा** = बार

२.सामाइयम्मि उ कए = **सामायिक** करने पर तो

सामाइयम्मि = **सामायिक**, **उ** = तो, **कए** = करने पर

समणो इव सावओ हवइ = **श्रावक श्रमण** के समान होता है

समणो = **श्रावक** के, **इव** = समान, **सावओ** = **श्रावक**, **हवइ** = होता है

जम्हा = क्योंकि

एएण कारणेणं बहुसो समाइयं कुज्जा = इसलिए **सामायिक** अनेक बार करना चाहिये

एएण कारणेणं = इसलिए, **बहुसो** = अनेक बार, **सामाइयं** =

jāva maṇe hoi niyama-sañjutto = as long as the mind [of performer of **sāmāyika**] is in the vow

jāva = as long as, **maṇe** = the mind, **hoi** = is, **niyama** = the vow, **sañjutto** = in

chinnai asuham kammam = destroys the evil **karmas**

chinnai = destroys, **asuham** = evil, **kammam** = **karmas**

sāmāiya jattiā vārā = performs **sāmāyika** as many times

sāmāiya = performs **sāmāyika, jattiā** = as many, **vārā** = times

2.sāmāiyammi u kae = moreover, while performing the **sāmāyika**

sāmāiyammi = the **sāmāyika, u** = moreover, **kae** = while performing

samaṇo iva sāvao havai = **śrāvaka** will be like a **śramaṇa**

samaṇo = a **śramaṇa, iva** = like, **sāvao** = **śrāvaka, havai** = will be

jamhā = because

eeṇa kāraṇeṇam bahuso samāiyam kujjā = therefore **sāmāyika** must be performed many times

eeṇa kāraṇeṇam = therefore, **bahuso** = many times, **sāmāiyam** =

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामायिक, कुज्जा = करना चाहिए	**sāmāyika, kujjā** = must be performed
३.**सामायिक विधि से लिया** = **सामायिक** विधि के अनुसार लिया	3.**sāmāyika vidhi se** liyā = have taken the **sāmāyika** according to the procedure
विधि से = विधि के अनुसार	**sāmāyika** = the **sāmāyika**, **vidhi** = the procedure, **se** = according to, **liyā** = have taken
विधि से पूर्ण किया = [**सामायिक**] विधि के अनुसार पूर्ण किया	**vidhi se pūrṇa kiyā** = have completed [the **sāmāyika**] according to the procedure
	pūrṇa kiyā = have completed
विधि में = [**सामायिक** की] विधि [करते समय] में	**vidhi meṁ** = in [performing] the procedure of [**sāmāyika**]
जो कोई अविधि हुई हो = जो कोई गलती हुई हो	**jo koī avidhi huī ho** = which ever faults might have been committed
अविधि = गलती	**jo koī** = which ever, **avidhi** = faults, **huī ho** = might have been committed
उन सबका = उन सबका [वे सब]	**una sabakā** = all those
	una = those, **sabakā** = all
मन-वचन-काया से = मन-वचन-काया से	**mana-vacana-kāyā se** = with thoughts, words and deeds
	mana = thoughts, **vacana** = words, **kāyā** = deeds, **se** = with
मिच्छा मि दुक्कडं = मेरे दुष्कृत्य मिथ्या हों	**micchā mi dukkaḍaṁ** = faults of mine may become fruitless
मिच्छा = मिथ्या हों, **मि** = मेरे, **दुक्कडं** = दुष्कृत्य	**micchā** = faults, **mi** = of mine, **dukkaḍaṁ** = may become fruitless
४.**दस मन के** = मन से लगने वाले दस प्रकार के दोष	4.**dasa mana ke** = ten types of faults committed by thinking

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दस वचन के = बोलने से लगने वाले दश प्रकार के दोष

बारह काया के = शरीर से होने वाले बारह प्रकार के दोष

इन बत्तीस दोषों में से = इन बत्तीस दोषों में से

जो कोई दोष लगा हो = जो कोई दोष लगा हो

गाथार्थ :-

जहाँ तक [**सामायिक** व्रत धारी का] मन **सामायिक** व्रत के नियम से युक्त है और जितनी बार **सामायिक** करता है, [वहां तक और उतनी बार वह] अशुभ **कर्मों** का नाश करता है. .... १.
सामायिक करने पर तो **श्रावक श्रमण** के समान होता है. इस लिये **सामायिक** अनेक बार करना चाहिये. .... २.
सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया परन्तु विधि करते समय जो कोई अविधि हुई हो, मन-वचन-काया से मेरे वे सब दुष्कृत्य मिथ्या

dasa = ten, **mana ke** = of thinking
dasa vacana ke = ten types of faults committed by speaking
vacana ke = of speaking
bāraha kāyā ke = twelve types of faults committed by activities
bāraha = twelve, **kāyā ke** = of activities
ina battīsa doṣoṃ meṃ se = out of these thirty two faults
ina = these, **battīsa** = thirty two, **doṣoṃ** = faults, **meṃ se** = out of
jo koī doṣa lagā ho = any of the faults committed
doṣa = faults, **lagā ho** = committed

Stanzaic meaning :-

As long as the mind [of the performer of **sāmāyika**] is in **sāmāyika** vow and performs **sāmāyika** as many times, [so long and so many times, he] destroys the evil **karmas**. .... 1.
More over the **śrāvaka** will be like a **śramaṇa** while performing the **sāmāyika**. Therefore **sāmāyika** must be performed many times. .... 2.
[I] have taken the **sāmāyika** according to procedure, [I] have completed according to procedure, but while performing the procedure, which ever faults

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हों. .... ३.

मन के दस, वचन के दस, और काया के बारह-- इन बत्तीस दोषों में से जो कोई दोष लगा हो, मेरे वे सब दुष्कृत्य मन-वचन-काया से मिथ्या हों. .... ४.

विशेषार्थ :-

श्रावक :- साधु के समीप जाकर, **जिन** वचन को सुनकर एवं उनके मार्गदर्शनानुसार सदाचारी जीवन व्यतीत करने वाला व्रतधारी गृहस्थ.

अविधि = विधि से विपरीत कार्य / आधी अधूरी विधि / अविवेक पूर्ण विधि.

सामायिक के बत्तीस दोष :-

◆ **मन के दस दोष :-**

१. **सामायिक** में आत्महित सिवाय का विचार करना.
२. **सामायिक** द्वारा यश की इच्छा करना.
३. **सामायिक** द्वारा धनादि की इच्छा करना.
४. अन्य से अच्छी **सामायिक** करने का गर्व करना.

might have been committed, all those faults of mine may become fruitless with thoughts, words and deeds. .... 3.

Any of the faults committed out of thirty two faults-- ten by thinking, ten by speaking and twelve by activities, all those faults of mine may become fruitless with thoughts, words and deeds. .... 4.

Specific meaning :-

śrāvaka :- A house holder observing religious vows, going nearer [coming in closer contact with] the **sādhu**, hearing the preaching of **jina** and leading a moral life according to their guidance.

avidhi = Act contrary to the procedure / incomplete procedure / immodest procedure

Thirty two faults of the sāmāyika :-

◆ **Ten faults of thinking :-**

1. To think of things other than well-being of the soul in **sāmāyika**.
2. To desire fame through **sāmāyika**.
3. To desire material benefits like wealth through **sāmāyika**.
4. To feel pride of performing **sāmāyika** better than others.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. भय से **सामायिक** करना.

६. **सामायिक** कर सांसारिक फल का निदान करना.

७. **सामायिक** के फल में शंका करना.

८. **सामायिक** में क्रोध करना या क्रोध से **सामायिक** करना.

९. अश्रद्धा या अविनय से **सामायिक** करना.

१०. अबहुमान, अभक्ति या अनुत्साह से **सामायिक** करना.

◆ **वचन के दश दोष :-**

१. कठोर, अप्रिय या असत्य वचन बोलना.

२. बिना विचारे बोलना.

३. शास्त्र विरुद्ध बोलना.

४. **सूत्र** या सिद्धांत के पाठ को संक्षिप्त करके बोलना.

५. कलहकारी वचन बोलना.

६. विकथा [स्त्री, आहार, देश या राज कथा] करना.

७. किसी की हँसी उड़ाना या हँसना.

८. **सूत्र** या सिद्धांत के पाठ का अशुद्ध उच्चारण करना.

९. निश्चयात्मक वचन बोलना.

5. To perform **sāmāyika** out of fear.

6. To determine worldly gains by performing **sāmāyika**.

7. To doubt the fruits of **sāmāyika**.

8. To get angry during **sāmāyika** or to perform **sāmāyika** with anger.

9. To perform **sāmāyika** without faith or with immodesty.

10. To do **sāmāyika** without due respect, without proper devotion or without proper enthusiasm.

◆ **Ten faults of speech :-**

1. To speak harsh, unpleasant or untrue words.

2. To speak without thinking.

3. To speak against the teachings of scriptures.

4. To speak the lessons of **sūtra** or principles making short.

5. To speak quarrelsome words.

6. To discuss unbenificial stories [stories of women, food, countries or politics.]

7. To ridicule any body or to laugh at others.

8. To pronounce incorrectly the lessons of the **sūtra** or principles.

9. To speak decisive words.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. **सामायिक** में गुनगुनाना.

10. To hum in **sāmāyika.**

◆ **काया के बारह दोष :-**

◆ **Twelve faults of the body / activities :-**

१. पांव पर पांव रखकर अयोग्य आसन में बैठना.
२. आसन अस्थिर रखना.
३. चारों तरफ देखते रहना.
४. सावद्य क्रिया करना या कराना.
५. दिवाल या स्थंभ आदि का सहारा लेकर बैठना.
६. हाथ पांव का संकोचन या प्रसारण करना.
७. आलस मरोड़ना.
८. शरीर या हाथ-पांव की उंगलियों के कड़ाके फोडना.
९. शरीर पर से मैल उतारना.
१०. **सामायिक** में नींद लेना.
११. शरीर पर खुजली खुजलाना.
१२. शरीर को ढंककर बैठना.

1. To sit in an improper manner keeping the legs one above another.
2. To keep the seat unsteady.
3. To be looking around.
4. To do or cause others to do sinful activities.
5. To sit taking the support of a wall or a pillar.
6. To contract or spreadout hands and legs.
7. To express idleness.
8. To crack the body or fingers of hands and legs with crackling sound.
9. To remove dirt from the body.
10. To sleep / doze in **sāmāyika.**
11. To itch skin of the body.
12. To sit covering the body.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** में **सामायिक** व्रत की महिमा बताई गई है. **सामायिक** करने वाला **श्रावक** जब तक **सामायिक** में रहता है, तब तक वह मुनि तुल्य

Introduction of the sūtra :-

In this **sūtra**, the greatness of the **sāmāyika** vow is shown. As long as **śrāvaka**, the performer of **sāmāyika** is in **sāmāyika**, till then he will be equivalent to a saint.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहा जाता है. इसलिए पवित्र चारित्र धर्म की आराधना के लिए एवं पुनः पुनः **सामायिक** करने की भावना को स्थायी बनाने के लिए **सामायिक** पूर्ण करते समय यह **सूत्र** बोला जाता है.

Therefore, this **sūtra** is uttered while completing **sāmāyika** to adore the sacred characteristic duties and to maintain the enduring wish of performing the **sāmāyika** again and again.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. जग-चिन्तामणि चैत्य-वन्दन

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! चैत्य-वन्दन करूं? इच्छं.
जग-चिन्तामणि! जग-नाह! जग-गुरू! जग-रक्खण!
जग-बंधव! जग-सत्थवाह! जग-भाव-विअक्खण!
अट्ठावय-संठविअ-रूव! कम्मट्ठ-विणासण!
चउवीसं पि जिणवर! जयंतु अ-प्पडिहय-सासण. .....१.
कम्म-भूमिहिं कम्म-भूमिहिं पढम-संघयणि,
उक्कोसय सत्तरि-सय जिण-वराण विहरंत लब्भइ;
नव-कोडिहिं केवलीण, कोडी-सहस्स नव साहु गम्मइ.
संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडिहिं वरनाण;
समणह कोडि-सहस्स-दुअ, थुणिज्जइ निच्च विहाणि. .२.
जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि,
उज्जिंति पहु-नेमि-जिण, जयउ वीर सच्चउरी-मंडण;
भरु-अच्छहिं मुणि-सुव्वय, महुरि-पास दुह-दुरिअ-खंडण,

11. jaga-cintāmaṇi caitya-vandana

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! caitya-vandana karūṁ? iccham.
jaga-cintāmaṇi! jaga-nāha! jaga-gurū! jaga-rakkhaṇa!
jaga-bandhava! jaga-satthavāha! jaga-bhāva-viakkhaṇa!
aṭṭhāvaya-saṇṭhavia-rūva! kammaṭṭha-viṇāsaṇa!
cauvīsam pi jiṇavara! jayantu a-ppaḍihaya-sāsaṇa. .... .1.
kamma-bhūmihim kamma-bhūmihim paḍhama-saṅghayaṇi,
ukkosaya sattari-saya jiṇa-varāṇa viharanta labbhai;
nava-koḍihim kevalīṇa, koḍī-sahassa nava sāhu gammai.
sampai jiṇavara vīsa muṇi, bihum koḍihim varanāṇa;
samaṇaha koḍi-sahassa-dua, thuṇijjai nicca vihāṇi. .... .2.
jayau sāmiya jayau sāmiya risaha sattuñji,
ujjinti pahu-nemi-jiṇa, jayau vīra saccaurī-maṇḍaṇa;
bharu-acchahim muṇi-suvvaya, mahuri-pāsa duha-duria-khaṇḍaṇa,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवर-विदेहिं तित्थ-यरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि;
तीआणागय संपइय, वंदउं जिण सव्वे वि. ....३.
सत्ता-णवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ-कोडीओ.
बत्तीस-सय बासियाइं, तिअ-लोए चेइए वंदे. ....४.
पनरस-कोडि-सयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना.
छत्तीस-सहस-असीइं, सासय-बिंबाइं पणमामि. ....५.

शब्दार्थ :-

१.**इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्!** = हे **भगवन्!** स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो

इच्छा-कारेण = स्वेच्छा से, **संदिसह** = आज्ञा प्रदान करो, **भगवन्!** = हे भगवन्!

चैत्य-वंदन करूं = [मैं] **चैत्य-वंदन** करूं

चैत्य-वंदन = **चैत्य-वंदन**, **करूं** = करूं

इच्छं = [मैं] आप की आज्ञा स्वीकार करता हुं

जग-चिन्तामणि! = जगत के जीवों के लिये चिंतामणि रत्न समान!

avara-videhim tittha-yarā, cihum disi vidisi jim ke vi;
tiāṇāgaya sampaiya, vandaum jiṇa savve vi. .... .3.
sattā-ṇavai sahassā, lakkhā chappanna aṭṭha-koḍīo.
battīsa-saya bāsiyāim, tia-loe ceie vande. .... .4.
panarasa-koḍi-sayāim, koḍi bāyāla lakkha aḍavannā.
chattīsa-sahasa-asīim, sāsaya-bimbāim paṇamāmi. .... .5.

Literal meaning :–

1.**icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan!** = oh **bhagavan**! give the permission voluntarily

icchā-kāreṇa = voluntarily, **sandisaha** = give the permission, **bhagavan!** = oh **bhagavan!**

caitya-vandana karūṃ? = shall [i] perform the **caitya-vandana?**

caitya-vandana = **caitya-vandana, karūṃ** = shall i perform

iccham = [i] am accepting your order

jaga-cintāmaṇi! = alike the fabulous mythological gem for living beings of the universe!

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जग = जगत के, **चिन्तामणि** = चिन्तामणि रत्न समान
जग-नाह! = जगत के स्वामी!
नाह = स्वामी
जग-गुरू! = जगत के गुरु!
गुरू = गुरु
जग-रक्खण! = जगत के जीवों का रक्षण करने वाले!
रक्खण = रक्षण करने वाले
जग-बंधव! = जगत के बन्धु!
बंधव = बन्धु
जग-सत्थवाह! = जगत के सार्थवाह!
सत्थवाह = सार्थवाह
जग-भाव-विअक्खण! = जगत के सर्व भावों [को जानने और प्रकाशित करने] में निपुण!
भाव = सर्व भावों को, **विअक्खण** = निपुण
अट्ठा-वय-संठविअ-रूव! = **अष्टापद** पर्वत पर स्थापित की गई हैं प्रतिमाएं जिनकी ऐसे!
अट्ठावय = **अष्टापद** पर्वत पर, **संठविअ** = स्थापित की गई हैं, **रूव** = प्रतिमाएं

jaga = of the universe, **cintāmaṇi** = alike the fabulous mythological gem
jaga-nāha! = the lord of the universe!
nāha = the lord
jaga-gurū! = the preceptor of the universe!
gurū = the preceptor
jaga-rakkhaṇa! = the protector of living beings of the universe!
rakkhaṇa = the protector
jaga-bandhava! = the brother of the universe!
bandhava = the brother
jaga-satthavāha! = the supreme guide of the universe!
satthavāha = the supreme guide
jaga-bhāva-viakkhaṇa! = proficient in [knowing and manifesting] all the truths of the universe!
bhāva = all the truths, **viakkhaṇa** = proficient
aṭṭhā-vaya-saṇṭhavia-rūva! = such whose idols are consecrated on **aṣṭāpada** mountain
aṭṭhāvaya = on **aṣṭāpada** mountain, **saṇṭhavia** = are consecrated, **rūva** = idols

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मट्ठ-विणासण! = आठों **कर्मों** का नाश करने वाले!	**kammaṭṭha-viṇāsaṇa**! = the annihilator of all the eight **karmas**
कम्म = **कर्मो** का, **अट्ठ** = आठों, **विणासण** = नाश करने वाले	**kamma** = of **karmas**, **aṭṭha** = all the eight, **viṇāsaṇa** = the annihilator
चउवीसं पि जिणवर! = हे चौबीसों **जिनेश्वर**!	**cauvīsaṃ pi jiṇavara**! = oh all the twenty four **jineśvaras**!
चउवीसं पि = चौबीसों, **जिणवर** = हे **जिनेश्वर**	**cauvīsaṃ** = twenty four, **pi** = all the, **jiṇavara** = **jineśvaras**
जयंतु = आपकी जय हो	**jayantu** = be your victory
अप्पडिहय-सासण = अखंडित शासन वाले!	**appaḍihaya-sāsaṇa** = the unimpaired rulers!
अप्पडिहय = अखंडित, **सासण** = शासन वाले	**appaḍihaya** = the unimpaired, **sāsaṇa** = rulers
२.**कम्म-भूमिहिं कम्म-भूमिहिं** = कर्म भूमियों में [जहाँ आजीविका के लिये प्रजा को कर्म/कार्य करना पड़ता हैं.	2.**kamma-bhūmihiṃ kamma-bhūmihiṃ** = in the lands of activities [where people have to work for their livelihood]
कम्म = कर्म, **भूमिहिं** = भूमियों में	**kamma** = activities, **bhūmihiṃ** = in the lands of
पढम-संघयणि = प्रथम **संघयण** [अस्थियों की उत्कृष्ट रचना] वाले	**paḍhama-saṅghayaṇi** = having first **saṅghayaṇa** [a superior type of bone setting]
पढम = प्रथम, **संघयणि** = **संघयण** वाले	**paḍhama** = first, **saṅghayaṇi** = having **saṅghayaṇa**
उक्कोसय सत्तरि-सय जिण-वराण = उत्कृष्ट से एक सौ सित्तर **जिनेश्वर**	**ukkosaya sattari-saya jiṇa-varāṇa** = one hundred and seventy **jineśvaras** at the most
उक्कोसय = उत्कृष्ट से, **सत्तरि** = सित्तर, **सय** = एक सौ, **जिणवराण** = **जिनेश्वर**	**ukkosaya** = at the most, **sattari** = seventy, **saya** = one hundred, **jiṇavarāṇa** = **jineśvaras**
विहरंत लब्भइ = विचरण करते हुए पाये जाते हैं	**viharanta labbhai** = are found moving about
विहरंत = विचरण करते हुए, **लब्भइ** = पाये जाते हैं	**viharanta** = moving about, **labbhai** = are found

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नव कोडिहिं केवलीण = नव क्रोड़ **केवली**
नव = नव, **कोडिहिं** = क्रोड़, **केवलीण** = **केवली**
कोडी-सहस्स नव साहु गम्मइ = नव हजार क्रोड़ [नब्बे अरब] **साधु** होते हैं
कोडी = क्रोड़, **सहस्स** = हजार, **साहु** = **साधु**, **गम्मइ** = होते हैं
संपइ जिणवर वीस मुणि = वर्तमान काल के बीस **जिनेश्वर मुनि**
संपइ = वर्तमान काल के, **वीस** = बीस, **मुणि** = **मुनि**
बिहुं कोडिहिं वरनाण = दो क्रोड़ **केवल-ज्ञानी** / केवली
बिहुं = दो, **वरनाण** = **केवल-ज्ञानी**
समणह कोडि-सहस्स-दुअ = दो हजार क्रोड़ [बीस अरब] **साधु**
समणह = **साधु**, **दुअ** = दो
थुणिज्जइ = स्तवन किया जाता है
निच्च विहाणि = नित्य प्रातः काल में
निच्च = नित्य, **विहाणि** = प्रातः काल में
३.**जयउ सामिय!** = हे **स्वामी!** आपकी जय हो
जयउ = आपकी जय हो, **सामिय** = हे **स्वामी**

nava koḍihim kevalīṇa = nine crore **kevalīs**
nava = nine, **koḍihim** = crore, **kevalīṇa** = **kevalīs**
koḍī-sahassa nava sāhu gammai = nine thousand crore [ninety arab] **sādhus** are present
koḍī = crore, **sahassa** = thousand, **sāhu** = **sādhus**, **gammai** = are present
sampai jiṇavara vīsa muṇi = twenty **jineśvara munis** of present era
sampai = of present era, **vīsa** = twenty, **muṇi** = **munis**
bihum koḍihim varanāṇa = two crore **kevala-jñānī** / omniscience [**munis** having complete perfect knowledge]
bihum = two, **varanāṇa** = **kevala-jñānī**
samaṇaha koḍi-sahassa-dua = two thousand crore [twenty arab] **sādhus**
samaṇaha = **sādhus**, **dua** = two
thuṇijjai = eulogy is performed
nicca vihāṇi = every morning
nicca = every, **vihāṇi** = morning
3.**jayau sāmiya!** = oh **svāmī**! [lord], be your victory
jayau = be your victory, **sāmiya** = oh **svāmī**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रिसह सत्तुंजि = शत्रुंजय तीर्थ में विराजित हे **श्री ऋषभदेव!**

रिसह = हे **श्री ऋषभदेव, सत्तुंजि = शत्रुंजय** तीर्थ में विराजित

उज्जिंति पहु-नेमि-जिण = गिरनार पर्वत पर विराजित हे **श्री नेमिनाथ प्रभु!**

उज्जिंति = गिरनार पर्वत पर विराजित, **पहु = प्रभु, नेमि-जिण** = हे **श्री नेमिनाथ जिनेश्वर**

वीर! सच्चउरी-मंडण! = सत्यपुर [सांचोर] के शृंगार रूप हे **श्री महावीर स्वामी!**

वीर = हे **श्री महावीर स्वामी, सच्चउरी = सत्यपुर** के, **मंडण** = शृंगार रूप

भरु-अच्छहिं मुणि-सुव्वय! = भरूच में विराजित हे **श्री मुनिसुव्रत स्वामी!**

भरुअच्छहिं = भरूच में विराजित, **मुणिसुव्वय** = हे **श्री मुनिसुव्रत स्वामी**

महुरि पास दुह-दुरिअ-खंडण = दुःख और दुरित [पाप] का नाश करने वाले, **मथुरा** में विराजित हे **श्री पार्श्वनाथ!**

महुरि = मथुरा में विराजित, **पास** = हे **श्री पार्श्वनाथ, दुह** =

risaha sattuñji = oh **śrī ṛṣabhadeva** gracing the pilgrimage centre of **śatruñjaya**!

risaha = oh **śrī ṛṣabhadeva, sattuñji** = gracing the pilgrimage centre of **śatruñjaya**!

ujjinti pahu-nemi-jiṇa = oh **śrī neminātha prabhu** gracing **giranāra** mountain!

ujjinti = gracing **giranāra** mountain, **pahu = prabhu, nemi-jiṇa** = oh **śrī neminātha jineśvara**

vīra! saccaurī-maṇḍaṇa! = oh **śrī mahāvīra svāmī**, an ornament of **satyapura [sāṃcora]**

vīra = oh **śrī mahāvīra svāmī, saccaurī** = of **satyapura, maṇḍaṇa** = an ornament

bharu-acchahiṃ muṇi-suvvaya! = oh **śrī munisuvrata svāmī** gracing **bharūca**!

bharu-acchahiṃ = gracing **bharūca, muṇisuvvaya** = oh **śrī munisuvrata svāmī**

mahuri-pāsa duha-duria-khaṇḍaṇa = oh **śrī pārśvanātha**!, the annihilator of agonies and sins glorifying **mathurā**

mahuri = gracing **mathurā, pāsa** = oh **śrī pārśvanātha, duha** = of

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुःख, **दुरिअ** = दुरित, **खंडण** = नाश करने वाले
अवर-विदेहिं तित्थयरा = **महाविदेह** क्षेत्र के अन्य **तीर्थंकर**
अवर = अन्य, **विदेहिं** = **महाविदेह** क्षेत्र के, **तित्थयरा** = तीर्थंकर
चिहुं दिसि विदिसि = चारों दिशाओं और विदिशाओं में
चिहुं = चारों, **दिसि** = दिशाओं, **विदिसि** = विदिशाओं में
जिं के वि = जो कोई भी
जिं = जो, **के** = कोई, **वि** = भी
तीआणागय संपइ य = भूत काल में हुए हों, भविष्य काल में होने वाले हों और वर्तमान काल में हुए हैं
ती = भूत काल में हुए हो, **आणागय** = भविष्य काल में होने वाले हो, **संपइ य** = वर्तमान काल में हुए हैं
वंदउं जिण सव्वे वि = सर्व **जिनेश्वरों** को मैं वंदन करता हूँ
वंदउं = वंदन करता हूँ, **जिण** = **जिनेश्वरों** को, **सव्वे वि** = सर्व
४.**सत्ताणवइ सहस्सा** = सत्तानवे [९७] हजार
सत्ताणवइ = सत्तानवे, **सहस्सा** = हजार
लक्खा छप्पन्न = छप्पन [५६] लाख
लक्खा = लाख, **छप्पन्न** = छप्पन

agonies, **duria** = sins, **khaṇḍaṇa** = the annihilator
avara-videhim titthayarā = other **tīrthaṅkaras** of **mahāvideha** region
avara = other, **videhim** = of **mahāvideha** region, **titthayarā** = **tīrthaṅkaras**
cihum disi vidisi = in all the directions and intermediate directions
cihum = in all, **disi** = the directions, **vidisi** = intermediate directions
jim ke vi = any of the

tīāṇāgaya sampai ya = existed in the past, will exist in future and exists at present
tī = existed in the past, **āṇāgaya** = will exist in future, **sampai ya** = exists at present
vandaum jiṇa savve vi = i am obeisancing to all the **jineśvaras**
vandaum = i am obeisancing, **jiṇa** = the **jineśvaras**, **savve vi** = to all
4.**sattāṇavai sahassā** = ninety seven thousand
sattāṇavai = ninety seven, **sahassā** = thousand
lakkhā chappanna = fifty six lac
lakkhā = lac, **chappanna** = fifty six

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठ-कोडीओ = आठ [८] क्रोड़
  अट्ठ = आठ, **कोडीओ** = क्रोड़
बत्तीस-सय बासियाइं = बत्तीस सौ बयासी [३२८२]
  बत्तीस = बत्तीस, **सय** = सौ, **बासीयाइं** = बयासी
तिअ-लोए चेइए वंदे = तीनों लोक में स्थित चैत्यों [मंदिरों] को मैं वंदन करता हूँ
  तिअ = तीनों, **लोए** = लोक में स्थित, **चेइए** = चैत्यों को, **वंदे** = वंदन करता हूँ
५.पनरस-कोडि-सयाइं = पंद्रह सौ [१५००] क्रोड़ [पंद्रह अरब]
  पनरस = पंद्रह, **सयाइं** = सौ
कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना = बयालीस [४२] क्रोड़ अट्ठावन [५८] लाख
  बायाल = बयालीस, **लक्ख** = लाख, **अडवन्ना** = अट्ठावन
छत्तीस-सहस-असीइं = छत्तीस हजार अस्सी [३६०८०]
  छत्तीस = छत्तीस, **सहस** = हजार, **असीइं** = अस्सी
सासय-बिंबाइं पणमामि = शाश्वत प्रतिमाओं को मैं वंदन करता हूँ
  सासय = शाश्वत, **बिंबाइं** = प्रतिमाओं को, **पणमामि** = वंदन करता हूँ

aṭṭha-koḍīo = eight crore
  aṭṭha = eight, **koḍīo** = crore
battīsa-saya bāsiyāim = thirty two hundred and eighty two [3282]
  battīsa = thirty two, **saya** = hundred, **bāsiyāim** = eighty two
tia-loe ceie vande = i am obeisancing the temples present in all the three worlds
  tia = all the three, **loe** = present in the worlds, **ceie** = the temples, **vande** = i am obeisancing
5.panarasa-koḍi-sayāim = fifteen hundred [1500] crore [fifteen arab]
  panarasa = fifteen, **sayāim** = hundred
koḍi bāyāla lakkha aḍavannā = forty two crore fifty eight lac
  bāyāla = forty two, **lakkha** = lac, **aḍavannā** = fifty eight
chattīsa-sahasa-asīim = thirty six thousand eighty [36080]
  chattīsa = thirty six, **sahasa** = thousand, **asīim** = eighty
sāsaya-bimbāim paṇamāmi = i am obeisancing to the eternal idols
  sāsaya = eternal, **bimbāim** = to the idols, **paṇamāmi** = i am obeisancing

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाथार्थ :-

हे **भगवन्**! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो. [मैं] **चैत्यवंदन** करूँ? [मैं] आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ.

जगत के लिये चिंतामणि रत्न समान!, जगत के स्वामी!, जगत् के गुरु! जगत् के जीवों का रक्षण करने वाले! जगत् के बंधु!, जगत् के सार्थवाह!, जगत् के सर्व भावों को जानने और प्रकाशित करने में निपुण!, **अष्टापद** पर्वत पर स्थापित की गई हैं जिनकी प्रतिमाएँ ऐसे! आठों **कर्मों** को नाश करने वाले!, अखंडित शासन वाले! हे चौबीसों **जिनेश्वर**! आपकी जय हो. .... १.

कर्म भूमियों में प्रथम **संघयण** वाले उत्कृष्ट से एक सौ सत्तर **जिनेश्वर**, नव क्रोड़ **केवली** और नव हजार क्रोड़ [९० अरब] **साधु** विचरण करते हुए पाए जाते हैं. वर्तमान काल के बीस **जिनेश्वर मुनि**, दो क्रोड़ **केवलज्ञानी** और दो हजार क्रोड़ [२० अरब] **साधुओं** का प्रातःकाल में नित्य स्तवन किया जाता है. .... २.

हे **स्वामी**! आपकी जय हो! हे **स्वामी**! आपकी जय हो! **शत्रुंजय** तीर्थ पर विराजित हे **श्री ऋषभदेव!, गिरनार** पर्वत पर विराजमान हे **श्री नेमिनाथ प्रभु!, साँचोर** के शृंगार रूप हे **श्री महावीर स्वामी!, भरूच**

Stanzaic meaning :–

oh **bhagavan**! give the permission voluntarily. Shall [i] perform the **caitya-vandana**? [i] am accepting your order.

Oh all the twenty four **jineśvaras**!, alike the fabulous mythological gem for living beings of the universe!, the lord of the universe!, the preceptor of the universe!, the protector of the living beings of the universe!, the brother of the universe!, the supreme guide of the world!, proficient in knowing and manifesting all the truths of the universe!, such whose idols are consecrated on **aṣṭāpada** mountain, the annihilator of all the eight **karma** s!, the unimpaired ruler!, be your victory... 1.

At the most one hundred and seventy **jineśvaras** having first **saṅghayaṇa**, nine crore **kevalī**, nine thousand crore [ninety arab] **sādhus** are found moving about in the lands of activities. Eulogy of twenty **jineśvara munis**, two crore **kevala-jñānī** and two thousand crore [twenty arab] **sādhus** of present era is performed every morning. .... 2.

Oh **svāmī**! be your victory, oh **svāmī**! be your victory. Oh **śrī ṛṣabhadeva** gracing the pilgrimage center of **śatruñjaya**!, Oh **śrī neminātha prabhu** gracing **giranāra** mountain!, Oh **śrī mahāvīra svāmī**, an ornament of **sācora**!, oh **śrī**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में विराजित हे **श्री मुनिसुव्रत स्वामी!**, दुःख और पाप का नाश करने वाले **मथुरा** में विराजित हे **श्री पार्श्वनाथ!** आपकी जय हो! **महाविदेह** क्षेत्र के तथा चारों दिशाओं और विदिशाओं में जो कोई भी अन्य **तीर्थंकर** भूत काल में हुए हों, भविष्य काल में होने वाले हों और वर्तमान काल में हुए हों [उन] सर्व **जिनेश्वरों** को मैं वंदन करता हूँ. .... ३.

तीनों लोक में स्थित आठ क्रोड़ सत्तावन लाख दो सौ बयासी [८,५७,००,२८२] **जिन** चैत्यों को मैं वंदन करता हूँ. .... ४.

तीनों लोक में स्थित पंद्रह अरब बयालीस क्रोड़ अट्ठावन लाख छत्तीस हजार अस्सी [१५,४२,५८,३६,०८०] शाश्वत **जिन** प्रतिमाओं को मैं वंदन करता हूँ. .... ५.

munisuvrata svāmī gracing bharūca!, oh śrī pārśvanātha gracing mathurā!, the destroyer of agonies and sins be your victory. I am obeisancing to all [those] tīrthaṅkaras of mahāvideha region and any of the other jineśvaras existed in past, will exist in future and exists at present in all directions and intermediate directions. ....3.

I am obeisancing to eight crore fifty seven lac two hundred and eighty two [8,57,00,282] **jina** temples present in all the three worlds. .... 4.

I am obeisancing to fifteen arab forty two crore fifty-eight lac thirty six thousand and eighty [15,42,58,36,080] eternal **jina** idols [present in all the three worlds].5.

विशेषार्थ :-

कर्म भूमि :-

१. असि [शस्त्र], मसि [स्याही] और कृषि [खेती] के व्यापार वाली भूमि एवं जीव द्वारा संयम, तप आदि के पालन तथा मोक्ष गमन के योग्य भूमि.

२. **अढ़ाई द्वीप** में स्थित पाँच **भरत**, पाँच **ऐरावत** और पाँच **महाविदेह** क्षेत्र.

Specific meaning :-

karma bhūmi :-

1. The land of activities with arms, ink and farm and the land fit for the observance of self-control, penance etc. and suitable for movement towards salvation.

2. The regions of five **bharata**, five **airāvata** and five **mahāvideha** situated in **aḍhāī dvīpa** [two and a half ilands].

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आठ कर्म :-

१. **ज्ञानावरणीय कर्म-** आत्मा के ज्ञान गुण का आवरण करने वाला **कर्म.**

२. **दर्शनावरणीय कर्म-** आत्मा के दर्शन गुण का आवरण करने वाला **कर्म.**

३. **वेदनीय कर्म-** सुख-दुःख का अनुभव कराने वाला **कर्म.**

४. **मोहनीय कर्म-** मोह आदि उत्पन्न करने वाला **कर्म.**

५. **आयुष्य कर्म-** आयुष्य की समय मर्यादा निश्चित करने वाला **कर्म.**

६. **नाम कर्म-** शरीर के आकार आदि की प्राप्ति कराने वाला **कर्म.**

७. **गोत्र कर्म-** ऊँच-नीच गोत्र का बंध कराने वाला **कर्म.**

८. **अंतराय कर्म-** दान, लाभ आदि में अवरोध करने वाला **कर्म.**

चैत्यवंदन = चैत्य [मंदिर / प्रतिमा] को किया जाने वाला वंदन.

चार विदिशाएँ = ईशान [पूर्वोत्तर], आग्नेय [पूर्व-दक्षिण], नैर्ऋत्य [पश्चिम-दक्षिण] और वायव्य [पश्चिमोत्तर] दिशा.

भारतीय और अंग्रेज गुणात्मक संख्या :-

१,००,००० [एक लाख].. = १/१० [एक दशांश] मिलीयन [मिल्यन]

१०,००,००० [दस लाख].................... = १ [एक] मिलीयन

Eight karmas :-

1. **jñānāvaraṇīya karma- karma** obscuring the quality of knowledge of the soul.

2. **darśanāvaraṇīya karma- karma** obscuring the cognitive power / power of right faith of the soul.

3. **vedanīya karma- karma** experiencing the feelings of happiness and pain / sorrow.

4. **mohanīya karma- karma** creating delusion etc.

5. **āyuṣya karma- karma** determining the period to the age.

6. **nāma karma- karma** causing the soul to acquire the shape of the body etc.

7. **gotra karma- karma** determining high and low family lineage.

8. **antarāya karma- karma** making obstructions in charity, acquisitions etc.

caityavandana = Obeisance done to a **caitya** [temple / idol].

Four intermediate directions :- Oblique directions of north-east, south-east, south-west and north-west.

Indian and English cardinal numbers :-

1,00,000 [one lac].. = 1/10 [one-tenth] million

10,00,000 [ten lac]... = 1 [one] million

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१,००,००,००० [एक क्रोड़] .... = १० [दस] मिलीयन
१०,००,००,००० [दस क्रोड़] .... = १०० [एक सौ] मिलीयन
१००,००,००,००० [एक सौ क्रोड़ / एक अबज] = १,००० [एक हजार] मिलीयन
१०००,००,००,००० [एक हजार क्रोड़ / दस अबज] = १०,००० [दस हजार] मिलीयन

सूत्र परिचय :-

चैत्य-वंदन के रूप में रचित इस **सूत्र** से सर्व **तीर्थंकर भगवंतों**, प्रसिद्ध तीर्थों, सर्व चैत्यों [मंदिरों] और **जिन** प्रतिमाओं की स्तुति तथा **श्रमण भगवंतों** आदि को वंदन किया गया है.

1,00,00,000 [one crore] .... = 10 [ten] million
10,00,00,000 [ten crore] .... = 100 [one hundred] million
100,00,00,000 [one hundred crore / one abaj]....... = 1,000 [one thousand] million
1000,00,00,000 [one thousand crore / ten abaj].... = 10,000 [ten thousand] million

Introduction of the sūtra :-

The glorification of all the **tīrthaṅkara bhagavantas**, famous places of pilgrimage, temples and **jina** idols and obeisance to the **śramaṇa bhagavantas** etc. is being done by this **sūtra** composed in the form of a **caitya-vandana**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. जं किंचि सूत्र

जं किंचि नाम-तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए.
जाइं जिण-बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि. ....१.

शब्दार्थ :-

जं किंचि नाम तित्थं = जो कोई भी नामरूपी तीर्थ हो
  जं = जो, **किंचि** = कोई भी, **नाम** = नाम रूपी, **तित्थं** = तीर्थ हो
सग्गे पायालि माणुसे लोए = स्वर्ग, पाताल और मनुष्य लोक में
  सग्गे = स्वर्ग, **पायालि** = पाताल, **माणुसे** = मनुष्य, **लोए** = लोक में
जाइं जिण-बिंबाइं = जो भी **जिन** प्रतिमाएँ हों
  जाइं = जो भी, **जिण** = **जिन**, **बिंबाइं** = प्रतिमाएँ हों
ताइं सव्वाइं वंदामि = उन सब को मैं वंदन करता हूँ
  ताइं = उन, **सव्वाइं** = सब को, **वंदामि** = मैं वंदन करता हूँ

12. jam kiñci sūtra

jam kiñci nāma-tittham, sagge pāyāli māṇuse loe.
jāim jiṇa-bimbāim, tāim savvāim vandāmi. .... .1.

Literal meaning :-

jam kiñci nāma tittham = whichever place of pilgrimage be present by name
  jam kiñci = whichever, **nāma** = by name, **tittham** = place of pilgrimage be present
sagge pāyāli māṇuse loe = in heaven, nether world and human world
  sagge = in heaven, **pāyāli** = nether world, **māṇuse** = human, **loe** = world

jāim jiṇa-bimbāim = whichever **jina** idols be present
  jāim = whichever, **jiṇa** = **jina**, **bimbāim** = idols be present
tāim savvāim vandāmi = i obeisance to all of them
  tāim = them, **savvāim** = to all of, **vandāmi** = i obeisance

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाथार्थ :-

स्वर्ग, पाताल और मनुष्य लोक में जो कोई भी नामरूपी तीर्थ हों, जो भी **जिन** प्रतिमाएँ हों, उन सब को मैं वंदन करता हूँ. .... १.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** में तीनों लोक में स्थित सर्व **जैन** तीर्थों और सर्व **जिन** प्रतिमाओं को नमस्कार किया गया है.

Stanzaic meaning :-

Whichever places of pilgrimage be present by name, whichever **jina** idols be present in heaven, nether world and human world, I obeisance to all of them.1.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, salutation is being offered to all the **jaina** pilgrim centres and all the **jina** idols existing in the three worlds.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. नमुत्थु णं सूत्र

नमुत्थु णं, अरिहंताणं, भगवंताणं....................१.
आइ-गराणं, तित्थ-यराणं, सयं-संबुद्धाणं. ....२.
पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुंडरीआणं,
पुरिस-वर-गंध-हत्थीणं. ....३.
लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-हिआणं, लोग-पईवाणं,
लोग-पज्जोअ-गराणं. ....४.
अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्ग-दयाणं,
सरण-दयाणं, बोहि-दयाणं. ....५.
धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाणं,
धम्म-सारहीणं, धम्म-वर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं. ....६.
अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं, वियट्ट-छउमाणं. ..७.
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं,
बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं. ....८.

13. namutthu ṇam sūtra

namutthu ṇam, arihantāṇam, bhagavantāṇam.................... .1.
āi-garāṇam, tittha-yarāṇam, sayaṃ-sambuddhāṇam. .... .2.
purisuttamāṇam, purisa-sīhāṇam, purisa-vara-puṇḍarīāṇam,
purisa-vara-gandha-hatthīṇam. .... .3.
loguttamāṇam, loga-nāhāṇam, loga-hiāṇam, loga-paīvāṇam,
loga-pajjoa-garāṇam. .... .4.
abhaya-dayāṇam, cakkhu-dayāṇam, magga-dayāṇam,
saraṇa-dayāṇam, bohi-dayāṇam. .... .5.
dhamma-dayāṇam, dhamma-desayāṇam, dhamma-nāyagāṇam,
dhamma-sārahīṇam, dhamma-vara-cāuranta-cakkavaṭṭīṇam. ....6.
appaḍihaya-vara-nāṇa-dansaṇa-dharāṇam, viyaṭṭa-chaumāṇam.....7.
jiṇāṇam, jāvayāṇam, tinnāṇam, tārayāṇam, buddhāṇam,
bohayāṇam, muttāṇam, moagāṇam. .... .8.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वन्नूणं, सव्व-दरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-
मक्खय-मव्वाबाह-मपुणराविति सिद्धिगइ-नामधेयं
ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ-भयाणं. ....९.
जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति-णागए काले.
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे ति-विहेण वंदामि........ .१०.

शब्दार्थ :-

१.नमुत्थु णं = नमस्कार हो
अरिहंताणं भगवंताणं = अरिहंत भगवंतों को
अरिहंताणं = अरिहंत, भगवंताणं = भगवंतों को
२.आइ-गराणं = [श्रुत की] आदि करने वाले
आइ = आदि, गराणं = करने वाले
तित्थ-यराणं = तीर्थंकर
सयं-संबुद्धाणं = स्वयं बोध प्राप्त किये हुए
सयं = स्वयं, संबुद्धाणं = बोध प्राप्त किये हुए
३.पुरिसुत्तमाणं = पुरुषों में उत्तम
पुरिस = पुरुषों में, उत्तमाणं = उत्तम

savvannūṇam, savva-darisīṇam, siva-mayala-marua-maṇanta-
makkhaya-mavvābāha-mapuṇarāvitti siddhigai-nāmadheyam
ṭhāṇam sampattāṇam, namo jiṇāṇam, jia-bhayāṇam. .... .9.
je a aīyā siddhā, je a bhavissanti-ṇāgae kāle.
sampai a vaṭṭamāṇā, savve ti-viheṇa vandāmi. .... .10.

Literal meaning :-

1.namutthu ṇam = be obeisance
arihantāṇam bhagavantāṇam = to arihanta bhagavantas
arihantāṇam = to arihanta, bhagavantāṇam = bhagavantas
2.āi-garāṇam = the beginners [of śruta]

tittha-yarāṇam = the tīrthankaras
sayam-sambuddhāṇam = attainers of enlightenment by himself
sayam = by himself, sambuddhāṇam = attainers of enlightenment
3.purisuttamāṇam = best among men
purisa = among men, uttamāṇam = best

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिस-सीहाणं = पुरुषों में सिंह समान निर्भय
सीहाणं = सिंह समान
पुरिस-वर-पुंडरीआणं = पुरुषों में पुंडरीक कमल समान श्रेष्ठ
वर = श्रेष्ठ, **पुंडरीआणं** = पुंडरीक कमल समान
पुरिस-वर-गंध-हत्थीणं = पुरुषों में गंध हस्ती [हाथी] समान श्रेष्ठ
गंध = गंध, **हत्थीणं** = हाथी के समान
४.लोगुत्तमाणं = लोक में उत्तम
लोग = लोक में
लोग-नाहाणं = लोक के नाथ
लोग = लोक के, **नाहाणं** = नाथ
लोग-हिआणं = लोक का हित करने वाले
लोग = लोक का, **हिआणं** = हित करने वाले
लोग-पईवाणं = लोक में दीपक समान
पईवाणं = दीपक समान
लोग-पज्जोअ-गराणं = लोक में प्रकाश करने वाले
पज्जोअ = प्रकाश
५.अभय-दयाणं = अभय प्रदान करने वाले
अभय = अभय, **दयाणं** = प्रदान करने वाले

purisa-sīhāṇam = fearless like a lion among men
sīhāṇam = like a lion
purisa-vara-puṇḍarīāṇam = best among men like a white lotus
vara = best, **puṇḍarīāṇam** = like a white lotus
purisa-vara-gandha-hatthīṇam = best among men like a superior elephant
gandha-hatthīṇam = like a superior elephant
4.loguttamāṇam = best in the world / universe
loga = in the world
loga-nāhāṇam = lords of the universe
loga = of the universe, **nāhāṇam** = lords
loga-hiāṇam = benefactors of the universe
hiāṇam = benefactors
loga-paīvāṇam = like a lamp in the universe
paīvāṇam = like a lamp
loga-pajjoa-garāṇam = illuminators in the universe
pajjoa-garāṇam = illuminators
5.abhaya-dayāṇam = bestowers of fearlessness
abhaya = of fearlessness, **dayāṇam** = bestowers

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चक्खु-दयाणं = [सम्यक्त्व रूपी] नेत्र प्रदान करने वाले
चक्खु = नेत्र
मग्ग-दयाणं = [मोक्ष] मार्ग-दर्शक
मग्ग = मार्ग, **दयाणं** = दर्शक
सरण-दयाणं = शरण देने वाले
सरण = शरण, **दयाणं** = देने वाले
बोहि-दयाणं = बोधि-बीज देने वाले
बोहि = बोधि-बीज
६.**धम्म-दयाणं** = धर्म प्रदान करने वाले
धम्म = धर्म
धम्म-देसयाणं = धर्मोपदेश देने वाले
देसयाणं = उपदेश देने वाले
धम्म-नायगाणं = धर्म के स्वामी
धम्म = धर्म के, **नायगाणं** = स्वामी
धम्म-सारहीणं = धर्म के सारथि / प्रवर्तक
धम्म = धर्म के, **सारहीणं** = सारथि
धम्म-वर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं = चतुर्गति नाशक श्रेष्ठ धर्म [मोक्षमार्ग] रूपी चक्र धारण करने वाले

cakkhu-dayāṇam = bestowers of [right faith in the from of] vision / eyes
cakkhu = of vision,
magga-dayāṇam = guides to the path [of salvation]
magga = of the path, **dayāṇam** = guides
saraṇa-dayāṇam = granters of protection
saraṇa = of protection, **dayāṇam** = granters
bohi-dayāṇam = bestowers of seed of right faith [to attain salvation]
bohi = of seed of right faith,
6.**dhamma-dayāṇam** = bestowers of religiousness / path of right conduct
dhamma = of religiousness
dhamma-desayāṇam = preachers of religious principles
dhamma = of religious principles, **desayāṇam** = preachers
dhamma-nāyagāṇam = leaders of the religion
dhamma = of the religion, **nāyagāṇam** = leaders
dhamma-sārahīṇam = charioteers / founders of religion
sārahīṇam = charioteers
dhamma-vara-cāuranta-cakkavaṭṭīṇam = holders of best religion [path of salvation] in the from of disk destroying four states of birth / life

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चाउरंत = चतुर्गति नाशक, **चक्कवट्टीणं** = चक्र धारण करने वाले

७.**अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं** = नष्ट न होने वाले श्रेष्ठ **ज्ञान** और **दर्शन** को धारण करने वाले

अप्पडिहय = नष्ट न होने वाले, **नाण** = **ज्ञान**, **दंसण** = **दर्शन** को, **धराणं** = धारण करने वाले

वियट्ट-छउमाणं = छद्मस्थता [अपूर्ण ज्ञान] से रहित

वियट्ट = रहित, **छउमाणं** = छद्मस्थता से

८.**जिणाणं जावयाणं** = [इंद्रिय आदि को] जीतने वाले और जिताने वाले

जिणाणं = जीतने वाले, **जावयाणं** = जिताने वाले

तिन्नाणं तारयाणं = [संसार समुद्र से] तरे हुए और तारने वाले

तिन्नाणं = तरे हुए, **तारयाणं** = तारने वाले

बुद्धाणं बोहयाणं = बोध प्राप्त किये हुए और बोध प्राप्त कराने वाले

बुद्धाणं = बोध प्राप्त किये हुए, **बोहयाणं** = बोध प्राप्त कराने वाले

cāuranta = destroying four states of birth, **cakkavaṭṭiṇam** = holders of disk

7.**appaḍihaya-vara-nāṇa-dansaṇa-dharāṇam** = holders of undestructible best **jñāna** [knowledge] and **darśana** [faith]

appaḍihaya = undestructible, **nāṇa** = of **jñāna**, **dansaṇa** = **darśana**, **dharāṇam** = holders

viyaṭṭa-chaumāṇam = devoid of incompleteness / imperfect knowledge

viyaṭṭa = devoid, **chaumāṇam** = of **chadmasthatā** [incompleteness]

8.**jiṇāṇam jāvayāṇam** = the conquerors and helpers in such conquer [of sense organs etc.]

jiṇāṇam = the conquerors, **jāvayāṇam** = helpers in such conquer

tinnāṇam tārayāṇam = the crossers and helpers to crossover [the ocean of world / life]

tinnāṇam = the crossers, **tārayāṇam** = helpers to crossover

buddhāṇam bohayāṇam = the achievers of perfect knowledge and helpers in attaining perfect knowledge

buddhāṇam = the achievers of perfect knowledge, **bohayāṇam** = helpers in attaining perfect knowledge

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुत्ताणं मोअगाणं = मुक्त और मुक्ति प्राप्त कराने वाले

मुत्ताणं = मुक्त, **मोअगाणं** = मुक्ति प्राप्त कराने वाले

९.सव्वन्नूणं सव्व-दरिसीणं = सर्वज्ञ और सर्वदर्शी

सव्वन्नूणं = सर्वज्ञ, **सव्व** = सर्व, **दरिसीणं** = देखने वाले

सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणराविति = शिव [उपद्रव रहित], अचल [स्थिर], अरुज [रोग रहित], अनंत [अंत रहित], अक्षय [क्षय रहित], अव्याबाध [**कर्म** जन्य पीड़ा रहित], अपुनरावृत्ति [पुनरागमन रहित / जहाँ जाने के बाद पुनः संसार में आना नहीं पडता / पुनर्जन्म मृत्यु रहित]

सिवं = शिव, **अयलं** = अचल, **अरुअं** = अरुज, **अणंतं** = अनंत, **अक्खयं** = अक्षय, **अव्वाबाहं** = अव्याबाध, **अपुणराविति** = अपुनरावृत्ति

सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं = **सिद्धिगति** नामक स्थान को प्राप्त किये हुए

सिद्धि = **सिद्धि**, **गइ** = **गति**, **नामधेयं** = नामक, **ठाणं** = स्थान को, **संपत्ताणं** = प्राप्त किये हुए

नमो जिणाणं = **जिनेश्वरों** को नमस्कार हो

muttāṇam moagāṇam = the salvated and the helpers to attain salvation

muttāṇam = the salvated, **moagāṇam** = the helpers to attain salvation

9.savvannūṇam savva-darisīṇam = all-knowers [omniscient] and all-viewers [omni-viewers]

savva = all, **nnūṇam** = knowers, **darisīṇam** = viewers

siva-mayala-marua-maṇanta-makkhaya-mavvābāha-mapuṇarāvitti = well being [free form calamities], constant, healthy [free form all diseases], everlasting [endless], imperishable, free form undisturbance [free from troubles resulting from **karmas**], free from rearrival [where after reaching, need not return back in the worldly life again / free from cycle of birth and death]

sivam = well being, **ayalam** = constant, **aruam** = healthy, **aṇantam** = everlasting, **akkhayam** = imperishable, **avvābāham** = free form undisturbance, **apuṇarāvitti** = free from rearrival

siddhigai nāmadheyam ṭhāṇam sampattāṇam = having reached the place by name **siddhi-gati** [an abode of salvation]

siddhi = **siddhi**, **gai** = **gati**, **nāmadheyam** = by name, **ṭhāṇam** = the place, **sampattāṇam** = having reached

namo jiṇāṇam = be obeisance to the **jineśvaras**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमो = नमस्कार हो, **जिणाणं** = **जिनेश्वरों** को
जिअ-भयाणं = भय को जीतने वाले
जिअ = जीतने वाले, **भयाणं** = भय को
१०.**जे अ अईआ सिद्धा** = और जो भूत काल में सिद्ध हुए हैं
जे = जो, **अ** = और, **अईआ** = भूत काल में, **सिद्धा** = सिद्ध हुए हैं
जे अ भविस्संति-णागए-काले = और जो भविष्य काल में [सिद्ध] होंगे
भविस्संति = होंगे, **णागए** = भविष्य, **काले** = काल में
संपइ अ वट्टमाणा = और वर्तमान काल में विद्यमान हैं
संपइ = वर्तमान काल में, **वट्टमाणा** = विद्यमान हैं
सव्वे ति-विहेण वंदामि = [उन] सब **[अरिहंतों]** को मैं तीनों प्रकार [मन, वचन और काया] से वंदन करता हूँ
सव्वे = सबको, **ति** = तीनों, **विहेण** = प्रकार से, **वंदामि** = वंदन करता हूँ

गाथार्थ :–

अरिहंत भगवंतों को नमस्कार हो. .... १.
श्रुत की आदि करने वाले, **तीर्थंकर**, स्वयं बोध प्राप्त किये हुए,... २.

namo = be obeisance, **jiṇāṇam** = to the **jineśvaras**
jia-bhayāṇam = conquerors of fear
jia = conquerors, **bhayāṇam** = of fear
10.**je a aīā siddhā** = and who have attained salvation in the past
je = who, **a** = and, **aīā** = in the past, **siddhā** = have attained salvation

je a bhavissanti-ṇāgae-kāle = and who will attain [salvation] in future
bhavissanti = will attain, **ṇāgae-kāle** = in future
sampai a vaṭṭamāṇā = and are existing at present
sampai = at present, **vaṭṭamāṇā** = are existing
savve ti-viheṇa vandāmi = i am obeisancing all [of those **arihantas**] in three ways [by thought, words and action]
savve = all, **ti** = in three, **viheṇa** = ways, **vandāmi** = i am obeisancing

Stanzaic meaning :–

Be obeisance to **arihanta bhagavantas**. .... 1.
Be obeisance to **jineśvaras** [stanza.9], the beginners of **śruta**, the **tīrthankaras**,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

...पुरुषों में उत्तम, पुरुषों में सिंह समान, पुरुषों में पुंडरीक कमल समान श्रेष्ठ, पुरुषों में गंध हस्ती के समान श्रेष्ठ,... .... ३.

...लोक में उत्तम, लोक के नाथ, लोक का हित करने वाले, लोक में दीपक समान, लोक में प्रकाश करने वाले,... .... ४.

...अभय प्रदान करने वाले, नेत्र प्रदान करने वाले, मार्ग दिखाने वाले, शरण देने वाले, बोधि-बीज देने वाले,................................ ५.

...धर्म प्रदान करने वाले, धर्मोपदेश देने वाले, धर्म के स्वामी, धर्म के सारथी, चतुर्गति नाशक श्रेष्ठ धर्म रूपी चक्र को धारण करने वाले,... .... ६.

...नष्ट न होने वाले श्रेष्ठ **ज्ञान** और **दर्शन** को धारण करने वाले, छद्मस्थता से रहित,... .... ७.

...जीतने वाले और जिताने वाले, तरे हुए और तारने वाले, बोध पाये हुए और बोध प्राप्त कराने वाले, मुक्त [मुक्ति पाये हुए] और मुक्ति प्राप्त कराने वाले,.. ८.

...सर्वज्ञ और सर्वदर्शी, शिव, अचल, अरुज, अनंत, अक्षय, अव्याबाध, अपुनरावृत्ति, **सिद्धि गति** नामक स्थान को प्राप्त किये हुए और भय को जीतने वाले [**जिनेश्वरों** को नमस्कार हो]. .... ९.

the attainers of enlightenment by himself,.. 2.

...best among men, fearless like lion among men, best among men like white lotus, best among men like a superior elephant,... .... 3.

...best in the universe, lord of the universe, benefactors of the world, like a lamp in the world, illuminators in the world,... .... 4.

...bestowers of fearlessness, bestowers of vision, guides to the path, granters of protection, bestowers of seed of right faith to attain salvation,... .... 5.

...bestowers of religiousness, preachers of religious principles, leaders of religion, charioteers of religion, holders of best religion in the from of disc destroying four states of birth,... .... 6.

...holders of undestructible best **jñāna** and **darśana**, devoid of incompleteness,... .... 7.

...the conquerors and helpers in such conquer, the crossers and helpers to cross over, the achievers of perfect knowledge and helpers in attaining perfect knowledge, salvated and helpers to attain salvation,... .... .8.

[be obeisance to the **jineśvara**]... the all knowers, the all viewers, having reached the place of well being, constant, healthy, ever lasting, imperishable, free from undisturbance, free from rearrival [non-return] by name **siddhi gati** and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

और जो भूत काल में सिद्ध हुए हैं, भविष्य काल में [सिद्ध] होंगे और वर्तमान काल में विद्यमान हैं [उन] सर्व **[अरिहंतों]** को मैं तीनों प्रकार से वंदन करता हूँ. ....१०.

विशेषार्थ :-

चार प्रकार के जिनेश्वर :-

१. **नाम जिन- तीर्थंकरों** के नाम,

२. **स्थापना जिन- तीर्थंकरों** की प्रतिमाएँ आदि,

३. **द्रव्य जिन-** भविष्य में होने वाले **तीर्थंकरों** के जीव और **सिद्ध-गति** को प्राप्त **तीर्थंकरों** की आत्माएँ,

४. **भाव जिन- समवसरण** में विराजित / **केवलज्ञान** से युक्त **तीर्थंकर**.

सात प्रकार के भय :-

१. इह लोक भय, २. परलोक भय, ३. आदान [चोरी का] भय, ४. अकस्मात [अग्नि, जल, प्रलय आदि का] भय, ५. वेदना [रोग-पीड़ा आदि का] भय, ६. मृत्यु भय और ७. अपकीर्ति भय.

चार गति = नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति और देव गति.

conquerors of fear. ....9.

And I am obeisancing to all [those **arihantas**] in three ways who have attained salvation in the past, who will attain [salvation] in future and are existing at present. ....10.

Specific meaning :-

Four types of jineśvara :-

1. **nāma jina–** names of the **tīrthaṅkaras**,
2. **sthāpanā jina–** Idols etc. of the **tīrthaṅkaras**,
3. **dravya jina–** souls to be **tīrthaṅkaras** in future / and souls of **tīrthaṅkaras** having attained **siddha-gati** [salvation],
4. **bhāva jina–tīrthaṅkaras** seated in **samavasaraṇa** / possessing **kevalajñāna**.

Seven types of fear :-

1. Fear of this world, 2. fear of life after death, 3. fear of robbery, 4. fear of accidents [of fire / conflagration, flood, great destruction / universal destruction etc.], 5. fear of agony [of disease, pain etc.], 6. fear of death and 7. fear of infamy.

Four forms of existence :– Existance as hell[living beings in hell], animal beings,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

human beings and heavenly beings.

छद्मस्थता = ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय कर्म– इन चार घाती **कर्मों** [आत्मा के मूल गुणों पर घात करने वाले **कर्म**] का आत्मा पर आवरण.

chadmasthatā = Obstruction of four highly obstructing **karmas** on the soul [**karmas** obstructing the chief virtues of the soul]-- **jñānāvaraṇīya, darśanāvaraṇīya, mohanīya** and **antarāya karma**.

ज्ञान = वस्तु या पदार्थ का विशेष बोध.

jñāna = Detailed knowledge of a substance or a matter.

दर्शन = वस्तु या पदार्थ का सामान्य [अविस्तृत / अपूर्ण / अविशेष] बोध.

darśana = Simple [undetailed / incomplete / unspecific] knowledge of a substance or a matter.

शक्रेंद्र = **सौधर्म** [प्रथम] देवलोक का **इंद्र**.

śakrendra = **indra** [presiding deity] of **saudharma** [first] heaven.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** द्वारा **शक्रेन्द्र अरिहंत भगवान** की उनके सर्वश्रेष्ठ गुणों के वर्णन से स्तुति करते हैं.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra, śakrendra** glorifies lord **arihanta bhagavāna** by the attribution of their supreme virtues.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. जावंति-चेइआइं सूत्र

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ.
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं. ....१.

शब्दार्थ :-

जावंति चेइआइं = जितने **जिन** चैत्य
  जावंति = जितने, **चेइआइं** = चैत्य
उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ = उर्ध्व लोक [स्वर्ग], अधो लोक [पाताल] और तिर्यक् / मध्य [मनुष्य] लोक में
  उड्ढे = उर्ध्व, **अ** = और, **अहे** = अधो, **तिरिअ** = तिर्यक्, **लोए** = लोक में
सव्वाइं ताइं वंदे = उन सब को मैं वंदन करता हूँ
  सव्वाइं = सब को, **ताइं** = उन, **वंदे** = मैं वंदन करता हूँ
इह संतो = यहाँ रहा हुआ
  इह = यहाँ, **संतो** = रहा हुआ
तत्थ संताइं = वहां रहे हुए
  तत्थ = वहां, **संताइं** = रहे हुए

14. jāvanti-ceiāim sūtra

jāvanti ceiāim, uddhe a ahe a tiria-loe a.
savvāim tāim vande, iha santo tattha santāim. .... .1.

Literal meaning :-

jāvanti ceiāim = as many as **jina** temples
  jāvanti = as many as, **ceiāim** = temples
uddhe a ahe a tiria loe a = in upper world [heaven], lower world [nether world / hell] and central world [world of human beings]
  uddhe = in upper, **a** = and, **ahe** = lower, **tiria** = central, **loe** = world

savvāim tāim vande = i am obeisancing to all of them
  savvāim = to all of, **tāim** = them, **vande** = i am obeisancing
iha santo = being here
  iha = here, **santo** = being
tattha santāim = present there
  tattha = there, **santāim** = present

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाथार्थ :-

उर्ध्व लोक, अधो लोक और तिर्यक् लोक में जितने **जिन** चैत्य हैं, यहाँ रहा हुआ मैं, वहाँ रहे हुए उन सब [चैत्यों] को वंदन करता हूँ. . १.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** से तीनों लोक में स्थित सर्व **जिन** चैत्यों को नमस्कार किया जाता है.

Stanzaic meaning :-

As many as **jina** temples are present in upper world, nether world and human world, being here, I am obeisancing to all of them [those temples] present there. .... 1.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, salutation is being done to all the **jina** temples existing in the three worlds.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. जावंत के वि सूत्र

जावंत के वि साहू, भरहेरवय-महा-विदेहे अ.
सव्वेसिं तेसिं पणओ, ति-विहेण ति-दंड-विरयाणं. .....१.

शब्दार्थ :-

जावंत के वि साहू = जितने कोई भी **साधु**
  जावंत = जितने, **के** = कोई, **वि** = भी, **साहू** = **साधु**
भरहेरवय-महा-विदेहे अ = **भरत, ऐरावत** और **महाविदेह** क्षेत्र में
  भरह = **भरत, एरवय** = **ऐरावत, महाविदेहे** = **महाविदेह** क्षेत्र में, **अ** = और
सव्वेसिं तेसिं पणओ = उन सबको मैं प्रणाम करता हूँ
  सव्वेसिं = सबको, **तेसिं** = उन, **पणओ** = मैं प्रणाम करता हूँ
ति-विहेण = तीन प्रकार से
  ति = तीन, **विहेण** = प्रकार से
ति-दंड-विरयाणं = तीन प्रकार के दंड से निवृत्त
  ति = तीन प्रकार के, **दंड** = दंड से, **विरयाणं** = निवृत्त

15. jāvanta ke vi sūtra

jāvanta ke vi sāhū, bharaheravaya-mahā-videhe a.
savvesim tesim paṇao, ti-viheṇa ti-daṇḍa-virayāṇam. .... .1.

Literal meaning :-

jāvanta ke vi sāhū = as many as any of the **sādhus**
  jāvanta = as many as, **ke** = any, **vi** = of, **sāhū** = **sādhus**
bharaheravaya-mahā-videhe a = in **bharata, airāvata** and **mahāvideha** regions
  bharaha = in **bharata, eravaya** = **airāvata, mahāvidehe** = **mahāvideha** regions, **a** = and
savvesim tesim paṇao = i am obeisancing to all of them
  savvesim = to all of, **tesim** = them, **paṇao** = i am obeisancing
ti-viheṇa = by three ways
  ti = three, **viheṇa** = by ways
ti-daṇḍa-virayāṇam = free from three types of punishment
  ti = three types of, **daṇḍa** = punishment, **virayāṇam** = free from

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाथार्थ :-

भरत, ऐरावत और **महाविदेह** क्षेत्र में जितने भी **साधु** तीन प्रकार से, तीन दंड से निवृत्त हैं, उन सबको मैं **प्रणाम** करता हूँ. .... १.

विशेषार्थ :-

दंड = आत्मा का दंडित होना / किसी को भी दंड देना.

तीन प्रकार के दंड :-

१. **मनो दंड-** मानसिक पाप के कारण आत्मा का दंडित होना / मन से किसी को दंड देना.

२. **वचन दंड-** वाचिक पाप के कारण आत्मा का दंडित होना / वचन से किसी को दंड देना.

३. **काय दंड-** शारीरिक पाप के कारण आत्मा का दंडित होना / काया से किसी को दंड देना.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** से सभी **भरत, ऐरावत** और **महाविदेह** क्षेत्र में स्थित सर्व **श्रमणों [साधुओं]** को नमस्कार किया जाता है.

Stanzaic meaning :-

As many as any of the **sādhus**, free from three types of punishment in three ways present in **bharata, airāvata** and **mahāvideha** region, I am obeisancing to all of them. .... 1.

Specific meaning :-

danda = Soul getting punished / to punish any one.

Three types of danda :-

1. **mano danda :-** Soul getting punished due to the guilts of evil thoughts / to punish any one by thoughts.
2. **vacana danda :-** Soul getting punished due to the guilts of wrong speaking [evil words] / to punish any one by words.
3. **kāya danda :-** Soul getting punished due to harmful activities / to punish any one by activities.

Introduction of the sūtra :-

By means of this **sūtra**, obeisance is being done to all the **śramaṇas [sādhus]** present in all the regions of **bharata, airāvata** and **mahāvideha**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. नमोर्हत् सूत्र

नमोर्हत्-सिद्धा-चार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यः. ....१.

शब्दार्थ :-

नमोर्हत्-सिद्धा-चार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यः = **अरिहंत**, **सिद्ध**, **आचार्य**, **उपाध्याय** और सर्व **साधुओं** को नमस्कार हो
नमो = नमस्कार हो, **अर्हत्** = **अरिहंत**, **सिद्ध** = **सिद्ध**, **आचार्य** = **आचार्य**, **उपाध्याय** = **उपाध्याय**, **सर्व** = सर्व, **साधुभ्यः** = **साधुओं** को

गाथार्थ :-

अरिहंत, **सिद्ध**, **आचार्य**, **उपाध्याय** और सर्व **साधुओं** को नमस्कार हो.

सूत्र परिचय :-

श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरि द्वारा **दृष्टिवाद** नामक **पूर्व** में से उद्धृत इस **सूत्र** से **श्री पंच परमेष्ठी** को नमस्कार किया गया है.

16. namorhat sūtra

namorhat-siddhā-cāryopādhyāya-sarva-sādhubhyaḥ. .... .1.

Literal meaning :-

namorhat-siddhā-cāryopādhyāya-sarva-sādhubhyaḥ = be obeisance to the **arihanta**, the **siddha**, the **ācārya**, the **upādhyāya** and all the **sādhus**
namo = be obeisance, **arhat** = to the **arihantas**, **siddha** = the **siddhas**, **ācārya** = the **ācāryas**, **upādhyāya** = the **upādhyāyas**, **sarva** = all, **sādhubhyaḥ** = the **sādhus**

Stanzaic meaning :-

Be obeisance to the **arihanta**, the **siddha**, the **ācārya**, the **upādhyāya** and all the **sādhus**.

Introduction of the sūtra :-

By means of this **sūtra** excerpted from the **pūrva** by name **dṛṣṭivāda** by **śrī siddhasena divākara sūri**, obeisance has been offered to the **pañca** [five] **parameṣṭhī**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. उवसग्ग-हरं स्तोत्र

उवसग्ग-हरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं.
विसहर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं. ....१.
विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ.
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ-जरा जंति उवसामं. ....२.
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहु-फलो होइ.
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं. ......३.
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्प-पायव-ब्भहिए.
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं. ....४.
इय संथुओ महायस! भत्ति-ब्भर-निब्भरेण हिअएण.
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास! जिण-चंद!. .....५.

शब्दार्थ :-

१.**उवसग्ग-हरं** = उपसर्गों को दूर करने वाले
उवसग्ग = उपसर्गों को, **हरं** = दूर करने वाले

17. uvasagga-haram stotra

uvasagga-haram pāsam, pāsam vandāmi kamma-ghaṇa-mukkam.
visahara-visa-ninnāsam, maṅgala-kallāṇa-āvāsam. .... .1.
visahara-phuliṅga-mantam, kaṇṭhe dhārei jo sayā maṇuo.
tassa gaha-roga-mārī, duṭṭha-jarā janti uvasāmam. .... .2.
ciṭṭhau dūre manto, tujjha paṇāmo vi bahu-phalo hoi.
nara-tiriesu vi jīvā, pāvanti na dukkha-dogaccam. .... .3.
tuha sammatte laddhe, cintāmaṇi-kappa-pāyava-bbhahie.
pāvanti avigghenam, jīvā ayarāmaram ṭhāṇam. .... .4.
iya santhuo mahāyasa! bhatti-bbhara-nibbhareṇa hiaeṇa.
tā deva! dijja bohim, bhave bhave pāsa! jiṇa-canda!. .... .5.

Literal meaning :-

1.**uvasagga-haram** = the eliminator of disturbances
uvasagga = disturbances, **haram** = the eliminator of

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासं = **पार्श्व यक्ष** सहित
पासं वंदामि = **श्री पार्श्वनाथ भगवान** को मैं वंदन करता हूँ
पासं = **श्री पार्श्वनाथ भगवान** को, **वंदामि** = मैं वंदन करता हूँ
कम्म-घण-मुक्कं = **कर्म** समूह से मुक्त
कम्म = **कर्म**, **घण** = समूह से, **मुक्कं** = मुक्त
विसहर-विस-निन्नासं = विषधर [सर्पों] के विष को नाश करने वाले
विसहर = सर्प के, **विस** = विष को, **निन्नासं** = नाश करने वाले
मंगल-कल्लाण-आवासं = मंगल और कल्याण के गृह रूप
मंगल = मंगल, **कल्लाण** = कल्याण के, **आवासं** = गृह रूप
२.**विसहर-फुलिंग-मंतं** = **विसहर फुलिंग** मंत्र को [सर्पादि के विष एवं अग्नि आदि का निवारण करने वाला मंत्र]
विसहर-फुलिंग = **विसहर फुलिंग**, **मंतं** = मंत्र को
कंठे धारेइ जो सया मणुओ = जो मनुष्य सदा कंठ में धारण करता है / जो मनुष्य सदा स्मरण करता है
कंठे = कंठ में, **धारेइ** = धारण करता है, **जो** = जो, **सया** = सदा, **मणुओ** = मनुष्य
तस्स गह-रोग-मारी दुट्ठ-जरा = उसके ग्रह दोष, महारोग, महामारी, विषम ज्वर

pāsam = along with **pārśva yakṣa**
pāsam vandāmi = i am obeisancing to **śrī pārśvanātha bhagavāna**
pāsam = to **śrī pārśvanātha bhagavāna**, **vandāmi** = i am obeisancing
kamma-ghaṇa-mukkam = free from the mass of **karmas**
kamma = of **karmas**, **ghaṇa** = from the mass, **mukkam** = free
visahara-visa-ninnāsam = the destroyer of snake's poison
visahara = of snake's, **visa** = poison, **ninnāsam** = the destroyer
maṅgala-kallāṇa-āvāsam = like an abode of auspiciousness and prosperity
maṅgala = of auspiciousness, **kallāṇa** = prosperity, **āvāsam** = like an abode
2.**visahara-phuliṅga-mantam** = to the hymn **visahara phuliṅga** [hymn eradicating the poison of snakes etc. and fire etc.]
visahara-phuliṅga = **visahara phuliṅga**, **mantam** = to the hymn
kaṇṭhe dhārei jo sayā maṇuo = the man who holds always on the tip of his tongue / the man who always remembers
kaṇṭhe = on the tip of his tongue, **dhārei** = holds, **jo** = who, **sayā** = always, **maṇuo** = the man
tassa gaha-roga-mārī duṭṭha-jarā = his planetary misfortunes, fatal diseases, epidemics, deadly fevers

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स = उसके, **गह** = ग्रह दोष, **रोग** = महारोग, **मारी** = महामारी, **दुट्ठ** = विषम, **जरा** = ज्वर

जंति उवसामं = शांत हो जाते हैं

जंति = हो जाते हैं, **उवसामं** = शांत

३.चिट्ठउ दूरे मंतो = मंत्र तो दूर रहे

चिट्ठउ = रहे, **दूरे** = दूर, **मंतो** = मंत्र

तुज्झ पणामो वि बहु-फलो होइ = आपको किया हुआ प्रणाम भी बहुत फल देने वाला है

तुज्झ = आपको किया हुआ, **पणामो** = प्रणाम, **वि** = भी, **बहु** = बहुत, **फलो** = फल देने वाला, **होइ** = है

नर तिरिएसु वि जीवा = मनुष्य और तिर्यंच गति में भी जीव

नर = मनुष्य, **तिरिएसु** = तिर्यंच गति में, **जीवा** = जीव

पावंति न दुक्ख-दोगच्चं = दुःख और दरिद्रता को प्राप्त नहीं करते हैं

पावंति = प्राप्त करते हैं, **न** = नहीं, **दुक्ख** = दुःख, **दोगच्चं** = दरिद्रता को

४.तुह सम्मत्ते लद्धे = आपके सम्यक्त्व की प्राप्ति होने पर

तुह = आपके, **सम्मत्ते** = सम्यक्त्व की, **लद्धे** = प्राप्ति होने पर

tassa = his, **gaha** = planetary misfortunes, **roga** = fatal diseases, **mārī** = epidemics, **duṭṭha** = deadly, **jarā** = fevers

janti uvasāmam = are pacified

janti = are, **uvasāmam** = pacified

3.ciṭṭhau dūre manto = hymn be apart

ciṭṭhau = be, **dūre** = apart, **manto** = hymn

tujjha paṇāmo vi bahu-phalo hoi = even an obeisance offered to you will result too many fruits

tujjha = offered to you, **paṇāmo** = an obeisance, **vi** = even, **bahu** = too many, **phalo** = result fruits, **hoi** = will

nara tiriesu vi jīvā = living beings even in the form of human beings and animals

nara = human beings, **tiriesu** = animals, **jīvā** = living beings

pāvanti na dukkha-dogaccam = will not suffer from agony and poverty

pāvanti = suffer from, **na** = will not, **dukkha** = from agony, **dogaccam** = poverty

4.tuha sammatte laddhe = by earning your right faith

tuha = your, **sammatte** = right faith, **laddhe** = by earning

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिंतामणि-कप्प-पायव-ब्भहिए = चिंतामणि रत्न और कल्पवृक्ष से भी अधिक [शक्तिशाली]

चिंतामणि = चिंतामणि रत्न, **कप्प** = कल्प, **पायव** = वृक्ष से भी, **ब्भहिए** = अधिक शक्तिशाली

पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं = जीव सरलता से अजरामर स्थान [वृद्धावस्था और मृत्यु से रहित स्थान / मोक्षपद] को प्राप्त करते हैं

अविग्घेणं = सरलता से, **अयर** = अजर, **अमरं** = अमर, **ठाणं** = स्थान को

५.इअ = इस प्रकार

संथुओ = आपकी स्तुति की है

महायस! = हे महायशस्विन्!

भत्तिब्भर-निब्भरेण हिअएण = भक्ति से भरपूर हृदय से

भत्तिब्भर = भक्ति से, **निब्भरेण** = भरपूर, **हिअएण** = हृदय से

ता देव! = इसलिये हे देव!

ता = इसलिये, **देव!** = हे देव!

दिज्ज बोहिं भवे भवे = भवो भव बोधि [सम्यक्त्व] को प्रदान कीजीए

cintāmaṇi-kappa-pāyava-bbhahie = more effective than astounding heavenly jewel and astounding heavenly tree

cintāmaṇi = astounding heavenly jewel, **kappa** = astounding heavenly, **pāyava** = tree, **bbhahie** = more effective than

pāvanti avigghenam jīvā ayarāmaram ṭhāṇam = a living being easily attains the place of undecayedness and immortality [place free from old age and death / state of salvation]

pāvanti = attains, **avigghenam** = easily, **ayara** = undecayedness, **amaram** = immortality, **ṭhāṇam** = the place of

5.ia = in this way / thus

santhuo = i have eulogized you

mahāyasa! = oh greatly renowned

bhattibbhara-nibbharena hiaeṇa = with a heart full of devotion

bhattibbhara = of devotion, **nibbharena** = full, **hiaeṇa** = with a heart

tā deva! = therefore oh god!

tā = therefore, **deva!** = oh god!

dijja bohim bhave bhave = bestow the seed of attaining perfect knowledge [right faith] in every cycle of birth and rebirth

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिज्ज = प्रदान कीजीए, **बोहिं** = बोधि को, **भवे भवे** = भवो भव

पास! **जिण-चंद! = जिनेश्वरों** में चन्द्र समान हे **श्री पार्श्वनाथ**!

पास! = हे **श्री पार्श्वनाथ**!, **जिण** = **जिनेश्वरों** में, **चंद!** = चन्द्र समान

गाथार्थ :-

उपद्रवों को दूर करने वाले **पार्श्व यक्ष** सहित, **कर्म** समूह से मुक्त, सर्प के विष को नाश करने वाले, मंगल और कल्याण के गृह रूप **श्री पार्श्वनाथ भगवान** को मैं वंदन करता हूँ. .... १.

जो मनुष्य **विसहर फुलिंग** मंत्र को नित्य स्मरण करता है, उसके ग्रह दोष, महारोग, महामारी और विषम ज्वर शांत हो जाते हैं. .... २.

मंत्र तो दूर रहे, आपको किया हुआ प्रणाम भी बहुत फल देने वाला है. मनुष्य और तिर्यंच गति में भी जीव दुःख और दरिद्रता को प्राप्त नहीं करते हैं. .... ३.

चिंतामणि रत्न और कल्प वृक्ष से भी अधिक शक्तिशाली आपके सम्यक्त्व की प्राप्ति होने पर जीव सरलता से अजरामर [मुक्ति] पद को प्राप्त करते हैं. .... ४.

dijja = bestow, **bohim** = the seed of attaining perfect knowledge, **bhave bhave** = in every cycle of birth and rebirth

pāsa! jiṇa-canda! = oh **śrī pārśvanātha**! like the moon among **jineśvaras**

pāsa! = oh **śrī pārśvanātha**!, **jiṇa** = among **jineśvaras**, **canda!** = like the moon

Stanzaic meaning :-

I am obeisancing to **śrī pārśvanātha bhagavāna** along with **pārśva yakṣa**, the eliminator of disturbances free from the mass of **karmas**, destroyer of snake's poison, like an abode of auspiciousness and prosperity. .... 1.

The man who always remembers the hymn of **visahara phuliṅga**, his planetary misfortunes, fatal diseases, epidemics and deadly fever are pecified. .... 2.

Hymn be apart, even an obeisance offered to you will result too many fruits. Living beings even in the form of human beings and animals will not suffer from agony and poverty. .... 3.

By earning your right faith more effective than the most precious heavenly jewel and miraculous heavenly tree, the living being easily attains the place of undecayedness and immortality [salvation]. .... 4.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हे महायशस्विन्! मैंने इस प्रकार भक्ति से भरपूर हृदय से आपकी स्तुति की है. इसलिये हे देव! **जिनेश्वरों** में चंद्र समान हे **श्री पार्श्वनाथ**! भवो भव बोधि को प्रदान कीजिए. .... ५.

Oh greatly renowned! in this way, I have eulogized you with a heart full of devotion. Therefore oh god! oh **śrī pārśvanātha**!, like the moon among **jineśvaras**, bestow upon me the seed of attaining perfect knowledge in every cycle of birth and rebirth. .... 5.

विशेषार्थ :-

उपसर्ग = देव, मनुष्य या तिर्यंच कृत उपद्रव.

कल्याण = संपत्ति का उत्कर्ष या आरोग्य और सुख को लानेवाला.

मंत्र = मन का रक्षण करने वाला और गुप्त रूप से कहा जाने वाला वर्ण या सूत्र.

दुःख = शारीरिक और मानसिक पीड़ा.

सम्यक्त्व = **मिथ्यात्व मोहनीय कर्म** के क्षयोपशम, उपशम या क्षय से आत्मा में उत्पन्न होने वाला **सुदेव-सुगुरु-सुधर्म** के प्रति शुद्ध श्रद्धा का विशिष्ट गुण.

सुदेव = अठारह दोषों से रहित परम ज्ञानी, **वीतराग**, **अरिहंत भगवान [तीर्थंकर]** तथा आठों **कर्मों** से रहित **सिद्ध भगवंत**.

Specific meaning :-

upasarga = Calamities created by heavenly beings, human beings or animal beings.

kalyāṇa = Prosperity of wealth or which brings health and peace.

mantra = Letter or aphorism protecting the mind and being recited secretly.

duḥkha = Physical and mental agony.

samyaktva = A special quality of pure faith towards **sudeva, suguru** and **sudharma** appearing in the soul by partial mitigation and partial destruction, by mitigation or by destruction of **mithyātva mohanīya karma**.

sudeva = The omniscient, **vītarāga, arihanta bhagavāna [tīrthankara]** without eighteen types of defects and **siddha bhagavanta** free from all the eight **karmas**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगुरु = पंच महाव्रत धारी **साधु**.

सुधर्म = **वीतराग केवली भगवंत** द्वारा प्ररूपित शुद्ध, सत्य **स्याद्वादमय** [विविध दृष्टिकोणों से तर्क के अनुसार] और मोक्ष दिलाने वाला **धर्म**.

मिथ्यात्व मोहनीय कर्म = वह **कर्म**, जो **धर्म** से विपरीत बुद्धि उत्पन्न करता है और शुद्ध **धर्म** के प्रति रुचि उत्पन्न होने नहीं देता है.

सूत्र परिचय :-

श्री भद्रबाहु स्वामी द्वारा रचित इस **सूत्र** में सर्व विघ्नों को दूर करने वाले **श्री पार्श्वनाथ प्रभु** के गुणों की स्तुति की गयी है.

suguru = **sādhu** observing five great vows

sudharma = **dharma** which is perfect, true, **syādvādamaya** [logical in various point of views], results in salvation and is revealed by **vītarāga kevalī bhagavanta**.

mithyātva mohanīya karma = That **karma** which produces perception against the perfect / true **dharma** [i.e. delusion] and do not allows to create desire for perfect **dharma**.

Introduction of the sūtra :-

In this **sūtra** composed by **śrī bhadrabāhu svāmī**, the eulogy of the qualities of lord **śrī pārśvanātha prabhu**, the remover of all impediments is being done.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८. जय वीयराय! सूत्र

जय वीयराय! जग-गुरु!, होउ ममं तुह प्पभावओ भयवं!.
भव-निव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल-सिद्धी. ....१.
लोग-विरुद्ध-च्चाओ गुरु-जण-पूआ परत्थ-करणं च.
सुह-गुरु-जोगो तव्वयण-सेवणा आ-भवमखंडा. ....२.
वारिज्जइ जइ वि नियाण-बंधणं वीयराय! तुह समये.
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं. .....३.
दुक्ख-क्खओ कम्म-क्खओ,
समाहि-मरणं च बोहि-लाभो अ.
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह! पणाम-करणेणं. ....४.
सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याण-कारणम्.
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम्. ....५.

शब्दार्थ :-

१.जय वीयराय! = हे वीतराग प्रभु! आपकी जय हो,

18. jaya vīyarāya! sūtra

jaya vīyarāya! jaga-guru!, hou mamam tuha ppabhāvao bhayavaṃ!.
bhava-nivveo maggāṇusāriā iṭṭhaphala-siddhī. .... .1.
loga-viruddha-ccāo guru-jaṇa-pūā parattha-karaṇam ca.
suha-guru-jogo tavvayaṇa-sevaṇā ā-bhavamakhaṇḍā. .... .2.
vārijjai jai vi niyāṇa-bandhaṇam vīyarāya! tuha samaye.
taha vi mama hujja sevā, bhave bhave tumha calaṇāṇam.... .3.
dukkha-kkhao kamma-kkhao,
samāhi-maraṇam ca bohi-lābho a.
sampajjau maha eam, tuha nāha! paṇāma-karaṇeṇam......... .4.
sarva-maṅgala-māṅgalyam, sarva-kalyāṇa-kāraṇam.
pradhānam sarva-dharmāṇām, jainam jayati śāsanam......... .5.

Literal meaning :-

1.jaya vīyarāya! = oh lord vītarāga! be your victory

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जय = आपकी जय हो, **वीयराय**! = हे **वीतराग** प्रभु!
जग-गुरु! = हे जगद् गुरु!
जग = जगद्, **गुरु!** = हे गुरु!
होउ ममं = मुझे हो
होउ = हो, **ममं** = मुझे
तुह प्पभावओ भयवं! = हे **भगवन्**! आपके प्रभाव से
तुह = आपके, **प्पभावओ** = प्रभाव से, **भयवं!** = हे **भगवन्**!
भव-निव्वेओ = भव निर्वेद [संसार के प्रति वैराग्य]
भव = भव, **निव्वेओ** = निर्वेद
मग्गाणुसारिआ = [मोक्ष] मार्ग के अनुसार प्रवृत्ति
मग्ग = मार्ग के, **अणुसारिआ** = अनुसार
इट्ठ-फल सिद्धी = [मोक्ष मार्ग में गमन करते समय आनेवाली भौतिक कठिनाई आदि को दूर करने रूप] इष्ट फल की सिद्धि
इट्ठ = इष्ट, **फल** = फल की, **सिद्धी** = सिद्धी
२.**लोग-विरुद्ध-च्चाओ** = लोक विरुद्ध प्रवृत्ति का त्याग
लोग = लोग, **विरुद्ध** = विरुद्ध प्रवृत्ति का, **च्चाओ** = त्याग
गुरु-जण-पूआ = गुरुजनों के प्रति सन्मान

jaya = be your victory, **vīyarāya!** = oh lord **vītarāga!**
jaga-guru! = oh preceptor of the world!
jaga = of the world!, **guru!** = oh preceptor
hou mamaṃ = be to me
hou = be, **mamaṃ** = to me
tuha ppabhāvao bhayavaṃ! = oh **bhagavan!** by your grace
tuha = your, **ppabhāvao** = by grace, **bhayavaṃ!**= oh **bhagavan!**
bhava-nivveo = detachment towards worldly objects
bhava = towards worldly objects, **nivveo** = detachment
maggāṇusāriā = the activity of moving according to the path [on the path of salvation]
magga = to the path, **aṇusāriā** = according
iṭṭha-phala siddhī = attainment of desired achievements [in the form of warding off physical impediments coming while moving on the path of salvation]
iṭṭha = of desired, **phala** = achievements, **siddhī** = attainment
2.loga-viruddha-ccāo = renunciation of activities against public interest
loga = public interest, **viruddha** = of activities against, **ccāo** = renunciation
guru-jaṇa-pūā = respect towards elders

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरु-जण = गुरुजनों के प्रति, **पूआ** = सम्मान
परत्थ-करणं च = और परोपकार की प्रवृत्ति
परत्थ = परोपकार की, **करणं** = प्रवृत्ति, **च** = और
सुह-गुरु-जोगो = सद्गुरु का योग
सुह = सद्, **गुरु** = गुरु का, **जोगो** = योग
तव्वयण-सेवणा = उनकी आज्ञा के पालन में प्रवृत्ति
तव्वयण = उनकी आज्ञा के, **सेवणा** = पालन की प्रवृत्ति
आ-भवमखंडा = पूरी भव परंपरा में अखंडित रूप से
आ-भवं = पूरी भव परंपरा में, **अखंडा** = अखंडित रूप से

३.वारिज्जइ जइ वि नियाण बंधणं = यद्यपि निदान बंधन का निषेध किया जाता है
वारिज्जइ = निषेध किया जाता है, **जइ** = यदि, **वि** = अपि, **नियाण** = निदान, **बंधणं** = बंधन का
वीयराय! तुह समये = हे वीतराग! आपके शास्त्र में
वीयराय! = हे **वीतराग!**, **तुह** = आपके, **समये** = शास्त्र में
तह वि मम हुज्ज सेवा भवे भवे तुम्ह चलणाणं = तथापि आपके चरणों की सेवा मुझे भवों-भव [मोक्ष प्राप्त होने तक] प्राप्त हो

guru-jaṇa = towards elders, **pūa** = respect
parattha-karaṇam ca = and benevolent activities
parattha = benevolent, **karaṇam** = activities, **ca** = and
suha-guru-jogo = contacts with worthy preceptors
suha = worthy, **guru** = preceptors, **jogo** = contacts with
tavvayaṇa-sevaṇā = activeness in carrying out their instructions / directives
tavvayaṇa = their instructions, **sevaṇā** = activeness in carrying out
ā-bhavamakhaṇḍā = without interruptions throughout the cycle of birth and rebirth
ā-bhavam = throughout the cycle of birth and rebirth, **akhaṇḍā** = without interruptions

3.vārijjai jai vi niyāṇa bandhaṇam = though determination of fruits of religious rites is strictly forbidden
vārijjai = is strictly forbidden, **jai vi** = though, **niyāṇa** = fruits of religious rites, **bandhaṇam** = determination of
vīyarāya! tuha samaye = oh **vītarāga**! in your teachings
vīyarāya! = oh **vītarāga!**, **tuha** = in your, **samaye** = teachings
taha vi mama hujja sevā bhave bhave tumha calaṇāṇam = even then let me have the dedicated service of your feet throughout the cycles of birth

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तह = तथा, **वि** = अपि, **मम** = मुझे, **हुज्ज** = प्राप्त हो, **सेवा** = सेवा, **भवे भवे** = भवों भव, **तुम्ह** = आपके, **चलणाणं** = चरणों की

४.दुक्ख-क्खओ कम्म-क्खओ = दुःख का नाश, **कर्म** का नाश

दुक्ख = दुक्ख का, **क्खओ** = नाश, **कम्म** = **कर्म** का,

समाहि-मरणं च = और समाधि मरण

समाहि = समाधि, **मरणं** = मरण

बोहि-लाभो अ = और **बोधि** लाभ

बोहि = **बोधि, लाभो** = लाभ, **अ** = और

संपज्जउ मह एअं = यह मुझे प्राप्त हो

संपज्जउ = प्राप्त हो, **मह** = मुझे, **एअं** = यह

तुह नाह! पणाम करणेणं = हे नाथ! आपको प्रणाम करने से

तुह = आपको, **नाह!** = हे नाथ!, **पणाम** = प्रणाम, **करणेणं** = करने से

and rebirth [till salvation in attained]

taha = even, **vi** = then, **mama** = me, **hujja** = let have, **sevā** = the dedicated service, **bhave bhave** = throughout the cycles of birth and rebirth, **tumha** = of your, **calaṇāṇam** = feet

4.dukkha-kkhao kamma-kkhao = destruction of sufferings and annihilation of **karmas**

dukkha = of sufferings, **kkhao** = destruction, **kamma** = of **karmas**, **kkhao** = annihilation

samāhi-maraṇam ca = and ecstatic death [death in the state of quietness and peacefulness]

samāhi = ecstatic, **maraṇam** = death

bohi-lābho a = and attainment of **bodhi** [right faith]

bohi = of **bodha, lābho** = attainment, **a** = and

sampajjau maha eam = let me obtain this

sampajjau = let obtain, **maha** = me, **eam** = this

tuha nāha! paṇāma karaṇeṇam = oh master! by making obeisance to you

tuha = to you, **nāha!** = oh master!, **paṇāma** = obeisance, **karaṇeṇam** = by making

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५.**सर्व-मंगल-मांगल्यं** = सर्व मंगलों में मंगल रूप

सर्व = सर्व, **मंगल** = मंगलों में, **मांगल्यं** = मंगल रूप

सर्व-कल्याण-कारणम् = सर्व कल्याणों का कारण

कल्याण = कल्याणों का, **कारणम्** = कारण

प्रधानं सर्व धर्माणां = सर्व धर्मों में श्रेष्ठ

प्रधानं = श्रेष्ठ, **धर्माणां** = धर्मों में

जैनं जयति शासनम् = जैन शासन जयवंत है

जैनं = जैन, **जयति** = जयवंत है, **शासनम्** = शासन

गाथार्थ :-

हे **वीतराग** प्रभु! हे जगद् गुरु! आपकी जय हो! हे **भगवन्!** आपके प्रभाव से संसार के प्रति वैराग्य, [मोक्ष] मार्ग के अनुसार प्रवृत्ति, इष्ट फल की सिद्धि... [मुझे प्राप्त हो]. .... १.

...लोक विरुद्ध प्रवृत्ति का त्याग, गुरुजनों के प्रति सन्मान, परोपकार प्रवृत्ति, सद्गुरुओं का योग और उनकी आज्ञा के पालन की प्रवृत्ति पूरी भव परंपरा में अखंडित रूप से मुझे प्राप्त हो. .... २.

हे **वीतराग!** आपके शास्त्र में यद्यपि निदान बंधन निषेध किया गया है,

5.sarva-mangala-māngalyam = the most auspicious amongst all auspices / auspicious things

sarva = all, **mangala** = amongst auspicious, **māngalyam** = the most auspicious

sarva-kalyāṇa-kāraṇam = the supreme cause of all prosperity

kalyāṇa = of prosperity, **kāraṇam** = the supreme cause

pradhānam sarva dharmāṇām = the best among all religious pursuits

pradhānam = the best, **dharmāṇām** = among all religious pursuits

jainam jayati śāsanam = jainism is victorious

jainam śāsanam = jainism, **jayati** = is victorious

Stanzaic meaning :-

Oh lord **vītarāga!** oh preceptor of the world! be your victory. Oh **bhagavan!** by your grace let me earn detachment towards worldly objects, activity of moving on the path of salvation, attainment of desired achievements... .... 1.

...renounciation of activities against public interest, respect towards elders, benevolent activities, contacts with worthy preceptors, activeness in carrying out their instructions throughout the cycles of birth and rebirth without interruptions. .... 2.

Oh **vītarāga!** though determination of fruits of religious rites is forbidden in your

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथापि भवो भव मुझे आपकी चरण सेवा प्राप्त हो. .... ३.

हे नाथ! आपको प्रणाम करने से दुःख का नाश, **कर्म** का नाश, समाधि मरण और **बोधि** लाभ मुझे प्राप्त हो. .... ४.

सर्व मंगलों में मंगल, सर्व कल्याणों का कारण, सर्व धर्मों में श्रेष्ठ जैन शासन जयवंत है. .... ५.

विशेषार्थ :-

वीतराग = राग-द्वेष रहित महापुरुष.

गुरुजन = माता, पिता, विद्यागुरु, धर्मगुरु, वृद्ध आदि हितेच्छु.

निदान = धर्म क्रिया के फल के रूप में सांसारिक सुख आदि का संकल्प करना.

तीन प्रकार के निदान :-

१. **इहलोक निदान-** इसी भव में सौभाग्य, राज्य, बल, सत्ता, रूप आदि के लिये निदान करना.
२. **परलोक निदान-** अगले भव में राजा, चक्रवर्ती, देव, **इंद्र** आदि के रूप में उत्पन्न होने के लिये निदान करना.
३. **काम भोग निदान-** काम भोग के लिये निदान करना.

teachings, even then let me have dedicated service of your revered feet throughout the cycles of birth and rebirths. .... 3.

Oh master! let me obtain the destruction of sufferings, annihilation of **karma**s, ecstatic death and attainment of **bodhi** by making obeisance to you. .... 4.

Jainism, the most auspicious amongst all auspices, the supreme cause of all prosperity, the best among all religions is victorious. .... 5.

Specific meaning :-

vītarāga = Great man devoid of all attachments and hatred.

gurujana [elders] = Well-wishers like mother, father, teacher, preceptor, elder.

nidāna = To determine worldly pleasures etc. as a result of performance of religious rites.

Three types of nidāna :-

1. **iha loka nidāna-** To determine for fortune, kingdom, strength, power, charming appearance etc. in this life itself.
2. **paraloka nidāna-** To determine to have rebirth as a king, emperor, god, indra etc. in next life.
3. **kāma bhoga nidāna-** To determine for sexual pleasures.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाधि मरण = शांति पूर्वक मृत्यु / मृत्यु के समय सर्व सांसारिक वासनाओं का त्याग करना, पाप कार्यों की निंदा करना, सर्व जीवों से क्षमापना करना, शुभ भावनाओं में **श्री अरिहंत** आदि का शरण स्वीकार करना, **नमस्कार महामंत्र** का स्मरण करना एवं **अनशन** व्रत स्वीकार कर आत्मा में निर्मल भाव रखना.

वैराग्य = संसार के भोग-विलासों को निःसार समझ कर आत्माभिमुख होकर जीवन सुधार या **चारित्र** ग्रहण के लिये उद्यम करना.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** द्वारा प्रभु से आत्म कल्याण के लिये निर्दोष एवं उत्तम प्रार्थनायें की गयी हैं.

samādhi maraṇa [ecstatic death] = Peaceful death / To abandon all worldly desires at the time of death, to censure all sinful deeds, to beg pardon from all living beings, to seek shelter [protection] of **śrī arihanta** etc. with good thoughts, to recite **navakāra mahāmantra** constantly and to keep the soul in sacred thoughts accepting the vow of **anaśana** [to fast giving up all types of nourishment with food, drinks and medicines].

vairāgya = To make efforts for ennobling the life or to accept **cāritra** [give up worldly life] becoming engrossed in spiritual uplift considering all worldly pleasures to be meaningless.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, the flawless and superior prayers have been done with the lord for spiritual benefits.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. अरिहंत-चेइयाणं सूत्र

अरिहंत-चेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं. ....१.
वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए,
सम्माण-वत्तिआए, बोहि-लाभ-वत्तिआए,
निरुवसग्ग-वत्तिआए. ....२.
सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए
वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं. ....३.
अन्नत्थ... [सूत्र-७]. ....४.

शब्दार्थ :-

१.**अरिहंत-चेइयाणं** = **अरिहंत भगवान** के चैत्यों की [आराधना के लिये]
अरिहंत = **अरिहंत भगवान** के, **चेइयाणं** = चैत्यों की
करेमि काउस्सग्गं = मैं **कायोत्सर्ग** करना चाहता हूँ
करेमि = मैं करना चाहता हूँ, **काउस्सग्गं** = **कायोत्सर्ग**
२.**वंदण-वत्तिआए** = वंदन करने के निमित्त से

19. arihanta-ceiyāṇam sūtra

arihanta-ceiyāṇam, karemi kāussaggam. .... .1.
vandaṇa-vattiāe, pūaṇa-vattiāe, sakkāra-vattiāe,
sammāṇa-vattiāe, bohi-lābha-vattiāe,
niruvasagga-vattiāe.. .2.
saddhāe, mehāe, dhiīe, dhāraṇāe, aṇuppehāe
vaḍḍhamāṇīe, ṭhāmi kāussaggam.................................. .3.
annattha... [sūtra-7]. .... .4.

Literal meaning :–

1.**arihanta-ceiyāṇam** = [for the adoration] of idols of **arihanta bhagavāna**
arihanta = of **arihanta bhagavāna**, **ceiyāṇam** = of idols
karemi kāussaggam = i wish to perform **kāyotsarga**
karemi = i wish to perform, **kāussaggam** = **kāyotsarga**
2.**vandaṇa-vattiāe** = in order to perform obeisance

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदण = वंदन करने के, **वत्तिआए** = निमित्त से	**vandaṇa** = to perform obeisance, **vattiāe** = in order
पूअण-वत्तिआए = पूजन करने के निमित्त से	**pūaṇa-vattiāe** = in order to worship
पूअण = पूजन करने के,	**pūaṇa** = to worship
सक्कार-वत्तिआए = सत्कार करने के निमित्त से	**sakkāra-vattiāe** = in order to greet
सक्कार = सत्कार करने के	**sakkāra** = to greet
सम्माण-वत्तिआए = सन्मान करने के निमित्त से	**sammāṇa-vattiāe** = in order to offer respects
सम्माण = सन्मान करने के,	**sammāṇa** = to offer respects
बोहि-लाभ-वत्तिआए = **बोधि** लाभ के निमित्त से	**bohi-lābha-vattiāe** = in order to attain **bodhi**
बोहि = **बोधि**, **लाभ** = लाभ के,	**bohi** = **bodhi**, **lābha** = to attain
निरुवसग्ग-वत्तिआए = निरुपसर्ग स्थिति [मोक्ष] प्राप्त करने के निमत्त से	**niruvasagga-vattiāe** = in order to attain trouble free state [salvation]
निरुवसग्ग = निरुपसर्ग स्थिति प्राप्त करने के	**niruvasagga** = to attain trouble free state,
३.सद्धाए = श्रद्धा / विश्वास से	**3.saddhāe** = with faith
मेहाए = मेधा / बुद्धि से	**mehāe** = with intellect
धिईए = धृति से / चित्त की स्वस्थता / मन की एकाग्रता से	**dhiie** = with peaceful mind / concentration of mind
धारणाए = धारणा से / अविस्मृति से	**dhāraṇāe** = with retention / without forgetting
अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए = वृद्धि पाती हुई अनुप्रेक्षा / चिंतन से	**aṇuppehāe vaḍḍhamāṇie** = with increasing thoughts / concentration [by thinking again and again]
अणुप्पेहाए = अनुप्रेक्षा से, **वड्ढमाणीए** = वृद्धि पाती हुई	**aṇuppehāe** = with thoughts, **vaḍḍhamāṇie** = increasing

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठामि काउस्सग्गं = मैं **कायोत्सर्ग** करता हूँ
ठामि = मैं करता हूँ, **काउस्सग्गं = कायोत्सर्ग**

गाथार्थ :-

अरिहंत भगवान की प्रतिमाओं की आराधना के लिये मैं **कायोत्सर्ग** करना चाहता हूँ. .... १.
वंदन करने के निमित्त से, पूजन करने के निमित्त से, सत्कार करने के निमित्त से, सन्मान करने के निमित्त से, **बोधि** लाभ के निमित्त से, मोक्ष प्राप्त करने के निमित्त से,... .... २.
...श्रद्धा से, बुद्धि से, धृति से, धारणा से और बढ़ती हुई अनुप्रेक्षा से मैं **कायोत्सर्ग** करता हूँ. .... ३.

विशेषार्थ :-

तीन प्रकार की पूजा :-

१. **अंग पूजा :-** जल, चंदन, पुष्प आदि से **अरिहंत भगवान** के अंगों की पूजा करना.
२. **अग्र पूजा :- अक्षत** [चावल], फल, **नैवेद्य** [मिश्री, मिठाई आदि], धूप, दीप आदि से **अरिहंत भगवान** के समक्ष पूजा करना.

ṭhāmi kāussaggam = i perform the **kāyotsarga**
ṭhāmi = i perform, **kāussaggam** = the **kāyotsarga**

Stanzaic meaning :-

I wish to perform the **kāyotsarga** for the adoration of idols of **arihanta bhagavāna**. .... 1.
[I perform the **kāyotsarga**...stanza 3] in order to obeisance, in order to worship, in order to greet, in order to offer respects, in order to attain **bodhi** [right faith], in order to attain salvation,... .... 2.
...with faith, with intellect, with a peaceful mind, without forgetting and with increasing thoughts. .... 3.

Specific meaning :-

Three types of worship :-

1. **aṅga pūjā [worship of the body] :-** To worship the body of **arihanta bhagavāna** with water, sandal, flower etc.
2. **agra pūjā [worship in front of the body] :-** To worship with **akṣata** [rice], fruits, **naivedya** [sugar candy, sweets etc.], incense, lamp etc. before **arihanta bhagavāna**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. **भाव पूजा :- अरिहंत भगवान** की स्तुति, प्रार्थना, गुणगान, ध्यान आदि करना.

[इस **सूत्र** में **पूजन** शब्द का उपयोग **भाव पूजा** के लिए किया गया है]

चैत्य = **जिन** मंदिर या **जिन** प्रतिमा.

बोधि = **अरिहंत** प्रणीत **धर्म.**

निरुपसर्ग = जन्म-जरा-मृत्यु के उपद्रव से रहित.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** में **जिन** प्रतिमाओं की आराधना के लिये **काउस्सग्ग** के समय की भावनाओं का वर्णन है.

3. **bhāva pūjā [devotional worship] :–** To worship **arihanta bhagavāna** with eulogy, prayer, panegyric [praise of virtues], meditation etc.

[In this **sūtra**, the word **pūjana** (worship) is used for **bhāva pūjā**.]

caitya = **jina** temple or **jina** idol.

bodhi = **dharma** revealed by the **arihanta**.

nirupasarga = Free from the troubles of birth, old age and death.

Introduction of the sūtra :–

In this **sūtra**, there is a description of the emotions during the **kāussagga** for adoration of **jina** idols.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. कल्लाण-कंदं स्तुति

कल्लाण-कंदं पढमं जिणिंदं,
संतिं तओ नेमि-जिणं मुणिंदं.
पासं पयासं सुगुणिक्क-ठाणं,
भत्तीइ वंदे सिरि-वद्धमाणं. .१.
अपार-संसार-समुद्द-पारं, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्क-सारं.
सव्वे जिणिंदा सुर-विंद-वंदा,
कल्लाण-वल्लीण विसाल-कंदा. .२.
निव्वाण-मग्गे वर-जाण-कप्पं, पणासिया-सेस-कुवाइ-दप्पं.
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं,
नमामि निच्चं तिजग-प्पहाणं. .३.
कुंदिंदु-गोक्खीर-तुसार-वन्ना, सरोज-हत्था कमले निसन्ना.
वाएसिरी पुत्थय-वग्ग-हत्था,
सुहाय सा अम्ह सया पसत्था. .४.

20. kallāṇa-kandam stuti

kallāṇa-kandam padhamam jiṇindam,
santim tao nemi-jiṇam muṇindam.
pāsam payāsam suguṇikka-ṭhāṇam,
bhattīi vande siri-vaddhamāṇam. .1.
apāra-sansāra-samudda-pāram, pattā sivam dintu suikka-sāram.
savve jiṇindā sura-vinda-vandā,
kallāṇa-vallīṇa visāla-kandā. .2.
nivvāṇa-magge vara-jāṇa-kappam, paṇāsiyā-sesa-kuvāi-dappam.
mayam jiṇāṇam saraṇam buhāṇam,
namāmi niccam tijaga-ppahāṇam. .3.
kundindu-gokkhīra-tusāra-vannā, saroja-hatthā kamale nisannā.
vāesirī putthaya-vagga-hatthā,
suhāya sā amha sayā pasatthā. .4.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दार्थ :-

१.कल्लाण-कंदं = कल्याण के मूल समान
कल्लाण = कल्याण के, **कंदं** = मूल समान
पढमं जिणिंदं = प्रथम **जिनेश्वर [श्री ऋषभदेव]** को
पढमं = प्रथम, **जिणिंदं** = **जिनेश्वर** को
संतिं तओ = **श्री शांतिनाथ** को तथा
संतिं = **श्री शांतिनाथ** को, **तओ** = तथा
नेमि-जिणं मुणिंदं = **मुनियों** के स्वामी **[तीर्थंकर] श्री नेमिनाथ जिनेश्वर** को
नेमि = **श्री नेमिनाथ**, **जिणं** = **जिनेश्वर** को, **मुणिंदं** = **मुनियों** के स्वामी
पासं पयासं सुगुणिक्क-ठाणं = प्रकाश स्वरूप एवं सद्‌गुणों के स्थान रूप **श्री पार्श्वनाथ** को
पासं = **श्री पार्श्वनाथ** को, **पयासं** = प्रकाश स्वरूप, **सुगुणिक्क** = सद्‌गुणों के, **ठाणं** = स्थानरूप
भत्तीइ वंदे सिरि-वद्धमाणं = **श्री वर्धमान [महावीर] स्वामी** को मैं भक्ति पूर्वक वंदन करता हूँ
भत्तीइ = भक्ति पूर्वक, **वंदे** = मैं वंदन करता हूँ, **सिरि-वद्धमाणं**

Literal meaning :-

1.kallāṇa-kandam = like the source of prosperity
kallāṇa = of prosperity, **kandam** = like the source
paḍhamam jiṇindam = to the first **jineśvara [śrī ṛṣabhadeva]**
paḍhamam = first, **jiṇindam** = to the **jineśvara**
santim tao = to **śrī śāntinātha** and
santim = to **śrī śāntinātha**, **tao** = and
nemi-jiṇam muṇindam = to **śrī neminātha jineśvara**, the lord of **munis [tīrthaṅkara]**
nemi = to **śrī neminātha**, **jiṇam** = **jineśvara**, **muṇindam** = the lord of **munis**
pāsam payāsam suguṇikka-ṭhāṇam = to **śrī pārśvanātha** like a form of illumination and an abode of noble virtues
pāsam = to **śrī pārśvanātha**, **payāsam** = like a form of illumination, **suguṇikka** = of noble virtues, **ṭhāṇam** = an abode
bhattīi vande siri-vaddhamāṇam = i obeisance devotionally to **śrī vardhamāna [mahāvīra] svāmī**
bhattīi = devotionally, **vande** = i obeisance, **siri-vaddhamāṇam** = to **śrī**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

= **श्री वर्धमान स्वामी** को

२.अपार-संसार-समुद्द-पारं पत्ता = पार बिना के संसार समुद्र के किनारे को प्राप्त किये हुए

अपार = पार बिना के, **संसार** = संसार, **समुद्द** = समुद्र के, **पारं** = किनारे को, **पत्ता** = प्राप्त किये हुए

सिवं दिंतु सुइक्क-सारं = शास्त्र के सार रूप शिव-सुख [मोक्ष] को प्रदान करें

सिवं = शिव-सुख को, **दिंतु** = प्रदान करें, **सुइक्क** = शास्त्र के, **सारं** = सार रूप

सव्वे जिणिंदा सुर-विंद-वंदा = देव समूह से वंदित सर्व **जिनेश्वर**

सव्वे = सर्व, **जिणिंदा** = **जिनेश्वर**, **सुर** = देव, **विंद** = समूह से, **वंदा** = वंदित

कल्लाण-वल्लीण विसाल-कंदा = कल्याण रूपी लता के विशाल मूल समान

कल्लाण = कल्याण रूपी, **वल्लीण** = लता के, **विसाल** = विशाल, **कंदा** = मूल समान

३.निव्वाण-मग्गे वर-जाण कप्पं = निर्वाण [मोक्ष] मार्ग में श्रेष्ठ वाहन

vardhamāna svāmī

2.apāra-sansāra-samudda-pāram pattā = having crossed the banks of endless ocean of world / life [to overcome the cycle of birth and death]

apāra = of endless, **sansāra** = of world, **samudda** = ocean, **pāram** = the banks, **pattā** = having crossed

sivam dintu suikka-sāram = bestow the essence of scriptures in the form of pleasures of salvation

sivam = pleasures of salvation, **dintu** = bestow, **suikka** = of scriptures, **sāram** = the essence in the form of

savve jiṇindā sura-vinda-vandā = all **jineśvaras** obeisanced by the assembly of heavenly deities

savve = all, **jiṇindā** = **jineśvaras**, **sura** = heavenly deities, **vinda** = by the assembly of, **vandā** = obeisanced

kallāṇa-vallīṇa visāla-kandā = like the vast root of prosperity in the from of creepers

kallāṇa = prosperity in the from of, **vallīṇa** = of creepers, **visāla** = vast, **kandā** = like the root

3.nivvāṇa-magge vara-jāṇa kappam = like the best vehicle on the path of

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समान

निव्वाण = निर्वाण, **मग्गे** = मार्ग में, **वर** = श्रेष्ठ, **जाण** = वाहन, **कप्पं** = समान

पणासिया-सेस-कुवाइ-दप्पं = कुवादियों के अभिमान को पूर्णतया नष्ट करने वाले

पणासिया = नष्ट करने वाले, **सेस** = पूर्णतया, **कुवाइ** = कुवादियों के, **दप्पं** = अभिमान को

मयं जिणाणं = **जिनेश्वर** द्वारा प्ररूपित मत को

मयं = मत को, **जिणाणं** = **जिनेश्वर** द्वारा प्ररूपित

सरणं बुहाणं = विद्वानों को शरण रूप

सरणं = शरण रूप, **बुहाणं** = विद्वानों को

नमामि निच्चं = मैं नित्य नमस्कार करता हूं

नमामि = मैं नमस्कार करता हूं, **निच्चं** = नित्य

तिजग-प्पहाणं = तीनों लोक में श्रेष्ठ

ति = तीनों, **जग** = लोक में, **प्पहाणं** = श्रेष्ठ

४.कुंदिंदु-गोक्खीर-तुसार-वन्ना = मचकुंद पुष्प, चंद्रमा, गाय के दूध और हिम जैसे [श्वेत] वर्ण वाली

कुंद = मचकुंद पुष्प, **इंदु** = चंद्रमा, **गो** = गायका, **क्खीर** =

salvation

nivvāṇa = salvation, **magge** = on the path of, **vara** = the best, **jāṇa** = vehicle, **kappam** = like

paṇāsiyā-sesa-kuvāi-dappam = annihilator of pride of misguiding scholars [ill-discussers] completely

paṇāsiyā = annihilator, **sesa** = completely, **kuvāi** = of misguiding scholars, **dappam** = of pride

mayam jiṇāṇam = to the principles established by the **jineśvaras**

mayam = to the principles, **jiṇāṇam** = established by the **jineśvaras**

saraṇam buhāṇam = like the shelter for scholars

saraṇam = like the shelter, **buhāṇam** = for scholars

namāmi niccam = i always obeisance

namāmi = i obeisance, **niccam** = always

tijaga-ppahāṇam = supreme in the three worlds

ti = in the three, **jaga** = worlds, **ppahāṇam** = supreme

4.kundindu-gokkhīra-tusāra-vannā = having [white] colour like jasmine flower, full moon, cow's milk and ice

kunda = like jasmine flower, **indu** = full moon, **go** = cow's, **kkhīra** = milk,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूध, **तुसार** = हिम जैसे, **वन्ना** = श्वेत वर्ण वाली
सरोज-हत्था = [एक] हाथ में कमल को धारण करने वाली
सरोज = कमल को [धारण करने वाली], **हत्था** = हाथ में
कमले निसन्ना = कमल पर बैठी हुई
कमले = कमल पर, **निसन्ना** = बैठी हुई
वाएसिरी = **वागीश्वरी [सरस्वती] देवी** [विद्या देवी]
पुत्थय-वग्ग-हत्था = [दूसरे] हाथ में पुस्तकों के समूह को [धारण करने वाली]
पुत्थय = पुस्तकों के, **वग्ग** = समूह को
सुहाय = सुख देनेवाली [हो]
सा = वह
अम्ह = हमें
सया = सदा
पसत्था = प्रशस्ता [प्रशंसित]

गाथार्थ :-

कल्याण के मूल समान प्रथम **जिनेश्वर [श्री ऋषभदेव], श्री शांतिनाथ, मुनियों** के स्वामी **श्री नेमिनाथ जिनेश्वर**, प्रकाश स्वरूप और सद्गुणों

tusāra = ice, **vannā** = having colour
saroja-hatthā = holding lotus flower in [one] hand
saroja = holding lotus flower, **hatthā** = in hand
kamale nisannā = sitting on lotus flower
kamale = on lotus flower, **nisannā** = sitting
vāesirī = **vāgīśvarī [sarasvatī] devī** [goddess of learning]
putthaya-vagga-hatthā = [holding] a collection of books in [other] hand
putthaya = of books, **vagga** = collection
suhāya = be the bestower of happiness
sā = that
amha = upon us
sayā = always
pasatthā = praised

Stanzaic meaning :-

I obeisance devotionally to the first **jineśvara [śrī ṛṣabha deva]** like the source of prosperity, to **śrī śāntinātha**, to **śrī neminātha jineśvara**, the lord of **munis**,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के स्थानरूप **श्री पार्श्वनाथ** एवं **श्री महावीर स्वामी** को मैं भक्ति पूर्वक वंदन करता हूँ. .... १.

पार विना के संसार समुद्र के किनारे को प्राप्त किये हुए, देव समूह से वंदित और कल्याण रूपी लता के विशाल कंद समान सर्व **जिनेश्वर** शास्त्र का साररूप शिव-सुख [हमें] प्रदान करें. .... २.

निर्वाण मार्ग में श्रेष्ठ वाहन समान, कुवादियों के अभिमान को पूर्णतया नष्ट करने वाले, विद्वानों के शरण रूप और तीनों लोक में श्रेष्ठ **जिनेश्वर** द्वारा प्ररूपित मत को मैं नित्य नमस्कार करता हूँ. .... ३.

मचकुंद पुष्प, चंद्रमा, गाय के दूध और हिम जैसे श्वेत वर्णवाली, [एक] हाथ में कमल को धारण करने वाली और कमल पर बैठी हुई तथा [दूसरे] हाथ में पुस्तकों के समूह को धारण करने वाली वह प्रशस्ता **सरस्वती** देवी हमें सदा सुख देने वाली हो. .... ४.

विशेषार्थ :-

कल्लाण-कंदं = आत्मोद्धार करने में मुख्य कारण.
अपार = अति दुर्गम / कठिनता से पार पाया जाने वाला.
श्रुत = सुनने योग्य या सुना जा सकने वाला / सुनकर प्राप्त किया हुआ

to **śrī pārśvanātha** like a form of illumination and an abode of noble virtues and to **śrī mahāvīra svāmī**. .... 1.

All the **jineśvaras** having crossed the banks of endless ocean of life, obeisanced by the assembly of heavenly deities and like the vast root of origin of prosperity in the form of creepers shall bestow the essence of all scriptures in the form of pleasures of salvation. .... 2.

I always obeisance to the principles established by the **jineśvaras** like the best vehicle on the path of salvation, annihilator of pride of misguiding discussers completely, like the shelter to scholars and supreme in the three worlds. ... 3.

That praised goddess **sarasvatī** having white colour like that of jasmine flower, full moon, cow's milk and ice; holding lotus flower in [one] hand, sitting on the lotus flower and holding a collection of books in [other] hand always be the bestower of happiness upon us. .... 4.

Specific meaning :-

kallāṇa-kadaṃ = The chief mean to attain spiritual progress / self elevation.
apāra = Very inaccessible / that which can be crossed with great difficulty.
śruta = Worth listening to or that which can be heard / knowledge attained by

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञान
निर्वाण = मोक्ष / सर्व **कर्मों** से मुक्ति.
तीन लोक = स्वर्ग, मृत्यु [मनुष्य] और पाताल लोक.

स्तुति = गुणगान
१. **चैत्य-वंदन** की क्रिया में **कायोत्सर्ग** के बाद बोला जाने वाला एक श्लोक प्रमाण गुण-कीर्तनमय काव्य.
२. **देव-वंदन** की क्रिया में एक-एक श्लोक से चार बार बोले जाने वाला गुण-कीर्तनमय काव्य.
३. एक-एक श्लोक से किया जाने वाला गुण-कीर्तनमय काव्य.
स्तवन = **चैत्य-वंदन** की क्रिया के मध्य भाग में बोला जाने वाला बहु श्लोक प्रमाण गुण-कीर्तनमय काव्य

सूत्र परिचय :-

इस स्तुति की पहली गाथा में **श्री ऋषभदेव, शांतिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ** और **महावीर स्वामी** की, दूसरी गाथा में सर्व **जिनेश्वरों** की, तीसरी गाथा में **जिन आगम** की और चौथी गाथा में **श्रुत देवता** की स्तुति है.

hearing.
nirvāṇa = Salvation / freedom from the bondage of all **karmas**.
tīna loka = Three worlds / world of heaven, world of death [human beings] and under world.
stuti = Eulogy
1. A poetic eulogy of one stanza [couplet] spoken after **kāyotsarga** in the rite of **caitya-vandana.**
2. Poetic eulogy of each stanza uttered four times in the rite of **deva-vandana**.
3. Poetic eulogy of each stanza uttered one by one.
stavana = An eulogy of many stanzas spoken in the middle of the rite of **caitya-vandana**.

Introduction of the sūtra :-

There is a glorification of **śrī ṛṣabhadeva, śāntinātha, neminātha, pārśvanātha** and **mahāvīra svāmī** in the first stanza, of all the **jineśvaras** in the second stanza, of the **jina āgama** in the third stanza, and of the **śruta devatā** [goddess of scriptures] in the fourth stanza of this eulogy.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. संसार-दावा-नल स्तुति

संसार-दावा-नल-दाह-नीरं, संमोह-धूली-हरणे समीरं.
माया-रसा-दारण-सार-सीरं,
नमामि वीरं गिरि-सार-धीरं..१.
भावा-वनाम-सुर-दानव-मानवेन,
चूला-विलोल-कमला-वलि-मालितानि.
संपूरिता-भिनत-लोक-समीहितानि,
कामं नमामि जिनराज-पदानि तानि..२.
बोधागाधं सुपद-पदवी-नीर-पूराभिरामं,
जीवा-हिंसा-विरल-लहरी-संगमा-गाह-देहं.
चूला-वेलं गुरु-गम-मणी-संकुलं दूर-पारं,
सारं-वीरा-गम-जल-निधिं सादरं साधु सेवे..३.
आमूला-लोल-धूली-बहुल-परि-मला-लीढ-लोलालि-माला-,
झंकारा-राव-सारा-मल-दल-कमला-गार-भूमी-निवासे!.

21. sansāra-dāvā-nala stuti

sansāra-dāvā-nala-dāha-nīram, sammoha-dhūlī-haraṇe samīram.
māyā-rasā-dāraṇa-sāra-sīram,
namāmi vīram giri-sāra-dhīram..1.
bhāvā-vanāma-sura-dānava-mānavena,
cūlā-vilola-kamalā-vali-mālitāni.
sampūritā-bhinata-loka-samīhitāni,
kāmam namāmi jinarāja-padāni tāni..2.
bodhāgādham supada-padavī-nīra-pūrābhirāmam,
jīvā-hinsā-virala-laharī-sangamā-gāha-deham.
cūlā-velam guru-gama-maṇī-sankulam dūra-pāram,
sāram-vīrā-gama-jala-nidhim sādaram sādhu seve..3.
āmūlā-lola-dhūlī-bahula-pari-malā-līḍha-lolāli-mālā-,
jhankārā-rāva-sārā-mala-dala-kamalā-gāra-bhūmī-nivāse!.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छाया-संभार-सारे! वर-कमल-करे! तार-हाराभिरामे!,
वाणी-संदोह-देहे! भव-विरह-वरं देहि मे देवि! सारम्. .४.

शब्दार्थ :-

१. **संसार-दावा-नल-दाह-नीरं** = संसार रूपी दावानल के ताप को शांत करने में जल समान

संसार = संसार रूपी, **दावा-नल** = दावानल के, **दाह** = ताप को, **नीरं** = जल समान

संमोह-धूली-हरणे-समीरं = प्रगाढ मोह रूपी धूल को दूर करने में वायु समान

संमोह = प्रगाढ मोह रूपी, **धूली** = धूल को, **हरणे** = दूर करने में, **समीरं** = वायु समान

माया-रसा-दारण-सार-सीरं = माया रूपी पृथ्वी को चीरने में उत्तम [तीक्ष्ण] हल समान

माया = माया रूपी, **रसा** = पृथ्वी को, **दारण** = चीरने में, **सार** = उत्तम, **सीरं** = हल समान

नममि वीरं = **श्री महावीर स्वामी** को मैं नमस्कार करता हूँ

नममि = मैं नमस्कार करता हूँ, **वीरं** = **श्री महावीर स्वामी** को

chāyā-sambhāra-sāre! vara-kamala-kare! tāra-hārābhirāme!,
vāṇī-sandoha-dehe! bhava-viraha-varam dehi me devi! sāram.4.

Literal meaning :-

1. **sansāra-dāvā-nala-dāha-nīram** = like water in cooling the heat of wide spread forest fire resembling worldly existence

sansāra = worldly existence, **dāvā-nala** = of wide spread forest fire, **dāha** = the heat, **nīram** = like water

sammoha-dhūlī-haraṇe-samīram = like breeze in removing dust resembling the mass of deep ignorance

sammoha = resembling the mass of deep ignorance, **dhūlī** = dust, **haraṇe** = in removing, **samīram** = like breeze [wind]

māyā-rasā-dāraṇa-sāra-sīram = like a best [sharp edged] plough in tearing off the earth resembling the delusions

māyā = resembling the delusions, **rasā** = earth, **dāraṇa** = in tearing off, **sāra** = best, **sīram** = like a plough

namāmi vīram = i obeisance to **śrī mahāvīra svāmī**

namāmi = i obeisance, **vīram** = to **śrī mahāvīra svāmī**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गिरि-सार-धीरं = **मेरु** पर्वत के समान स्थिर

गिरि-सार = **मेरु** पर्वत के समान, **धीरं** = स्थिर

२. **भावा-वनाम-सुर-दानव-मानवेन** = भाव पूर्वक नमन करने वाले **सुरेंद्र**, **दानवेंद्र** और **नरेंद्रों** के [देव, **दानव** और मानवों के **इंद्र**]

भाव = भाव पूर्वक, **अवनाम** = नमन करने वाले, **सुर** = **सुरेंद्र**, **दानव** = **दानवेंद्र**, **मानवेन** = **नरेंद्र**

चूला-विलोल-कमला-वलि-मालितानि = मुकुट में स्थित चपल [डोलती हुई] कमल श्रेणी [हार] से पूजित

चूला = मुकुट में स्थित, **विलोल** = चपल, **कमल** = कमल, **अवलि** = श्रेणी से, **मालितानि** = पूजित

संपूरिता-भिनत-लोक-समीहितानि = नमन करने वाले लोगों का मनोवांछित संपूर्ण करने वाले

संपूरित = संपूर्ण करने वाले, **अभिनत** = नमन करने वाले, **लोक** = लोगों का, **समीहितानि** = मनोवांछित

कामं नमामि जिनराज-पदानि तानि = **जिनेश्वरों** के उन चरणों में मैं श्रद्धा पूर्वक नमन करता हूं

कामं = श्रद्धा पूर्वक, **नमामि** = मैं नमन करता हूँ, **जिनराज** =

giri-sāra-dhīram = firm like **meru** mountain

giri-sāra = like **meru** mountain, **dhīram** = firm

2. **bhāvā-vanāma-sura-dānava-mānavena** = of **surendras**, **dānavendras** and **narendras** [**indras** of gods, **dānavas** and human beings] bowing devotionaly

bhāva = devotionaly, **avanāma** = bowing, **sura** = of **surendras**, **dānava** = **dānavendras**, **mānavena** = **narendras**

cūlā-vilola-kamalā-vali-mālitāni = worshipped by the oscillating garlands of lotus flower present in the crowns

cūlā = present in the crowns, **vilola** = the oscillating, **kamala** = lotus flower, **avali** = garlands of, **mālitāni** = worshipped by

sampūritā-bhinata-loka-samīhitāni = fulfillers of the wishes of people bowing down

sampūrita = fulfillers of, **abhinata** = bowing down, **loka** = of people, **samīhitāni** = the wishes

kāmam namāmi jinarāja-padāni tāni = i obeisance faithfully in those feet of **jineśvaras**

kāmam = faithfully, **jinarāja** = of **jineśvaras**, **padāni** = in feet, **tāni** = those

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिनेश्वरों के, **पदानि** = चरणों में, **तानि** = उन

३. **बोधागाधं** = ज्ञान से गंभीर

बोध = ज्ञान से, **अगाधं** = गंभीर

सुपद-पदवी-नीर-पूराभिरामं = सुंदर पद रचना रूपी जल समूह से मनोहर

सुपद = सुंदर पद, **पदवी** = रचना रूपी, **नीर** = जल, **पूर** = समूह से, **अभिरामं** = मनोहर

जीवा-हिंसा-विरल-लहरी-संगमा-गाह-देहं = जीवों के प्रति अहिंसा की निरंतर लहरों के संगम से अति गहन देह वाले

जीव = जीवों के प्रति, **अहिंसा** = अहिंसा की, **अविरल** = निरंतर, **लहरी** = लहरों के, **संगम** = संगम से, **अगाह** = अति गहन, **देहं** = देह वाले

चूला-वेलं = चूलिका [शास्त्र परिशिष्ट] रूप भरती [ज्वार] वाले

चूला = चूलिका रूप, **वेलं** = भरती वाले

गुरु-गम-मणी-संकुलं = उत्तम आलापक [लगभग समान पाठ] रूपी रत्नो से व्याप्त

गुरु = उत्तम, **गम** = आलापक रूपी, **मणी** = रत्नो से, **संकुलं** = व्याप्त

3. **bodhāgādham** = profound by deep knowledge

bodha = by deep knowledge, **agādham** = profound

supada-padavī-nīra-pūrābhirāmam = fascinating by marvellous composition of phrases like a great mass of water

supada = by marvellous phrases, **padavī** = composition of, **nīra** = water, **pūra** = a great mass of, **abhirāmam** = fascinating

jīvā-hinsā-virala-laharī-saṅgamā-gāha-deham = of impenetrable body with confluence of continuous waves of non-injury towards all living beings

jīva = towards all living beings, **ahinsā** = of non-injury, **avirala** = continuous, **laharī** = waves of, **saṅgama** = confluence of, **agāha** = of impenetrable, **deham** = body with

cūlā-velam = having tide resembling appendix of scriptures

cūlā = resembling appendix of scriptures, **velam** = having tide

guru-gama-maṇī-saṅkulam = full of best gems resembling identical lessons

guru = best, **gama** = resembling identical lessons, **maṇī** = gems, **saṅkulam** = full of

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूर-पारं = कठिनता से पार पाये जाने वाले **दूर** = कठिनता से, **पारं** = पार पाये जाने वाले	**dūra-pāram** = crossed over with great difficulty **dūra** = with great difficulty, **pāram** = crossed over
सारं वीरागम-जल-निधिं = **श्री महावीर स्वामी** के श्रेष्ठ आगम रूपी समुद्र की **सारं** = श्रेष्ठ, **वीर** = **श्री महावीर स्वामी** के, **आगम** = आगर रूपी, **जल-निधिं** = समुद्र की	**sāram virāgama-jala-nidhim** = the best scriptures of **śrī mahāvīra svāmī** like ocean **sāram** = the best, **vīra** = of **śrī mahāvīra svāmī**, **āgama** = scriptures, **jala-nidhim** = like ocean
सादरं साधु सेवे = मैं आदर पूर्वक अच्छी तरह से उपासना करता हूं **सादरं** = आदर पूर्वक, **साधु** = अच्छी तरह से, **सेवे** = मैं उपासना करता हूं	**sādaram sādhu seve** = i adore in the best manner with great reverence **sādaram** = with great reverence, **sādhu** = in the best manner, **seve** = i adore
४. **आमूला-लोल-धूली** = मूल पर्यंत कुछ डोलने से [गिरे हुए] पराग की **आमूल** = मूल पर्यंत, **अलोल** = कुछ डोलने से, **धूली** = पराग की	4. **āmūlā-lola-dhūlī** = of the pollens [dropping] due to a little swinging upto the root **āmūla** = upto the root, **alola** = due to a little swinging, **dhūlī** = of the pollens [dropping]
बहुल-परि-मला-लीढ = अधिक सुगंध में आसक्त **बहुल** = अधिक, **परि-मल** = सुगंध से, **अलीढ** = आसक्त	**bahula-pari-malā-līḍha** = fascinated in excessive fragrance **bahula** = excessive, **pari-mala** = in fragrance, **alīḍha** = fascinated
लोलालि-माला = चपल भ्रमर समूह के **लोल** = चपल, **अलि** = भ्रमर, **माला** = समूह के	**lolāli-mālā** = of the cluster of restless bees **lola** = of restless, **ali** = bees, **mālā** = of the cluster
झंकारा-राव = झंकार शब्द से युक्त	**jhaṅkārā-rāva** = having jingling sound

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झंकार = झंकार शब्द से, **आराव** = युक्त
सारा-मल-दल-कमला-गार-भूमी-निवासे! = उत्तम निर्मल पंखुड़ी वाले कमल गृह की भूमि पर वास करने वाली!
सार = उत्तम, **अमल** = निर्मल, **दल** = पंखुड़ी वाले, **कमल** = कमल, **अगार** = गृह की, **भूमी** = भूमि पर, **निवासे** = वास करने वाली!
छाया-संभार-सारे! = कांति पुंज से रमणीय!
छाया = कांति, **संभार** = पुंज से, **सारे** = रमणीय!
वर-कमल-करे! = सुंदर कमल से युक्त हाथ वाली
वर = सुंदर, **कमल** = कमल से युक्त, **करे** = हाथ वाली
तार-हाराभिरामे! = देदीप्यमान हार से सुशोभित!
तार = देदीप्यमान, **हार** = हार से, **अभिरामे** = सुशोभित
वाणी-संदोह-देहे! = [**तीर्थंकरों** की] वाणी के समूह रूप देह वाली
वाणी = वाणी, **संदोह** = समूह रूप, **देहे** = देह वाली
भव-विरह-वरं देहि मे देवि! सारं = हे **श्रुत देवी!** मुझे [**श्रुतज्ञान** का] सार रूप संसार से विरह [मोक्ष] का श्रेष्ठ वरदान दो

jhankāra = jingling sound, **ārāva** = having
sārā-mala-dala-kamalā-gāra-bhūmī-nivāse! = residing on the floor of house of lotus with the best soft petals!
sāra = the best, **amala** = soft, **dala** = petals, **kamala** = of lotus, **agāra** = of house, **bhūmī** = on the floor, **nivāse** = residing

chāyā-sambhāra-sāre! = charming with the mass of brightness!
chāyā = of brightness, **sambhāra** = with the mass, **sāre** = charming
vara-kamala-kare! = having hands holding beautiful lotus flowers
vara = beautiful, **kamala** = holding lotus flowers, **kare** = having hands
tāra-hārābhirāme! = charming with lustrous garland
tāra = lustrous, **hāra** = with garland, **abhirāme** = charming
vāṇī-sandoha-dehe! = having a body like the collection of discourses [of **tīrthankaras**]
vāṇī = discourses, **sandoha** = like the collection of, **dehe** = having a body
bhava-viraha-varam dehi me devi! sāram = oh **śruta devī**! [goddess of learning] bestow me the great boon of essence [of **śruta jñāna**] in the form of detachment from worldly affairs [salvation]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भव = संसार, **विरह** = विरह का, **वरं** = श्रेष्ठ वरदान, **देहि** = दो, **मे** = मुझे, **देवी** = हे **श्रुत देवी**, **सारं** = सार रूप

bhava = worldly affairs, **viraha** = detachment from, **varam** = the great boon of, **dehi** = bestow, **me** = me, **devi** = oh **śruta devī**!, **sāram** = essence in the form of

गाथार्थ :-

संसार रूपी दावानल के ताप को शांत करने में जल समान, प्रगाढ मोह रूपी धूल को दूर करने में वायु समान, माया रूपी पृथ्वी को चीरने में तीक्ष्ण हल समान और **मेरु** पर्वत समान स्थिर **श्री महावीर स्वामी** को मैं वंदन करता हूँ. .... १.

भाव पूर्वक नमन करने वाले **सुरेंद्र, दानवेंद्र** और **नरेंद्रों** के मुकुट में स्थित चपल कमल श्रेणियों से पूजित और नमन करने वाले लोगों के मनोवांछित संपूर्ण करने वाले **जिनेश्वरों** के उन चरणों में मैं श्रद्धा पूर्वक नमन करता हूँ. .... २.

ज्ञान से गंभीर, सुंदर पद रचना रूप जल समूह से मनोहर, जीवों के प्रति अहिंसा की निरंतर लहरों के संगम से अति गहन देह वाले, चूलिका रूप भरती वाले, उत्तम आलापक रूपी रत्नों से व्याप्त और अति कठिनता पूर्वक पार पाये जाने वाले **श्री महावीर स्वामी** के आगम रूपी

Stanzaic meaning :-

I obeisance to **śrī mahāvīra svāmī** like water in cooling the heat of wide-spread forest fire resembling the worldly life, like wind in removing the dust resembling the mass of deep ignorance, like a best plough in tearing of the earth resembling the delusions and steady like **meru** mountain. .... 1.

I obeisance faithfully in those feet of **jineśvaras** worshipped by the oscillating rows of lotus flowers present in the crowns of **surendras**, **dānavendras** and **narendras** bowing down devotionally and the fulfillers of wishes of people bowing down. .... 2.

I adore in the best manner with great reverence the best scriptures of **śrī mahāvīra svāmī** like ocean, profound by knowledge, fascinating by marvellous composition of phrases like a great collection of water, of impenetrable body with the confluence of continuous waves of non-injury against all living beings, having

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुद्र की मैं अच्छी तरह से आदर पूर्वक उपासना करता हूँ. .... ३.

मूल पर्यंत कुछ डोलने से गिरे हुए पराग की अधिक सुगंध में आसक्त चपल भ्रमर समूह के झंकार शब्द से युक्त उत्तम निर्मल पंखुड़ी वाले कमल गृह की भूमि पर वास करने वाली, कांति पुंज से रमणीय, सुंदर कमल से युक्त हाथ वाली, देदीप्यमान हार से सुशोभित और [**तीर्थंकरों** की] वाणी के समूह रूप देहवाली हे **श्रुत देवी!** मुझे [**श्रुत ज्ञान** के] सार रूप मोक्ष का श्रेष्ठ वरदान दो. .... ४.

विशेषार्थ :-

संमोह = प्रगाढ मोह / बुद्धि द्वारा तत्त्व का यथा योग्य निर्णय न करने देने वाला प्रगाढ भाव.

आगम :-

१. आप्त [परम विश्वसनीय पुरुषों के] वचनों का संग्रह.

२. **तीर्थंकर** द्वारा कथित वचनों का **गणधरों** अथवा **पूर्वधरों** द्वारा **सूत्र** रूप संकलित शास्त्र का संग्रह.

tide resembling appendix, full of best gems resembling identical lessons and crossed over with great difficulty. .... 3.

Oh **śruta devī**! residing on the floor of house of lotus with best soft petals having jingling sound of the cluster of restless bees fascinated in excessive fragrance of pollen dropped due to a little swinging upto the root, charming with the mass of brightness, having beautiful lotus flowers in hands, shining with the lustrous garland and having body like the collection of discourses [of the **tīrthaṅkaras**] shall bestow me the great boon of essence [of **śruta jñāna**] in the form of salvation. .... 4.

Specific meaning :-

sammoha = Deep delusions not allowing the intellect to decide truth properly.

āgama :-

1. Collection of absolutely dependable person's words.
2. Scriptures compiled in the form of aphorisms by the **gaṇadharas** or **pūrvadharas** [possessors of the knowledge of **pūrvas**] in the from **sūtras** originating from the words spoken by the **tīrthaṅkaras**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र परिचय :-

श्री हरिभद्रसूरि द्वारा रचित इस **समसंस्कृत-प्राकृत** स्तुति में **श्री महावीर स्वामी**, सर्व **जिनेश्वर, जिन आगम** और **श्रुत देवी** की स्तुति की गयी है.

Introduction of the sūtra :-

Eulogy of **śrī mahāvīra svāmī**, all the **jineśvaras**, **jina āgama** and **śruta devī** [goddess of scriptures] has been done in this even **sanaskṛta-prākṛta** eulogy composed by **śrī haribhadra sūri**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. पुक्खर-वर-दीवड्ढे सूत्र

पुक्खर-वर-दीवड्ढे, धायइ-संडे अ जंबु-दीवे अ.
भरहेरवय-विदेहे, धम्माइ-गरे नमंसामि. ....१.
तम-तिमिर-पडल-विद्धं-सणस्स सुर-गण-नरिंद-महिअस्स.
सीमा-धरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोह जालस्स. ....२.
जाई-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स,
कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहा-वहस्स.
को देव-दाणव-नरिंद-गण-च्चिअस्स,
धम्मस्स सार-मुवलब्भ करे पमायं?..३.
सिद्धे भो! पयओ नमो जिण-मए नंदी सया संजमे,
देवं-नाग-सुवन्न-किन्नर-गण-स्सब्भूअ-भावच्चिए.
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क-मच्चासुरं,
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ..४.
सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तियाए...

22. pukkhara-vara-dīvaḍḍhe sūtra

pukkhara-vara-dīvaḍḍhe, dhāyai-saṇḍe a jambu-dīve a.
bharaheravaya-videhe, dhammāi-gare namamsāmi. .... .1.
tama-timira-paḍala-viddham-saṇassa sura-gaṇa-narinda-mahiassa.
sīmā-dharassa vande, papphoḍia-moha jālassa. .... .2.
jāī-jarā-maraṇa-soga-paṇāsaṇassa,
kallāṇa-pukkhala-visāla-suhā-vahassa.
ko deva-dāṇava-narinda-gaṇa-cciassa,
dhammassa sāra-muvalabbha kare pamāyaṃ?..3.
siddhe bho! payao namo jiṇa-mae nandī sayā sañjame,
devam-nāga-suvanna-kinnara-gaṇa-ssabbhūa-bhāvaccie.
logo jattha paiṭṭhio jagamiṇam telukka-maccāsuram,
dhammo vaḍḍhau sāsao vijayao dhammuttaram vaḍḍhau..4.
suassa bhagavao karemi kāussaggam, vandaṇa-vattiyāe...

Jain Education International | For Private & Personal Use Only | www.jainelibrary.org

[सूत्र-१९.]. ....५.

शब्दार्थ :-

१. **पुक्खर-वर-दीवड्ढे** = अर्ध **पुष्कर-वर** द्वीप में

पुक्खर-वर = **पुष्कर-वर**, **दीव** = द्वीप में, **अड्ढे** = अर्ध

धायइ-संडे अ = और **धातकी** खंड में

धायइ = **धातकी**, **संडे** = खंड में, **अ** = और

जंबु-दीवे अ = और **जंबु** द्वीप में

जंबु = **जंबु**, **दीवे** = द्वीप में

भरहेरवय-विदेहे = **भरत**, **ऐरावत** और **महाविदेह** क्षेत्र में

भरह = **भरत**, **एरवय** = **ऐरावत**, **विदेहे** = **महाविदेह** क्षेत्र में

धम्माइ-गरे नमंसामि = [**श्रुत**] **धर्म** की आदि करने वालों को मैं नमस्कार करता हूँ

धम्म = **धर्म** की, **आइ** = आदि, **गरे** = करने वालों को, **नमंसामि** = मैं नमस्कार करता हूँ

२. **तम-तिमिर-पडल-विद्धं-सणस्स** = अज्ञान रूपी अंधकार के समूह

[sūtra-19.]. ....5.

Literal meaning :-

1. **pukkhara-vara-dīvaḍḍhe** = in half the island of **puṣkara-vara**

pukkhara-vara = **puṣkara-vara**, **dīva** = in the island of, **aḍḍhe** = half

dhāyai-saṇḍe a = and in the continent of **dhātakī**

dhāyai = **dhātakī**, **saṇḍe** = in the continent of, **a** = and

jambu-dīve a = and in the island of **jambu**

jambu = **jambu**, **dīve** = in the island of

bharaheravaya-videhe = in the regions of **bharata**, **airāvata** and **mahāvideha**

bharaha = **bharata**, **eravaya** = **airāvata**, **videhe** = in the regions of **mahāvideha**

dhammāi-gare namaṃsāmi = i obeisance to the beginners of [**śruta**] **dharma**

dhamma = of **dharma**, **āigare** = to the beginners, **namaṃsāmi** = i obeisance

2. **tama-timira-paḍala-viddhaṃ-saṇassa** = annihilator of mass of darkness

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को नाश करने वाले

तम = अज्ञान रूपी, **तिमिर** = अंधकार के, **पडल** = समूह को, **विद्धं** = नाश, **सणस्स** = करने वाले

सुर-गण-नरिंद-महिअस्स = देवों और राजाओं के समूह से पूजित

सुर = देवों, **गण** = समूह से, **नरिंद** = राजाओं के, **महिअस्स** = पूजित

सीमा धरस्स वंदे = मर्यादा धारण करने वाले [**श्रुत धर्म**] को मैं वंदन करता हूँ

सीमा = मर्यादा, **धरस्स** = धारण करने वाले, **वंदे** = मैं वंदन करता हूँ

पप्फोडिअ-मोह-जालस्स = मोह जाल को तोड़ने वाले

पप्फोडिअ = तोड़ने वाले, **मोह** = मोह, **जालस्स** = जाल को

३. **जाई-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स** = जन्म, जरा, मृत्यु और शोक का नाश करने वाले

जाई = जन्म, **जरा** = जरा, **मरण** = मृत्यु, **सोग** = शोक का, **पणासणस्स** = नाश करने वाले

resembling ignorance

tama = resembling ignorance, **timira** = of darkness, **paḍala** = mass, **viddhaṃsaṇassa** = annihilator of

sura-gaṇa-nariṇda-mahiassa = worshipped by the assembly of gods and kings

sura = of gods, **gaṇa** = by the assembly, **nariṇda** = kings, **mahiassa** = worshipped

sīmā-dharassa vaṇde = i obeisance to **[śruta dharma]** the holder of self-restraints / limitations

sīmā = limitations, **dharassa** = to the holder of, **vaṇde** = i obeisance

papphoḍia-moha-jālassa = destroyer of the snare of infatuating delusion

papphoḍia = destroyer of, **moha** = the snare, **jālassa** = of infatuating delusion

3. **jāī-jarā-maraṇa-soga-paṇāsaṇassa** = annihilator of birth, old age, death, and grief

jāī = of birth, **jarā** = old age, **maraṇa** = death, **soga** = grief, **paṇāsaṇassa** = annihilator

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहा-वहस्स = पुष्कल कल्याण और विशाल सुख को देने वाले

कल्लाण = कल्याण, **पुक्खल** = पुष्कल, **विसाल** = विशाल, **सुहा** = सुख को, **वहस्स** = देने वाले

को = कौन

देव-दाणव-नरिंद-गण-च्चिअस्स = **देवेंद्र, दानवेंद्र** और **नरेंद्रों** के समूह से पूजित

देव = **देवेंद्र, दाणव** = **दानवेंद्र, अच्चिअस्स** = पूजित

धम्मस्स सार-मुवलब्भ = **[श्रुत] धर्म** के सार को प्राप्त करके

धम्मस्स = **धर्म** के, **सारं** = सार को, **उवलब्भ** = प्राप्त करके

करे पमायं = प्रमाद करेगा?

करे = करेगा, **पमायं** = प्रमाद

४. सिद्धे भो! पयओ नमो जिण-मए = हे मनुष्यों! सिद्ध [प्रख्यात] **जिन** मत [जैन दर्शन] को मैं आदर पूर्वक नमस्कार करता हूँ

सिद्धे = सिद्ध, **भो** = हे मनुष्यों!, **पयओ** = आदर पूर्वक, **नमो** = नमस्कार करता हूँ, **जिण** = **जिन**, **मए** = मत को

kallāṇa-pukkhala-visāla-suhā-vahassa = granter of great bliss and ever-lasting happiness

kallāṇa = of bliss, **pukkhala** = great, **visāla** = ever-lasting, **suhā** = happiness, **vahassa** = granter

ko = who

deva-dāṇava-narinda-gaṇa-cciassa = worshipped by the assembly of **devendras**, **dānavendras** and **narendras**

deva = of **devendras**, **dāṇava** = **dānavendras**, **acciassa** = worshipped

dhammassa sāra-muvalabbha = having secured the essence of **[śruta] dharma**

dhammassa = **dharma**, **sāram** = the essence of, **uvalabbha** = having secured

kare pamāyam = will be negligent?

kare = will be, **pamāyam** = negligent

4. siddhe bho! payao namo jiṇa-mae = oh wise men! i obeisance respectfully the famous **jina** [jain] doctrines

siddhe = the famous, **bho** = oh wise men, **payao** = respectfully, **namo** = i obeisance, **jiṇa** = **jina**, **mae** = doctrines

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदी सया संजमे = संयम में सदा वृद्धि करने वाला
नंदी = वृद्धि करने वाला, **सया** = सदा, **संजमे** = संयम में

देवं-नाग-सुवन्न-किन्नर-गण-स्सब्भूअ-भावच्चिए = **देव**, **नाग कुमार**, **सुवर्ण कुमार** और **किन्नर देवों** के समूह द्वारा सच्चे भाव से पूजित
देवं = **देव**, **नाग** = **नाग कुमार**, **सुवन्न** = **सुवर्ण कुमार**, **किन्नर** = **किन्नर देवों**, **स्सब्भूअ** = सच्चे, **भाव** = भाव से, **अच्चिए** = पूजित

लोगो जत्थ पइट्ठिओ = जिसमें लोक [सकल पदार्थों का ज्ञान] प्रतिष्ठित [वर्णित] है
लोगो = लोक, **जत्थ** = जिसमें, **पइट्ठिओ** = प्रतिष्ठित है

जगमिणं = यह जगत
जगं = जगत, **इणं** = यह

तेलुक्क-मच्चासुरं = तीनों लोक में मनुष्य, [**देव**] और **असुरादि** के आधार रूप
ते = तीनों, **लुक्क** = लोक में, **मच्च** = मृत्यु [मनुष्य], **असुरं** = **असुरादि**

धम्मो वड्ढउ सासओ = शाश्वत [**श्रुत**] **धर्म** वृद्धि को प्राप्त हो

nandī sayā sañjame = progressing always in self-control
nandī = progressing, **sayā** = always, **sañjame** = in self-control

devaṃ-nāga-suvanna-kinnara-gaṇa-ssabbhūa-bhāvaccie = worshipped by the assembly **devas**, **nāga kumāras**, **suvarṇa kumāras** and **kinnara devas** with a heart felt devotion
devaṃ = **devas**, **nāga** = **nāga kumāras**, **suvanna** = **suvarṇa kumāras**, **kinnara** = **kinnara devas**, **ssabbhūa** = with a heart felt, **bhāva** = devotion, **accie** = worshipped

logo jattha paiṭṭhio = in which universe [knowledge of all matters] is present [revealed]
logo = universe, **jattha** = in which, **paiṭṭhio** = is present

jagamiṇaṃ = this world
jagaṃ = world, **iṇaṃ** = this

telukka-maccāsuraṃ = like the support of men, [**devas**] and **asuras** etc. of all the three worlds
te = all the three, **lukka** = of worlds, **macca** = men, **asuraṃ** = of **asuras** etc.

dhammo vaḍḍhau sāsao = everlasting [**śruta**] **dharma** may attain prosperity

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मो = धर्म, वड्ढउ = वृद्धि को प्राप्त हो, **सासओ =** शाश्वत

विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ = विजयों से उत्तर **[चारित्र] धर्म** वृद्धि को प्राप्त हो

विजयओ = विजयों से, **धम्म = धर्म, उत्तरं =** उत्तर,

५. **सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं = श्रुत** भगवान की [आराधना के लिये] मैं **कायोत्सर्ग** करता हूँ

सुअस्स = श्रुत, भगवओ = भगवान की, **करेमि =** मैं करता हूँ, **काउस्सग्गं = कायोत्सर्ग**

गाथार्थ :-

अर्ध **पुष्कर-वर द्वीप, धातकी खंड** और **जंबु द्वीप** में स्थित **भरत, ऐरावत** और **महाविदेह** क्षेत्र में [**श्रुत**] **धर्म** की आदि करने वालों को मैं नमस्कार करता हूँ. .... १.

अज्ञान रूपी अंधकार के समूह को नाश करने वाले, देवों और राजाओं के समूह से पूजित, मर्यादा को धारण करने वाले और मोह जाल को तोड़ने वाले **[श्रुत धर्म]** को मैं वंदन करता हूँ. .... २.

जन्म, जरा, मृत्यु और शोक को नाश करने वाले, पुष्कल कल्याण और

dhammo = dharma, vaḍḍhau = may attain prosperity, **sāsao** = everlasting

vijayao dhammuttaram vaḍḍhau = subsequent **[cāritra] dharma** may attain prosperity by victories

vijayao = by victories, **dhamma = dharma, uttaram** = subsequent

5. **suassa bhagavao karemi kāussaggam** = i perform **kāyotsarga** [for the worship] of the god of **śruta**

suassa = of **śruta, bhagavao** = of the god, **karemi** = i perform, **kāussaggam = kāyotsarga**

Stanzaic meaning :-

I obeisance to the beginners of **[śruta] dharma** in the regions of **bharata, airāvata** and **mahāvideha** in half **puṣkara-vara dvīpa, dhātakī khaṇḍa** and **jambu dvīpa**. .... 1.

I obeisance to **[śruta dharma]**, the annihilator of mass of darkness resembling ignorance, worshipped by the assembly of gods and kings, holders of limitations and destroyer of snare of infatuating delusions. .... 2.

Who will be negligent after having secured the essence of **[śruta] dharma**, the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशाल सुख को देने वाले, **देवेंद्र, दानवेंद्र** और **नरेंद्रो** के समूह से पूजित **[श्रुत] धर्म** के सार को प्राप्त कर कौन प्रमाद करेगा?. .... ३.

हे मनुष्यों! मैं सिद्ध **जैन** मत को आदर पूर्वक नमस्कार करता हूँ. संयम में सदा वृद्धि करने वाला, **देव, नाग कुमार, सुवर्ण कुमार** और **किन्नर देवों** के समूह द्वारा सच्चे भाव से पूजित, जिसमें लोक और यह जगत् प्रतिष्ठित है और तीनों लोक के मनुष्य और **असुरादि** का आधार रूप शाश्वत **[श्रुत] धर्म** वृद्धि को प्राप्त हो. विजयों से **चारित्र धर्म** वृद्धि को प्राप्त हो. .... ४.

श्रुत भगवान की [आराधना के लिये] मैं **कायोत्सर्ग** करता हूँ.

विशेषार्थ :-

प्रमाद = आलस / आत्म हित के प्रति असावधानी और सत्क्रियाओं से विमुखता.

संयम / चारित्र = कषाय और **योग** का निग्रह

पैंतालीस क्षेत्र = [पंद्रह कर्म भूमि और तीस अकर्म भूमि] :- जंबू द्वीप में **भरत, हैमवत, हरि, महाविदेह, रम्यक्, हैरण्यवत** और **ऐरावत** नामक सात क्षेत्र हैं. इन्हीं नाम के दुगुणे [चौदह-चौदह] क्षेत्र **धातकी**

annihilator of birth, old age, death and grief, granter of great bliss and ever-lasting happiness and worshipped by the assembly of **devendras**, **dānavendras** and **narendras**. ....3.

Oh wise men! I obeisance respectfully to the well known **jaina** doctrines. [That] everlasting **[śruta] dharma** progressing always in self- control, adored by the assembly of **devas, nāga kumāras, suvarṇa kumāras** and **kinnara devas** with heart felt devotion, in which knowledge of universe and this world is present and like the support of men and **asura** etc. of all the three worlds may attain prosperity. The **cāritra dharma** may attain prosperity by victories. .... 4.

I perform **kāyotsarga** [for the worship] of the god of **śruta**.

Specific meaning :-

pramāda = Idleness / Negligence towards self-interest [spiritual interest] and aversion from worthy spiritual rites.

sañyama / cāritra = Overcoming of **kaṣāya** and **yoga**.

Forty five regions [fifteen lands of activities and thirty lands of inactivity] :- There are seven regions in **jambū dvīpa** namely **bharata, haimavata, hari, mahāvideha, ramyak, hairaṇyavata** and **airāvata**. There are double [fourteen-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंड और अर्ध **पुष्कर-वर द्वीप** में भी हैं. इन पैंतीस क्षेत्रों में से पाँच **भरत**, पाँच **ऐरावत** और पाँच **महाविदेह [उत्तर कुरु** और **देव कुरु** को छोड़कर] क्षेत्र– ये कुल पंद्रह क्षेत्र कर्म भूमि [जहाँ मनुष्यों को अपनी आजीविका के लिये श्रम करना पड़ता है.] हैं. शेष पाँच **हैमवत**, पाँच **हरि**, पाँच **रम्यक्**, पाँच **हैरण्यवत** एवं पाँच **देव कुरु**, पाँच **उत्तर कुरु** [पाँच **महाविदेह** में के] क्षेत्र– कुल तीस क्षेत्र– अकर्म भूमि [जहाँ मनुष्यों को अपनी आजीविका के लिये श्रम नहीं करना पड़ता है.] हैं.

श्रुत ज्ञान = तीर्थंकर भगवान से **गणधर भगवंतों** द्वारा सुनकर प्राप्त किया हुआ और शास्त्र रूप रचा हुआ ज्ञान, सिद्धांत या प्रवचन.

सिद्ध जिन मत :- केवल ज्ञान प्राप्ति के बाद **तीर्थंकर** द्वारा अर्थ से प्ररूपित और **नय** और **प्रमाणों** द्वारा प्रस्थापित [प्रतिष्ठित] एवं **कस शुद्धि, छेद शुद्धि** और **ताप शुद्धि** से प्रख्यात **गणिपिटक** [बारह **अंग**] रूप मत / दर्शन / धर्म.

नय :- पदार्थ को किसी भी एक दृष्टि से देखना / समझना.

प्रमाण :- पदार्थ को सर्व दृष्टि से देखना / समझना.

fourteen] regions of same name in **dhātakī khaṇḍa** and half **puṣkara-vara dvīpa**. Out of these thirty five regions, the regions of five **bharata**, five **airāvata** and five **mahāvideha** [excluding **uttara kuru** and **deva kuru**]-- in all fifteen regions are the lands of activities [where men have to work for their livelihood]. Remaining regions of five **haimavata**, five **hari**, five **ramyak**, five **hairaṇyavata** and five **deva kuru**, five **uttara kuru** [from five **mahāvideha**]-- in all thirty regions are the land of inactivity [where men need not work for there livelihood.].

śruta jñāna = Knowledge, doctrines or discourses secured by the **gaṇadhara bhagavantas** from the **tīrthaṅkara bhagavānas** by listening and composed in the form of scriptures.

siddha jina mata [proved jina (Jain) doctrines] :- Doctrines / philosophy / religion in the form of **gaṇipiṭaka** [twelve **aṅga** s] preached in meaning by the **tīrthaṅkara** after acquiring **kevala jñāna** and well established by **naya**s and **pramāṇa**s and well proved by **kasa śuddhi, cheda śuddhi** and **tāpa śuddhi** [perfectness in **kasa, cheda,** and **tāpa**].

naya :- To observe / understand a matter in any of one angle.

pramāṇa :- To observe / understand a matter in all angles.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीन प्रकार से शुद्ध धर्म / मत / दर्शन :-

१. **कस शुद्ध धर्म- मोक्ष** आदि श्रेष्ठ आदर्श दर्शाने वाला धर्म.

२. **छेद शुद्ध धर्म-** श्रेष्ठ आदर्शों की प्राप्ति के लिए अनुरूप आचार दर्शाने वाला धर्म.

३. **ताप शुद्ध धर्म- कस शुद्धि** और **छेद शुद्धि** [शुद्ध आदर्श और आचार] का समन्वय करने वाला **तत्त्वज्ञान** से युक्त धर्म.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** में **ढाई द्वीप** में विचरने वाले एवं **श्रुत ज्ञान** की प्ररूपणा करने वाले **तीर्थंकरों** को नमस्कार करके **श्रुत ज्ञान** की स्तुति की गयी है.

Three types of śuddha dharma / mata / darśana [perfect doctrines / philosophy / religion] :-

1. **kasa śuddha dharma [religion perfect by kasa] :-** Religion showing the best ideals like mōkṣa [salvation].
2. **cheda śuddha dharma [religion perfect by cheda] :-** Religion showing conducts suitable in acquiring the best ideals.
3. **tāpa śuddha dharma [religion perfect by tāpa] :-** Religion having **tattva-jñāna** [metaphysical knowledge] co-ordinating **kasa śuddhi** and **cheda śuddhi** [perfectness of ideals and conducts].

Introduction of the sūtra :-

Saluting the **tīrthaṅkaras**, the ramblers in **ḍhāī dvīpa** and the metaphorical describer of the **śruta jñāna**; glorification of the greatness of **śruta jñāna** has been done in this **sūtra**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र

सिद्धाणं बुद्धाणं, पार-गयाणं परंपर-गयाणं.
लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्व-सिद्धाणं. ....१.
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति.
तं देव-देव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं. ....२.
इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स.
संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा. ....३.
उज्जिंत-सेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स.
तं धम्म-चक्कवट्टिं, अरिट्ठ-नेमिं नमंसामि..........४.
चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं.
परमट्ठ-निट्ठि-अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु. ....५.

शब्दार्थ :-

१.सिद्धाणं = सिद्ध गति को प्राप्त किये हुए
बुद्धाणं = सर्वज्ञ

23. siddhāṇam buddhāṇam sūtra

siddhāṇam buddhāṇam, pāra-gayāṇam parampara-gayāṇam.
loagga-muvagayāṇam, namo sayā savva-siddhāṇam. .... .1.
jo devāṇa vi devo, jam devā pañjalī namamsanti.
tam deva-deva-mahiam, sirasā vande mahāvīram. .... .2.
ikko vi namukkāro, jiṇavara-vasahassa vaddhamāṇassa.
sansāra-sāgarāo, tārei naram va nārim vā. .... .3.
ujjinta-sela-sihare, dikkhā nāṇam nisīhiā jassa.
tam dhamma-cakkavaṭṭim, ariṭṭha-nemim namamsāmi......... .4.
cattāri aṭṭha dasa do ya, vandiyā jiṇavarā cauvvīsam.
paramaṭṭha-niṭṭhi-aṭṭhā, siddhā siddhim mama disantu. .... .5.

Literal meaning :-

1.siddhāṇam = having attained the salvation
buddhāṇam = holders of absolute perfect knowledge

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पार-गयाणं = [संसार समुद्र को] पार किये हुए
पार = पार, **गयाणं** = किये हुए
परंपर-गयाणं = [गुणस्थानों की] परंपरा [क्रम] से [सिद्धि में] गये हुए
परंपर = परंपरा से, **गयाणं** = गये हुए
लोअग्ग-मुवगयाणं = लोक के अग्र भाग पर गये हुए
लोअग्गं = लोक के अग्र भाग पर, **उवगयाणं** = गये हुए

नमो सया सव्व-सिद्धाणं = सर्व **सिद्ध भगवंतों** को सदा नमस्कार हो
नमो = नमस्कार हो, **सया** = सदा, **सव्व** = सर्व, **सिद्धाणं** = **सिद्ध भगवंतो** को
२.**जो देवाण वि देवो** = जो देवों के भी देव हैं
जो = जो, **देवाण** = देवो के, **वि** = भी, **देवो** = देव हैं
जं देवा पंजली नमंसंति = जिनको देव अंजली पूर्वक नमस्कार करते हैं
जं = जिनको, **देवा** = देव, **पंजली** = अंजली पूर्वक, **नमंसंति** = नमस्कार करते हैं

pāra-gayāṇam = having crossed [the ocean of life]
pāra = crossed, **gayāṇam** = having
parampara-gayāṇam = having gone [to salvation] in sequence [of **guṇasthānas**]
paramparā = in sequence, **gayāṇam** = having gone
loagga-muvagayāṇam = having reached the highest place in the universe
loaggam = the highest place in the universe, **uvagayāṇam** = having reached
namo sayā savva-siddhāṇam = always be obeisance to all the **siddha bhagavantas**
namo = be obeisance, **sayā** = always, **savva** = all, **siddhāṇam** = to **siddha bhagavantas**
2.jo devāṇa vi devo = who are even god of the gods
jo = who, **devāṇa** = of the gods, **vi** = even, **devo** = are god
jam devā pañjalī namamsanti = to whom the gods bow down with folded hands
jam = to whom, **devā** = the gods, **pañjalī** = with folded hands, **namamsanti** = bow down

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

तं = उन
देव-देव-महियं = देवों के देव [इंद्र] द्वारा पूजित
देव = देवों के, **देव** = देव द्वारा, **महियं** = पूजित
सिरसा वंदे महावीरं = मस्तक नमाकर **श्री महावीर स्वामी** को मैं वंदन करता हूँ
सिरसा = मस्तक नमाकर, **वंदे** = वंदन करता हूँ, **महावीरं** = **श्री महावीर स्वामी** को
३.इक्को वि नमुक्कारो = किया हुआ एक ही नमस्कार
इक्को = एक, **वि** = ही, **नमुक्कारो** = किया हुआ नमस्कार
जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स = **जिनेश्वरों** में उत्तम **श्री महावीर स्वामी** को
जिणवर = **जिनेश्वरों** में, **वसहस्स** = उत्तम, **वद्धमाणस्स** = **श्री महावीर स्वामी** को
संसार-सागराओ = संसार समुद्र से
संसार = संसार, **सागराओ** = समुद्र से
तारेइ नरं व नारिं वा = नर या नारी को तारता है
तारेइ = तारता है, **नरं** = नर, **व** = या, **नारिं** = नारी को, **वा** = या

tam = those
deva-deva-mahiyam = worshipped by the god of the gods [indra]
deva = of the gods, **deva** = by the god, **mahiyam** = worshipped
sirasā vande mahāvīram = i obeisance to **śrī mahāvīra svāmī** bowing down my head
sirasā = bowing down my head, **vande** = i obeisance, **mahāvīram** = to **śrī mahāvīra svāmī**
3.ikko vi namukkāro = even a single obeisance offered
ikko = a single, **namukkāro** = obeisance offered
jiṇavara-vasahassa vaddhamāṇassa = to **śrī mahāvīra svāmī**, the greatest amongst the **jineśvaras**
jiṇavara = amongst the **jineśvaras**, **vasahassa** = the greatest, **vaddhamāṇassa** = to **śrī mahāvīra svāmī**
sansāra-sāgarāo = from the ocean of life
sansāra = of life, **sāgarāo** = from the ocean
tārei naram va nārim vā = helps to crossover [carries across] the men or women
tārei = helps to crossover, **naram** = the men, **va** = or, **nārim** = women, **vā** = or

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४.उज्जिंत-सेल-सिहरे = **गिरनार** पर्वत के शिखर पर
उज्जिंत = **गिरनार**, **सेल** = पर्वत के, **सिहरे** = शिखर पर
दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स = जिनकी **दीक्षा**, **केवल ज्ञान** और **निर्वाण कल्याणक** हुए हैं
दिक्खा = **दीक्षा**, **नाणं** = **केवल ज्ञान**, **निसीहिआ** = **निर्वाण**, **जस्स** = जिनकी
तं धम्म-चक्क-वट्टिं = उन धर्म चक्रवर्ती
तं = उन, **धम्म** = धर्म, **चक्कवट्टिं** = चक्रवर्ती
अरिट्ठ-नेमिं नमंसामि = **श्री अरिष्ट नेमि [नेमिनाथ]** को मैं नमस्कार करता हूँ
अरिट्ठ-नेमिं = **श्री अरिष्ट नेमि** को, **नमंसामि** = मैं नमस्कार करता हूँ
५.चत्तारि अट्ठ दस दो य = [**अष्टापद** पर्वत पर] चार, आठ, दस और दो के क्रम से
चत्तारि = चार, **अट्ठ** = आठ, **दस** = दस, **दो** = दो, **य** = और
वंदिया जिणवरा चउव्वीसं = वंदित चौबीसों **जिनेश्वर**
वंदिया = वंदित, **जिणवरा** = **जिनेश्वर**, **चउव्वीसं** = चौबीसों

4.ujjinta-sela-sihare = on the summit of **giranāra** mountain
ujjinta = of **giranāra, sela** = mountain, **sihare** = on the summit
dikkhā nāṇam nisīhiā jassa = whose **kalyāṇaka**s of **dīkṣā**, **kevala jñāna** and **nirvāṇa** took place
dīkkhā = **dīkṣā, nāṇam** = **kevala jñāna, nisīhiā** = **nirvāṇa, jassa** = whose
tam dhamma-cakka-vaṭṭim = those religious emperor
tam = those, **dhamma** = religious, **cakkavaṭṭim** = emperor
ariṭṭha-nemim namamsāmi = i obeisance to **śrī ariṣṭa nemi [neminātha]**
ariṭṭha-nemim = to **śrī ariṣṭa nemi, namamsāmi** = i obeisance
5.cattāri aṭṭha dasa do ya = in the sequence of four, eight, ten and two [on **aṣṭāpada** mountain]
cattāri = four, **aṭṭha** = eight, **dasa** = ten, **do** = two, **ya** = and
vandiyā jiṇavarā cauvvīsam = all the twenty four **jineśvara**s obeisanced
vandiyā = obeisanced, **jiṇavarā** = **jineśvaras**, **cauvvīsam** = all the twenty four

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमट्ठ-निट्ठि-अट्ठा = परम ध्येय [मोक्ष] को प्राप्त किये हुए
परम = परम, **अट्ठ** = ध्येय को, **निट्ठिअट्ठा** = प्राप्त किये हुए
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु = सिद्ध भगवंत मुझे सिद्धि [मोक्ष] प्रदान करें
सिद्धा = सिद्ध भगवंत, सिद्धिं = सिद्धि, **मम** = मुझे, **दिसंतु** = प्रदान करें

गाथार्थ :-

सिद्ध गति को प्राप्त किये हुए, सर्वज्ञ, [संसार समुद्र को] पार किये हुए, परंपरा से [सिद्धि में] गये हुए और लोक के अग्र भाग पर गये हुए सर्व **सिद्ध भगवंतों** को सदा नमस्कार हो. .... १.

जो देवों के भी देव हैं, जिनको देव अंजली पूर्वक नमस्कार करते हैं और जो **इंद्रों** से पूजित हैं, उन **श्री महावीर स्वामी** को मैं मस्तक नमाकर वंदन करता हूँ. .... २.

जिनेश्वरों में उत्तम **श्री महावीर स्वामी** को किया हुआ एक ही नमस्कार नर या नारी को संसार समुद्र से तारता है. .... ३.

जिनकी **दीक्षा, केवल ज्ञान** और **निर्वाण कल्याणक गिरनार** पर्वत के

paramaṭṭha-niṭṭhi-aṭṭhā = having obtained the ultimate goal of life [salvation]
parama = the ultimate, **aṭṭha** = goal, **niṭṭhi-aṭṭhā** = having obtained
siddhā siddhim mama disantu = **siddha bhagavantas** shall grant me the boon [of salvation]
siddhā = **siddha bhagavantas**, **siddhim** = the boon, **mama** = me, **disantu** = shall grant

Stanzaic meaning :-

Always be obeisance to all the **siddha bhagavantas**, having attained the salvation, holders of absolute perfect knowledge, having crossed [the ocean of life], having gone [to salvation] in sequence and having reached the highest place in the universe. .... 1.

I obeisance to those **śrī mahāvīra svāmī** bowing down my head, who is even god of the gods, to whom gods bow down with folded hands and who is worshipped by the indras. .... 2.

Even a single obeisance offered to **śrī mahāvīra svāmī**, the greatest among **jineśvaras** carries the men or women across the ocean of life. .... 3.

I obeisance to that religious emperor **śrī neminātha** whose **kalyāṇakas** of **dīkṣā,**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिखर पर हुए हैं, उन धर्म चक्रवर्ती **श्री नेमिनाथ** को मैं नमस्कार करता हूँ. .... ४.

चार, आठ, दस और दो के क्रम से वंदित चौबीसों **जिनेश्वर** और मोक्ष को प्राप्त किये हुए **सिद्ध भगवंत** मुझे मोक्ष प्रदान करें. .... ५.

kevala jñāna and **nirvāṇa** took place on the summit of **giranāra** mountain. 4.

All the twenty four **jineśvara**s obeisanced in the sequence of four, eight, ten and two and the **siddha bhagavanta**s having obtained salvation shall grant me the boon of salvation. .... 5.

विशेषार्थ :-

दीक्षा = संस्कारों का आरोपण करना.

प्रव्रज्या = गृहस्थ आश्रम की क्रियाओं से दूर रहना.

लोक का अग्रभाग = [सिद्ध] मुक्त आत्माओं के लिये रहने का स्थान.

सर्व सिद्ध भगवंत = पंद्रह प्रकार से सिद्ध होने वाली आत्माएँ :-

१. **तीर्थंकर** द्वारा **तीर्थ** स्थापना के बाद सिद्ध होना.
२. **तीर्थंकर** द्वारा **तीर्थ** स्थापना के पूर्व सिद्ध होना.
३. **तीर्थंकर** बनकर सिद्ध होना.
४. **तीर्थंकर** बने बिना सिद्ध होना.
५. अपने आप बोध पाकर सिद्ध होना.
६. गुरु आदि से बोध पाकर सिद्ध होना.

Specific meaning :-

dīkṣā = To attribute sacraments.

pravrajyā = To keep away from the routines of life as a house holder.

loka kā agra bhāga [highest palace in the universe] = An abode for staying of liberated souls [souls having attained the salvation].

sarva siddha bhagavanta = souls liberated in fifteen ways :-

1. To be liberated after establishment of **tīrtha** by a **tīrthaṅkara**.
2. To be liberated before establishment of **tīrtha** by a **tīrthaṅkara**.
3. To be liberated after becoming a **tīrthaṅkara**.
4. To be liberated without becoming a **tīrthaṅkara**.
5. To be liberated by acquiring knowledge by himself.
6. To be liberated by acquiring knowledge from preceptors etc.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. किसी भी तरह के निमित्त से बोध पाकर सिद्ध होना.
८. स्त्री लिंग [शरीर] में सिद्ध होना.
९. पुरुष लिंग में सिद्ध होना.
१०. नपुंसक लिंग में सिद्ध होना.
११. **जैन** धर्म के **साधु** वेश में सिद्ध होना.
१२. **जैन** सिवाय अन्य धर्म के **साधु** वेश में सिद्ध होना.
१३. गृहस्थ वेश में सिद्ध होना.
१४. एक समय में अकेला [एक] ही सिद्ध होना.
१५. एक समय में अनेक के साथ सिद्ध होना.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** से सर्व **सिद्ध भगवंत** और **तीर्थंकरों** की स्तुति की गयी है.

7. To be liberated by acquiring knowledge through any type of event.
8. To be liberated through female body.
9. To be liberated through male body.
10. To be liberated through eunuch body.
11. To be liberated in the custom of a **sādhu** of **jaina** religion.
12. To be liberated in the custom of a **sādhu** of religion other than **jaina**.
13. To be liberated in the custom of a house holder.
14. To be liberated alone [one] at a time.
15. To be liberated along with many others at a time.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, the glorification of all the **siddha bhagavantas** [enlightened lords] and **tīrthaṅkaras** has been done.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. वेयावच्च-गराणं सूत्र

वेयावच्च-गराणं, संति-गराणं, सम्मदिट्ठि-समाहि-गराणं करेमि काउस्सग्गं. ....१.
अन्नत्थ... [सूत्र-७.]. ....२.

शब्दार्थ :-

वेयावच्च-गराणं = वैयावृत्त्य [सेवा शुश्रुषा] करने वालों के निमित्त से
वेयावच्च = वैयावृत्त्य, **गराणं** = करने वालों के निमित्त से
संति-गराणं = शांति [उपद्रवादि का निवारण] करने वालों के निमित्त से
संति = शांति
सम्म-दिट्ठि-समाहि-गराणं = सम्यग् दृष्टियों को समाधि उत्पन्न करने वालों के निमित्त से
सम्म = सम्यग्, **दिट्ठि** = दृष्टियों को, **समाहि** = समाधि
करेमि काउस्सग्गं = मैं **कायोत्सर्ग** करता हूँ
करेमि = मैं करता हूँ, **काउस्सग्गं** = **कायोत्सर्ग**

24. veyāvacca-garāṇam sūtra

veyāvacca-garāṇam, santi-garāṇam, sammadditthi-samāhi-garāṇam karemi kāussaggam. .... .1.
annattha... [sūtra-7.]. .... .2.

Literal meaning :-

veyāvacca-garāṇam = for the sake of those engaged in service
veyāvacca = service, **garāṇam** = those engaged in
santi-garāṇam = for the sake of the pacifiers [removers of obstacles]
santi = the pacifiers, **garāṇam** = for the sake of
samma-dditthi-samāhi-garāṇam = for the sake of those who helps the right faith holders in attaining concentration
samma = the right, **dditthi** = faith holders, **samāhi** = concentration
karemi kāussaggam = i perform the **kāyotsarga**
karemi = i perform, **kāussaggam** = the **kāyotsarga**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाथार्थ :-

वैयावृत्त्य करने वालों के निमित्त से, शांति करने वालों के निमत्त से और सम्यग् दृष्टियों को समाधि उत्पन्न कराने वाले [देवताओं] के निमित्त से मैं **कायोत्सर्ग** करता हूँ. .... १.

विशेषार्थ :-

समाधि उत्पन्न कराना = समाधि प्राप्त करने में सहाय करना / जीवन की आवश्यकताओं एवं धर्माराधना के साधनों को उपलब्ध कर मन को शांत करना.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** से श्री संघ की शांति के लिए सम्यग्-दृष्टि वाले देवों का स्मरण किया गया है.

Stanzaic meaning :-

I perform the **kāyotsarga** for the sake of those [presiding deities] engaged in service, for the sake of the pacifiers and for the sake of those who helps the right faith holders in attaining concentration. .... 1.

Specific meaning :-

samādhi utpanna karānā = To help in attaining concentration / to pacify the mind making available the necessities of life and the means of religious performances.

Introduction of the sūtra :-

For the peace of the society, a commemoration of the gods with right vision has been done by this **sūtra**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिक्रमण सूत्र
सह विवेचन
भाग - १ [हिन्दी - अंग्रेजी]

काव्य विभाग

निर्वाण सागर

Pratikramaṇa Sūtra
With Explanation
Part - 1 [Hindī - English]

kāvya part

Nirvāṇa Sāgara

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमान काल के २४ तीर्थकरों के नामादि

क्र. सं.	नाम	लाञ्छन	वर्ण
१.	ऋषभदेव	वृषभ [बैल]	काञ्चन [सुवर्ण]
२.	अजितनाथ	हस्ती [हाथी]	काञ्चन
३.	संभवनाथ	अश्व [घोडा]	काञ्चन
४.	अभिनंदन स्वामी	वानर [बंदर]	काञ्चन
५.	सुमतिनाथ	क्रौञ्चपक्षी	काञ्चन
६.	पद्मप्रभ स्वामी	पद्म [कमल]	रक्त [लाल]
७.	सुपार्श्वनाथ	स्वस्तिक	काञ्चन
८.	चन्द्रप्रभ स्वामी	चन्द्र	श्वेत [उज्ज्वल]
९.	सुविधिनाथ	मगरमच्छ	उज्ज्वल
१०.	शीतलनाथ	श्रीवत्स	काञ्चन
११.	श्रेयांसनाथ	गैंडा	काञ्चन
१२.	वासुपूज्य स्वामी	पाड़ा	लाल
१३.	विमलनाथ	वराह	काञ्चन
१४.	अनन्तनाथ	बाज	काञ्चन

Names etc. of the 24 tīrthaṅkaras of present era

S. no.	Name	Mark	Colour
1.	ṛṣabhadeva	Bullock	Golden
2.	ajitanātha	Elephent	Golden
3.	sambhavanātha	Horse	Golden
4.	abhinandana svāmī	Monkey	Golden
5.	sumatinātha	Crane	Golden
6.	padmaprabha svāmī	Lotus	Red
7.	supārśvanātha	Swastik	Golden
8.	candraprabha svāmī	Moon	White
9.	suvidhinātha	Crocodial	White
10.	śītalanātha	śrīvatsa	Golden
11.	śreyānsanātha	Rhinoceros	Golden
12.	vāsupūjya svāmī	He-buffalo	Red
13.	vimalanātha	Boar	Golden
14.	anantanātha	Hawk	Golden

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५.	धर्मनाथ	वज्र	काञ्चन
१६.	शांतिनाथ	मृग [हिरण]	काञ्चन
१७.	कुन्थुनाथ	छाग [बकरा]	काञ्चन
१८.	अरनाथ	नंदावर्त	काञ्चन
१९.	मल्लिनाथ	कुम्भ	नीला
२०.	मुनिसुव्रत स्वामी	कछुआ	कृष्ण [श्याम]
२१.	नमिनाथ	नीला-कमल	काञ्चन
२२.	नेमिनाथ	शंख	श्याम
२३.	पार्श्वनाथ	सर्प	नीला
२४.	महावीर स्वामी	सिंह	काञ्चन

२० विहरमान जिनेश्वरों के नाम

क्र. सं.	नाम
१.	सीमंधर स्वामी
२.	युगमंधर स्वामी
३.	बाहु स्वामी

15.	dharmanātha	Thunderbolt	Golden
16.	śāntinātha	Deer	Golden
17.	kunthunātha	Goat	Golden
18.	aranātha	nandāvarta	Golden
19.	mallinātha	Pitcher	Blue
20.	munisuvrata svāmī	Tortoise	Black
21.	naminātha	Blue-lotus	Golden
22.	neminātha	Conch-shell	Black
23.	pārśvanātha	Snake	Blue
24.	mahāvīra svāmī	Lion	Golden

Names of 20 viharamāna jineśvaras

S. no.	Name
1.	sīmandhara svāmī
2.	yugamandhara svāmī
3.	bāhu svāmī

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४.	सुबाहु स्वामी	4.	subāhu svāmī
५.	सुजात स्वामी	5.	sujāta svāmī
६.	स्वयंप्रभ स्वामी	6.	svayamprabha svāmī
७.	ऋषभानन स्वामी	7.	ṛṣabhānana svāmī
८.	अनन्तवीर्य स्वामी	8.	anantavīrya svāmī
९.	सुरप्रभ स्वामी	9.	suraprabha svāmī
१०.	विशाल स्वामी	10.	viśāla svāmī
११.	वज्रधर स्वामी	11.	vajradhara svāmī
१२.	चंद्रानन स्वामी	12.	candrānana svāmī
१३.	चन्द्रबाहु स्वामी	13.	candrabāhu svāmī
१४.	भुजङ्ग स्वामी	14.	bhujaṅga svāmī
१५.	ईश्वर स्वामी	15.	īśvara svāmī
१६.	नेमिप्रभ स्वामी	16.	nemiprabha svāmī
१७.	वीरसेन स्वामी	17.	vīrasena svāmī
१८.	महाभद्र स्वामी	18.	mahābhadra svāmī
१९.	देवयशा स्वामी	19.	devayaśā svāmī
२०.	अजितवीर्य स्वामी	20.	ajitavīrya svāmī

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवपद के नाम तथा वर्ण

क्र. सं.	नाम	वर्ण
१.	अरिहंत	श्वेत [सफेद]
२.	सिद्ध	रक्त [लाल]
३.	आचार्य	पीला
४.	उपाध्याय	हरा
५.	साधु	श्याम [काला]
६.	दर्शन	सफेद
७.	ज्ञान	सफेद
८.	चारित्र	सफेद
९.	तप	सफेद

Names and colours of navapada

S. no.	Name	Colour
1.	arihanta	White
2.	siddha	Red
3.	ācārya	Yellow
4.	upādhyāya	Green
5.	sādhu	Black
6.	darśana	White
7.	jñāna	White
8.	cāritra	White
9.	tapa	White

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोहा संग्रह

अ. प्रदिक्षणा के दोहे

काल अनादि अनंतथी, भव भ्रमणनो नहि पार;
ते भव भ्रमण निवारवा, प्रदक्षिणा दऊं त्रण वार. ....१.
भमतीमां भमतां थकां, भव भावठ दूर पलाय;
ज्ञान दर्शन चारित्र रूप, प्रदक्षिणा त्रण देवाय. ....२.
जन्म-मरणादि सवि भय टले, सीझे जो दर्शन काज;
रत्न-त्रयी प्राप्ति भणी, दर्शन करो जिन-राज. ....३.
ज्ञान वडुं संसारमां, ज्ञान परम सुख हेत;
ज्ञान विना जग जीवडा, न लहे तत्त्व संकेत................४.
चय ते संचय कर्मनो, रिक्त करे वली जेह;
चारित्र नामे निर्युक्ते कह्युं, वंदे ते गुणगेह.................५.
ज्ञान दर्शन चारित्र ए, रत्न-त्रयी निरधार;
त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे, भव-दुःख भंजनहार. ....६.

Collections of dohā [couplets]

A. Couplets of pradikṣaṇā [circumambulation]

kāla anādi anantathī, bhava bhramaṇano nahi pāra;
te bhava bhramaṇa nivāravā, pradakṣiṇā dau◌ traṇa vāra. ....1.
bhamatīmā◌ bhamatā◌ thakā◌, bhava bhāvaṭha dūra palāya;
jñāna darśana cāritra rūpa, pradakṣiṇā traṇa devāya. ....2.
janma-maraṇādi savi bhaya ṭale, sījhe jo darśana kāja;
ratna-trayī prāpti bhaṇī, darśana karo jina-rāja. ....3.
jñāna vaḍu◌ sansāramā◌, jñāna parama sukha heta;
jñāna vinā jaga jīvaḍā, na lahe tattva saṅketa. ....4.
caya te sañcaya karmano, rikta kare valī jeha;
cāritra nāme niryukte kahyu◌, vande te guṇageha. ....5.
jñāna darśana cāritra e, ratna-trayī niradhāra;
traṇa pradakṣiṇā te kāraṇe, bhava-duḥkha bhañjanahāra. ....6.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ. प्रभु दर्शन के समय बोलने के दोहे

प्रभु दरिशन सुख संपदा, प्रभु दरिशन नव-निध.
प्रभु दरिशनथी पामीए, सकल पदारथ सिद्ध. ....१.
भावे जिनवर पूजीए, भावे दीजे दान.
भावे भावना भावीए, भावे केवल-ज्ञान. ....२.
जीवडा! जिनवर पूजीए, पूजानां फल होय.
राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय. ....३.
फूलडां केरा बागमां, बेठा श्री जिनराय.
जेम तारामां चन्द्रमा, तेम शोभे महाराय...................४.
त्रि-भुवन नायक तुं धणी, मही मोटो महाराज.
मोटे पुण्ये पामीयो, तुम दरिशन हुं आज. ....५.
आज मनोरथ सवि फल्या, प्रगट्या पुण्य कल्लोल.
पाप करम दूरे टल्यां, नाठां दुःख दंदोल. ....६.
पंचम काले पामवो, दुलहो प्रभु देदार.
तो पण तेना नामनो, छे मोटो आधार. ....७.

B. Couplets to be uttered while viewing the lord

prabhu dariśana sukha sampadā, prabhu dariśana nava-nidha.
prabhu dariśanathī pāmīe, sakala padāratha siddha. ....1.
bhāve jinavara pūjīe, bhāve dīje dāna.
bhāve bhāvanā bhāvīe, bhāve kevala-jñāna. ....2.
jīvaḍā! jinavara pūjīe, pūjānā◌ phala hoya.
rājā name prajā name, āṇa na lope koya. ....3.
phūlaḍā◌ kerā bāgamā◌, beṭhā śrī jinarāya.
jema tārāmā◌ candramā, tema śobhe mahārāya. ....4.
tri bhuvana nāyaka tu◌ dhaṇī, mahī moṭo mahārāja.
moṭe puṇye pāmīyo, tuma dariśana hu◌ āja...5.
āja manoratha savi phalyā, pragaṭyā puṇya kallola.
pāpa karama dūre ṭalyā◌, nāṭhā◌ duḥkha dandola. ....6.
pañcama kāle pāmavo, dulaho prabhu dedāra.
to paṇa tenā nāmano, che moṭo ādhāra...7.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रभु नामनी औषधि, खरा भावथी खाय.	prabhu nāmanī auṣadhi, kharā bhāvathī khāya.
रोग शोक आवे नहीं, सवि संकट मिट जाय. ....८.	roga śoka āve nahi꣹, savi saṅkaṭa miṭa jāya. ....8.
पांच कोडीने फूलडे, पाम्या देश अढार.	pāñca koḍīne phūlaḍe, pāmyā deśa aḍhāra.
राजा कुमारपालनो, वर्त्यो जय-जय-कार. ....९.	rājā kumārapālano, vartyo jaya-jaya-kāra. ....9.
छे प्रतिमा मनोहारिणी, दुःखहरी श्री वीर जिणंदनी;	che pratimā manohāriṇī, duḥkhaharī śrī vīra jiṇandanī;
भक्तोने छे सर्वदा सुखकरी, जाणे खीली चांदनी.	bhaktone che sarvadā sukhakarī, jāṇe khīlī cāndanī.
आ प्रतिमाना गुण भाव धरीने, जे माणसो गाय छे;	ā pratimānā guṇa bhāva dharīne, je māṇaso gāya che;
पामी सघलां सुख ते जगतनां, मुक्ति भणी जाय छे...... .१०.	pāmī saghalā꣹ sukha te jagatanā꣹, mukti bhaṇī jāya che.............10.
आव्यो शरणे तमारा जिनवर! करजो आश पूरी अमारी;	āvyo śaraṇe tamārā jinavara! karajo āśa pūrī amārī;
नाव्यो भवपार मारो तुम विण जगमां सार ले कोण मारी?.	nāvyo bhavapāra māro tuma viṇa jagamā꣹ sāra le koṇa mārī?.
गायो जिनराज! आजे हरख अधिकथी परम आनंदकारी;	gāyo jinarāja! āje harakha adhikathī parama ānandakārī;
पायो तुम दर्श नासे भव-भय-भ्रमणा नाथ! सर्वे अमारी... .११.	pāyo tuma darśa nāse bhava-bhaya-bhramaṇā nātha! sarve amārī. ......11.
सरस-शांति-सुधारस-सागरं, शुचितरं गुण-रत्न-महागरम्.	sarasa-śānti-sudhārasa-sāgaram, śucitaram guṇa-ratna-mahāgaram.
भविक-पंकज-बोध दिवाकरं,	bhavika-paṅkaja-bodha divākaram,
प्रति-दिनं प्रणमामि जिनेश्वरम्..१२.	prati-dinam praṇamāmi jineśvaram..12.
श्री आदीश्वर शांति नेमि जिनने, श्रीपार्श्व वीर प्रभु;	śrī ādīśvara śānti nemi jinane, śrīpārśva vīra prabhu;
ए पांचे जिनराज आज प्रणमुं, हेजे धरी ए विभु.	e pāñce jinarāja āja praṇamu꣹, heje dharī e vibhu.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्याणे कमला सदैव विमला, वृद्धि पमाडो अति;
एहवा गौतम स्वामी लब्धि भरीआ, आपो सदा सन्मति. . .१३.
जगदेव अनंत अभेद प्रभु, करुं सेव तजी अहमेव-पणुं;
प्रतिमा तव रूप ग्रही चित्तमां, समरूं निज हुं धरी भाव घणुं.
प्रतिमा तुज जन जे निंदशे, भमशे भव तेह अनंत सदा;
प्रतिमा तुज जन जे वंदशे, करशे निज श्रेय बधां........ .१४.
सुण्या हशे पूज्या हशे निरख्या हशे पण को क्षणे;
हे जगत-बंधु! चित्तमां धार्या नहि भक्तिपणे.
जन्म्यो प्रभु ते कारणे दुःखपात्र आ संसारमां;
हा! भक्ति ते फलती नथी जे भाव शून्याचारमां. .... .१५.
जिनवर पद सेवा, सर्व-संपत्ति दाइ;
निशदिन सुखदाइ, कल्पवल्ली सहाइ.
नमि विनमि लही जे, सर्व-विद्या बडाइ;
ऋषभ जिनह सेवा, साधतां तेह पाइ. .... .१६.
जे दृष्टि प्रभु दर्शन करे, ते दृष्टिने पण धन्य छे;
जे जीभ जिनवरने स्तवे, ते जीभने पण धन्य छे.
पीए मुदा वाणी सुधा, ते कर्ण-युगने धन्य छे;

kalyāṇe kamalā sadaiva vimalā, vṛddhi pamāḍo ati;
ehavā gautama svāmī labdhi bharīā, āpo sadā sanmati. .... .13.
jagadeva ananta abheda prabhu, karu◌ seva tajī ahameva-paṇu◌;
pratimā tava rūpa grahī cittamā◌, samarū◌ nija hu◌ dharī bhāva ghaṇu◌.
pratimā tuja jana je nindaśe, bhamaśe bhava teha ananta sadā;
pratimā tuja jana je vandaśe, karaśe nija śreya badhā◌. .... .14.
suṇyā haśe pūjyā haśe nirakhyā haśe paṇa ko kṣaṇe;
he jagata-bandhu! cittamā◌ dhāryā nahi bhaktipaṇe.
janmyo prabhu te kāraṇe duḥkhapātra ā sansāramā◌;
hā! bhakti te phalatī nathī je bhāva śūnyācāramā◌. .... .15.
jinavara pada sevā, sarva-sampatti dāi;
niśadina sukhadāi, kalpavallī sahāi.
nami vinami lahī je, sarva-vidyā baḍāi;
ṛṣabha jinaha sevā, sādhatā◌ teha pāi. .... .16.
je dṛṣṭi prabhu darśana kare, te dṛṣṭine paṇa dhanya che;
je jībha jinavarane stave, te jībhane paṇa dhanya che.
pīe mudā vāṇī sudhā, te karṇa-yugane dhanya che;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुज नाम मंत्र विशद धरे, ते हृदयने नित धन्य छे. ...... .१७.	tuja nāma mantra viśada dhare, te hṛdayane nita dhanya che. ....17.
अद्य मे कर्म-संघातं, विनष्टं चिर-संचितम्.	adya me karma-saṅghātam, vinaṣṭam cira-sañcitam.
दुर्गत्यापि निवृत्तोहं, जिनेन्द्र! तव दर्शनात्. .... .१८.	durgatyāpi nivṛttoham, jinendra! tava darśanāt. ....18.
दर्शनं देव-देवस्य, दर्शनं पाप-नाशनम्.	darśanam deva-devasya, darśanam pāpa-nāśanam.
दर्शनं स्वर्ग-सोपानं, दर्शनं मोक्ष-साधनम्................. .१९.	darśanam svarga-sopānam, darśanam mokṣa-sādhanam. ....19.
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम.	anyathā śaraṇam nāsti, tvameva śaraṇam mama.
तस्मात् कारुण्य-भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर!. .... .२०.	tasmāt kāruṇya-bhāvena, rakṣa rakṣa jineśvara!..........................20.
मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः;	maṅgalam bhagavān vīro, maṅgalam gautamaḥ prabhuḥ;
मंगलं स्थूलभद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगलम्. .... .२१.	maṅgalam sthūlabhadrādyā, jaino dharmostu maṅgalam...............21.
नमो दुर्वार-रागादि, वैरि-वार-निवारिणे;	namo durvāra-rāgādi, vairi-vāra-nivāriṇe;
अर्हते योगि-नाथाय, महावीराय तायिने. .... .२२.	arhate yogi-nāthāya, mahāvīrāya tāyine...................................22.
पन्नगे च सुरेन्द्रे च, कौशिके पाद-संस्पृशि;	pannage ca surendre ca, kauśike pāda-sanspṛśi;
निर्विशेष-मनस्काय, श्रीवीर-स्वामिने नमः. .... .२३.	nirviśeṣa-manaskāya, śrīvīra-svāmine namaḥ. ....23.
पूर्णानन्द-मयं महोदय-मयं, कैवल्य-चिद्दृङ्मयम्;	pūrṇānanda-mayam mahodaya-mayam, kaivalya-ciddṛṅmayam;
रूपातीत-मयं स्वरूप-रमणं, स्वाभाविकी-श्रीमयम्.	rūpātīta-mayam svarūpa-ramaṇam, svābhāvikī-śrīmayam.
ज्ञानोद्द्योत-मयं कृपा-रस-मयं, स्याद्वाद-विद्यालयम्;	jñānoddyota-mayam kṛpā-rasa-mayam, syādvāda-vidyālayam;
श्री सिद्धाचल-तीर्थराज-मनिशं, वन्देह-मादीश्वरम्. .... .२४.	śrī siddhācala-tīrtharāja-maniśam, vandeha-mādīśvaram. ....24.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेत्रानन्द-करी भवोदधि-तरी, श्रेयस्तरोर्मंजरी;
श्रीमद्धर्म-महा-नरेन्द्र-नगरी, व्यापल्लता-धूमरी.
हर्षोत्कर्ष-शुभ-प्रभाव-लहरी, राग-द्विषां जित्वरी;
मूर्तिः श्रीजिन-पुंगवस्य भवतु, श्रेयस्करी देहिनाम्. .... .२५.
अद्या-भवत् सफलता नयन-द्वयस्य;
देव! त्वदीय-चरणांबुज-वीक्षणेन.
अद्य त्रिलोक-तिलक! प्रति-भासते मे;
संसार-वारिधि-रयं चुलुक-प्रमाणः........................ .२६.
तुभ्यं नमस्त्रि-भुवनार्ति-हराय नाथ;
तुभ्यं नमः क्षितितला-मल-भूषणाय.
तुभ्यं नमस्त्रि-जगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय. .... .२७.
प्रशम-रस-निमग्नं, दृष्टि-युग्मं प्रसन्नम्;
वदन-कमल-मंकः, कामिनी-संग-शून्यः.
कर-युगमपि यत्ते, शस्त्र-संबंध-वंध्यम्;
तदसि जगति देवो, वीतराग-स्त्वमेव. .... .२८.
अद्य मे सफलं जन्म, अद्य मे सफला क्रिया;

netrānanda-karī bhavodadhi-tarī, śreyastaror-mañjarī;
śrīmad-dharma-mahā-narendra-nagarī, vyāpallatā-dhūmarī.
harṣotkarṣa-śubha-prabhāva-laharī, rāga-dviṣām jitvarī;
mūrtiḥ śrījina-puṅgavasya bhavatu, śreyaskarī dehinām. .... .25.
adyā-bhavat saphalatā nayana-dvayasya;
deva! tvadīya-caraṇāmbuja-vīkṣaṇena.
adya triloka-tilaka! prati-bhāsate me;
sansāra-vāridhi-rayam culuka-pramāṇaḥ. .... .26.
tubhyam namastri-bhuvanārti-harāya nātha;
tubhyam namaḥ kṣititalā-mala-bhūṣaṇāya.
tubhyam namastri-jagataḥ parameśvarāya,
tubhyam namo jina! bhavodadhi-śoṣaṇāya. .... .27.
praśama-rasa-nimagnam, dṛṣṭi-yugmam prasannam;
vadana-kamala-maṅkaḥ, kāminī-saṅga-śūnya:.
kara-yugamapi yatte, śastra-sambandha-vandhyam;
tadasi jagati devo, vītarāga-stvameva. .... .28.
adya me saphalam janma, adya me saphalā kriyā;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अद्य मे सफलं गात्रं, जिनेंद्र! तव दर्शनात्. .... .२९.
कल्याण-पाद-पारामं, श्रुत-गंगा-हिमाचलम्;
विश्वांभोज-रविं देवं, वंदे श्री-ज्ञात-नन्दनम्. .... .३०.
दर्शनाद् दुरित-ध्वंसी, वंदनाद् वांछित-प्रदः;
पूजनात् पूरकः श्रीणां, जिनः साक्षात् सुरद्रुमः. .... .३१.

adya me saphalam gātram, jinendra! tava darśanāt. .... .29.
kalyāṇa-pāda-pārāmam, śruta-gaṅgā-himācalam;
viśvāmbhoja-ravim devam, vande śrī-jñāta-nandanam. .... .30.
darśanād durita-dhvansī, vandanād vāñchita-pradaḥ;
pūjanāt pūrakaḥ śrīṇām, jinaḥ sākṣāt suradrumaḥ. .... .31.

इ. अष्ट प्रकारी पूजा के दोहे

C. Couplets of eight types of worship

१. जल पूजा के दोहे

1. Couplets of worship with water

[अ]
ज्ञान कलश भरी आतमा, समता रस भरपूर.
श्री जिनने नवरावतां, कर्म होये चकचूर. .... .१.
[आ]
जल पूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश.
जल पूजा फल मुज होजो, मागो एम प्रभु पास. .... .१.

[a]
jñāna kalaśa bharī ātamā, samatā rasa bharapūra.
śrī jinane navarāvatāṃ, karma hoye cakacūra. .... .1.
[ā]
jala pūjā jugate karo, mela anādi vināśa.
jala pūjā phala muja hojo, māgo ema prabhu pāsa. .... .1.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[इ]

मेरु शिखर नवरावे हो सुरपति, मेरु शिखर नवरावे;
जन्म काल जिनवरजी को जाणी, पंच-रूप करी आवे. . हो.१.
रत्न प्रमुख अड जातिना कलशा, औषधि चूरण मिलावे;
खीर समुद्र तीर्थोदक आणी, स्नात्र करी गुण गावे. .... हो.२.
एणी पेरे जिन-प्रतिमा को न्हवण करी, बोधि-बीज मानुं वावे;
अनुक्रमे गुण रत्नाकर फरसी, जिन उत्तम पद पावे. ... हो.३.

२.क. चंदन पूजा का दोहा

शीतल गुण जेहमां रह्यो, शीतल प्रभु मुख रंग.
आत्म शीतल करवा भणी, पूजो अरिहा अंग. ....१.

२.ख. नवांग पूजा के दोहे

जल भरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत.

[i]

meru śikhara navarāve ho surapati, meru śikhara navarāve;
janma kāla jinavarajī ko jāṇī, pañca-rūpa karī āve. .... ho.1.
ratna pramukha aḍa jātinā kalaśā, auṣadhi cūraṇa milāve;
khīra samudra tīrthodaka āṇī, snātra karī guṇa gāve.................. ho.2.
eṇī pere jina-pratimā ko nhavaṇa karī, bodhi-bīja mānuṃ vāve;
anukrame guṇa ratnākara pharasī, jina uttama pada pāve. .... ho.3.

2.A. Couplets of worship with sandal

śītala guṇa jehamāṃ rahyo, śītala prabhu mukha raṅga.
ātma śītala karavā bhaṇī, pūjo arihā aṅga. ....1.

2.B. Couplets of worship of navāṅga [nine organs]

jala bharī saṃpuṭa patramāṃ, yugalika nara pūjanta.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऋषभ चरण अंगूठडे, दायक भव-जल अंत. ....१.	ṛṣabha caraṇa aṅgūṭhaḍe, dāyaka bhava-jala anta. ....1.
जानु-बले काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश-विदेश.	jānu-bale kāussagga rahyā, vicaryā deśa-videśa.
खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश. ....२.	khaḍā◌ khaḍā◌ kevala lahyu◌, pūjo jānu nareśa. ....2.
लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी-दान.	lokāntika vacane karī, varasyā varasī-dāna.
कर कांडे प्रभु-पूजना, पूजो भवि बहु-मान...................३.	kara kāṇḍe prabhu-pūjanā, pūjo bhavi bahu-māna. ....3.
मान गयुं दोय अंसथी, देखी वीर्य अनन्त.	māna gayu◌ doya aṃsathī, dekhī vīrya ananta.
भुजा-बले भव-जल तर्या, पूजो खंध महंत...................४.	bhujā-bale bhava-jala taryā, pūjo khandha mahanta........................4.
सिद्ध-शिला गुण ऊजली, लोकांते भगवंत.	siddha-śilā guṇa ūjalī, lokānte bhagavanta.
वसिया तिणे कारण भवि, शिर-शिखा पूजंत...............५.	vasiyā tiṇe kāraṇa bhavi, śira-śikhā pūjanta. ....5.
तीर्थंकर पद पुण्यथी, तिहुअण जन सेवंत.	tīrthaṅkara pada puṇyathī, tihuaṇa jana sevanta.
त्रिभुवन-तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत............६.	tribhuvana-tilaka samā prabhu, bhāla tilaka jayavanta. ....6.
सोल पहोर प्रभु देशना, कंठे विवर वर्तुल.	sola pahora prabhu deśanā, kaṇṭhe vivara vartula.
मधुर ध्वनि सुर नर सुणे, तिणे गले तिलक अमूल. ....७.	madhura dhvani sura nara suṇe, tiṇe gale tilaka amūla. ....7.
हृदय कमल उपशम बले, बाल्यां राग ने रोष.	hṛdaya kamala upaśama bale, bālyā◌ rāga ne roṣa.
हिम दहे वन-खंडने, हृदय तिलक संतोष..................८.	hima dahe vana-khaṇḍane, hṛdaya tilaka santoṣa...........................8.
रत्न-त्रयी गुण ऊजली, सकल सुगुण विसराम.	ratna-trayī guṇa ūjalī, sakala suguṇa visarāma.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाभि-कमलनी पूजना, करतां अविचल धाम. ....९.
उपदेशक नव तत्त्वना, तिणे नव अंग जिणंद.
पूजो बहुविध रागथी, कहे शुभ-वीर मुणिंद. ....१०.

nābhi-kamalanī pūjanā, karatāṃ avicala dhāma..............................9.
upadeśaka nava tattvanā, tiṇe nava aṅga jiṇanda.
pūjo bahuvidha rāgathī, kahe śubha-vīra muṇinda. ....10.

३. पुष्प पूजा का दोहा

3. Couplets of worship with flowers

सुरभि अखंड कुसुम ग्रही, पूजो गत संताप.
सुमजंतु भव्य ज परे, करीये समकित छाप.................१.

surabhi akhaṇḍa kusuma grahī, pūjo gata santāpa.
sumajantu bhavya ja pare, karīye samakita chāpa..........................1.

४. धूप पूजा का दोहा

4. Couplets of worship with incense

[अ]

ध्यान घटा प्रगटावीये, वाम नयन जिन धूप.
मिच्छत दुर्गन्ध दूर टले, प्रगटे आत्म स्वरूप. ....१.

[a]

dhyāna ghaṭā pragaṭāvīye, vāma nayana jina dhūpa.
micchata durgandha dūra ṭale, pragaṭe ātma svarūpa. ....1.

[आ]

अमे धूपनी पूजा करीए रे, ओ मन-मान्या मोहनजी;

[ā]

ame dhūpanī pūjā karīe re, o mana-mānyā mohanajī;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमे धूप-घटा अनुसरीए रे, ओ मन...
नहीं कोइ तमारी तोले रे, ओ मन...
प्रभु अंते छे शरण तमारुं रे, ओ मन... ....१.

ame dhūpa-ghaṭā anusarīe re, o mana...
nahīṃ koi tamārī tole re, o mana...
prabhu aṃte che śaraṇa tamāruṃ re, o mana... ....1.

५.क. दीपक पूजा का दोहा

5.A. Couplets of worship with lamp

द्रव्य दीप सु-विवेकथी, करतां दुःख होय फोक.
भाव प्रदीप प्रगट हुए, भासित लोका-लोक.................१.

dravya dīpa su-vivekathī, karatāṃ duḥkha hoya phoka.
bhāva pradīpa pragaṭa hue, bhāsita lokā-loka. ....1.

५.ख. चामर वींझने का दोहा

5.B. Couplets of swinging cāmara

बे बाजु चामर ढाले, एक आगल वज्र उलाले;
जइ मेरु धरी उत्संगे, इंद्र चोसठ मलीआ रंगे.
प्रभुजीनुं मुखडुं जोवा, भवो भवनां पातिक खोवा. ....१.

be bāju cāmara ḍhāle, eka āgala vajra ulāle;
jai meru dharī utsaṃge, iṃdra cosaṭha malīā raṃge.
prabhujīnuṃ mukhaḍuṃ jovā, bhavo bhavanāṃ pātika khovā. ....1.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५.ग. दर्पण पूजा का दोहा

प्रभु दर्शन करवा भणी, दर्पण पूजा विशाल.
आत्म दर्पणथी जुए, दर्शन होय ततकाल..................१.

६.क. अक्षत पूजा का दोहा

शुद्ध अखंड अक्षत ग्रही, नन्दावर्त विशाल.
पूरी प्रभु सन्मुख रहो, टाली सकल जंजाल. ....१.

६.ख. स्वस्तिक [साथिये] के दोहे

दर्शन ज्ञान चारित्रना, आराधनथी सार.
सिद्धशिलानी उपरे, हो मुज वास श्री कार. ....१.
अक्षत पूजा करतां थकां, सफल करूं अवतार.
फल मांगु प्रभु आगले, तार तार मुज तार..................२.

5.C. Couplet of worship with mirror

prabhu darśana karavā bhaṇī, darpaṇa pūjā viśāla.
ātma darpaṇathī jue, darśana hoya tatakāla. ....1.

6.A. Couplets of worship with akṣata [whole rice grain]

śuddha akhaṇḍa akṣata grahī, nandāvarta viśāla.
pūrī prabhu sanmukha raho, ṭālī sakala jañjāla...............................1.

6.B. Couplets of swastik

darśana jñāna cāritranā, ārādhanathī sāra.
siddhaśilānī upare, ho muja vāsa śrī kāra..1.
akṣata pūjā karatāṃ thakāṃ, saphala karūṃ avatāra.
phala māṃgu prabhu āgale, tāra tāra muja tāra. ....2.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सांसारिक फल मागीने, रडवड्यो बहु संसार.
अष्ट कर्म निवारवा, मागुं मोक्ष फल सार. ....३.
चिहुं गति भ्रमण संसारमां, जन्म मरण जंजाल.
पंचम-गति विण जीव ने, सुख नहीं त्रिहुं काल. ....४.

७. नैवेद्य पूजा का दोहा

अणाहारी पद में कर्यां, विग्गह गइय अनन्त.
दूर करी ते दीजिये, अणाहारी शिव सन्त. ....१.

८. फल पूजा का दोहा

इन्द्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग.
पुरुषोत्तम पूजी करी, मागे शिव-फल त्याग. ....१.

sānsārika phala māgīne, raḍavaḍyo bahu sansāra.
aṣṭa karma nivāravā, māgu◌ mokṣa phala sāra. ....3.
cihu◌ gati bhramaṇa sansāramā◌, janma maraṇa jañjāla.
pañcama-gati viṇa jīva ne, sukha nahī◌ trihu◌ kāla. ....4.

7. Couplets of worship with naivedya

aṇāhārī pada me◌ karyā◌, viggaha gaiya ananta.
dūra karī te dījiye, aṇāhārī śiva santa. ....1.

8. Couplets of worship with fruits

indrādika pūjā bhaṇī, phala lāve dharī rāga.
puruṣottama pūjī karī, māge śiva-phala tyāga. ....1.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चैत्यवन्दनादि का संग्रह

सकल-कुशल-वल्ली

सकल-कुशल-वल्ली-पुष्करावर्त्त-मेघो,
दुरित-तिमिर-भानुः कल्प-वृक्षोपमानः.
भव-जल-निधि-पोतः सर्व संपत्ति-हेतुः,
स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः. ....१.

परमात्मा का चैत्यवंदन

परमेसर! परमातमा!, पावन! परमिट्ठ!
जय जग गुरु! देवाधि-देव!, नयणे में दिट्ठ!. ....१.
अचल-अकल अविकार सार, करुणा-रस-सिंधु.
जगती जन आधार एक, निष्कारण बंधु. ....२.
गुण अनंत प्रभु ताहरा, किमहि कह्या न जाय.
राम प्रभु जिन-ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय. ....३.

Collection of caityavandana etc.

sakala-kuśala-vallī

sakala-kuśala-vallī-puṣkarāvartta-megho,
durita-timira-bhānuḥ kalpa-vṛkṣopamānaḥ.
bhava-jala-nidhi-potaḥ sarva sampatti-hetuḥ,
sa bhavatu satatam vaḥ śreyase śāntināthaḥ. ....1.

paramātmā caityavandana

paramesara! paramātamā!, pāvana! paramiṭṭha!
jaya jaga guru! devādhi-deva!, nayaṇe meṁ diṭṭha!. ....1.
acala-akala avikāra sāra, karuṇā-rasa-sindhu.
jagatī jana ādhāra eka, niṣkāraṇa bandhu. ....2.
guṇa ananta prabhu tāharā, kimahi kahyā na jāya.
rāma prabhu jina-dhyānathī, cidānanda sukha thāya. ....3.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंच परमेष्ठि चैत्यवंदन

बार गुण अरिहन्त देव, प्रणमीजे भावे.
सिद्ध आठ गुण समरतां, दुःख-दोहग जावे. .... १.
आचारज गुण छत्रीश, पचवीश उवज्झाय.
सत्तावीश गुण साधुना, जपतां शिवसुख थाय. .... २.
अष्टोत्तर-शत गुण मली, एम समरो नवकार.
धीर विमल पण्डित तणो, नय प्रणमे नित सार. .... ३.

सीमंधर जिन दोहे

अनंत चोवीशी जिन नमुं, सिद्ध अनंती कोड.
केवल-धर मुगते गया, वंदुं बे कर जोड. .... १.
जे चारित्रे निर्मला, जे पंचानन सिंह.
विषय कषायने गंजिआ, ते प्रणमुं निश दिन. .... २.
बे कोडी केवल-धरा, विहरमान जिन वीश.
सहस कोडी युगल नमुं, साधु नमुं निश दिश. .... ३.

pañca parameṣṭhi caityavandana

bāra guṇa arihanta deva, praṇamīje bhāve.
siddha āṭha guṇa samaratā◌, duḥkha-dohaga jāve. .... 1.
ācāraja guṇa chatrīśa, pacavīśa uvajjhāya.
sattāvīśa guṇa sādhunā, japatā◌ śivasukha thāya. .... 2.
aṣṭottara-śata guṇa malī, ema samaro navakāra.
dhīra vimala paṇḍita taṇo, naya praṇame nita sāra. .... 3.

Couplets of sīmandhara jina

ananta covīśī jina namu◌, siddha anantī koḍa.
kevala-dhara mugate gayā, vandu◌ be kara joḍa. .... 1.
je cāritre nirmalā, je pañcānana si◌ha.
viṣaya kaṣāyane gañjiā, te praṇamu◌ niśa dina. .... 2.
be koḍī kevala-dharā, viharamāna jina vīśa.
sahasa koḍī yugala namu◌, sādhu namu◌ niśa diśa. .... 3.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

रंक तणी परे रडवड्यो, नधणियो निरधार;
श्री सीमंधर साहिबा, तुम विण इणे संसार. .... .४.
वृषभ लंछन चरणमां, कंचन वरणी काय.
चोत्रीश अतिशय शोभता, वंदुं सदा तुम पाय. .... .५.
महाविदेहमां श्री सीमंधर स्वामी, नित्य वंदु प्रभात;
त्रिकरण वली त्रियोगथी, जपुं अहर्निश जाप. .... .६.
भरत क्षेत्रमां हुं रहुं, आप रहो छो विमुख;
ध्यान लोह चुंबक परे, करी दृष्टि सन्मुख. .... .७.

सीमंधर जिन चैत्यवंदन

श्री सीमंधर जगधणी, आ भरते आवो;
करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो. .... .१.
सकल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ;
भवोभव हुं छुं ताहरो, नहीं मेलुं हवे साथ. .... .२.
सयल संग छंडी करी, चारित्र लेईशुं,
पाय तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरीशुं. .... .३.
ए अलजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधर देव;

raṅka taṇī pare raḍavaḍyo, nadhaṇiyo niradhāra;
śrī sīmandhara sāhibā, tuma viṇa iṇe sansāra. .... .4.
vṛṣabha lañchana caraṇamā◌, kañcana varaṇī kāya.
cotrīśa atiśaya śobhatā, vandu◌ sadā tuma pāya. .... .5.
mahāvidehamā◌ śrī sīmandhara svāmī, nitya vandu prabhāta;
trikaraṇa valī triyogathī, japu◌ aharniśa jāpa. .... .6.
bharata kṣetramā◌ hu◌ rahu◌, āpa raho cho vimukha;
dhyāna loha cumbaka pare, karī dṛṣṭi sanmukha. .... .7.

sīmandhara jina caityavandana

śrī sīmandhara jagadhaṇī, ā bharate āvo;
karuṇāvanta karuṇā karī, amane vandāvo. .... .1.
sakala bhakta tume dhaṇī, jo hove ama nātha;
bhavobhava hu◌ chu◌ tāharo, nahī◌ melu◌ have sātha. .... .2.
sayala saṅga chaṇḍī karī, cāritra leīśu◌,
pāya tumārā sevīne, śivaramaṇī varīśu◌. .... .3.
e alajo mujane ghaṇo e, pūro sīmandhara deva;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव. ....४.
कर जोडीने विनवुं ए, सामो रही ईशान;
भाव जिनेश्वर भाणने, देजो समकित दान. ....५.

सीमंधर जिन चैत्यवंदन

वंदुं जिनवर विहरमान, सीमंधर स्वामी.
केवल कमला कांत दांत, करुणा रस धामी...................१.
कंचन गिरि सम देह कांत, वृषभ लंछन पाय.
चोराशी लख पूर्व आयु, सेवित सुर राय. ....२.
छट्ठ भत्त संयम लियो ए, पुंडरीकिणी भाण.
प्रभु द्यो दरिशन संपदा, कारण परम कल्याण..................३.

सीमंधर जिन स्तवन

सुणो चंदाजी!, सीमंधर परमातम पासे जाजो;
मुज विनतडी प्रेम धरीने, एणी पेरे तुम संभलावजो.

ihā thakī hu vinavu, avadhāro muja seva. ....4.
kara jodīne vinavu e, sāmo rahī īśāna;
bhāva jineśvara bhāṇane, dejo samakita dāna......................................5.

sīmandhara jina caityavandana

vandu jinavara viharamāna, sīmandhara svāmī.
kevala kamalā kānta dānta, karuṇā rasa dhāmī. ....1.
kañcana giri sama deha kānta, vṛṣabha lañchana pāya.
corāśī lakha pūrva āyu, sevita sura rāya. ....2.
chaṭṭha bhatta saṃyama liyo e, puṇḍarīkiṇī bhāṇa.
prabhu dyo dariśana sampadā, kāraṇa parama kalyāṇa. ....3.

sīmandhara jina stavana

suṇo candājī!, sīmandhara paramātama pāse jājo;
muja vinataḍī prema dharīne, eṇī pere tuma sambhalāvajo.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे त्रण भुवननो नायक छे, जस चोसठ इन्द्र पायक छे;
नाण-दरिसण जेहने खायक छे, ... सुणो.१.
जेनी कंचन वरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे;
पुंडरीगिणी नगरीनो राया छे, ... सुणो.२.
बार पर्षदा मांही विराजे छे, जस चोत्रीस अतिशय छाजे छे;
गुण पांत्रीश वाणीए गाजे छे, ... सुणो.३.
भवि-जनने जे पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतल गुण सोहे छे;
रूप देखी भविजन मोहे छे, ... सुणो.४.
तुम सेवा करवा रसियो छुं, पण भरतमां दूरे वसियो छुं;
महा मोह-राय कर फसियो छुं, ... सुणो.५.
पण साहिब चित्तमां धरियो छे, तुम आणा खडग कर ग्रहीयो छे;
तो कांइक मुजथी डरियो छे, ... सुणो.६.
जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो, कहे पद्म-विजय थाउं शूरो;
तो वाधे मुज मन अति नूरो, ... सुणो.७.

सीमंधर जिन स्तवन

तारी मूरतिए मन मोह्युं रे, मनना मोहनीया;

je traṇa bhuvanano nāyaka che, jasa cosaṭha indra pāyaka che;
nāṇa-darisaṇa jehane khāyaka che, ... suṇo.1.
jenī kañcana varaṇī kāyā che, jasa dhorī lañchana pāyā che;
puṇḍarīgiṇī nagarīno rāyā che, ... suṇo.2.
bāra parṣadā mā̃hī virāje che, jasa cotrīsa atiśaya chāje che;
guṇa pāntrīśa vāṇīe gāje che, ... suṇo.3.
bhavi-janane je paḍibohe che, tuma adhika śītala guṇa sohe che;
rūpa dekhī bhavijana mohe che, ... suṇo.4.
tuma sevā karavā rasiyo chũ, paṇa bharatamā̃ dūre vasiyo chũ;
mahā moha-rāya kara phasiyo chũ, ... suṇo.5.
paṇa sāhiba cittamā̃ dhariyo che, tuma āṇā khaḍaga kara grahīyo che;
to kā̃ika mujathī ḍariyo che, ... suṇo.6.
jina uttama pūnṭha have pūro, kahe padma-vijaya thāũ śūro;
to vādhe muja mana ati nūro, ... suṇo.7.

sīmandhara jina stavana

tārī mūratie mana mohyũ re, mananā mohanīyā;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तारी सूरतिए जग सोह्युं रे, जगना जीवनीया.
तुम जोतां सवि दुरमति विसरी, दिन रातडी नवि जाणी;
प्रभु गुण गण सांकलशुं बांध्युं, चंचल चित्तडुं ताणी रे. ... मनना.१.
पहेलां तो एक केवल हरखे, हेजालु थइ हलियो;
गुण जाणीने रूपे मिलियो, अभ्यंतर जइ भलियो रे. .... मनना.२.
वीतराग इम जस निसुणीने, रागी राग धरेह;
आप अरूपी राग निमित्ते, दास अरूप करेह. .... मनना.३.
श्री सीमंधर तुं जगबन्धु, सुंदर ताहरी वाणी;
मंदर भूधर अधिक धीरज धर, वन्दे ते धन्य प्राणी रे. ... मनना.४.
श्री श्रेयांस नरेसर नंदन, चंदन शीतल वाणी;
सत्यकी माता वृषभ लंछन प्रभु, ज्ञान विमल गुणखाणी रे.मनना.५.

सीमंधर जिन स्तुति

श्री सीमन्धर जिनवर!, सुखकर साहिब देव!
अरिहंत सकलनी, भाव धरी करूं सेव!
सकलागम-पारग, गणधर-भाषित वाणी;
जयवंती आणा, ज्ञान-विमल गुण खाणी. .... .१.

tārī sūratie jaga sohyu◌ re, jaganā jīvanīyā.
tuma jotā◌ savi duramati visarī, dina rātaḍī navi jāṇī;
prabhu guṇa gaṇa sāṅkalaśu◌ bāndhyu◌, cañcala cittaḍu◌ tāṇī re. .. mananā.1.
pahelā◌ to eka kevala harakhe, hejālu thai haliyo;
guṇa jāṇīne rūpe miliyo, abhyantara jai bhaliyo re. .... mananā.2.
vītarāga ima jasa nisuṇīne, rāgī rāga dhareha;
āpa arūpī rāga nimitte, dāsa arūpa kareha. .... mananā.3.
śrī sīmandhara tu◌ jagabandhu, sundara tāharī vāṇī;
mandara bhūdhara adhika dhīraja dhara, vande te dhanya prāṇī re. . mananā.4.
śrī śreyānsa naresara nandana, candana śītala vāṇī;
satyakī mātā vṛṣabha lañchana prabhu, jñāna vimala guṇakhāṇī re. . mananā.5.

sīmandhara jina stuti

śrī sīmandhara jinavara!, sukhakara sāhiba deva!
arihanta sakalanī, bhāva dharī karū◌ seva!
sakalāgama-pāraga, gaṇadhara-bhāṣita vāṇī;
jayavantī āṇā, jñāna-vimala guṇa khāṇī. ....1.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीमंधर जिन स्तुति

श्री सीमंधर मुजने व्हाला, आज सफल सुविहाणुं जी;
त्रिगडे तेजे तपता जिनवर, मुज त्रुठ्या हुं जाणुं जी.
केवल कमला केलि करंता, कुलमंडण कुलदीवो जी;
लाख चोराशी पूरव आयु, रुक्मिणी-वर घणुं जीवो जी. .... .१.

सिद्धाचल तीर्थ के दोहे

सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोझार.
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदुं वार हजार. .... .१.
जगमां तीरथ दोय वडा, शत्रुंजय गिरनार.
एक गढ ऋषभ समोसर्या, एक गढ नेम-कुमार. .... .२.
शत्रुंजय समो तीरथ नहीं, ऋषभ समो नहीं देव.
गौतम सरखा गुरु नहीं, वली वली वंदुं तेह. .... .३.
एकेकुं डगलुं भरे, शत्रुंजय सामुं जेह.
ऋषभ कहे भव कोडनां, कर्म खपावे तेह. .... .४.

sīmaṉdhara jina stuti

śrī sīmaṉdhara mujane vhālā, āja saphala suvihāṇuṃ jī;
trigaḍe teje tapatā jinavara, muja truṭhyā huṃ jāṇuṃ jī.
kevala kamalā keli karaṃtā, kulamaṉḍaṇa kuladīvo jī;
lākha corāśī pūrava āyu, rukmiṇī-vara ghaṇuṃ jīvo jī. .... .1.

Couplets of siddhācala tīrtha.

siddhācala samaruṃ sadā, soraṭha deśa mojhāra.
manuṣya janma pāmī karī, vaṉduṃ vāra hajāra. .... .1.
jagamāṃ tīratha doya vaḍā, śatruñjaya giranāra.
eka gaḍha ṛṣabha samosaryā, eka gaḍha nema-kumāra. .... .2.
śatruñjaya samo tīratha nahīṃ, ṛṣabha samo nahīṃ deva.
gautama sarakhā guru nahīṃ, valī valī vaṉduṃ teha. .... .3.
ekekuṃ ḍagaluṃ bhare, śatruñjaya sāmuṃ jeha.
ṛṣabha kahe bhava koḍanāṃ, karma khapāve teha. .... .4.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शत्रुंजी नदीए नाहीने, मुख बांधी मुख-कोश.
देव युगादि पूजिए, आणी मन संतोष. ....५.
सोरठ देशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार.
शत्रुंजी नदी नाह्यो नहीं, तेनो एले गयो अवतार. ....६.
सिद्धाचल सिद्धि वर्या, ग्रही मुनि-लिंग अनंत.
आगे अनंता सिद्धशे, पूजो भवि भगवंत. ....७.
शत्रुंजय गिरि मंडणो, मरुदेवीनो नंद;
युगला धर्म निवारको, नमो युगादि जिणंद. ....८.
नेम विना त्रेवीश प्रभु, आव्या विमल गिरींद;
भावि चोवीशी आवशे, पद्म-नाभादि जिणंद. ....९.
प्राये ए गिरि शाश्वतो, महिमानो नहि पार;
ऋषभ जिणंद समोसर्या, पूर्व नवाणुं वार. ....१०.
डुंगर चढवा दोह्यला, ऊतरतां नहि वार;
श्री आदीश्वर पूजतां, हइडे हरख न माय. ....११.

śatruñjī nadīe nāhīne, mukha bāndhī mukha-kośa.
deva yugādi pūjie, āṇī mana santoṣa. ....5.
soraṭha deśamāṃ sañcaryo, na caḍhyo gaḍha giranāra.
śatruñjī nadī nāhyo nahīṃ, teno ele gayo avatāra. ....6.
siddhācala siddhi varyā, grahī muni-liṅga ananta.
āge anantā siddhaśe, pūjo bhavi bhagavanta. ....7.
śatruñjaya giri maṇḍaṇo, marudevīno nanda;
yugalā dharma nivārako, namo yugādi jiṇanda. ....8.
nema vinā trevīśa prabhu, āvyā vimala girinda;
bhāvi covīśī āvaśe, padma-nābhādi jiṇanda. ....9.
prāye e giri śāśvato, mahimāno nahi pāra;
ṛṣabha jiṇanda samosaryā, pūrva navāṇuṃ vāra. ....10.
duṅgara caḍhavā dohyalā, ūtaratāṃ nahi vāra;
śrī ādīśvara pūjatāṃ, haiḍe harakha na māya. ....11.

सिद्धाचल तीर्थ चैत्यवंदन

श्री शत्रुंजय सिद्ध-क्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे.

siddhācala tīrtha caityavandana

śrī śatruñjaya siddha-kṣetra, dīṭhe durgati vāre.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाव धरीने जे चढे, तेने भव-पार उतारे. ....१.
अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय.
पूर्व नवाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय. ....२.
सूरज-कुंड सोहामणो, कवड जक्ष अभिराम.
नाभिराया-कुल-मंडणो, जिनवर करूं प्रणाम. ....३.

सिद्धाचल तीर्थ चैत्यवंदन

जय! जय! नाभि नरिंद नंद, सिद्धाचल मंडण;
जय! जय! प्रथम जिणंद चंद, भव-दुःख विहंडण. ....१.
जय! जय! साधु सूरिंद वृंद, वंदिअ परमेसर;
जय! जय! जगदानंद कंद, श्री ऋषभ जिनेसर. ....२.
अमृत सम जिन धर्मनो ए, दायक जगमां जाण;
तुज पद पंकज प्रीतधर, निश-दिन नमत कल्याण............३.

bhāva dharīne je caḍhe, tene bhava-pāra utāre. ....1.
ananta siddhano eha ṭhāma, sakala tīrthano rāya.
pūrva navāṇu◌ ṛṣabhadeva, jyā◌ ṭhaviyā prabhu pāya. ....2.
sūraja-kuṇḍa sohāmaṇo, kavaḍa jakṣa abhirāma.
nābhirāyā-kula-maṇḍaṇo, jinavara karū◌ praṇāma. ....3.

siddhācala tīrtha caityavandana

jaya! jaya! nābhi narinda nanda, siddhācala maṇḍaṇa;
jaya! jaya! prathama jiṇanda canda, bhava-duḥkha vihaṇḍaṇa. ....1.
jaya! jaya! sādhu sūrinda vṛnda, vandia paramesara;
jaya! jaya! jagadānanda kanda, śrī ṛṣabha jinesara. ....2.
amṛta sama jina dharmano e, dāyaka jagamā◌ jāṇa;
tuja pada paṅkaja prītadhara, niśa-dina namata kalyāṇa. ....3.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्धाचल तीर्थ स्तवन

विमलाचल नितु वंदीए, कीजे एहनी सेवा.
मानुं हाथ ए धर्मनो, शिव-तरु-फल लेवा. .... विमला.१.
उज्ज्वल जिन-गृह-मंडली, तिहां दीपे उत्तंगा.
मानुं हिमगिर-विभ्रमे, आई अंबर-गंगा. .... विमला.२.
कोइ अनेरुं जग नहीं, ए तीरथ तोले.
एम श्रीमुख हरि आगले, श्री सीमन्धर बोले. .... विमला.३.
जे सघलां तीरथ कर्या, जात्रा-फल कहीए.
तेहथी ए गिरि भेटतां, शत-गणुं फल लहीए. .... विमला.४.
जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वन्दे.
सुजस विजय संपद लहे, ते नर चिर नन्दे. .... विमला.५.

siddhācala tīrtha stavana

vimalācala nitu vandīe, kīje ehanī sevā.
mānuṃ hātha e dharmano, śiva-taru-phala levā. ....vimalā.1.
ujjvala jina-gṛha-maṇḍalī, tihāṃ dīpe uttaṅgā.
mānuṃ himagira-vibhrame, āī ambara-gaṅgā. ....vimalā.2.
koi aneruṃ jaga nahīṃ, e tīratha tole.
ema śrīmukha hari āgale, śrī sīmandhara bole. ....vimalā.3.
je saghalāṃ tīratha karyā, jātrā-phala kahīe.
tehathī e giri bheṭatāṃ, śata-gaṇuṃ phala lahīe. ....vimalā.4.
janama saphala hoya tehano, je e giri vande.
sujasa vijaya sampada lahe, te nara cira nande. ....vimalā.5.

सिद्धाचल तीर्थ स्तवन

जात्रा नवाणुं करीए विमलगिरि, जात्रा नवाणुं करीए;
पूरव नवाणुं वार शत्रुंजय गिरि, ऋषभ जिणंद समोसरीए.विमल.१.

siddhācala tīrtha stavana

jātrā navāṇuṃ karīe vimalagiri, jātrā navāṇuṃ karīe;
pūrava navāṇuṃ vāra śatruñjaya giri, ṛṣabha jiṇanda samosarīe...vimala.1.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोडि सहस भव पातक तूटे, शत्रुंजा सामो डग भरीये. . विमल.२.
सात छट्ठ दोय अट्ठम तपस्या, करी चढीये गिरिवरीये. विमल.३.
पुण्डरीक पद जपीए मन हरखे, अध्यवसाय शुभ धरीये. विमल.४.
पापी अभवि नजरे न देखे, हिंसक पण उद्धरीये. .... विमल.५.
भूमि संथारो ने नारीतणो संग, दूर थकी परिहरीये. ..... विमल.६.
सचित परिहारी ने एकल आहारी, गुरु साथे पद चरीये. विमल.७.
पडिक्कमणा दोय विधिशुं करीये, पाप-पडल विखरीये. .. विमल.८.
कलिकाले ए तीरथ मोहटुं, प्रवहण जिम भरदरीये. ..... विमल.९.
उत्तम ए गिरिवर सेवंतां, पद्म कहे भव तरीये. .... विमल.१०.

सिद्धाचल तीर्थ स्तुति

श्री शत्रुंजय आदि जिन आव्या, पूरव नवाणुं वारजी;
अनंत लाभ इहां जिनवर जाणी, समोसर्या निरधारजी.
विमल गिरिवर महिमा मोटो, सिद्धाचल इणे ठामजी;
कांकरे कांकरे अनंता सिद्ध्या, एकसो आठ गिरि नामजी. .... .१.

koḍi sahasa bhava pātaka tūṭe, śatruñjā sāmo ḍaga bharīye. ....vimala.2.
sāta chaṭṭha doya aṭṭhama tapasyā, karī caḍhīye girivarīye. ....vimala.3.
puṇḍarīka pada japīe mana harakhe,adhyavasāya śubha dharīye.vimala.4.
pāpī abhavi najare na dekhe, hiṃsaka paṇa uddharīye. ....vimala.5.
bhūmi santhāro ne nārītaṇo saṅga, dūra thakī pariharīye. ....vimala.6.
sacita parihārī ne ekala āhārī, guru sāthe pada carīye. ....vimala.7.
paḍikkamaṇā doya vidhiśuṃ karīye, pāpa-paḍala vikharīye. ....vimala.8.
kalikāle e tīratha mohaṭuṃ, pravahaṇa jima bharadarīye. ....vimala.9.
uttama e girivara sevaṃtāṃ, padma kahe bhava tarīye. ....vimala.10.

siddhācala tīrtha stuti

śrī śatruñjaya ādi jina āvyā, pūrava navāṇuṃ vārajī;
ananta lābha ihāṃ jinavara jāṇī, samosaryā niradhārajī.
vimala girivara mahimā moṭo, siddhācala iṇe ṭhāmajī;
kāṅkare kāṅkare anantā siddhyā, ekaso āṭha giri nāmajī. ....1.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्धाचल तीर्थ स्तुति

पुंडरीक गिरि महिमा, आगममां प्रसिद्ध;
विमलाचल भेटी, लहीए अविचल ऋद्ध.
पंचमी गति पहोंता, मुनिवर कोडाकोड;
इणे तीरथे आवी, कर्म विपाक विछोड. ....१.

ऋषभ जिन चैत्यवंदन

आदिदेव अलवेसरु, विनीतानो राय;
नाभिराया कुल मंडणो, मरुदेवा माय. ....१.
पांचसें धनुषनी देहडी, प्रभुजी परम दयाल;
चोरासी लख पूर्वनुं, जस आयु विशाल. ....२.
वृषभ लंछन जिन वृषभ-धरुए, उत्तम गुणमणी खाण;
तस पद पद्म सेवन थकी, लहीए अविचल ठाण. ....३.

siddhācala tīrtha stuti

puṇḍarīka giri mahimā, āgamamāṃ prasiddha;
vimalācala bheṭī, lahīe avicala ṛddha.
pañcamī gati pahoṃtā, munivara koḍākoḍa;
iṇe tīrathe āvī, karma vipāka vichoḍa. ....1.

ṛṣabha jina caityavandana

ādideva alavesaru, vinītāno rāya;
nābhirāyā kula maṇḍaṇo, marudevā māya. ....1.
pāñcaseṃ dhanuṣanī dehaḍī, prabhujī parama dayāla;
corāsī lakha pūrvanuṃ, jasa āyu viśāla. ....2.
vṛṣabha lañchana jina vṛṣabha-dharue, uttama guṇamaṇī khāṇa;
tasa pada padma sevana thakī, lahīe avicala ṭhāṇa. ....3.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऋषभ जिन चैत्यवंदन

आदि देव अरिहंत नमुं, धनुष पांचसें काया;
नहीं काम क्रोध मान, मृषा नहीं माया..........................१.
नहीं राग नहीं द्वेष, नाम निरंजन ताहरुं;
वदन दीठुं विशाल तिहां, सवि पाप गयुं माहरूं. ....२.
नामे हुं निर्मल थयो, जपुं जाप जिनवर तणो;
कवि ऋषभ एम उच्चरे, आदि देव महिमा घणो...............३.

ऋषभ जिन स्तवन

जग जीवन जग वालहो, मरुदेवीनो नंद लाल रे;
मुख दीठे सुख ऊपजे, दरिशन अतिहि आनंद लाल रे.... जग.१.
आंखडी अंबुज पांखडी, अष्टमी शशी सम भाल लाल रे;
वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिहि रसाल लाल रे...... जग.२.
लक्षण अंगे विराजतां, अडहिय सहस उदार लाल रे;
रेखा कर चरणादिके, अभ्यन्तर नहि पार लाल रे......... जग.३.

ṛṣabha jina caityavandana

ādi deva arihanta namu◌, dhanuṣa pāñcase◌ kāyā;
nahi◌ kāma krodha māna, mṛṣā nahi◌ māyā. ....1.
nahi◌ rāga nahi◌ dveṣa, nāma nirañjana tāharu◌;
vadana dithu◌ viśāla tihā◌, savi pāpa gayu◌ māharū◌. ....2.
nāme hu◌ nirmala thayo, japu◌ jāpa jinavara taṇo;
kavi ṛṣabha ema uccare, ādi deva mahimā ghaṇo. ....3.

ṛṣabha jina stavana

jaga jīvana jaga vālaho, marudevīno nanda lāla re;
mukha diṭhe sukha ūpaje, dariśana atihi ānanda lāla re.................. jaga.1.
ankhaḍi ambuja pankhaḍi, aṣtami śaśi sama bhāla lāla re;
vadana te śārada candalo, vāṇi atihi rasāla lāla re. .... jaga.2.
lakṣaṇa ange virājatā◌, aḍahiya sahasa udāra lāla re;
rekhā kara caraṇādike, abhyantara nahi pāra lāla re. .... jaga.3.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन्द्र चन्द्र रवि गिरितणा, गुण लई घडियुं अंग लाल रे;
भाग्य किहां थकी आवियुं?, अचरिज एह उतंग लाल रे... जग.४.
गुण सघला अंगीकर्या, दूर कर्या सवि दोष लाल रे;
वाचक यश विजये थुण्यो, देजो सुखनो पोष लाल रे..... जग.५.

indra candra ravi giritaṇā, guṇa laī ghaḍiyuṃ aṅga lāla re;
bhāgya kihāṃ thakī āviyuṃ?, acarija eha utaṅga lāla re. .... jaga.4.
guṇa saghalā aṅgīkaryā, dūra karyā savi doṣa lāla re;
vācaka yaśa vijaye thuṇyo, dejo sukhano poṣa lāla re. .... jaga.5.

ऋषभ जिन स्तवन

प्रथम जिनेसर प्रणमीए, जास सुगन्धी रे काय.
कल्पवृक्ष परे, तास इन्द्राणी नयन जे, भृंग परे लपटाय. .प्रथम.१.
रोग-उरग तुज नवि नडे, अमृत जेह आस्वाद.
तेहथी प्रतिहत तेह, मानुं कोइ नवि करे,
जगमां तुमशुं रे वाद. .प्रथम.२.
वगर धोइ तुज निरमली, काया कंचन वान.
नहीं प्रस्वेद लगार, तारे तुं तेहने, जेह धरे ताहरुं ध्यान. .प्रथम.३.
राग गयो तुज मन थकी, तेहमां चित्र न कोय.
रुधिर आमिषथी, राग गयो तुज जन्मथी,
दूध-सहोदर होय...प्रथम.४.

rṣabha jina stavana

prathama jinesara praṇamīe, jāsa sugandhī re kāya.
kalpavṛkṣa pare, tāsa indrāṇī nayana je, bhṛṅga pare lapaṭāya.prathama.1.
roga-uraga tuja navi naḍe, amṛta jeha āsvāda.
tehathī pratihata teha, mānuṃ koi navi kare,
jagamāṃ tumaśuṃ re vāda. .. prathama.2.
vagara dhoi tuja niramalī, kāyā kañcana vāna.
nahīṃ prasveda lagāra, tāre tuṃ tehane, jeha dhare tāharuṃ dhyāna. prathama.3.
rāga gayo tuja mana thakī, tehamāṃ citra na koya.
rudhira āmiṣathī, rāga gayo tuja janmathī,
dūdha-sahodara hoya. .. prathama.4.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्वासोच्छ्वास कमल समो, तुज लोकोत्तर वात.
देखे न आहार निहार, चरम चक्षु धणी,
एहवा तुज अवदात. .प्रथम.५.
चार अतिशय मूलथी, ओगणीश देवना कीध.
कर्म खप्याथी अगियार, चोत्रीश एम अतिशया,
समवायांगे प्रसिद्ध....प्रथम.६.
जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग.
पद्म विजय कहे, एह समय प्रभु पालजो,
जेम थाऊं अक्षय अभंग. ..प्रथम.७.

śvāsocchvāsa kamala samo, tuja lokottara vāta.
dekhe na āhāra nihāra, carama cakṣu dhaṇī,
ehavā tuja avadāta. .. prathama.5.
cāra atiśaya mūlathī, ogaṇīśa devanā kīdha.
karma khapyāthī agiyāra, cotrīśa ema atiśayā,
samavāyāṅge prasiddha. .. prathama.6.
jina uttama guṇa gāvatāṃ, guṇa āve nija aṅga.
padma vijaya kahe, eha samaya prabhu pālajo,
jema thāūṃ akṣaya abhaṅga. .. prathama.7.

ऋषभ जिन स्तुति

ṛṣabha jina stuti

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया;
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया.
जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया;
केवल सिरी राया, मोक्ष नगरे सिधाया. ....१.
सवि जिन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी;

ādi jinavara rāyā, jāsa sovanna kāyā;
marudevī māyā, dhorī lañchana pāyā.
jagata sthiti nipāyā, śuddha cāritra pāyā;
kevala sirī rāyā, mokṣa nagare sidhāyā. ....1.
savi jina sukhakārī, moha mithyā nivārī;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुरगति दुःख भारी, शोक संताप वारी.
श्रेणी क्षपक सुधारी, केवलानंत धारी;
नमीए नरनारी, जेह विश्वोपकारी. .... .२.
समवसरण बेठा, लागे जे जिनजी मिट्ठा;
करे गणप पइट्ठा, इन्द्र चन्द्रादि दिट्ठा.
द्वादशांगी वरिट्ठा, गुंथतां टाले रिट्ठा;
भविजन होय हिट्ठा, देखी पुण्ये गरिट्ठा. .... .३.
सुर समकितवंता, जेह रिद्धे महंता;
जेह सज्जन संता, टालीए मुज चिंता.
जिनवर सेवंता, विघ्न वारे दुरंता;
जिन उत्तम थुणंता, पद्मने सुख दिंता. .... .४.

duragati duḥkha bhārī, śoka santāpa vārī.
śreṇī kṣapaka sudhārī, kevalānanta dhārī;
namīe naranārī, jeha viśvopakārī. .... .2.
samavasaraṇa beṭhā, lāge je jinajī miṭṭhā;
kare gaṇapa paiṭṭhā, indra candrādi diṭṭhā.
dvādaśāṅgī variṭṭhā, gunthatāṃ ṭāle riṭṭhā;
bhavijana hoya hiṭṭhā, dekhī puṇye gariṭṭhā. .... .3.
sura samakitavantā, jeha riddhe mahantā;
jeha sajjana santā, ṭālīe muja cintā.
jinavara sevantā, vighna vāre durantā;
jina uttama thuṇantā, padmane sukha dintā. .... .4.

ऋषभ जिन स्तुति

युगादि-पुरुषेन्द्राय, युगादि-स्थिति-हेतवे!
युगादि-शुद्धधर्माय, युगादि-मुनये नमः .... .१.
ऋषभाद्या वर्द्धमानान्ता, जिनेन्द्रा दश पञ्च च;
त्रिकवर्ग-समायुक्ता दिशन्तु परमां गतिम् .... .२.

ṛṣabha jina stuti

yugādi-puruṣendrāya, yugādi-sthiti-hetave!
yugādi-śuddhadharmāya, yugādi-munaye namaḥ .... .1.
ṛṣabhādyā varddhamānāntā, jinendrā daśa pañca ca;
trikavarga-samāyuktā diśantu paramām gatim .... .2.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जयति जिनोक्तो धर्मः, षड्-जीव-निकाय-वत्सलो नित्यम्;
चूडामणिरिव लोके, विभाति यः सर्व-धर्माणाम् . ... ३.
सा नो भवतु सुप्रीता, निर्द्धूत-कनक-प्रभा;
मृगेन्द्र-वाहना नित्यं, कूष्माण्डी कमलेक्षणा . ... ४.

शांति जिन चैत्यवंदन

शान्ति जिनेसर सोलमा, अचिरा-सुत वन्दो.
विश्वसेन-कुल-नभमणि, भविजन-सुख-कन्दो. .... १.
मृग लंछन जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण.
हत्थिणाउर-नयरी-धणी, प्रभुजी गुण मणि-खाण. .... २.
चालीश धनुषनी देहडी, सम-चउरस संठाण.
वदन पद्म ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण. .... ३.

शांति जिन चैत्यवंदन

दर्शन ज्ञान चारित्रथी, साची शांति थावे;

jayati jinokto dharmaḥ, ṣaḍ-jīva-nikāya-vatsalo nityam;
cūḍāmaṇiriva loke, vibhāti yaḥ sarva-dharmāṇām . ... 3.
sā no bhavatu suprītā, nirddhūta-kanaka-prabhā;
mṛgendra-vāhanā nityam, kūṣmāṇḍī kamalekṣaṇā . ... 4.

śānti jina caityavandana

śānti jinesara solamā, acirā-suta vando.
viśvasena-kula-nabhamaṇi, bhavijana-sukha-kando. .... 1.
mṛga lañchana jina āukhuṃ, lākha varasa pramāṇa.
hatthiṇāura-nayarī-dhaṇī, prabhujī guṇa maṇi-khāṇa. .... 2.
cālīśa dhanuṣanī dehaḍī, sama-caurasa saṇṭhāṇa.
vadana padma jyuṃ candalo, dīṭhe parama kalyāṇa. .... 3.

śānti jina caityavandana

darśana jñāna cāritrathī, sācī śānti thāve;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शांतिनाथ शांति वर्या, रत्नत्रयी स्वभावे. ....१.
तिरोभाव निज शांतिनो, अविर्भाव जे थाय;
शुद्धातम शांति प्रभु, स्वयं मुक्तिपद पाय. ....२.
बाह्य शांतिनो अंत छे ए, आतम शांति अनंत;
अनुभवे जे आत्ममां, प्रभुपद पामे संत. ....३.

शांति जिन स्तवन

हम मगन भये प्रभु ध्यान में,
बिसर गई दुविधा तन-मन की, अचिरा सुत गुणगान में. ...हम.१.
हरिहर ब्रह्मा पुरन्दर की ऋद्धि, आवत नहीं कोउ मान में;
चिदानन्द की मोज मची है, समता रस के पान में.........हम.२.
इतने दिन तुम नाही पिछान्यो, मेरो जन्म गमायो अजान में;
अब तो अधिकारी होई बैठे, प्रभु गुण अखय खजान में.....हम.३.
गयी दीनता अब सब ही हमारी, प्रभु तुझ समकित दान में;
प्रभु गुण अनुभव रस के आगे, आवत नहीं कोई मान में. ..हम.४.
जिनहीं पाया तिनही छिपाया, न कहे कोउ के कान में;

śāntinātha śānti varyā, ratnatrayī svabhāve. ....1.
tirobhāva nija śāntino, avirbhāva je thāya;
śuddhātama śānti prabhu, svayam muktipada pāya. ....2.
bāhya śāntino anta che e, ātama śānti ananta;
anubhave je ātmamā◌, prabhupada pāme santa. ....3.

śānti jina stavana

hama magana bhaye prabhu dhyāna me◌,
bisara gaī duvidhā tana-mana kī, acirā suta guṇagāna me◌.......... hama.1.
harihara brahmā purandara kī ṛddhi, āvata nahī◌ kou māna me◌;
cidānanda kī moja macī hai, samatā rasa ke pāna me◌................ hama.2.
itane dina tuma nāhī pichānyo, mero janma gamāyo ajāna me◌;
aba to adhikārī hoī baiṭhe, prabhu guṇa akhaya khajāna me◌. ...... hama.3.
gayī dīnatā aba saba hī hamārī, prabhu tujha samakita dāna me◌;
prabhu guṇa anubhava rasa ke āge, āvata nahī◌ koī māna me◌... hama.4.
jinahī◌ pāyā tinahī chipāyā, na kahe kou ke kāna me◌;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताली लागी जब अनुभव की, तब समझे कोइ सान में. ....हम.५.
प्रभु गुण अनुभव चन्द्रहास ज्यूं, सो तो न रहे म्यान में;
वाचक जस कहे मोह महा अरि, जीत लिओ हे मेदान में. .हम.६.

शांति जिन स्तवन

शांति जिनेश्वर साचो साहिब, शांति करण इण कलिमें;
हो जिनजी तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें,
ध्यान धरुं पल पलमें साहेबजी. तुं. ....१.
भवमां भमतां में दरिशन पायो, आशा पूरो एक पलमें हो. तुं. . .२.
निरमल ज्योत वदन पर सोहे, नीकस्यो ज्युं चंद बादलमें हो. तुं. .३.
मेरो मन तुम साथे लीनो, मीन वसे ज्युं जलमें हो. तुं. ....४.
जिनरंग कहे प्रभु शांति जिनेश्वर, दीठोजी देव सकलमें हो. तुं. .५.

शांति जिन स्तुति

वंदो जिन शांति, जास सोवन कांति;

tālī lāgī jaba anubhava kī, taba samajhe koi sāna me◌. .... hama.5.
prabhu guṇa anubhava candrahāsa jyū◌, so to na rahe myāna me◌;
vācaka jasa kahe moha mahā ari, jīta lio he medāna me◌. .... hama.6.

śānti jina stavana

śānti jineśvara sāco sāhiba, śānti karaṇa iṇa kalime◌;
ho jinajī tu◌ merā maname◌ tu◌ merā dilame◌,
dhyāna dharu◌ pala palame◌ sāhebajī. tu◌. ....1.
bhavamā◌ bhamatā◌ me◌ dariśana pāyo, āśā pūro eka palame◌ ho. tu◌. .2.
niramala jyota vadana para sohe, nīkasyo jyu◌ canda bādalame◌ ho. tu◌. .3.
mero mana tuma sāthe līno, mīna vase jyu◌ jalame◌ ho. tu◌. ....4.
jinaraṅga kahe prabhu śānti jineśvara, dīṭhojī deva sakalame◌ ho. tu◌. . .5.

śānti jina stuti

vando jina śānti, jāsa sovana kānti;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टाले भव भ्रान्ति, मोह मिथ्यात्व शांति.
द्रव्यभाव अरि पांति, तास करता निकांति;
धरता मन खांति, शोक संताप वांति. .... .१.
दोय जिनवर नीला, दोय धोला सुशीला;
दोय रक्त रंगीला, काढता कर्म कीला.
न करे कोई हीला, दोय श्याम सलीला;
सोल स्वामीजी पीला, आपजो मोक्षलीला. .... .२.
जिनवरनी वाणी, मोहवल्ली कृपाणी;
सूत्रे देवाणी, साधुने योग्य जाणी.
अरथे गूंथाणी, देव मनुष्य प्राणी;
प्रणमो हित आणी, मोक्षनी ए निसाणी. .... .३.
वाघेसरी देवी, हर्ष हियडे धरेवी;
जिनवर पाय सेवी, सार श्रद्धा वरेवी.
जे नित्य समरेवी, दुःख तेहना हरेवी;
पद्‌म विजय कहेवी, भव्य संताप खेवी. .... .४.

ṭāle bhava bhrānti, moha mithyātva śānti.
dravyabhāva ari pānti, tāsa karatā nikānti;
dharatā mana khānti, śoka santāpa vānti. .... .1.
doya jinavara nīlā, doya dholā suśīlā;
doya rakta raṅgīlā, kāḍhatā karma kīlā.
na kare koī hīlā, doya śyāma salīlā;
sola svāmījī pīlā, āpajo mokṣalīlā. .... .2.
jinavaranī vāṇī, mohavallī kṛpāṇī;
sūtre devāṇī, sādhune yogya jāṇī.
arathe gūnthāṇī, deva manuṣya prāṇī;
praṇamo hita āṇī, mokṣanī e nisāṇī. .... .3.
vāghesarī devī, harṣa hiyaḍe dharevī;
jinavara pāya sevī, sāra śraddhā varevī.
je nitya samarevī, duḥkha tehanā harevī;
padma vijaya kahevī, bhavya santāpa khevī. .... .4.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शांति जिन स्तुति

सुकृत-कमल-नीरं, कर्म्म-गोसार-सीरं,
मृग-रुचिर-शरीरं, लब्ध-संसार-तीरम्;
मदन-दहन-वीरं, विश्व-कोटीरहीरं,
श्रयतु गिरिप-धीरं, शान्तिदेवं गभीरम्. .... .१.
जलधि-मधुर-नादा, निस्सदा निर्विषादाः,
परम-पदर-मादा-स्त्यक्त-सर्व-प्रमादाः;
दलित-पर-विवादा, भुक्त-दत्त-प्रसादा,
मद-कज-शशि-पादाः, पान्तु जैनेन्द्र-पादाः. .... .२.
दुरित-तिमिर-सूरं, दुर्म्मता-स्कन्द-शूरं,
कुहठ-फणि-मयूरं, स्वादुजिद् हारहूकम्;
अशिव-गमन-तूरं, तत्त्व-भाजा-मदूरं,
शृणुत वचन-पूरं, चार्हतां कर्ण-पूरम्. .... .३.
जिन-पनवन-सारा, नश्चमत्कार-काराः,
श्रुत-मित-सुर-वाराः, कर्म-पाथोधि-तारा;
शुभ-तरु-जल-धाराः, सारा-सादृश्य-धारा,
ददतु सपरिवारा, मङ्गलं सूपकाराः. .... .४.

śānti jina stuti

sukṛta-kamala-nīram, karmma-gosāra-sīram,
mṛga-rucira-śarīram, labdha-sansāra-tīram;
madana-dahana-vīram, viśva-koṭi-rahīram,
śrayatu giripa-dhīram, śānti-devam gabhīram. .... .1.
jaladhi-madhura-nādā, nissadā nirviṣādāḥ,
parama-padar-amādā-styakta-sarva-pramādāḥ;
dalita-para-vivādā, bhukta-datta-prasādā,
mada-kaja-śaśi-pādāḥ, pāntu jainendra-pādāḥ. .... .2.
durita-timira-sūram, durmmatā-skanda-śūram,
kuhaṭha-phaṇi-mayūram, svādujid hārahūkam;
aśiva-gamana-tūram, tattva-bhājā-madūram,
śṛṇuta vacana-pūram, cārhatām karṇa-pūram. .... .3.
jina-panavana-sārā, naścamatkāra-kārāḥ,
śruta-mita-sura-vārāḥ, karma-pāthodhi-tārā;
śubha-taru-jala-dhārāḥ, sārā-sādṛśya-dhārā,
dadatu saparivārā, maṅgalam sūpakārāḥ. .... .4.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेमि जिन चैत्यवंदन

नेमिनाथ बावीसमा, शिवादेवी माय;
समुद्र विजय पृथ्वीपति, जे प्रभुना ताय. .... .१.
दश धनुषनी देहडी, आयु वर्ष हजार;
शंख लंछन धर स्वामीजी, तजी राजुल नार. .... .२.
सौरीपुरी नयरी भली ए, ब्रह्मचारी भगवान;
जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां अविचल ठान. .... .३.

नेमि जिन चैत्यवंदन

श्री नेमिनाथ बावीशमा, अपराजितथी आय.
सौरीपुरमां अवतर्या, कन्या राशि सुहाय. .... .१.
योनि वाघ विवेकने, राक्षस गण अद्भुत.
रिख चित्रा चोपन दिन, मौनवंता मनपूत. .... .२.
वेजस हेठे केवली ए, पंचसया छत्रीस.
वाचं-यमशुं शिववर्या, वीर नमे निशदिश. .... .३.

nemi jina caityavandana

neminātha bāvīsamā, śivādevī māya;
samudra vijaya pṛthvīpati, je prabhunā tāya. .... .1.
daśa dhanuṣanī dehaḍī, āyu varṣa hajāra;
śaṅkha lañchana dhara svāmījī, tajī rājula nāra. .... .2.
saurīpurī nayarī bhalī e, brahmacārī bhagavāna;
jina uttama pada padmane, namatāṃ avicala ṭhāna. .... .3.

nemi jina caityavandana

śrī neminātha bāvīśamā, aparājitathī āya.
saurīpuramāṃ avataryā, kanyā rāśi suhāya. .... .1.
yoni vāgha vivekane, rākṣasa gaṇa adbhuta.
rikha citrā copana dina, maunavantā manapūta. .... .2.
vejasa heṭhe kevalī e, pañcasayā chatrīsa.
vācam-yamaśuṃ śivavaryā, vīra name niśadiśa. .... .3.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेमि जिन स्तवन

परमातम पूरण कला, पूरण गुण हो पूरण जन आश.
पूरण दृष्टि निहालिये, चित्त धरिये हो अमची अरदास. ...परमा.१.
सर्व देश घाती सहुं, अघाती हो करी घात दयाल.
वास कियो शिव-मंदिरे, मोहे विसरी हो भमतो जगजाल. परमा.२.
जग-तारक पदवी लही, तार्या सही हो अपराधी अपार.
तात कहो मोहे तारतां, किम कीनी हो इण अवसर वार..परमा.३.
मोह महामद छाकथी, हुं छकियो हो नहीं शुद्धि लगार.
उचित सही इण अवसरे, सेवकनी हो करवी संभाल. ....परमा.४.
मोह गये जो तारशो, तिण वेला हो किहां तुम उपगार.
सुख वेला सज्जन घणा, दुःख वेला हो विरला संसार. ..परमा.५.
पण तुम दरिसण जोगथी, थयो हृदये हो अनुभव परकाश.
अनुभव अभ्यासी करे, दुखदायी हो सहु कर्म-विनाश. ....परमा.६.
कर्म कलंक निवारी ने, निजरूपे हो रमे रमता राम.
लहत अपूरव भावथी, इण रीते हो तुम पद विशराम. ....परमा.७.
त्रिकरण जोगे विनवुं, सुखदायी हो शिवादेवीना नंद.
चिदानंद मन में सदा, तुमे आवो हो प्रभु नाण दिणंद. ...परमा.८.

nemi jina stavana

paramātama pūraṇa kalā, pūraṇa guṇa ho pūraṇa jana āśa.
pūraṇa dṛṣṭi nihāliye, citta dhariye ho amacī aradāsa.................paramā.1.
sarva deśa ghātī sahuṁ, aghātī ho karī ghāta dayāla.
vāsa kiyo śiva-mandire, mohe visarī ho bhamato jagajāla. .... paramā.2.
jaga-tāraka padavī lahī, tāryā sahī ho aparādhī apāra.
tāta kaho mohe tāratāṁ, kima kīnī ho iṇa avasara vāra. .... paramā.3.
moha mahāmada chākathī, huṁ chakiyo ho nahīṁ śuddhi lagāra.
ucita sahī iṇa avasare, sevakanī ho karavī sambhāla. .... paramā.4.
moha gaye jo tāraśo, tiṇa velā ho kihāṁ tuma upagāra.
sukha velā sajjana ghaṇā, duḥkha velā ho viralā sansāra. .... paramā.5.
paṇa tuma darisaṇa jogathī, thayo hṛdaye ho anubhava parakāśa.
anubhava abhyāsī kare, dukhadāyī ho sahu karma-vināśa. .... paramā.6.
karma kalaṅka nivārī ne, nijarūpe ho rame ramatā rāma.
lahata apūrava bhāvathī, iṇa rīte ho tuma pada viśarāma.......... paramā.7.
trikaraṇa joge vinavuṁ, sukhadāyī ho śivādevīnā nanda.
cidānanda mana meṁ sadā, tume āvo ho prabhu nāṇa diṇanda. paramā.8.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेमि जिन स्तुति

सुर असुर वंदित पाय-पंकज, मयण-मल्ल-मक्षोभितं;
घन सुघन श्याम शरीर सुंदर, शंख लंछन शोभितम्.
शिवादेवि नंदन त्रिजग-वंदन, भविक कमल दिनेश्वरं;
गिरनार गिरिवर शिखर वंदुं, श्री नेमिनाथ जिनेश्वरम्. ....१.
अष्टापदे श्री आदि जिनवर, वीर पावापुरि वरु;
वासुपुज्य चंपा नयर सिद्ध्या, नेमि रैवत गिरिवरु.
सम्मेत शिखरे वीस जिनवर, मुक्ति पहोता मुनिवरु;
चोवीस जिनवर नित्य वंदुं, सयल संघ सुहंकरु. ....२.
अगियार अंग उपांग बार, दश पयन्ना जाणीये;
छ छेद ग्रंथ पसत्थ-सत्था, चार मूल वखाणीये.
अनुयोग द्वार उदार, नंदीसूत्र जिनमत गाईये;
वृत्ति चूर्णि भाष्य, पिस्तालीश आगम ध्याईये. ....३.
दोय दिशि बालक दोय जेहने, सदा भवियण सुखकरु;
दुख हरि अंबालुंब सुंदर, दुरित दोहग अपहरुं.
गिरनार मंडण नेमि जिनवर, चरण-पंकज सेविये;
श्री संघ सुप्रसन्न मंगल, करो ते अंबा देवीए. ....४.

nemi jina stuti

sura asura vandita pāya-pankaja, mayaṇa-malla-makṣobhitam;
ghana sughana śyāma śarīra sundara, śankha lanchana śobhitam.
śivādevi nandana trijaga-vandana, bhavika kamala dineśvaram;
giranāra girivara śikhara vandu◌, śrī nemināthа jineśvaram. ....1.
aṣṭāpade śrī ādi jinavara, vīra pāvāpuri varu;
vāsupujya campā nayara siddhyā, nemi raivata girivaru.
sammeta śikhare vīsa jinavara, mukti pahotā munivaru;
covīsa jinavara nitya vandu◌, sayala sangha suhankaru. ....2.
agiyāra anga upānga bāra, daśa payannā jāṇīye;
cha cheda grantha pasattha-satthā, cāra mūla vakhāṇīye.
anuyoga dvāra udāra, nandīsūtra jinamata gāīye;
vṛtti cūrṇi bhāṣya, pistālīśa āgama dhyāīye. ....3.
doya diśi bālaka doya jehane, sadā bhaviyaṇa sukhakaru;
dukha hari ambālumba sundara, durita dohaga apaharu◌.
giranāra maṇḍaṇa nemi jinavara, caraṇa-pankaja seviye;
śrī sangha suprasanna mangala, karo te ambā devīe. ....4.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्व जिन चैत्यवंदन

आश पूरे प्रभु पासजी, तोडे भव पास.
वामा माता जनमीया, अहि-लंछन जास. .... १.
अश्व सेन सुत सुख-करु, नव हाथनी काया.
काशी देश वाणारसी, पुण्ये प्रभु आया. .... २.
एक सो वरसनुं आउखुं ए, पाली पार्श्व-कुमार.
पद्म कहे मुगते गया, नमतां सुख निरधार. .... ३.

पार्श्व जिन चैत्यवंदन

जय चिंतामणी पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन-स्वामी;
अष्ट-कर्म रिपु जीतीने, पंचम गति पामी. .... १.
प्रभु नामे आनंद-कंद, सुख संपत्ति लहीये;
प्रभु नामे भव भव तणां, पातक सब दहीये. .... २.
ॐ ह्रीं वर्ण जोडी करी ए, जपीए पारस नाम;
विष अमृत थइ परिणमे, लहीए अविचल ठाम. .... ३.

pārśva jina caityavandana

āśa pūre prabhu pāsajī, toḍe bhava pāsa.
vāmā mātā janamīyā, ahi-lañchana jāsa. .... 1.
aśva sena suta sukha-karu, nava hāthanī kāyā.
kāśī deśa vāṇārasī, puṇye prabhu āyā. .... 2.
eka so varasanu̐ āukhu̐ e, pālī pārśva-kumāra.
padma kahe mugate gayā, namatā̐ sukha niradhāra. .... 3.

pārśva jina caityavandana

jaya cintāmaṇī pārśvanātha, jaya tribhuvana-svāmī;
aṣṭa-karma ripu jītīne, pañcama gati pāmī. .... 1.
prabhu nāme ānanda-kanda, sukha sampatti lahīye;
prabhu nāme bhava bhava taṇā̐, pātaka saba dahīye. .... 2.
oṃ hrīṃ varṇa joḍī karī e, japīe pārasa nāma;
viṣa amṛta thai pariṇame, lahīe avicala ṭhāma. .... 3.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्व जिन स्तवन

रातां जेवां फूलडां ने, शामल जेवो रंग.
आज तारी आंगीनो कांइ, रूडो बन्यो रंग.
प्यारा पासजी हो लाल, दीन दयाल मुजने नयने निहाल. .....१.
जोगीवाड़े जागतो ने, मातो धिंगड मल्ल.
शामलो सोहामणो कांइ, जीत्या आठे मल्ल. ....प्यारा.२.
तुं छे मारो साहिबो ने, हुं छुं तारो दास.
आशा पूरो दासनी कांइ, सांभली अरदास................प्यारा.३.
देव सघला दीठा तेमां, एक तुं अवल्ल.
लाखेणुं छे लटकुं तारुं, देखी रीझे दिल्ल. ....प्यारा.४.
कोइ नमे पीरने, ने कोइ नमे राम.
उदय-रत्न कहे प्रभु, मारे तुमशुं काम. ....प्यारा.५.

pārśva jina stavana

rātā̃ jevā̃ phūlaḍā̃ ne, śāmala jevo raṅga.
āja tārī āṅgīno kā̃i, rūḍo banyo raṅga.
pyārā pāsajī ho lāla, dīna dayāla mujane nayane nihāla. ....1.
jogīvāḍe jāgato ne, māto dhiṅgaḍa malla.
śāmalo sohāmaṇo kā̃i, jītyā āṭhe malla. .... pyārā.2.
tũ che māro sāhibo ne, hũ chũ tāro dāsa.
āśā pūro dāsanī kā̃i, sāmbhalī aradāsa. .... pyārā.3.
deva saghalā dīṭhā temā̃, eka tũ avalla.
lākheṇũ che laṭakũ tārũ, dekhī rījhe dilla. .... pyārā.4.
koi name pīrane, ne koi name rāma.
udaya-ratna kahe prabhu, māre tumaśũ kāma. .... pyārā.5.

पार्श्व जिन स्तवन

अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो;

pārśva jina stavana

antarajāmī suṇa alavesara, mahimā trijaga tumāro;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सांभलीने आव्यो हुं तीरे, जन्म मरण दुःख वारो.
सेवक अर्ज करेछे राज, अमने शिवसुख आपो. ....१.
सहुकोनां मनवंछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो;
एहवुं बिरुद छे राज तमारुं, केम राखो छो दूरे. .... सेवक.२.
सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो;
करुणा सागर केम कहेवाशो, जो उपगार न करशो..... सेवक.३.
लटपटनुं हवे काम नहीं छे, प्रत्यक्ष दरिशन दीजे;
धुंआडे धीजुं नहि साहिब, पेट पड्यां पतीजे. .... सेवक.४.
श्री शंखेश्वर मंडण साहिब, विनतडी अवधारो;
कहे जिनहर्ष मया करी मुजने, भव सागरथी तारो. ..... सेवक.५.

पार्श्व जिन स्तुति

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नर भवनो लाहो लीजिए.
मन वांछित पूरण सुर-तरु, जय वामासुत अलवेसरु...........१.
दोय राता जिनवर अति भला, दोय धोला जिनवर गुण-नीला.
दोय नीला दोय श्यामल कह्या, सोले जिन कंचन-वर्ण लह्या. .२.
आगम ते जिनवर भाखीयो, गणधर ते हइडे राखीयो.

sāmbhalīne āvyo huṁ tīre, janma maraṇa duḥkha vāro.
sevaka arja kareche rāja, amane śivasukha āpo. ....1.
sahukonāṁ manavañchita pūro, cintā sahunī cūro;
ehavuṁ biruda che rāja tamāruṁ, kema rākho cho dūre. ....sevaka.2.
sevakane valavalato dekhī, manamāṁ mahera na dharaśo;
karuṇā sāgara kema kahevāśo, jo upagāra na karaśo. ....sevaka.3.
laṭapaṭanuṁ have kāma nahīṁ che, pratyakṣa dariśana dīje;
dhuṁāḍe dhījuṁ nahi sāhiba, peṭa paḍyāṁ patīje. ....sevaka.4.
śrī śaṅkheśvara maṇḍaṇa sāhiba, vinataḍī avadhāro;
kahe jinaharṣa mayā karī mujane, bhava sāgarathī tāro. ....sevaka.5.

pārśva jina stuti

śaṅkheśvara pāsajī pūjīe, nara bhavano lāho lījie.
mana vāñchita pūraṇa sura-taru, jaya vāmāsuta alavesaru. ....1.
doya rātā jinavara ati bhalā, doya dholā jinavara guṇa-nīlā.
doya nīlā doya śyāmala kahyā, sole jina kañcana-varṇa lahyā. ....2.
āgama te jinavara bhākhīyo, gaṇadhara te haiḍe rākhīyo.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेहनो रस जेणे चाखीयो, ते हुवो शिव-सुख साखीयो..........३.
धरणेंद्र राय पद्मावती, प्रभु पार्श्व-तणा गुण गावती.
सहु संघना संकट चूरती, नय-विमलनां वांछित पूरती. ....४.

tehano rasa jeṇe cākhīyo, te huvo śiva-sukha sākhīyo. ....3.
dharaṇendra rāya padmāvatī, prabhu pārśva-taṇā guṇa gāvatī.
sahu saṅghanā saṅkaṭa cūratī, naya-vimalanā̃ vāñchita pūratī. ....4.

पार्श्व जिन स्तुति

pārśva jina stuti

भीड भंजन पास प्रभु समरो, अरिहंत अनंतनुं ध्यान धरो;
जिनागम अमृत पान करो, शासन देवी सवि विघ्न हरो. ....१.
[इस गाथा को चार बार बोल सकते हैं.]

bhīḍa bhañjana pāsa prabhu samaro, arihanta anantanuṃ dhyāna dharo;
jināgama amṛta pāna karo, śāsana devī savi vighna haro. ....1.
[This stanza can be uttered four times.]

वीर जिन चैत्यवंदन

vīra jina caityavandana

सिद्धारथ-सुत वंदीए, त्रिशलानो जायो.
क्षत्रिय-कुंडमां अवतर्यो, सुर नर पति गायो. ....१.
मृग-पति लंछन पाउले, सात हाथनी काया.
वहोंतेर वर्षनुं आउखुं, वीर जिनेश्वर राया. ....२.
खीमा-विजय जिन-राजना ए, उत्तम गुण अवदात.

siddhāratha-suta vandīe, triśalāno jāyo.
kṣatriya-kuṇḍamā̃ avataryo, sura nara pati gāyo. ....1.
mṛga-pati lañchana pāule, sāta hāthanī kāyā.
bahoṃtera varṣanuṃ āukhuṃ, vīra jineśvara rāyā. ....2.
khīmā-vijaya jina-rājanā e, uttama guṇa avadāta.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सात बोलथी वर्णव्यो, पद्म विजय विख्यात. ....३.

वीर जिन चैत्यवंदन

प्रभु महावीर जगधणी, परमेश्वर जिनराज;
श्रद्धा भक्ति ज्ञानथी, सार्या सेवक काज. ....१.
काल स्वभाव ते नियति, कर्म ने उद्यम जाण;
पंच कारणे कार्यनी, सिद्धि कथी प्रमाण. ....२.
पुरुषार्थ तेमां कह्यो, कार्य सिद्धि करनार;
शुद्धात्मा महावीर जिन, वंदु वार हजार. ....३.
महावीरने ध्यावतां ए, महावीर आपोआप;
बुद्धि सागर वीरनी, साची अंतर छाप. ....४.

वीर जिन स्तवन

गिरुआ रे गुण तुम तणा, श्री वर्द्धमान जिनराया रे;
सुणतां श्रवणे अमी झरे, मारी निरमल थाये काया रे. ..गिरुआ.१.

sāta bolathī varṇavyo, padma vijaya vikhyāta. ....3.

vīra jina caityavandana

prabhu mahāvīra jagadhaṇī, parameśvara jinarāja;
śraddhā bhakti jñānathī, sāryā sevaka kāja. ....1.
kāla svabhāva te niyati, karma ne udyama jāṇa;
pañca kāraṇe kāryanī, siddhi kathī pramāṇa. ....2.
puruṣārtha temāṃ kahyo, kārya siddhi karanāra;
śuddhātmā mahāvīra jina, vandu vāra hajāra. ....3.
mahāvīrane dhyāvatāṃ e, mahāvīra āpoāpa;
buddhi sāgara vīranī, sācī antara chāpa. ....4.

vīra jina stavana

giruā re guṇa tuma taṇā, śrī varddhamāna jinarāyā re;
suṇatāṃ śravaṇe amī jhare, mārī niramala thāye kāyā re. ....giruā.1.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुम गुणगण गंगाजले, हुं झीली निरमल थाउं रे;	tuma guṇagaṇa gaṅgājale, hu̱ṃ jhīlī niramala thāu̱ṃ re;
अवर न धंधो आदरुं, निशदिन तोरा गुण गाउं रे. .....गिरुआ.२.	avara na dhandho ādaru̱ṃ, niśadina torā guṇa gāu̱ṃ re. .... giruā.2.
झील्या जे गंगाजले, ते छिल्लर जल नवि पेसे रे;	jhīlyā je gaṅgājale, te chillara jala navi pese re;
जे मालती फूले मोहिया, ते बाउल जइ नवि बेसे रे. ...गिरुआ.३.	je mālatī phūle mohiyā, te bāula jai navi bese re. .... giruā.3.
एम अमे तुम गुण गोठशुं, रंगे राच्या ने वली माच्या रे;	ema ame tuma guṇa goṭhaśu̱ṃ, raṅge rācyā ne valī mācyā re;
ते केम पर सुर आदरे?, जे परनारी वश राच्या रे. ....गिरुआ.४.	te kema para sura ādare?, je paranārī vaśa rācyā re. .... giruā.4.
तुं गति तुं मति आशरो, तुं आलंबन मुज प्यारो रे;	tu̱ṃ gati tu̱ṃ mati āśaro, tu̱ṃ ālambana muja pyāro re;
वाचक यश कहे माहरे, तुं जीव जीवन आधारो रे......गिरुआ.५.	vācaka yaśa kahe māhare, tu̱ṃ jīva jīvana ādhāro re. .... giruā.5.

जीरणशेठ भावना / वीर जिन स्तवन

jīraṇaśeṭha bhāvanā / vīra jina stavana

वीर हमणां आवे छे मारे मंदिरीए,मारे मंदिरीए;	vīra hamaṇā̱ṃ āve che māre mandirīe,māre mandirīe;
पाय पडी हुं तो गोद बिछावुं, नित नित विनतडी करीए... वीर.१.	pāya paḍī hu̱ṃ to goda bichāvu̱ṃ, nita nita vinataḍī karīe. .... vīra.1.
स्वजन कुटुंब पुत्रादिक सहुने, हरखे इणी परे उच्चरीए; वीर.	svajana kuṭumba putrādika sahune, harakhe iṇī pare uccarīe; vīra.
जब आंगणे प्रभु वीर पधारे, तव वत्स सन्मुख डग भरीए.. वीर.२.	jaba āṅgaṇe prabhu vīra padhāre, tava vatsa sanmukha ḍaga bharīe. .... vīra.2.
सयणां सुणो प्रभु पडिलाभीजे, तो भवि भव सागर तरीए; वीर.	sayaṇā̱ṃ suṇo prabhu paḍilābhīje, to bhavi bhava sāgara tarīe; vīra.
अप्रति-बद्ध पणे प्रभु वीरजी, घर घर भिक्षाए फरीए. ...... वीर.३.	aprati-baddha paṇe prabhu vīrajī, ghara ghara bhikṣāe pharīe. .... vīra.3.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिनव शेठ तणे घर पारणुं, कीधुं फरता गोचरीए; वीर.
भावना भावता जीरण शेठजी, देव दुंदुभि सुणी चित्त भरीए. वीर.४.
बारमा कल्पनुं बांध्युं आयुष, जिन उत्तम वीर चित्त धरीए; वीर.
तस पद पद्मनी सेवा करतां, स्हेजे शिवसुंदरी वरीए. .... वीर.५.

abhinava śeṭha taṇe ghara pāraṇu̐, kīdhu̐ pharatā gocarīe; vīra.
bhāvanā bhāvatā jīraṇa śeṭhajī, deva dundubhi suṇī citta bharīe...... vīra.4.
bāramā kalpanu̐ bāndhyu̐ āyuṣa, jina uttama vīra citta dharīe; vīra.
tasa pada padmanī sevā karatā̐, saheje śivasundarī varīe............... vīra.5.

वीर जिन स्तुति

जय! जय! भवि हितकर, वीर जिनेश्वर देव;
सुर-नरना नायक, जेहनी सारे सेव;
करुणा रस कंदो, वंदो आणंद आणी,
त्रिशला सुत सुंदर, गुण-मणि केरो खाणी. ....१.
जस पंच कल्याणक, दिवस विशेष सुहावे;
पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे.
ते च्यवन जन्म व्रत, नाण अने निर्वाण;
सवि जिनवर केरां, ए पांचे अहिठाण. ....२.
जिहां पंच समिति युत, पंच महा-व्रत सार;
जेहमां परकाश्या, वली पांचे व्यवहार.

vīra jina stuti

jaya! jaya! bhavi hitakara, vīra jineśvara deva;
sura-naranā nāyaka, jehanī sāre seva;
karuṇā rasa kando, vando āṇanda āṇī,
triśalā suta sundara, guṇa-maṇi kero khāṇī. ....1.
jasa pañca kalyāṇaka, divasa viśeṣa suhāve;
paṇa thāvara nāraka, tehane paṇa sukha thāve.
te cyavana janma vrata, nāṇa ane nirvāṇa;
savi jinavara kerā̐, e pāñce ahiṭhāṇa. ....2.
jihā̐ pañca samiti yuta, pañca mahā-vrata sāra;
jehamā̐ parakāśyā, valī pāñce vyavahāra.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमेष्ठि अरिहंत, नाथ सर्वज्ञ ने पार;
एह पंच पदे लह्यो, आगम अर्थ उदार. ....३.
मातंग सिद्धाइ, देवी जिन-पद सेवी;
दुःख दुरित उपद्रव, जे टाले नितमेवी.
शासन सुखदायी, आइ सुणो अरदाश;
श्री ज्ञान विमल गुण, पूरो वांछित आश. ....४.

वीर जिन स्तुति

नमत त्रिभुवन-सारं जितमारं हारतार-गुणवारम्.
वीरं कान्त-शरीरं गीरिधीरं पाप-मल-नीरम्. ....१.
नम-दम-रवि-सर-मणि-मुकुट-कोटि-तट-घटित-मसृण-नख-मुकुरान्.
जिनराजः शिवभाजः स्मरत त्रैलोक्य-सम्राजः. ....२.
विलसत्-कुबोध-सन्तमस-सञ्चया-पचय-करण-खर-किरण्.
ध्यायत जैन-कृतान्तं नितान्तं ततभव-कृतान्तम्. ....३.
विदलन्-नवीन-सरसीरुह-कृतनिवासा विकास-कमलकरा.
विमलयतु मम मनीषां, हर-हसित-सित-प्रभादेवी. ....४.

paramesṭhi arihanta, nātha sarvajña ne pāra;
eha pañca pade lahyo, āgama artha udāra. ....3.
mātanga siddhāi, devī jina-pada sevī;
duḥkha durita upadrava, je ṭāle nitamevī.
śāsana sukhadāyī, āi suṇo aradāsa;
śrī jñāna vimala guṇa, pūro vāñchita āśa. ....4.

vīra jina stuti

namata tri-bhuvana-sāram jita-māram hāra-tāra-guṇa-vāram.
vīram kānta-śarīram giri-dhīram pāpa-mala-nīram.................................1.
nama-dama-ravi-sara-maṇi-mukuṭa-koṭi-taṭa-ghaṭita-masṛṇa-nakha-mukurān.
jina-rājaḥ śiva-bhājaḥ smarata trailokya-samrājaḥ. ....2.
vilasat-kubodha-santamasa-sañcayā-pacaya-karaṇa-khara-kiraṇ.
dhyāyata jaina-kṛtāntam nitāntam tatabhava-kṛtāntam. ....3.
vidalan-navīna-sarasī-ruha-kṛta-nivāsā vikāsa-kamala-karā.
vimalayatu mama manīṣām, hara-hasita-sita-prabhā-devī. ....4.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर्युषण चैत्यवंदन

पर्व पर्युषण गुण नीलो, नव कल्प विहार;
चार मासान्तर थिर रहे, एहीज अर्थ उदार. ....१.
अषाढ शुदी चउदस थकी, संवत्सरी पचास;
मुनिवर दिन सित्तेरमें, पडिक्कमतां चौमास. ....२.
श्रावक पण समता धरे, करे गुरुना बहुमान;
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभले थई एक तान. ....३.
जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरु भक्ति विशाल;
प्राये अष्ट भवांतरे, वरीये शिव वरमाल. ....४.
दर्पणथी निज रूपनो, जुए सुदृष्टि रूप;
दर्पण अनुभव अर्पणो, ज्ञान रमण मुनि भूप. ....५.
आतम स्वरूप विलोकतां ए, प्रगट्यो मित्र स्वभाव;
राय उदायी खामणां, पर्व पर्युषण दाव. ....६.
नव वखाण पूजी सुणो, शुक्ल चतुर्थी सीमा;
पंचमी दिन वांचे सुणे, होय विराधक नियमा. ....७.
ए नहीं पर्व पंचमी, सर्व समाणी चोथे;
भवभीरू मुनि मानशे, भाख्युं अरिहा नाथे. ....८.

paryuṣaṇa caityavandana

parva paryuṣaṇa guṇa nīlo, nava kalpa vihāra;
cāra māsāntara thira rahe, ehīja artha udāra. ....1.
aṣāḍha śudī caudasa thakī, saṁvatsarī pacāsa;
munivara dina sitterame◌, paḍikkamatā◌ caumāsa. ....2.
śrāvaka paṇa samatā dhare, kare gurunā bahumāna;
kalpasūtra suvihita mukhe, sāṁbhale thaī eka tāna. ....3.
jinavara caitya juhārīye, guru bhakti viśāla;
prāye aṣṭa bhavāntare, varīye śiva varamāla. ....4.
darpaṇathī nija rūpano, jue sudṛṣṭi rūpa;
darpaṇa anubhava arpaṇo, jñāna ramaṇa muni bhūpa. ....5.
ātama svarūpa vilokatā◌ e, pragaṭyo mitra svabhāva;
rāya udāyī khāmaṇā◌, parva paryuṣaṇa dāva. ....6.
nava vakhāṇa pūjī suṇo, śukla caturthī sīmā;
pañcamī dina vāñce suṇe, hoya virādhaka niyamā. ....7.
e nahīṁ parva pañcamī, sarva samāṇī cothe;
bhavabhīrū muni mānaśe, bhākhyu◌ arihā nāthe. ....8.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

श्रुत केवली वयणा सुणी, लही मानव अवतार;
श्री शुभ वीर ने शासने, पाम्या जय जय कार. .... .९.

śruta kevalī vayaṇā suṇī, lahī mānava avatāra;
śrī śubha vīra ne śāsane, pāmyā jaya jaya kāra. .... .9.

पर्युषण पर्व चैत्यवंदन

paryuṣaṇa parva caityavandana

कल्प-तरुवर कल्पसूत्र, पूरे मन वांछित;
कल्पधरे धुरथी सुणो, श्री महावीर चरित. .... .१.
क्षत्रियकुंडे नरपति, सिद्धारथ राय;
राणी त्रिशला तणी कूखे, कंचन सम काय. .... .२.
पुष्पोत्तर वरथी चव्या ए, ऊपज्या पुण्य पवित्र;
चतुरा चौद सुपन लहे, ऊपजे विनय विनीत. .... .३.

kalpa-taruvara kalpasūtra, pūre mana vāñchita;
kalpadhare dhurathī suṇo, śrī mahāvīra carita. .... .1.
kṣatriyakuṇḍe narapati, siddhāratha rāya;
rāṇī triśalā taṇī kūkhe, kañcana sama kāya. .... .2.
puṣpottara varathī cavyā e, ūpajyā puṇya pavitra;
caturā cauda supana lahe, ūpaje vinaya vinīta. .... .3.

पर्युषण पर्व स्तवन

paryuṣaṇa parva stavana

सुणजो साजन संत, पजुसण आव्यां रे;
तमे पुण्य करो पुण्यवंत, भविक मन भाव्यां रे.
वीर जिणेसर अति अलवेसर, वाला मारा परमेसर एम बोले रे;

suṇajo sājana santa, pajusaṇa āvyā̃ re;
tame puṇya karo puṇyavanta, bhavika mana bhāvyā̃ re.
vīra jiṇesara ati alavesara, vālā mārā paramesara ema bole re;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर्व मांहे पजुसण मोटां, अवर न आवे तस तोले रे.... पजुसण.१.
चौपद मांहे जेम केशरी मोटो वाला.., खगमां गरुड ते कहीए रे.
नदी मांहे जेम गंगा मोटी, नगमां मेरु लहिये रे. ...... पजुसण.२.
भूपतिमां भरतेसर भाख्यो वाला.., देव मांहे सुर इंद्र रे.
सकल तीरथ मांहे शेत्रुंजो दाख्यो,
ग्रह-गणमां जेम चंद्र रे. . पजुसण.३.
दशेरा दीवाली ने वली होली वाला.., अखातीज दिवासो रे.
बलेव प्रमुख बहुलां छे बीजां, ए नहि मुक्तिनो वासो रे. पजुसण.४.
ते माटे तमे अमारी पलावो वाला.., अट्ठाइ महोत्सव कीजे रे.
अट्ठम तप अधिकाइए करीने, नर भव लाहो लीजे रे. पजुसण.५.
ढोल ददामा भेरी नफेरी वाला.., कल्पसूत्र ने जगावो रे.
झांझरनो झमकार करीने, गोरीनी टोली मली आवो रे. पजुसण.६.
सोना रुपाने फूलडे वधावो वाला.., कल्पसूत्र ने पूजो रे.
नव वखाण विधिए सांभलतां, पाप मेवासी ध्रुज्यो रे. .. पजुसण.७.
एम अट्ठाई महोत्सव करतां वाला.., बहु जगजन उद्धरिया रे.
विबुध विमल वर सेवक नय कहे,
नवनिधि ऋद्धि सिद्धि वर्या रे... पजुसण.८.

parva māṃhe pajusaṇa moṭāṃ, avara na āve tasa tole re. .... pajusaṇa.1.
caupada māṃhe jema keśarī moṭo vālā.., khagamāṃ garuḍa te kahīe re.
nadī māṃhe jema gaṅgā moṭī, nagamāṃ meru lahiye re. .... pajusaṇa.2.
bhūpatimāṃ bharatesara bhākhyo vālā.., deva māṃhe sura indra re.
sakala tīratha māṃhe śetruñjo dākhyo,
graha-gaṇamāṃ jema candra re. .. pajusaṇa.3.
daśerā dīvālī ne valī holī vālā.., akhātīja divāso re.
baleva pramukha bahulāṃ che bījāṃ, e nahi muktino vāso re... pajusaṇa.4.
te māṭe tame amārī palāvo vālā.., aṭṭhāi mahotsava kīje re.
aṭṭhama tapa adhikāie karīne, nara bhava lāho līje re. .... pajusaṇa.5.
ḍhola dadāmā bherī napherī vālā.., kalpasūtra ne jagāvo re.
jhāñjharano jhamakāra karīne, gorīnī ṭolī malī āvo re. .... pajusaṇa.6.
sonā rūpāne phūlaḍe vadhāvo vālā.., kalpasūtra ne pūjo re.
nava vakhāṇa vidhie sāmbhalatāṃ, pāpa mevāsī dhrujyo re. ... pajusaṇa.7.
ema aṭṭhāī mahotsava karatāṃ vālā.., bahu jagajana uddhariyā re.
vibudha vimala vara sevaka naya kahe,
navanidhi ṛddhi siddhi varyā re. ... pajusaṇa.8.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर्युषण पर्व स्तुति

मणि रचित सिंहासन, बेठा जगदाधार;
पर्युषण केरो, महिमा अगम अपार.
निज मुखथी दाखी, साखी सुरनर वृंद;
ए पर्व पर्वमां, जिम तारामां चन्द. .... .१.
नागकेतुनी पेरे, कल्प साधना कीजे;
व्रत नियम आखडी, गुरुमुख अधिकी लीजे.
दोय भेदे पूजा, दान पंच प्रकार;
कर पडिक्कमणां धर, शियल अखंडित धार. .... .२.
जे त्रिकरण शुद्धे, आराधे नव वार;
भव सात आठ नव, शेष तास संसार.
सहु सूत्र शिरोमणी, कल्पसूत्र सुखकार;
ते श्रवणे सुणीने, सफल करो अवतार. .... .३.
सहु चैत्य जुहारी, खमत खामणा कीजे;
करी साहम्मी वत्सल, कुगति द्वार पट दीजे.
अट्ठाइ महोत्सव, चिदानंद चित्त लाई;

paryuṣaṇa parva stuti

maṇi racita si͏ṁhāsana, beṭhā jagadādhāra;
paryuṣaṇa kero, mahimā agama apāra.
nija mukhathī dākhī, sākhī suranara vṛnda;
e parva parvamāṁ, jima tārāmāṁ canda. .... .1.
nāgaketunī pere, kalpa sādhanā kīje;
vrata niyama ākhaḍī, gurumukha adhikī līje.
doya bhede pūjā, dāna pañca prakāra;
kara paḍikkamaṇāṁ dhara, śiyala akhaṇḍita dhāra. .... .2.
je trikaraṇa śuddhe, ārādhe nava vāra;
bhava sāta āṭha nava, śeṣa tāsa sansāra.
sahu sūtra śiromaṇī, kalpasūtra sukhakāra;
te śravaṇe suṇīne, saphala karo avatāra. .... .3.
sahu caitya juhārī, khamata khāmaṇā kīje;
karī sāhammī vatsala, kugati dvāra paṭa dīje.
aṭṭhāi mahotsava, cidānanda citta lāī;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इम करतां संघने, शासन देव सहाई. .... .४.	ima karatā̃ saṅghane, śāsana deva sahāī. .... .4.
पर्युषण पर्व सज्झाय	**paryuṣaṇa parva sajjhāya**
पर्व पजुसण आवीया, आनंद अंग न माय रे;	parva pajusaṇa āvīyā, ānanda aṅga na māya re;
घर घर उत्सव अति घणां, श्री संघ आवे ने जाय रे. ......पर्व.१.	ghara ghara utsava ati ghaṇā̃, śrī saṅgha āve ne jāya re. .... parva.1.
जीव अमारि पलावीये, कीजिये व्रत पच्चक्खाण रे;	jīva amāri palāvīye, kījiye vrata paccakkhāṇa re;
भाव धरी गुरु वंदीये, सुणीये सूत्र वखाण रे...............पर्व.२.	bhāva dharī guru vandīye, suṇīye sūtra vakhāṇa re. .... parva.2.
आठ दिवस एम पालीये, आरंभनो परिहारो रे;	āṭha divasa ema pālīye, ārambhano parihāro re;
न्हावण धोवण खंडण, लींपण पीसण वारो रे. ....पर्व.३.	nhāvaṇa dhovaṇa khaṇḍaṇa, lī̃paṇa pīsaṇa vāro re. .... parva.3.
शक्ति होय तो पच्चक्खीए, अट्ठाइ अति सारो रे;	śakti hoya to paccakkhīe, aṭṭhāī ati sāro re;
परम भक्ति प्रीते वहोरावीए, साधुने चार आहारो रे. ....पर्व.४.	parama bhakti prīte vahorāvīe, sādhune cāra āhāro re. .... parva.4.
गाय सोहागण सर्व मली, धवल मंगल गीत रे;	gāya sohāgaṇa sarva malī, dhavala maṅgala gīta re;
पकवान्नो करी पोषिये, पारणे साहम्मि मन प्रीतरे. ....पर्व.५.	pakavānno karī poṣiye, pāraṇe sāhammi mana prītare. .... parva.5.
सत्तर भेदी पूजा रची, पूजो श्री जिनराय रे;	sattara bhedī pūjā racī, pūjo śrī jinarāya re;
आगल भावना भावीये, पातक मल धोवाय रे. ....पर्व.६.	āgala bhāvanā bhāvīye, pātaka mala dhovāya re. .... parva.6.
लोच करावे रे साधुजी, बेसे बेसणा मांडी रे;	loca karāve re sādhujī, bese besaṇā mā̃ḍī re;
शिर विलेपन कीजीये, आलस अंगथी छांडी रे. ....पर्व.७.	śira vilepana kījīye, ālasa aṅgathī chā̃ḍī re. .... parva.7.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गज गति चाले चालती, सोहागण नारी ते आवे रे;
कुंकुम चंदन गहुंली, मोतीये चोक पूरावे रे. .... पर्व.८.
रूपा महोर प्रभावना, करीये तव सुखकारी रे;
श्री क्षमा विजय कविरायनो, लघु माणेक विजय जयकारी रे. पर्व.९.

नवपद चैत्यवंदन

श्री सिद्धचक्र आराधीये, आसो चैतर मास.
नव दिन नव आंबिल करी, कीजे ओली खास. ....१.
केशर चंदन घसी घणा, कस्तुरी बरास.
जुगते जिनवर पूजिये, जिम मयणा श्रीपाल. ....२.
पूजा अष्ट प्रकारनी, देव-वंदन त्रण काल.
मंत्र जपो त्रण कालने, गुणणुं दोय हजार. ....३.
कष्ट टल्युं उंबर तणुं, जपतां नवपद ध्यान.
श्री श्रीपाल नरिंद थया, वाध्यो बमणो वान. ....४.
सातसो कोढी सुख लह्या, पाम्या निज आवास.
पुण्ये मुक्ति-वधू वर्या, पाम्या लील विलास. ....५.

gaja gati cāle cālatī, sohāgaṇa nārī te āve re;
kuṅkuma candana gahu◌lī, motīye coka pūrāve re. .... parva.8.
rūpā mahora prabhāvanā, karīye tava sukhakārī re;
śrī kṣamā vijaya kavirāyano, laghu māṇeka vijaya jayakārī re. ...... parva.9.

navapada caityavandana

śrī siddhacakra ārādhīye, āso caitara māsa.
nava dina nava āmbila karī, kīje olī khāsa. ....1.
keśara candana ghasī ghaṇā, kasturī barāsa.
jugate jinavara pūjiye, jima mayaṇā śrīpāla. ....2.
pūjā aṣṭa prakāranī, deva-vandana traṇa kāla.
mantra japo traṇa kālane, guṇaṇu◌ doya hajāra. ....3.
kaṣṭa ṭalyu◌ umbara taṇu◌, japatā◌ navapada dhyāna.
śrī śrīpāla narinda thayā, vādhyo bamaṇo vāna. ....4.
sātaso koḍhī sukha lahyā, pāmyā nija āvāsa.
puṇye mukti-vadhū varyā, pāmyā līla vilāsa. ....5.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवपद स्तवन

नवपद धरजो ध्यान, भवि तुमे नवपद धरजो ध्यान;
ए नवपदनुं ध्यान करतां, पामे जीव विश्राम. .... भवि.१.
अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु सकल गुण खाण; भवि.
दर्शन ज्ञान चारित्र ए उत्तम, तप तपो करी बहुमान. ...... भवि.२.
आसो चैत्रनी सुदि सातमथी, पूनम लगी प्रमाण; भवि.
एम एकाशी आंबिल कीजे, वरस साडा चारनुं मान. ...... भवि.३.
पडिक्कमणां दोय टंकनां कीजे, पडिलेहण बे वार; भवि.
देव वंदन त्रण टंकनां कीजे, देव पूजो त्रिकाल. .... भवि.४.
बार आठ छत्रीश पचवीशनो, सत्तावीश अडसठ सार; भवि.
एकावन सित्तेर पचासनो, काउसग्ग करो सावधान. .... भवि.५.
एक एक पदनुं गणणुं, गणीए दोय हजार; भवि.
एणी विधे जे ए तप आराधे, ते पामे भव पार. .... भवि.६.
कर जोडी सेवक गुणगावे, मोहन गुण मणि माल; भवि.
तास शिष्य मुनि हेम कहे छे, जन्म मरण दुःख वार....... भवि.७.

navapada stavana

navapada dharajo dhyāna, bhavi tume navapada dharajo dhyāna;
e navapadanu◌ dhyāna karatā◌, pāme jīva viśrāma. .... bhavi.1.
arihanta siddha ācāraja pāṭhaka, sādhu sakala guṇa khāṇa; bhavi.
darśana jñāna cāritra e uttama, tapa tapo karī bahumāna. .... bhavi.2.
āso caitranī sudi sātamathī, pūnama lagī pramāṇa; bhavi.
ema ekāśī āmbila kīje, varasa sāḍā cāranu◌ māna....................... bhavi.3.
paḍikkamaṇā◌ doya ṭaṅkanā◌ kīje, paḍilehaṇa be vāra; bhavi.
deva vandana traṇa ṭaṅkanā◌ kīje, deva pūjo trikāla.................... bhavi.4.
bāra āṭha chatrīśa pacavīśano, sattāvīśa aḍasaṭha sāra; bhavi.
ekāvana sittera pacāsano, kāusagga karo sāvadhāna. .... bhavi.5.
eka eka padanu◌ gaṇaṇu◌, gaṇīe doya hajāra; bhavi.
eṇī vidhe je e tapa ārādhe, te pāme bhava pāra. .... bhavi.6.
kara joḍī sevaka guṇagāve, mohana guṇa maṇi māla; bhavi.
tāsa śiṣya muni hema kahe che, janma maraṇa duḥkha vāra. .... bhavi.7.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवपद स्तवन

चौद पूरवनो सार, मंत्र मांहे नवकार;
जपतां जय जय कार, ओ सयरो हृदय धरो नवकार.......... .१.
अडसठ अक्षर घडीओ, चौद रतनसुं जडीओ;
श्रावकने चित्त चडीओ, .. ओ.२.
अक्षर पंच रतन्न, जीवदया सुजतन्न; जे पाले तेने धन्य, ... ओ.३.
नवपद नवसरो हार, नवपद जगमां सार;
नवपद दोहीलो आधार, .. ओ.४.
जे नर नारी जाणशे, ते सुख संपद लहेशे;
सेवकने सुख थाशे, ... ओ.५.
हीर विजयनी वाणी, सुणतां अमिय समाणी;
मोक्ष तणी निरसणी, .. ओ.६.

navapada stavana

cauda pūravano sāra, mantra mā̐he navakāra;
japatā̐ jaya jaya kāra, o sayaro hṛdaya dharo navakāra. ....1.
aḍasaṭha akṣara ghaḍīo, cauda ratanasu̐ jaḍīo;
śrāvakane citta caḍīo, o saya.2.
akṣara pañca ratanna, jīvadayā sujatanna; je pāle tene dhanya, o saya.3.
navapada navasaro hāra, navapada jagamā̐ sāra;
navapada dohīlo ādhāra,o saya.4.
je nara nārī jāṇaśe, te sukha sampada laheśe;
sevakane sukha thāśe,o saya.5.
hīra vijayanī vāṇī, suṇatā̐ amiya samāṇī;
mokṣa taṇī nirasaṇī,o saya.6.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवपद स्तुति

वीर जिनेश्वर अति अलवेसर, गौतम गुणना दरीयाजी;
एक दिन आणा वीरनी लइने, राजगृही संचरीआजी.
श्रेणिक राजा वंदन आव्या, उलट मनमां आणीजी;
पर्षदा आगल बार विराजे, हवे सुणो भवि प्राणीजी. ....१.
मानव भव तुमे पुण्ये पाम्या, श्री सिद्धचक्र आराधोजी;
अरिहंत सिद्ध सूरि उवज्झाया, साधु देखी गुण वाधोजी.
दरशन नाण चारित्र तप कीजे, नवपद ध्यान धरीजेजी;
धुर आसोथी करवां आयंबिल, सुख संपदा पामीजेजी. ....२.
श्रेणिक राय गौतम ने पूछे, स्वामी ए तप केणे कीधोजी?;
नव आयंबिल तप विधिशुं करतां, वांछित सुख केणे लीधोजी?.
मधुर ध्वनि बोल्या श्री गौतम, सांभलो श्रेणिक राय वयणाजी;
रोग गयो ने संपदा पाम्या, श्री श्रीपाल ने मयणाजी. ....३.
रुमझुम करती पाये नेउर, दीसे देवी रूपालीजी;
नाम चक्केसरीने सिद्धाई, आदि वीर जिन वर रखवालीजी.
विघ्न कोड हरे सहु संघना, जे सेवे एना पायजी;
भाण विजय कवि सेवक नय कहे, सान्निध्य करजो मायजी.....४.

navapada stuti

vīra jineśvara ati alavesara, gautama guṇanā darīyājī;
eka dina āṇā vīranī laine, rājagṛhī sañcarīājī.
śreṇika rājā vandana āvyā, ulaṭa manamāṁ āṇījī;
parṣadā āgala cāra virāje, have suṇo bhavi prāṇījī. ....1.
mānava bhava tume puṇye pāmyā, śrī siddhacakra ārādhojī;
arihanta siddha sūri uvajjhāyā, sādhu dekhī guṇa vādhojī.
daraśana nāṇa cāritra tapa kīje, navapada dhyāna dharījejī;
dhura āsothī karavāṁ āyambila, sukha sampadā pāmījejī. ....2.
śreṇika rāya gautama ne pūche, svāmī e tapa keṇe kīdhojī?;
nava āyambila tapa vidhiśuṁ karatāṁ, vāñchita sukha keṇe līdhojī?.
madhura dhvani bolyā śrī gautama, sāmbhalo śreṇika rāya vayaṇājī;
roga gayo ne sampadā pāmyā, śrī śrīpāla ne mayaṇājī. ....3.
rumajhuma karatī pāye neura, dīse devī rūpālījī;
nāma cakkesarīne siddhāī, ādi vīra jina vara rakhavālījī.
vighna koḍa hare sahu saṅghanā, je seve enā pāyajī;
bhāṇa vijaya kavi sevaka naya kahe, sānnidhya karajo māyajī. ....4.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवपद स्तुति

अरिहंत नमो वली सिद्ध नमो, आचारज वाचक साहु नमो;
दर्शन ज्ञान चारित्र नमो, तप ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो. ....१.
अरिहंत अनंत थया थाशे, वली भाव निक्षेपे गुण गाशे;
पडिक्कमणां देववंदन विधिशुं,
आंबिल तप गणणुं गणवुं विधिशुं.२.
छहरी पाली जे तप करशे, श्रीपाल तणी परे भव तरशे;
सिद्धचक्रने कुण आवे तोले, एहवा जिन आगम गुण बोले. .....३.
साडाचार वरसे तप पूरो, ए कर्म विदारण तप शूरो;
सिद्धचक्रने मनमंदिर थापो, नय विमलेसर वर आपो. ....४.

नवपद सज्झाय

नवपद महिमा सार, सांभलजो नर नार;
आ छे लाल, हेत धरी आराधीयेजी.
ते पामे भवपार, पुत्र कलत्र परिवार;

navapada stuti

arihanta namo valī siddha namo, ācāraja vācaka sāhu namo;
darśana jñāna cāritra namo, tapa e siddhacakra sadā praṇamo. ....1.
arihanta ananta thayā thāśe, valī bhāva nikṣepe guṇa gāśe;
paḍikkamaṇāṁ devavandana vidhiśuṁ,
āmbila tapa gaṇaṇuṁ gaṇavuṁ vidhiśuṁ.2.
chaharī pālī je tapa karaśe, śrīpāla taṇī pare bhava taraśe;
siddhacakrane kuṇa āve tole, ehavā jina āgama guṇa bole. ....3.
sāḍācāra varase tapa pūro, e karma vidāraṇa tapa śūro;
siddhacakrane manamandira thāpo, naya vimalesara vara āpo. ....4.

navapada sajjhāya

navapada mahimā sāra, sāmbhalajo nara nāra;
ā che lāla, heta dharī ārādhīyejī.
te pāme bhavapāra, putra kalatra parivāra;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ छे लाल, नवपद मंत्र आराधीयेजी.१.
आसो मास सुविचार, नव आंबिल निरधार;
आ छे लाल, विधिशुं जिनवर पूजियेजी.
अरिहंत पद सार, गुणणुं तेर हजार;
आ छे लाल, नवपदनुं एम कीजीए जी.२.
मयणासुंदरी श्रीपाल, आराध्यो तत्काल;
आ छे लाल, फल दायक तेहने थयोजी.
कंचन वरणी काय, देहडी तेहथी थाय;
आ छे लाल, श्री सिद्धचक्र महिमा कह्योजी.३.
सांभली सहु नरनार, आराधो नवकार;
आ छे लाल, हेत धरी हैडे घणुंजी.
चैत्र मासे वली एह, नवपदशुं धरो नेह;
आ छे लाल, पूजे दे शिवसुख घणुंजी.४.
इण परे गौतम स्वामी, नवनिधि जेहने नाम;
आ छे लाल, नवपद महिमा वखाणियोजी.
उत्तम सागर शिष्य, प्रणमे ते निशदिश;
आ छे लाल, नवपद महिमा जाणियोजी.५.

ā che lāla, navapada mantra ārādhīyejī.1.
āso māsa suvicāra, nava āmbila niradhāra;
ā che lāla, vidhiśu◌ jinavara pūjiyejī.
arihanta pada sāra, guṇaṇu◌ tera hajāra;
ā che lāla, navapadanu◌ ema kījīe jī.2.
mayaṇā-sundarī śrīpāla, ārādhyo tatkāla;
ā che lāla, phala dāyaka tehane thayojī.
kañcana varaṇī kāya, dehaḍī tehathī thāya;
ā che lāla, śrī siddhacakra mahimā kahyojī.3.
sāmbhalī sahu naranāra, ārādho navakāra;
ā che lāla, heta dharī haiḍe ghaṇu◌jī.
caitra māse valī eha, navapadaśu◌ dharo neha;
ā che lāla, pūje de śivasukha ghaṇu◌jī.4.
iṇa pare gautama svāmī, navanidhi jehane nāma;
ā che lāla, navapada mahimā vakhāṇiyojī.
uttama sāgara śiṣya, praṇame te niśadiśa;
ā che lāla, navapada mahimā jāṇiyojī.5.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजित जिन स्तवन

अजित जिणंदशुं प्रीतडी, मुज न गमे हो बीजानो संग के.
मालती फूले मोहीयो, किम बेसे हो बावल तरु भृंग के. अजित.१.
गंगा जलमां जे रम्या, किम छिल्लर हो रति पामे मराल के.
सरोवर जलधर जल विना, नवि चाहे हो जल चातक बाल के.अजित.२.
कोकिल कल कूजित करे, पामी मंजरी हो पंजरी सहकार के.
ओछां तरुवर नवि गमे, गिरुआंशु हो होय गुणनो प्यार के. ...अजित.३.
कमलिनी दिनकर कर ग्रहे, वली कुमुदिनी हो धरे चंदशुं प्रीतके.
गौरी गिरीश गिरधर विना, नवि चाहे हो कमला निज चित्त के.अजित.४.
तिम प्रभुसुं मुज मन रम्युं, बीजासुं हो नवि आवे दाय के.
श्री नय विजय विबुध तणो,
वाचक जस हो नित नित गुण गाय के.अजित.५.

सुविधि जिन स्तवन

में कीनो नहीं, तो विन ओरशुं राग.

ajita jina stavana

ajita jiṇandaśu◌ prītaḍī, muja na game ho bījāno saṅga ke.
mālatī phūle mohīyo, kima bese ho bāvala taru bhṛṅga ke.............. ajita.1.
gaṅgā jalamā◌ je ramyā, kima chillara ho rati pāme marāla ke.
sarovara jaladhara jala vinā, navi cāhe ho jala cātaka bāla ke. .... ajita.2.
kokila kala kūjita kare, pāmī mañjarī ho pañjarī sahakāra ke.
ochā◌ taruvara navi game, giruā◌śu ho hoya guṇano pyāra ke. ...... ajita.3.
kamalinī dinakara kara grahe, valī kumudinī ho dhare candaśu◌ prītake.
gaurī girīśa giradhara vinā, navi cāhe ho kamalā nija citta ke. .... ajita.4.
tima prabhusu◌ muja mana ramyu◌, bījāsu◌ ho navi āve dāya ke.
śrī naya vijaya vibudha taṇo,
vācaka jasa ho nita nita guṇa gāya ke. ajita.5.

suvidhi jina stavana

me◌ kīno nahī◌, to vina oraśu◌ rāga.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिन दिन वान चढत गुन तेरो, ज्युं कंचन परभाग.
ओरन में हैं कषाय की कलिमा, सो क्युं सेवा लाग. .... मैं.१.
राजहंस तुं मान सरोवर, और अशुचि रुचि काग.
विषय भुजंगम गरुड तु कहिये, और विषय विषनाग. .... मैं.२.
और देव जल छिल्लर सरिखे, तुं तो समुद्र अथाग.
तुं सुरतरु जग वंछित पूरण, और तो सूके साग. .... मैं.३.
तुं पुरुषोत्तम तुं ही निरंजन, तुं शंकर वडभाग.
तुं ब्रह्मा तुं बुद्ध महाबल, तुं ही ज देव वीतराग. .... मैं.४.
सुविधिनाथ तुम गुन फुलनको, मेरो दिल है बाग.
जस कहे भ्रमर रसिक होइ तामें, लीजे भक्ति पराग. .... मैं.५.

नंदीश्वर द्वीप स्तुति

नंदीसर वरद्वीप संभारुं, बावन चोमुख जिनवर जुहारुं;
एके एके एकशो चोवीश, बिंब चोसठ सय अडतालीश. ....१.
दधिमुख चार रतिकर आठ, एके अंजन गिरि ते रे पाठ;
चउ दिशिना ए बावन जुहारुं, चार नाम शाश्वता संभारुं. ......२.

dīna dīna vāna caḍhata guna tero, jyu◌ kañcana parabhāga.
orana me◌ hai◌ kaṣāya kī kalimā, so kyu◌ sevā lāga. .... mai◌.1.
rājahansa tu◌ māna sarovara, aura aśuci ruci kāga.
viṣaya bhujaṅgama garuḍa tu kahiye, aura viṣaya viṣanāga. .... mai◌.2.
aura deva jala chillara sarikhe, tu◌ to samudra athāga.
tu◌ surataru jaga vañchita pūraṇa, aura to sūke sāga. .... mai◌.3.
tu◌ puruṣottama tu◌ hī nirañjana, tu◌ śaṅkara vaḍabhāga.
tu◌ brahmā tu◌ buddha mahābala, tu◌ hī ja deva vītarāga. .... mai◌.4.
suvidhinātha tuma guna phulanako, mero dila hai bāga.
jasa kahe bhramara rasika hoi tāme◌, līje bhakti parāga. .... mai◌.5.

nandīśvara dvīpa stuti

nandīsara varadvīpa sambhāru◌, bāvana comukha jinavara juhāru◌;
eke eke ekaśo covīśa, bimba cosaṭha saya aḍatālīśa. ....1.
dadhimukha cāra ratikara āṭha, eke añjana giri te re pāṭha;
cau diśinā e bāvana juhāru◌, cāra nāma śāśvatā sambhāru◌. ....2.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सात द्वीप तिहां सायर सात, आठमो द्वीप नंदीसर वाट;
ए केवलीए भाख्युं सार, आगम लाल विजय जयकार. ....३.
पहेलो सुधर्मा बीजो इशान इंद्र, आठ अग्र महिषीना भद्र;
सोल प्रासाद तिहां वांदीजे, शासनदेवी सानिध्य कीजे.........४.

मरुदेवी माता सज्झाय

तुज साथे नहि बोलुं रे ऋषभजी, तें मुजने विसारीजी;
अनंत ज्ञाननी तुं रिद्धि पाम्यो, तो जननी न संभारीजी. ... तुज.१.
मुजने मोह हतो तुज उपरे, ऋषभ ऋषभ करी जपतीजी;
अन्न उदक मुजने नवि रुचतुं, तुज मुख जोवा तलपतीजी. तुज.२.
तुं बेठो शिर छत्र धरावे, सेवे सुरनर कोटिजी;
तो जननीने केम न संभारे, जोई ताहरी प्रीतिजी. .... तुज.३.
तुं नथी केहनो ने हुं नथी केहनी, इहां नथी कोई केहनुं जी;
ममता मोह धरे जे मनमां, मूरखपणुं सवि तेहनुं जी. ...... तुज.४.
अनित्य भावनाए चढ्यां मरुदेवा, बेठा गयवर खंधो जी;
अंतगड केवली थई गया मुगते, ऋषभने मन आणंदोजी... तुज.५.

sāta dvīpa tihā◌ sāyara sāta, āṭhamo dvīpa nandīsara vāṭa;
e kevalīe bhākhyu◌ sāra, āgama lāla vijaya jayakāra. ....3.
pahelo sudharmā bījo iśāna indra, āṭha agra mahiṣīnā bhadra;
sola prāsāda tihā◌ vāndīje, śāsanadevī sānidhya kīje............................4.

marudevī mātā sajjhāya

tuja sāthe nahi bolu◌ re ṛṣabhajī, te◌ mujane visārījī;
ananta jñānanī tu◌ riddhi pāmyo, to jananī na sambhārījī. .... tuja.1.
mujane moha hato tuja upare, ṛṣabha ṛṣabha karī japatījī;
anna udaka mujane navi rucatu◌, tuja mukha jovā talapatījī. .... tuja.2.
tu◌ beṭho śira chatra dharāve, seve suranara koṭijī;
to jananīne kema na sambhāre, joī tāharī prītijī. .... tuja.3.
tu◌ nathī kehano ne hu◌ nathī kehanī, ihā◌ nathī koī kehanu◌ jī;
mamatā moha dhare je manamā◌, mūrakhapaṇu◌ savi tehanu◌ jī. .. tuja.4.
anitya bhāvanāe caḍhyā◌ marudevā, beṭhā gayavara khandho jī;
antagaḍa kevalī thaī gayā mugate, ṛṣabhane mana āṇandojī. .... tuja.5.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमार सज्झाय

धारणी मनावे रे मेघकुमारने रे, तुं मुज एकज पुत्र;
तुज विण जाया रे! सूना मंदिर मालीयां रे,
राखो राखो घर तणां सूत्र. धारणी.१.
तुजने परणावुं रे आठ कुमारिका रे, सुंदर अति सुकुमाल;
मलपती चाले रे जेम वन हाथणी रे,
नयण वयण सुविशाल. धारणी.२.
मुज मन आशा रे पुत्र हती घणी रे, रमाडीश वहुनां बाल;
दैव अटारो रे देखी नवि शक्यो रे, उपायो एह जंजाल. धारणी.३.
धन कण कंचन रे ऋद्धि घणी अछे रे, भोगवो भोग संसार;
छती ऋद्धि विलसो रे जाया घर आपणे रे,
पछी लेजो संयम भार. धारणी.४.
मेघकुमारे रे माता प्रतिबूझवी रे, दीक्षा लीधी वीरजीनी पास;
प्रीति विमल रे इणि परे उच्चरे रे,
पहोंती म्हारा मनडानी आश. धारणी.५.

meghakumāra sajjhāya

dhāraṇī manāve re meghakumārane re, tu◌ muja ekaja putra;
tuja viṇa jāyā re! sūnā mandira māliyā◌ re,
rākho rākho ghara taṇā◌ sūtra. dhāraṇī.1.
tujane paraṇāvu◌ re āṭha kumārikā re, sundara ati sukumāla;
malapatī cāle re jema vana hāthaṇī re,
nayaṇa vayaṇa suviśāla. dhāraṇī.2.
muja mana āśā re putra hatī ghaṇī re, ramāḍīśa vahunā◌ bāla;
daiva aṭāro re dekhī navi śakyo re, upāyo eha jañjāla. .... dhāraṇī.3.
dhana kaṇa kañcana re ṛddhi ghaṇī ache re, bhogavo bhoga sansāra;
chatī ṛddhi vilaso re jāyā ghara āpaṇe re,
pachī lejo sañyama bhāra. dhāraṇī.4.
meghakumāre re mātā pratibūjhavī re, dīkṣā līdhī vīrajīnī pāsa;
prīti vimala re iṇi pare uccare re,
paho◌tī mhārā manaḍānī āśa. dhāraṇī.5.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मन वश सज्झाय

मनाजी तुं तो जिन चरणे चित्त लाय, तेरो अवसर वीत्यो जाय मनाजी.;
उदर भरण के कारणे रे, गौआं वनमें जाय;
चारो चरे चिहुं दिशी फरे रे, वांकुं चित्तडुं वाछरां मांह; मनाजी.१.
चार पांच साहेली मलीने, हिल मिल पाणी जाय;
ताली दीये रे खडखड हसे रे,
वांकुं चित्तडुं गगरीया मांह. मनाजी.२.
नटवा नाचे चोकमां रे, लख आवे लख जाय;
वांश चढी नाटक करे रे, वांकुं चित्तडुं दोरडीयां मांह...मनाजी.३.
सोनी सोनाने घडे रे, वली घडे रूपाना घाट;
घाट घडे मन रीझवे रे, वांकुं चित्तडुं सोनैया मांह. .....मनाजी.४.
जुगटीयां मन जुगटुं रे, कामीने मन काम;
आनंदघन एम विनवे रे, ऐसे प्रभुको धर ध्यान. ....मनाजी.५.

mana vaśa sajjhāya

manājī tu◌ to jina caraṇe citta lāya, tero avasara vītyo jāya manājī.;
udara bharaṇa ke kāraṇe re, gauā◌ vaname◌ jāya;
cāro care cihu◌ diśī phare re, vā◌ku◌ cittaḍu◌ vācharā◌ mā◌ha; manājī.1.
cāra pāñca sāhelī malīne, hila mila pāṇī jāya;
tālī dīye re khaḍakhaḍa hase re,
vā◌ku◌ cittaḍu◌ gagarīyā mā◌ha. manājī.2.
naṭavā nāce cokamā◌ re, lakha āve lakha jāya;
vānśa caḍhī nāṭaka kare re, vā◌ku◌ cittaḍu◌ doraḍīyā◌ mā◌ha. . manājī.3.
sonī sonāne ghaḍe re, valī ghaḍe rūpānā ghāṭa;
ghāṭa ghaḍe mana rījhave re, vā◌ku◌ cittaḍu◌ sonaiyā mā◌ha. .. manājī.4.
jugaṭīyā◌ mana jugaṭu◌ re, kāmīne mana kāma;
ānandaghana ema vinave re, aise prabhuko dhara dhyāna. .... manājī.5.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निंदा सज्झाय

म कर जीवडा रे निंदा पारकी, म करजे विखवाद;
अवगुण ढांकी रे गुण प्रगट करे, मृगमद जिम रे जवाद. ..... म.१.
गुण छे पूरा रे श्री अरिहंतना, अवर दूजा नहि कोय;
जग सहु चाले रे जिम मादल मढ्युं, गुणवंत विरला रे कोय. म.२.
पूंठ न सूझे रे प्राणी आपणी, किम सूझे पर पूंठ;
मरम ने मोसो रे केहनो न बोलीए, लाख लहे बांधी मूठ. ... म.३.
राग द्वेषे स्वामी हुं भर्यो, भरीयो विषय कषाय;
रीस घणेरी मुज मन ऊपजे, किम पामुं भव पार. .... म.४.
सेवा कीजे रे सूधा साधुनी, वहीए जिनवर आण;
पराणे जइने रे तेह शुं बोलीए, जे होवे तत्त्वना जाण. .... म.५.
जेहमां जेटला रे गुण लो तेटला, जिम रायणने लींबोल;
सहज करो जीव सुंदर आपणो, सहज सुंदरना रे बोल. .... म.६.

nindā sajjhāya

ma kara jīvaḍā re nindā pārakī, ma karaje vikhavāda;
avaguṇa ḍhāṃkī re guṇa pragaṭa kare, mṛgamada jima re javāda...... ma.1.
guṇa che pūrā re śrī arihantanā, avara dūjā nahi koya;
jaga sahu cāle re jima mādala maḍhyuṃ, guṇavanta viralā re koya.... ma.2.
pūṃṭha na sūjhe re prāṇī āpaṇī, kima sūjhe para pūṃṭha;
marama ne moso re kehano na bolīe, lākha lahe bāndhī mūṭha. .... ma.3.
rāga dveṣe svāmī huṃ bharyo, bharīyo viṣaya kaṣāya;
rīsa ghaṇerī muja mana ūpaje, kima pāmuṃ bhava pāra.................. ma.4.
sevā kīje re sūdhā sādhunī, vahīe jinavara āṇa;
parāṇe jaine re teha śuṃ bolīe, je hove tattvanā jāṇa. .... ma.5.
jehamāṃ jeṭalā re guṇa lo teṭalā, jima rāyaṇane līmbola;
sahaja karo jīva sundara āpaṇo, sahaja sundaranā re bola. .... ma.6.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अध्यात्म सज्झाय

हम तो दुनियां से न डरेंगे, आतम ध्यान धरेंगे. हम.
निंदक खांतो निंदा करशे, भक्त जनो गुण गाशे;
दुनिया दिवानी गांडो कहेशे, कोईक मारण धाशे. ....हम.१.
किरियावादी कपटी लेखे, ज्ञानवादी मन घहेलो;
भोगी लेखे ए भिखारी, छटकी कहे छटकेलो. ....हम.२.
दुनियादारी नहि है हमारी, ज्ञानदशा चित्त धारी;
डाक डमाला मूरख चाला, ए सब खटपट वारी. ....हम.३.
स्याद्वाद मारग मनमांहि, श्रद्धा जिननी साची;
अवलंब्यो मारग ए मोटो, कलिकाले पण राची. ....हम.४.
चित्त हमारा ज्यां रंगाया, त्यां हम रंगे रहीशुं;
योग्य जीवनी आगल अंतर, तत्त्वनी वातो कहीशुं. ....हम.५.
वाडा मांहि बकरा रहेशे, मृगपति वनमां चरशे;
विष्टा भोजन रासभ मौक्तिक, चारो हंस ते चरशे. ....हम.६.
चिद्घन आतम अंतर खोज्यो, स्थिर दृष्टि चित्त धारी;
बुद्धि सागर शाश्वत शिवपद, पामी लह्यो सुख भारी. .....हम.७.

adhyātma sajjhāya

hama to duniyā̃ se na ḍarenge, ātama dhyāna dharenge. hama.
nindaka khā̃to nindā karaśe, bhakta jano guṇa gāśe;
duniyā divānī gāṇḍo kaheśe, koīka māraṇa dhāśe. .... hama.1.
kiriyāvādī kapaṭī lekhe, jñānavādī mana ghahelo;
bhogī lekhe e bhikhārī, chaṭakī kahe chaṭakelo. .... hama.2.
duniyādārī nahi hai hamārī, jñānadaśā citta dhārī;
ḍāka ḍamālā mūrakha cālā, e saba khaṭapaṭa vārī. .... hama.3.
syādvāda māraga manamā̃hi, śraddhā jinanī sācī;
avalambyo māraga e moṭo, kalikāle paṇa rācī. .... hama.4.
citta hamārā jyā̃ rangāyā, tyā̃ hama range rahīśũ;
yogya jīvanī āgala antara, tattvanī vāto kahīśũ. .... hama.5.
vāḍā mā̃hi bakarā raheśe, mṛgapati vanamā̃ caraśe;
viṣṭā bhojana rāsabha mauktika, cāro hansa te caraśe. .... hama.6.
cidghana ātama antara khojyo, sthira dṛṣṭi citta dhārī;
buddhi sāgara śāśvata śivapada, pāmī lahyo sukha bhārī. .... hama.7.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अध्यात्म सज्झाय

सब जन धर्म धर्म मुख बोले, अंतर पडदो न खोले रे.
कोई गंगा जमना झूल्या, कोई भभूते भूल्या;
कोई जनोईमां झंखाणा, फकीरी लई फूल्या. .... सब.१.
चालत चालत दोड्यो दोटे, पण पासेनो पासे;
टीलां टपकां छाप लगावी, शिवपुर केम पामशे. .... सब.२.
मूंड मूंडावे गाडरीयां जग, केशने तोडे रंडी;
माला मणका बेरी पहेरे, नित्य चाले पगदंडी. .... सब.३.
धर्मना वरणे धर्मना मरणे, धर्मना करवत काशी;
धर्म न जाति धर्म न भाति, धर्म न जंगल वासी. .... सब.४.
गद्धां खाख मांहि आलोटे, ते पण साचां खाखी;
निर्वस्त्रां पशु पंखी फरे छे, ममता दिलमां राखी. .... सब.५.
जब तक अंतर तत्त्व न खूले, तब तक भवमां झूले;
बुद्धि सागर आतम धर्मे, भ्रांति भ्रमणा भूले. .... सब.६.

adhyātma sajjhāya

saba jana dharma dharma mukha bole, antara paḍado na khole re.
koī gaṅgā jamanā jhūlyā, koī bhabhūte bhūlyā;
koī janoīmāṃ jhaṅkhāṇā, phakīrī laī phūlyā. .... saba.1.
cālata cālata doḍyo doṭe, paṇa pāseno pāse;
ṭīlāṃ ṭapakāṃ chāpa lagāvī, śivapura kema pāmaśe. .... saba.2.
mūṇḍa mūṇḍāve gāḍarīyāṃ jaga, keśane toḍe raṇḍī;
mālā maṇakā berī pahere, nitya cāle pagadaṇḍī. .... saba.3.
dharmanā varaṇe dharmanā maraṇe, dharmanā karavata kāśī;
dharma na jāti dharma na bhāti, dharma na jaṅgala vāsī. .... saba.4.
gaddhāṃ khākha māṃhi āloṭe, te paṇa sācāṃ khākhī;
nirvastrāṃ paśu paṅkhī phare che, mamatā dilamāṃ rākhī. .... saba.5.
jaba taka antara tattva na khūle, taba taka bhavamāṃ jhūle;
buddhi sāgara ātama dharme, bhrānti bhramaṇā bhūle. .... saba.6.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैराग्य सज्झाय	vairāgya sajjhāya
ऊंचां ते मंदिर मालीयां, सोड वालीने सूतो;	ūncā te mandira māliyā, soḍa vāline sūto;
काढो काढोरे एने सहु कहे, जाणे जन्म्यो ज न्होतो. ....१.	kāḍho kāḍhore ene sahu kahe, jāṇe janmyo ja nhoto. ....1.
एक रे दिवस एवो आवशे, मन सबलोजी साले;	eka re divasa evo āvaśe, mana sabaloji sāle;
मंत्री मल्या सर्वे कारमा, तेनुं कांइ नवी चाले............. एक.२.	mantrī malyā sarve kāramā, tenu kāi navī cāle. .... eka.2.
साव सोनानां रे सांकलां, पहेरण नवा नवा वाघा;	sāva sonānā re sānkalā, paherana navā navā vāghā;
धोलुं रे वस्त्र एना कर्मनुं, ते तो शोधवा लाग्या........... एक.३.	dholu re vastra enā karmanu, te to śodhavā lāgyā. .... eka.3.
चरू कढाइयां अति घणां, बीजानुं नही लेखुं;	carū kaḍhāiyā ati ghaṇā, bijānu nahī lekhu;
खोखरी हांडी एना कर्मनी, ते तो आगल देखुं. .... एक.४.	khokhari hāḍī enā karmanī, te to āgala dekhu. .... eka.4.
केनां छोरू ने केनां वाछरू, केनां माय ने बाप;	kenā chorū ne kenā vācharū, kenā māya ne bāpa;
अंतकाले जावुं [जीवने] एकलुं, साथे पुण्य ने पाप......... एक.५.	antakāle jāvu [jīvane] ekalu, sāthe puṇya ne pāpa. .... eka.5.
सगी रे नारी एनी कामिनी, ऊभी डगमग जुवे;	sagī re nārī enī kāminī, ūbhī ḍagamaga juve;
तेनुं पण कांइ चाले नहीं, ध्रुसके ध्रुसके रूवे............... एक.६.	tenu paṇa kāi cāle nahī, dhrusake dhrusake rūve. .... eka.6.
व्हालां ते व्हालां शुं करो, व्हालां वोलावी वलशे;	vhālā te vhālā śu karo, vhālā volāvī valaśe;
व्हालां ते वननां लाकडां, ते तो साथे ज बलशे. .... एक.७.	vhālā te vananā lākaḍā, te to sāthe ja balaśe. .... eka.7.
नेहि त्रापो नहि तुंबडी, नथी तरवानो आरो;	nahi trāpo nahi tumbaḍī, nathī taravāno āro;
उदय रतन मुनि इम भणे, प्रभु मने भवजल तारो. .... एक.८.	udaya ratana muni ima bhaṇe, prabhu mane bhavajala tāro. .... eka.8.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिक्रमण सूत्र

सह विवेचन

भाग - १ [हिन्दी - अंग्रेजी]

विधि विभाग

निर्वाण सागर

Pratikramaṇa Sūtra

With Explanation

Part - 1 [Hindī - English]

vidhi part

Nirvāṇa Sāgara

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*पच्चक्खाण के सूत्र

[सूचना :- १. **पच्चक्खाण** लेने वाला व्यक्ति **पच्चक्खाण** लेते समय **पच्चक्खाइ / वोसिरइ** के स्थान पर **पच्चक्खामि / वोसिरामि** बोले.
२. * जो **पच्चक्खाण** हो, वही बोलें.]

अ. प्रभात के पच्चक्खाण

१. नमुक्कारसहिअं-मुट्ठिसहिअं

उग्गए सूरे नमुक्कार-सहिअं, मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

*sūtras of the paccakkhāṇa

[Note :-- 1. The person taking **paccakkhāṇa** should say **paccakkhāmi / vosirāmi** in place of **paccakkhāi / vosirai** while taking the **paccakkhāṇa.**

2. * Say only that, which the **paccakkhāṇa** is.]

A. Morning paccakkhāṇas

1. namukkārasahiam-mutthisahiam

uggae sūre namukkāra-sahiam, mutthi-sahiam paccakkhāi cauvvihampi āhāram- asaṇam, pāṇam, khāimam, sāimam annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam vosirai.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. पोरिसी / साड्ढ-पोरिसी

उग्गए सूरे *पोरिसिं / साड्ढ-पोरिसिं, मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ,
उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं
अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पच्छन्न-कालेणं, दिसा-मोहेणं,
साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

३. पुरिमड्ढ / अवड्ढ

सूरे उग्गए *पुरिमड्ढ / अवड्ढ मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ
चउव्विहंपि आहारं- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं
अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पच्छन्न-कालेणं,
दिसा-मोहेणं, साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं,
सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

2. porisī / sāḍḍha-porisī

uggae sūre *porisim / sāḍḍha-porisim, muṭṭhi-sahiam paccakkhāi,
uggae sūre cauvvihampi āhāram– asaṇam, pāṇam, khāimam, sāimam
annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, pacchanna-kāleṇam, disā-moheṇam,
sāhu-vayaṇeṇam, mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam vosirai.

3. purimaḍḍha / avaḍḍha

sūre uggae *purimaḍḍha / avaḍḍha muṭṭhi-sahiam paccakkhāi
cauvvihampi āhāram– asaṇam, pāṇam, khāimam, sāimam
annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, pacchanna-kāleṇam,
disā-moheṇam, sāhu-vayaṇeṇam, mahattarā-gāreṇam,
savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam vosirai.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. एगासणा / बियासणा

उग्गए सूरे *नमुक्कार-सहिअं / पोरिसिं / साड्ढ-पोरिसिं /
सूरे उग्गए पुरिमड्ढ / अवड्ढ मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ उग्गए सूरे
चउव्विहंपि आहारं- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं
अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पच्छन्न-कालेणं,
दिसा-मोहेणं, साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं,
सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं विगईओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणा-भोगेणं,
सहसा-गारेणं, लेवा-लेवेणं, गिहत्थ-संसट्ठेणं,
उक्खित्त-विवेगेणं, पडुच्च-मक्खिएणं, पारिट्ठावणिया-गारेणं,
महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं *एगासणं /
बियासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं- असणं, खाइमं, साइमं
अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, सागारिया-गारेणं,
आउंटण-पसारेणं, गुरु-अब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणिया-गारेणं,
महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, पाणस्स लेवेण वा,
अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहलेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा
वोसिरइ.

4. egāsaṇā / biyāsaṇā

uggae sūre *namukkāra-sahiam / porisim / sāḍḍha-porisim /
sūre uggae purimaḍḍha / avaḍḍha muṭṭhi-sahiam paccakkhāi uggae sūre
cauvvihampi āhāram- asaṇam, pāṇam, khāimam, sāimam
annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, pacchanna-kāleṇam,
disā-moheṇam, sāhu-vayaṇeṇam, mahattarā-gāreṇam,
savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam vigaīo paccakkhāi annatthaṇā-bhogeṇam,
sahasā-gāreṇam, levā-leveṇam, gihattha-sansaṭṭheṇam,
ukkhitta-vivegeṇam, paḍucca-makkhieṇam, pāriṭṭhāvaṇiyā-gāreṇam,
mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam *egāsaṇam /
biyāsaṇam paccakkhāi tivihampi āhāram- asaṇam, khāimam, sāimam
annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, sāgāriyā-gāreṇam,
āunṭaṇa-pasāreṇam, guru-abbhuṭṭhāṇeṇam, pāriṭṭhāvaṇiyā-gāreṇam,
mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam, pāṇassa leveṇa vā,
aleveṇa vā, accheṇa vā, bahaleṇa vā, sasittheṇa vā asittheṇa vā
vosirai.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. आयंबिल / नीवी

उग्गए सूरे *नमुक्कार-सहिअं / पोरिसिं / साड्ढ-पोरिसिं /
सूरे उग्गए पुरिमड्ढ / अवड्ढ मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ उग्गए सूरे
चउव्विहंपि आहारं- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं,
अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा गारेणं, पच्छन्न-कालेणं,
दिसा-मोहेणं, साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं,
सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, *आयंबिलं / निव्वि विगईओ पच्चक्खाइ
अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, लेवा-लेवेणं,
गिहत्थ-संसट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेणं, पारिट्ठावणिया-गारेणं,
महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, एगासणं पच्चक्खाइ
तिविहंपि आहारं- असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा-भोगेणं,
सहसा-गारेणं, सागरिया-गारेणं, आउंटण-पसारेणं,
गुरु-अब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणिया-गारेणं, महत्तरा-गारेणं,
सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा,
अच्छेण वा, बहलेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ.

5. āyambila / nivi

uggae sūre *namukkāra-sahiam / porisim / sāḍḍha-porisim /
sūre uggae purimaḍḍha / avaḍḍha mutthi-sahiam paccakkhāi uggae sūre
cauvvihampi āhāram– asaṇam, pāṇam, khāimam, sāimam,
annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā gāreṇam, pacchanna-kāleṇam,
disā-moheṇam, sāhu-vayaṇeṇam, mahattarā-gāreṇam,
savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam, *āyambilam / nivvi vigaio paccakkhāi
annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, levā-leveṇam,
gihattha-sansattheṇam, ukkhitta-vivegeṇam, pāritthāvaṇiyā-gāreṇam,
mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam, egāsaṇam paccakkhāi
tivihampi āhāram– asaṇam, khāimam, sāimam annatthaṇā-bhogeṇam,
sahasā-gāreṇam, sāgariyā-gāreṇam,āuntaṇa-pasāreṇam,
guru-abbhutthāṇeṇam, pāritthāvaṇiyā-gāreṇam, mahattarā-gāreṇam,
savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam, pāṇassa leveṇa vā, aleveṇa vā,
accheṇa vā, bahaleṇa vā, sasittheṇa vā, asittheṇa vā vosirai.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. तिविहार उपवास / **पाणहार

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं-
असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं,
पारिट्ठावणिया-गारेणं, महत्तरा-गारेणं,
सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, **पाणहार *पोरिसिं / साड्ढ-पोरिसिं
सूरे उग्गए पुरिमड्ढ / अवड्ढ मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ,
अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पच्छन्न-कालेणं,
दिसा-मोहेणं, साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं,
सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा,
अच्छेण वा, बहलेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ.
[** पाणाहार का पच्चक्खाण यहां से लें.]

6. tivihāra upavāsa / **pāṇahāra

sūre uggae abbhattaṭṭham paccakkhāi tivihampi āhāram–
asaṇam, khāimam, sāimam annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam,
pāriṭṭhāvaṇiyā-gāreṇam, mahattarā-gāreṇam,
savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam, **pāṇahāra *porisim / sāḍḍha-porisim /
sūre uggae purimaḍḍha / avaḍḍha muṭṭhi-sahiam paccakkhāi,
annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, pacchanna-kāleṇam,
disā-moheṇam, sāhu-vayaṇeṇam, mahattarā-gāreṇam,
savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam, pāṇassa leveṇa vā, aleveṇa vā,
accheṇa vā, bahaleṇa vā, sasittheṇa vā, asittheṇa vā vosirai.
[** Take the **paccakkhāṇa** of **pāṇāhāra** from here.]

७. चउविहार उपवास

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं-
असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं,

7. cauvihāra upavāsa

sūre uggae abbhattaṭṭham paccakkhāi cauvvihampi āhāram–
asaṇam, pāṇam, khāimam, sāimam, annatthaṇā-bhogeṇam,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहसा-गारेणं, पारिट्ठावणिया-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

sahasā-gāreṇam, pāriṭṭhāvaṇiyā-gāreṇam, mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam vosirai.

आ. शाम के पच्चक्खाण

B. Evening paccakkhāṇas

१. पाणहार

1. pāṇahāra

पाणहार दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

pāṇahāra divasa-carimam paccakkhāi annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam vosirai.

२. चउविहार उपवास

2. cauvihāra upavāsa

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

sūre uggae abbhattaṭṭham paccakkhāi cauvvihampi āhāram–asaṇam, pāṇam, khāimam, sāimam, annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam vosirai.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. चउव्विहार

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं-
असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा- भोगेणं,
सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं
वोसिरइ.

४. तिविहार

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं-
असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं,
महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

५. दुविहार

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ दुविहंपि आहारं-
असणं, खाइमं अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं,

3. cauvvihāra

divasa-carimam paccakkhāi cauvvihampi āhāram–
asaṇam, pāṇam, khāimam, sāimam annatthaṇā- bhogeṇam,
sahasā-gāreṇam, mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam
vosirai.

4. tivihāra

divasa-carimam paccakkhāi tivihampi āhāram–
asaṇam, khāimam, sāimam annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam,
mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam vosirai.

5. duvihāra

divasa-carimam paccakkhāi duvihampi āhāram–
asaṇam, khāimam annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam vosirai.

इ. देसावगासिक

C. desāvagāsika

देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खाइ अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

desāvagāsiam uvabhogam paribhogam paccakkhāi annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam vosirai.

ई. पच्चक्खाण पारने के सूत्र

D. sūtras for completing the paccakkhāṇa

१. एगासणादि

1. egāsaṇā ect

उग्गए सूरे *नमुक्कार-सहिअं / पोरिसीं / साड्ढ-पोरिसीं / सूरे उग्गए पुरिमड्ढ / अवड्ढ मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाण किया चउविहार *आयंबिल / नीवी / एगासणा / बियासणा पच्चक्खाण किया तिविहार, पच्चक्खाण फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरियं, किट्टिअं, आराहिअं, जं च न आराहिअं

uggae sūre *namukkāra-sahiam / porisīm / sāḍḍha-porisīm / sūre uggae purimaḍḍha / avaḍḍha muṭṭhi-sahiam paccakkhāṇa kiyā cauvihāra *āyambila / nīvī / egāsaṇā / biyāsaṇā paccakkhāṇa kiyā tivihāra, paccakkhāṇa phāsiam, pāliam, sohiam, tīriyam, kiṭṭiam, ārāhiam, jam ca na ārāhiam

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.

२. तिविहार उपवास

सूरे उग्गए उपवास किया तिविहार *पोरिसीं / साड्ढ-पोरिसीं / पुरिमड्ढ / अवड्ढ मुट्ठि- सहिअं पच्चक्खाण किया पाणहार, पच्चक्खाण फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं जं च न आराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.

tassa micchā mi dukkaḍam.

2. tivihāra upavāsa

sūre uggae upavāsa kiyā tivihāra *porisīm / sāḍḍha-porisīm / purimaḍḍha / avaḍḍha muṭṭhi- sahiam paccakkhāṇa kiyā pāṇahāra, paccakkhāṇa phāsiam, pāliam, sohiam, tīriam, kiṭṭiam, ārāhiam jam ca na ārāhiam, tassa micchā mi dukkaḍam.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहपत्ति के पडिलेहण के ५० बोल

सूत्र अर्थ तत्त्व करी सद्दहूं;
सम्यक्त्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय, मिथ्यात्व मोहनीय परिहरूं;
काम राग, स्नेह राग, दृष्टि राग परिहरूं;
सुदेव, सुगुरु, सुधर्म आदरूं;
कुदेव, कुगुरु, कुधर्म परिहरूं;
ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदरूं;
ज्ञान-विराधना, दर्शन-विराधना, चारित्र-विराधना परिहरूं;
मनो-गुप्ति, वचन-गुप्ति काय-गुप्ति आदरूं;
मनो-दण्ड, वचन-दण्ड, काय-दण्ड परिहरूं;
हास्य, रति, अरति परिहरूं;
भय, शोक, जुगुप्सा परिहरूं;
कृष्ण-लेश्या, नील-लेश्या, कापोत-लेश्या परिहरूं;
रस-गारव, ऋद्धि-गारव, शाता-गारव परिहरूं;
माया-शल्य, नियाण-शल्य, मिथ्यात्व-शल्य परिहरूं;
क्रोध, मान परिहरूं;
माया, लोभ परिहरूं;

50 Words for the paḍilehaṇa of the muhapatti

sūtra artha tattva karī saddahūṁ;
samyaktva mohanīya, miśra mohanīya, mithyātva mohanīya pariharūṁ;
kāma rāga, sneha rāga, dṛṣṭi rāga pariharūṁ;
sudeva, suguru, sudharma ādarūṁ;
kudeva, kuguru, kudharma pariharūṁ;
jñāna, darśana, cāritra ādarūṁ;
jñāna-virādhanā, darśana-virādhanā, cāritra-virādhanā pariharūṁ;
mano-gupti, vacana-gupti kāya-gupti ādarūṁ;
mano-daṇḍa, vacana-daṇḍa, kāya-daṇḍa pariharūṁ;
hāsya, rati, arati pariharūṁ;
bhaya, śoka, jugupsā pariharūṁ;
kṛṣṇa-leśyā, nīla-leśyā, kāpota-leśyā pariharūṁ;
rasa-gārava, ṛddhi-gārava, śātā-gārava pariharūṁ;
māyā-śalya, niyāṇa-śalya, mithyātva-śalya pariharūṁ;
krodha, māna pariharūṁ;
māyā, lobha pariharūṁ;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय की रक्षा करूं; वायु काय, वनस्पति काय, त्रस काय की जयणा करूं.	pṛthvīkāya, apkāya, teukāya kī rakṣā karūṃ; vāyu kāya, vanaspati kāya, trasa kāya kī jayaṇā karūṃ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विधियाँ

१. सांकेतिक शब्द एवं सूचनाएँ

[१] **खमा... = पंचांग प्रणिपात [चि. नं. ५]** करते हुए **खमासमण सूत्र [सूत्र नं.३]** कहें.

[२] **इच्छा... = इच्छाकारेण संदिसह भगवन्.**

[३] **इरियावहियं प्रतिक्रमण = खमा..., इरियावहियं [सूत्र नं.५], तस्स उत्तरी [सूत्र नं.६], अन्नत्थ सूत्र [सूत्र नं.७]** कहकर एक **लोगस्स [सूत्र नं.८]** का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, **लोगस्स सूत्र** कहें.

[४] **इच्छकारि... = इच्छकारि भगवन् पसाय करी.**

[५] **लोगस्स** का **काउस्सग्ग = लोगस्स सूत्र** का **काउस्सग्ग** [अन्य कुछ न लिखा हो तो **चंदेसु निम्मलयरा** तक] करें. **लोगस्स सूत्र** न आता हो तो चार **नवकार** का **काउस्सग्ग** करें.

[६] **मुहपत्ति का पडिलेहण** ५० बोल से करें. **[सूत्र नं. ६४]**

[७] **नमोर्हत् सूत्र [सूत्र नं.१६]** पुरुष ही बोलें; स्त्रियां न बोलें.

Procedures

1. Notes and key words

[1] **khamā...** = Say **khamāsamaṇa sūtra [sūtra no. 3]** performing **pañcāṅga praṇipāta [Pic. no. 5].**

[2] **icchā... = icchākāreṇa sandisaha bhagavan.**

[3] **iriyāvahiyam pratikramaṇa** = saying **khamā..., iriyāvahiyam [sūtra no. 5], tassa uttarī [sūtra no. 6], annattha sūtra [sūtra no. 7]**, performing the **kāussagga** of one **logassa[sūtra no. 8]**, completing the **kāussagga**, say **logassa sūtra.**

[4] **icchakāri... = icchakāri bhagavan pasāya karī.**

[5] **kāussagga of logassa** = Perform the **kāussagga** of **logassa sūtra** [upto **candesu nimmalayarā** if not mentioned otherwise]. Perform the **kāussagga** of four **navakāra** if **logassa sūtra** is not coming.

[6] Perform the **paḍilehaṇa** of the **muhapatti** with 50 words **[sūtra no. 64].**

[7] Only men shall say **namorhat sūtra [sūtra no. 16]**; women shall not say it.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[८] मांडली में **प्रतिक्रमण** आदि क्रियां करते हो तो **गुरु भगवंत** से [उनकी अनुपस्थिति में वडील से] आदेश ले कर विधि के **सूत्र** आदि बोलें. **सूत्र** बोलने का आदेश मिलने पर **तहत्ति** कह कर आदेश को स्वीकार करें.

[९] **गुरु भगवंत** के साथ **प्रतिक्रमण** आदि क्रिया करते वक्त, **गुरु भगवंत** के **काउस्सग्ग** पारने के बाद शेष सभी **काउस्सग्ग** पारे.

[१०] प्रत्येक विधि पूरी करने के बाद, **खमा...** देकर दायां हाथ **चरवले** या **कटासणे** पर रखकर, **विधि करते जो कोई अविधि हुई हो, उन सबका मिच्छा मि दुक्कडं** कहें.

[११] जहाँ **१] देवसिअ २] देवसिओ ३] देवसिअं / देसिअं ४] देवसिआए या ५] दिवसो वइक्कंतो** शब्द हो, वहां **राइअ / पाक्षिक / चउमासी / संवच्छरी प्रतिक्रमण** में क्रमशः

१] **राइअ / पक्खिअ / चउमासिअ / संवच्छरिअ**;

२] **राइओ / पक्खिओ / चउमासिओ / संवच्छरिओ**;

३] **राइअं / पक्खिअं / चउमासिअं / संवच्छरिअं**;

४] **राइआए / पक्खिआए / चउमासिआए / संवच्छरिआए** एवं

५] **राइ वइक्कंता / पक्खो वइक्कंतो / चउमासी वइक्कंता /**

[8] Say the **sūtras** of the procedure after taking the permission from **guru bhagavanta** [from elder in their absence] if the rites like **pratikramaṇa** is being performed in group. On obtaining the permission to say the **sūtra**, accept the permission by saying **tahatti**.

[9] Rest of all should complete the **kāussagga** after completion of **kāussagga** by **guru bhagavanta** while performing the rites like **pratikramaṇa** with **guru bhagavanta**.

[10] After completing every procedure, offering **khamā...**, keeping the right hand over the **caravalā / kaṭāsaṇā**, say **vidhi karate jo koī avidhi huī ho, una sabakā micchā mi dukkaḍam**.

[11] Where the word **1] devasia; 2] devasio; 3] devasiam / desiam; 4] devasiāe** or **5] divaso vaikkanto** is present; there say the word

1] **rāia / pakkhia / caumāsia / samvaccharia**;

2] **rāio / pakkhio / caumāsio / samvacchario**;

3] **rāiam / pakkhiam / caumāsiam / samvacchariam**;

4] **rāiāe / pakkhiāe / caumāsiāe / samvacchariāe** and

5] **rāi vaikkantā / pakkho vaikkanto / caumāsī vaikkantā /**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवच्छरो वइक्कंतो
शब्द कहें.

[१२] १] **सकल-कुशल वल्ली, चैत्य-वंदन, जं किंचि [सूत्र नं.१२], नमुत्थु णं [सूत्र नं.१३] योग मुद्रा में [चि. नं. ८,९,१०]; जावंति चेइ [सूत्र नं.१४], जावंत के वि [सूत्र नं.१५] मुक्ता-शुक्ति मुद्रा में [चि. नं. ११,१२,१३]; नमोर्हत् [सूत्र नं.१६], स्तवन एवं उवसग्ग-हरं स्तोत्र [सूत्र नं.१७] योग मुद्रा में [चि. नं. ८,९,१०]**;

२] **जय वीयराय सूत्र [सूत्र नं.१८]** की गाथा नं. १ और २ **मुक्ता-शुक्ति मुद्रा में [चि. नं. ११,१२,१३]** और गाथा नं. ३,४ और ५ **योग मुद्रा में [चि. नं. ८,९,१०]**;

३] **वंदित्तु सूत्र [सूत्र नं.३५]** [गाथा नं. ४३ तक] **[नवकार, करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिउं? सूत्र** के साथ] **वीरासन** में **[चि. नं. १४,१५]**;

४] **काउस्सग्ग कायोत्सर्ग मुद्रा** में **[चि. नं. ७]**;

५] **सज्झाय [नवकार** के साथ] बैठकर **[चि. नं. ३]**;

६] एवं शेष सभी **सूत्र** [अन्य कुछ न कहा हो तो] खड़े होकर **[चि. नं. ४]** कहें.

[१३] सभी आदेश खड़े होकर लें एवं सभी क्रियाएं योग्य मुद्राओं में आदर

samvaccharo vaikkanto
respectively in **rāia / pākṣika / caumāsī / samvacchari pratikramaṇa.**

[12] Say 1] **sakala-kuśala valli, caitya-vandana, jam kiñci [sūtra no. 12], namutthu ṇam [sūtra no. 13]** in **yoga mudrā; [Pic. no. 8,9,10]; jāvanti cei [sūtra no.14], jāvanta ke vi [sūtra no.15]** in **muktā-śukti mudrā [Pic. no. 11,12,13]; namorhat [sūtra no. 16], stavana** and **uvasagga-haram stotra [sūtra no. 17] in yoga mudrā; [Pic. no. 8,9,10]**

2] Stanza no. 1 and 2 of **jaya viyarāya sūtra [sūtra no.18]** in **muktā-śukti mudrā [Pic. no. 11,12,13]** and stanza no. 3, 4 and 5 in **yoga mudrā [Pic. no. 8,9,10]**;

3] **vandittu sūtra [sūtra no. 35]** [upto stanza no. 43] [with **navakāra, karemi bhante, icchāmi paḍikkamiuṃ? sūtra**] in **virāsana** [Pic. no. **14,15]**;

4] **kāussagga** in **kāyotsarga mudrā [Pic. no. 7]**;

5] **sajjhāya** [with **navakāra**] in sitting posture **[Pic. no. 3]** and

6] All other **sūtras** [if not mentioned other wise] in the standing posture **[Pic. no. 4].**

[13] Standing up, take all the commands and perform all the rites with respect

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्वक करें.

[१४] विधियों की विशेष जानकारी **गुरु महाराज** या अन्य किसी जानकार से लें.

२. गुरु-वन्दन की विधि

[१] प्रथम दो **खमा...** देकर, **इच्छकार सुह राइ सूत्र** कहें.

[२] फिर [**पदस्थ** साधु हो तो, एक **खमा...** देकर,] **अब्भुट्ठिओ मि सूत्र** कहें.

[३] फिर यदि **पच्चक्खाण** लेना हो तो, एक **खमा...** देकर **इच्छकारि... पच्चक्खाण देनाजी** कहकर, **पच्चक्खाण** लें.

३. चैत्य-वंदन की विधि

[१] प्रथम **इरियावहियं प्रतिक्रमण** करें.

[२] फिर तीन **खमा...** देकर, **इच्छा... चैत्य-वन्दन करूं? इच्छं** कहकर, **सकल-कुशल-वल्ली, चैत्य-वन्दन, जं किंचि, नमुत्थु णं,**

in proper posture.

[14] Have more knowledge about the procedures from **guru mahārāja** or any other who knows.

2. Procedure of guru-vandana

[1] First offering two **khamā...,** say **icchakāra suha rāi sūtra.**

[2] Then [if the saint is a **padastha** (an epithet holder), offering **khamā...,**] Say **abbhutthio mi sūtra.**

[3] Then if **paccakkhāṇa** is to be taken, offering one **khamā...,** saying **icchakāri... paccakkhāṇa denājī**, take the **paccakkhāṇa** [vow] .

3. Procedure of caitya-vandana

[1] First perform **iriyāvahiyam pratikramaṇa.**

[2] Then offering three **khamā...,** saying, **icchā... caitya-vandana karuṃ? iccham**, say **sakala-kuśala-vallī, caitya-vandana, jam kiñci, namutthu**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जावंति-चेइ, खमा... जावंत के वि, नमोर्हत्, स्तवन एवं **जय वीयराय सूत्र** कहें.

[३] फिर खड़े होकर, **अरिहंत-चेइआणं सूत्र** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** करके, **काउस्सग्ग** पारकर, **नमोर्हत्** कहकर, एक **स्तुति** कहें.

४. सामायिक लेने की विधि

[१] **स्थापनाचार्यजी** न हों तो, **स्थापनाचार्यजी** को स्थापित करने के लिये, प्रथम ऊंचे आसन पर पुस्तकादि रत्न-त्रयी का उपकरण रखकर; **कटासणा, मुहपत्ति, चरवला** लेकर; शुद्ध वस्त्र पहनकर; स्थान का प्रमार्जन कर; **कटासणे** पर बैठ कर; **मुहपत्ति** को बायें हाथ में मुख के सन्मुख रखकर एवं दायें हाथ को **स्थापनाचार्यजी** के सन्मुख रखकर **[चि. नं. १]**, एक **नवकार** एवं **पंचिंदिय सूत्र** कहें.

[२] फिर **इरियावहियं प्रतिक्रमण** करें.

[३] फिर **खमा... इच्छा... सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं** कहकर, **मुहपत्ति** का **पडिलेहण** करें **[चि. नं. २०-४०]**.

ṇam, jāvanti-cei, khamā... jāvanta ke vi, namorhat, stavana and **jaya viyarāya sūtra**.

[3] Then standing up, saying **arihanta-ceiāṇam sūtra**, performing the **kāussagga** of one **navakāra**, completing the **kāussagga**, saying **namorhat**, say a **stuti**.

4. Procedure of taking the sāmāyika

[1] If there are no **sthāpanā-cāryajī**, to consecrate the **sthāpanā-cāryajī**, first keeping an article of three gems like book on a high place, taking **kaṭāsaṇā, muhapatti, caravalā**; wearing washed cloths; cleaning the place, sitting on the **kaṭāsaṇā**; keeping the **muhapatti** in left hand before the mouth and right hand before the **sthāpanācāryajī [Pic. no. 1]**, say one **navakāra** and **pañcindiya sūtra**.

[2] Then perform **iriyāvahiyam pratikramaṇa**.

[3] Then saying **khamā... icchā... sāmāyika muhapatti paḍilehuṁ? iccham**, perform the **paḍilehaṇa** of the **muhapatti [Pic. no. 20-40]**.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४] फिर **खमा... इच्छा... सामायिक संदिसाहुं? इच्छं** कहें.

[५] फिर **खमा... इच्छा... सामायिक ठाउं? इच्छं** कहकर, हाथ जोड़कर, एक **नवकार** गिनकर, **इच्छकारि... सामायिक दंडक उच्चरावोजी** कहें.

[६] **गुरु-महाराज** [न हों तो **सामायिक** में स्थित वडील गृहस्थ या स्वयं] **करेमि भंते सूत्र** कहें.

[७] फिर **खमा... इच्छा... बेसणे संदिसाहुं? इच्छं** कहें.

[८] फिर **खमा... इच्छा... बेसणे ठाउं? इच्छं** कहें.

[९] फिर **खमा... इच्छा... सज्झाय संदिसाहुं? इच्छं** कहें.

[१०] फिर **खमा... इच्छा... सज्झाय करूं? इच्छं** कहकर, पावों पर बैठकर, हाथ जोड़कर, तीन **नवकार** गिनें.

[११] फिर दो **घड़ी** [४८ मिनिट] तक स्वाध्याय आदि करें.

५. सामायिक पारने की विधि

[१] प्रथम **इरियावहियं प्रतिक्रमण** करें.

[२] फिर **खमा... इच्छा... मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं** कहकर, **मुहपत्ति**

[4] Then say **khamā... icchā... sāmāyika sandisāhuṃ? iccham.**

[5] Then saying **khamā... icchā... sāmāyika ṭhāuṃ? iccham**; folding the hands, counting one **navakāra**, say **icchakāri... sāmāyika daṇḍaka uccarāvojī**.

[6] **guru-mahārāja** [if not present, elder house holder present in the **sāmāyika** or himself] shall say **karemi bhante sūtra.**

[7] Then say **khamā... icchā... besaṇe sandisāhuṃ? iccham.**

[8] Then say **khamā... icchā... besaṇe ṭhāuṃ? iccham.**

[9] Then say **khamā... icchā... sajjhāya sandisāhuṃ? iccham.**

[10] Then saying **khamā... icchā... sajjhāya karuṃ? iccham**, sitting on the feet, folding hands, count three **navakāra**.

[11] Then carry on self-recitation etc. for two **ghaḍī** [48 minutes] .

5. Procedure of completing the sāmāyika

[1] First perform **iriyāvahiyam pratikramaṇa.**

[2] Then saying **khamā... icchā... muhapatti paḍilehuṃ? iccham**, perform the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का **पडिलेहण** करें.

[३] फिर **खमा... इच्छा... सामायिक पारुं? यथाशक्ति** कहें.

[४] फिर **खमा... इच्छा... सामायिक पार्युं? तहत्ति** कहकर, दायां हाथ **चरवले / कटासणे** पर रखकर, **नवकार** एवं **सामाइय-वय-जुत्तो सूत्र** कहें.

[५] फिर **स्थापनाचार्यजी** को स्थापित किया हो तो, दायें हाथ को स्वयं के सन्मुख रखकर एक **नवकार** गिनें और पुस्तकादि का उत्थापन करें **[मुद्रा नं. २]**.

६. देव-वन्दन की विधि

[१] प्रथम **इरियावहियं प्रतिक्रमण** करें.

[२] फिर **खमा... इच्छा... चैत्य-वन्दन करूं? इच्छं** कहकर, **सकल-कुशल-वल्ली, चैत्य-वन्दन, जं किंचि, नमुत्थु णं** तथा **जय-वीयराय सूत्र [आभव-मखंडा तक]** कहें.

[३] फिर **खमा... इच्छा... चैत्य-वन्दन करूं? इच्छं** कहकर, दूसरा **चैत्य-वन्दन, जं किंचि, नमुत्थु णं सूत्र** कहकर–

paḍilehaṇa of the **muhapatti**.

[3] Then say **khamā... icchā... sāmāyika pāruṁ? yathāśakti**.

[4] Then saying **khamā... icchā... sāmāyika pāryuṁ? tahatti**, keeping the right hand on **caravalā / kaṭāsaṇā**, say **navakāra** and **sāmāiya-vaya-jutto sūtra**.

[5] Then if the **sthāpanācāryajī** are consecrated one, keeping the right hand before himself, say one **navakāra** and take the book etc. **[Pic. no. 2]**.

6. Procedure of deva-vandana

[1] First perform **iriyāvahiyam pratikramaṇa**.

[2] Then saying **khamā... icchā... caitya-vandana karuṁ? iccham**, say **sakala-kuśala-vallī, caitya-vandana, jam kiñci, namutthu ṇam, jaya-vīyarāya sūtra** [upto **ābhava-makhaṇḍā**].

[3] Then saying **khamā... icchā... caitya-vandana karuṁ? iccham**, saying second **caitya-vandana, jam kiñci, namutthu ṇam sūtra**–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४] **अरिहंत-चेइआणं सूत्र** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, **नमोर्हत्** एवं पहली स्तुति कहकर, **लोगस्स सूत्र** कहें.

[५] फिर **सव्व-लोए अरिहंत-चेइआणं सूत्र** [शुरुआत में **सव्व-लोए** शब्द के साथ **अरिहंत-चेइआणं सूत्र] [सूत्र नं. १९]** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, दूसरी स्तुति कहकर–

[६] **पुक्खर-वर सूत्र** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, तीसरी स्तुति कहकर, **सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र** कहें.

[७] फिर **वेयावच्च-गराणं सूत्र** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, **नमोर्हत्** एवं चौथी स्तुति कहें.

[८] फिर **नमुत्थु णं सूत्र** कहें.

[९] फिर **अरिहंत-चेइआणं** आदि **सूत्र** कहकर पूर्व के अनुसार दूसरी बार चार स्तुतियां कहें [क्रम संख्या ४ से ७].

[१०] फिर **नमुत्थु णं, जावंति चेइ, खमा..., जावंत के वि, नमोर्हत्, स्तवन** एवं **जय वीयराय सूत्र [आभव-मखंडा तक]** कहें.

[११] फिर **खमा... इच्छा... चैत्यवन्दन करूं? इच्छं** कहकर, तीसरा

[4] Saying **arihanta-ceiāṇam sūtra**, performing the **kāussagga** of one **navakāra**, completing the **kāussagga**, saying **namorhat** and first eulogy, say **logassa**.

[5] Then saying **savva-loe arihanta-ceiāṇam sūtra** [**arihanta-ceiāṇam sūtra** along with the word **savva-loe** in the begining] [**sūtra** no. 19], performing the **kāussagga** of one **navakāra**, completing the **kāussagga**, saying the second eulogy--

[6] Saying **pukkhara-vara sūtra**, performing the **kāussagga** of one **navakāra**, completing the **kāussagga**, saying the third eulogy, say **siddhāṇam buddhāṇam sūtra**.

[7] Then saying **veyāvacca-garāṇam sūtra**, performing the **kāussagga** of one **navakāra**, completing the **kāussagga**, say **namorhat** and the fourth eulogy.

[8] Then say **namutthu ṇam sūtra**.

[9] Then saying **arihanta-ceiāṇam sūtra** etc. say four eulogies for second time as before [serial no. 4 to 7] .

[10] Then say **namutthu ṇam, jāvanti cei, khamā..., jāvanta ke vi, namorhat, stavana** and **jaya viyarāya sūtra** [upto **ābhava-makhaṇḍā**] .

[11] Then saying **khamā... icchā... caitya-vandana karuṃ? iccham**, say third

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चैत्यवन्दन, जं किंचि, नमुत्थु णं एवं **जय वीयराय सूत्र** [संपूर्ण] कहें.

caitya-vandana, jam kiñci, namutthu ṇam and jaya vīyarāya sūtra [complete] .

नमस्कार-महा-मन्त्र का छन्द

समरो मन्त्र भलो नवकार, ए छे चौद पूरवनो सार.
एना महिमानो नहि पार, एनो अर्थ अनन्त अपार. समरो.१.
सुखमां समरो दुखमां समरो, समरो दिवस ने रात.
जीवतां समरो, मरतां समरो, समरो सौ संघात. समरो.२.
जोगी समरे भोगी समरे, समरे राजा-रंक.
देवो समरे दानव समरे, समरे सौ निःशंक. समरो.३.
अड़सठ अक्षर एना जाणो, अड़सठ तीरथ सार.
आठ संपदाथी परमाणो, अडसिद्धि दातार. समरो.४.
नव-पद एनां नव निधि आपे, भव भवनां दुःख कापे.
वीर वचनथी हृदये व्यापे, परमातम पद आपे. समरो.५.

◆ ◆ ◆

namaskāra-mahā-mantra kā chanda

samaro mantra bhalo navakāra, e che cauda pūravano sāra.
enā mahimāno nahi pāra, eno artha ananta apāra. samaro.1.
sukhamāṃ samaro dukhamāṃ samaro, samaro divasa ne rāta.
jīvatāṃ samaro, maratāṃ samaro, samaro sau saṅghāta. samaro.2.
jogī samare bhogī samare, samare rājā-raṅka.
devo samare dānava samare, samare sau niḥśaṅka. samaro.3.
aḍasaṭha akṣara enā jāṇo, aḍasaṭha tīratha sāra.
āṭha sampadāthī paramāṇo, aḍasiddhi dātāra. samaro.4.
nava-pada enāṃ nava nidhi āpe, bhava bhavanāṃ duḥkha kāpe.
vīra vacanathī hṛdaye vyāpe, paramātama pada āpe. samaro.5.

◆ ◆ ◆

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री अरुणोदय फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूचि

हिन्दी विभाग

क्रम	पुस्तक नाम	किंमत	लेखक
१.	कर्मयोग	९१.००	आ. बुद्धिसागरसूरिजी
२.	पथ के फुल	२५.००	"
३.	मारग मेरा सब से न्यारा	०५.००	"
४.	भीमसेन चरित्र	अप्राप्य	आ. अजीतसागरसूरिजी
५.	सचित्र जैन कथासागर भाग – १	३०.००	आ. कैलाससागरसूरिजी
६.	सचित्र जैन कथासागर भाग – २	३०.००	"
७.	मोक्ष मार्ग में बीस कदम	२५.००	आ. पद्मसागरसूरिजी
८.	जीवन-दृष्टि	२५.००	"
९.	संवाद की खोज	२०.००	"
१०.	प्रतिबोध	२०.००	"
११.	मित्ति में सव्व भूएसु	१५.००	"
१२.	हे नवकार महान	१०.००	"
१३.	संशय सब दूर भये	२०.००	"
१४.	यात्रा नवाणु करीए विमलगिरि	०५.००	गणिवर्य अरुणोदयसागरजी
१५.	आई बसो भगवान	(प्रेस में)	
१६.	**प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन (हिन्दी-अंग्रेजी) भाग - १,२**	**१२५.००**	**मुनि निर्वाणसागरजी**
१७.	कोबा डाइजेस्ट (हिन्दी-गुजराती)		

ગુજરાતી વિભાગ

ક્રમ	પુસ્તક નામ	કિંમત	લેખક
૧.	અલખ પંથમાં અજબ તમાસા	૦૫.૦૦	આ. બુદ્ધિસાગરસૂરિજી
૨.	જીવન વિકાસના વીસ સોપાન	૨૦.૦૦	આ. પદ્મસાગરસૂરિજી
૩.	આતમ પામ્યો અજવાળુ	૨૦.૦૦	"
૪.	પ્રવચન-પરાગ	૨૦.૦૦	"
૫.	ચિંતનની કેડી	૧૫.૦૦	"
૬.	પ્રેરણા	અપ્રાપ્ય	"
૭.	પાથેય	અપ્રાપ્ય	"
૮.	જીવનનો અરુણોદય	અપ્રાપ્ય	"

English Section

S.No.	Names of the book	Price	Author
1.	Golden steps to Salvation	30.00	Ach. Padmasagarsuri
2.	Beyond Doubt	20.00	"
3.	A wakening	15.00	"
4.	The Light of Life	Not. Avai.	"
5.	**Pratikramaṇa Sūtra With Explanation (Hindī–English) – Part – 1,2**	**125.00**	**Muni Nirvansagarji**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

યોગ્ય સમયે યોગ્ય દિશાનો તમારો સરસ પ્રયત્ન છે, અને અનેકાનેક જીવોને ઉપકારક પ્રયત્ન પુરવાર થશે તેવી મને શ્રદ્ધા છે.

આચાર્ય શ્રી શીલચંદ્રસૂરિજી

ભાષા અંગ્રેજી-હિંદી બંને રાખી છે એટલે વિશેષ ઉપયોગી બનશે. તમારું આ કાર્ય, તેના માટેનો પ્રયત્ન જૈન શાસન માટે ખૂબ જ લાભદાયી થશે...

આચાર્ય શ્રી વિજય હેમચંદ્રસૂરિજી

वर्तमान युगकी यह खास मांग है. अतः आपका प्रयास समयोचित एवं सराहनीय है. अंग्रेजी माध्यममें पढनेवाले अनेक विद्यार्थीओंको धार्मिक सूत्र एवं उनके अर्थ समझने के लिए यह पुस्तक आशीर्वाद रूप होगा. आपके प्रयासकी पुनः पुनः हार्दिक अनुमोदना...

- गणिवर्य श्री महोदयसागरजी

બે પ્રતિક્રમણ સૂત્ર વિવેચન હિન્દી અને અંગ્રેજી પુસ્તકનું મેટર મળ્યું. જોયું. વાંચ્યું. વીસમી સદીના અંતે અને એકવીસમી સદીના પ્રારંભે જૈન સંઘની નવી પેઢીને આપના તરફથી નઝરાણું પ્રાપ્ત થશે. આ બાબત જાણીને મને રોમ હર્ષ થયો છે. હિન્દી અંગ્રેજી ભાષાના મહત્વના અને ઉપયોગી પ્રકાશન માટેનો આપનો કામ ખરેખર સ્તુત્ય છે. આપના દ્વારા તૈયાર થનાર આ પુસ્તક અમોને અમારા હિન્દી ભાષી ક્ષેત્રોની શિબિરો માટે પણ ઉપયોગી બનશે...

શ્રી કુમારપાલ વિ. શાહ, ધોળકા

આપનો પત્ર, ગ્રંથ, પરિપત્ર મળ્યું. અતિ સુંદર, સ્પષ્ટતા બહુજ સુંદર રીતે થઇ છે. બાલભોગ્ય પણ છે અને વિદ્વદ્ભોગ્ય પણ છે. જેની આજ સુધી ત્રુટિ જણાતી હતી તે આપશ્રી દ્વારા પૂર્તિ થાય છે તે બહુજ અનુમોદનીય છે...

પંડિતવર્ય શ્રી છબીલદાસ કે. સંઘવી, સુરત

DUNDUBHI - 079 - 404186

ISBN 81 - 86917-00-4

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

મૂલ અર્ધમાગધી પ્રતિક્રમણના સૂત્રોનું આંગ્લભાષામાં કરાયેલ રૂપાન્તરથી આંગ્લભાષા ભાષીઓ શ્રી ગણધર ભગવંત વિરચિત પ્રતિક્રમણના સૂત્રો કંઠસ્થ કરીને શ્રી જિનઆજ્ઞા અનુસાર ઉભયટંક પ્રતિક્રમણ કરવારૂપ પ્રાયશ્ચિત કરીને આત્મશુદ્ધિના પરમ અધિકારી બનો... **આચાર્ય શ્રી કલ્યાણસાગરસૂરિજી**

તમારો પ્રયાસ પ્રશંસનીય છે. જિજ્ઞાસુઓને અને નવા જીવોને સારો લાભ થાય એવી શક્યતા છે. અનેકને બોધપ્રદ બની શકે એ રીતે આ પ્રકાશન શીઘ્ર નિર્વિઘ્નતયા થાય એવી પરમકૃપાળુ પરમાત્માને પ્રાર્થના પૂર્વક શુભાશિષ છે...

આચાર્ય શ્રી વિજય જયઘોષસૂરિજી

नमस्कार महामंत्र का हिन्दी-English विवेचन मिला. आपने बहुत परिश्रम किया है. विदेश वासीयों को इससे बहुत लाभ होगा. प्रभु की कृपा से आपका कार्य सुंदर रूप से सिद्ध हो यही प्रभु से प्रार्थना... **आगमदिवाकर प्रवर्तक श्री जंबूविजयजी**

સાહિત્ય જગતમાં સર્વ ગ્રાહ્ય અજોડ પ્રકાશન માટેનો આપનો પ્રયત્ન સદાય ધન્યતા ને પ્રાપ્ત બનશે. નમસ્કાર મંત્રથી પ્રારંભ થતાં પ્રતિક્રમણ સૂત્રના અર્થ, ભાવાર્થ, વિશેષાર્થ અને હિન્દી-અંગ્રેજીમાં પ્રકાશન બહુજ લાભકારી બનશે...

આચાર્ય શ્રી વારિષેણસૂરિજી

मेरे घट ज्ञानभानु भयो भोर

श्री अरुणोदय फाउन्डेशन

SHREE ARUNODAY FOUNDATION

AHMEDABAD-MUMBAI-KOBA-BANGALORE-CHENNAI

વર્તમાનમાં પાશ્ચાત્ય સંસ્કૃતિનું શિક્ષણ મેળવતાં બાળકોની ધર્મભાવના જાળવવાં તમોએ કરેલો પુરુષાર્થ દાદ માંગીલે એવો છે. આધુનિક ભાષામાં રૂપાંતરણની સાથે-સાથે ભાવાંતરણમાં પણ પૂર્ણ સાવધાનિ રાખી છે. શાસ્ત્રને સાપેક્ષ રાખીને જ ચાલ્યા છો, તમારા દ્વારા થયેલો આ પ્રયત્ન જીવોને ધર્મમાર્ગ આગળ વધારી સ્થિર કરી પરંપરાએ મોક્ષમાર્ગ ને આપનારો બને...

આચાર્ય શ્રી નવરત્નસાગરસૂરિજી

વર્તમાનયુગમાં આપણી લિપિ અને ભાષા પ્રત્યે આપણામાં ઉદાસીનતા વધી રહી છે, તેથી બાળકોને સૂત્રો ભણવા / ભણાવવા તથા સમજવા / સમજાવવામાં પણ ખૂબ જ મુશ્કેલી પડે છે. આ સમસ્યાના ઉકેલ માટે પંચ પ્રતિક્રમણનાં મૂળ સૂત્રો અંગ્રેજી લિપિમાં તથા તેની અંગ્રેજી ભાષામાં સરળ અનુવાદ પ્રકાશિત થઇ રહ્યો છે તે આનંદની વાત છે. પૂ. નિર્વાણસાગરજી મ. સા. દ્વારા સંપાદિત, અનુવાદિત આ ગ્રંથ દેશ-વિદેશમાં વસતાં બાળકો અને જિજ્ઞાસુઓને ખૂબ જ ઉપયોગી થશે તે નિર્વિવાદ વાત છે... **પંડિતવર્ય ડૉ. શ્રી જિતેંદ્ર બી. શાહ, અમદાવાદ**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org